॥ श्री ॥

संस्कृतपरथी गुजरातीमा

भाषांतर करावी

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक, भीमसिंह माणेक.

मुंबई.

“निर्णयसागर” छापाखानामां छपाव्युं.

संवत् १९६२ सने १९०६.

श्रावणसुदि त्रयोदशि.

प्रस्तावना.

सर्वे जैन बंधुओने मालुम थायजे आ कल्पसूत्र आपणा आगमो मांहेनुं एक आगम छे; तथा तेमा वीर प्रभु आदिक तीर्थंकरोनां चरित्रो आवेलां छे; वली ते पर्युषणा पर्वमां दरवर्षे वांचवामां आवे छे; आ कल्पसूत्रनुं माहात्म्य घणुंज उत्कृष्ट वखाएयुं छे. ते आ भाषांतर वांचवाथी अमारा जैनबंधुओने मालुम थशे. आ कल्पसूत्र पर घणी टीकाओ पूर्वे थएला महान आचार्योए बनावेली छे; तेमां पण श्रीविनयविजयजी उपाध्यायजीए बनावेली आ कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीका सरल अने रसिक छे; तथा ते टीका वांचवानो आजे घणो प्रचार छे. ते टीका मूल संस्कृत भाषामां होवाथी, ते भाषानुं हालना समयमां सर्वेने जाणपणुं नहीं होवाथी अमोए तेनुं शुरू गुजराती भाषांतर करावी छपावी प्रसिद्ध कर्युं छे; आ ग्रंथनी अत्रे प्रशंसा नहीं करतां, अमो ते आद्यथी अंतसुधि सर्वे जैन भाइओने वांची जवानीज भलामण करीएछीए; केमके जे टीकानुं आ भाषांतर करवामां आव्युं छे, ते टीका आपणा माननीक महान उपाध्याय श्री विनयविजयजीए रचेली छे.

ला० भीमसिंह माणेक.

अनुक्रमणिका.

द्वितीयं व्याख्यानं

तृतीयं व्याख्यानं

अनुक्रमणिका.

સપ્તમં વ્યાખ્યાનં

(પાર્શ્વપ્રભુનું ચરિત્ર)

(નેમિનાથ પ્રભુનું ચરિત્ર)

इति अनुक्रमणिका समाप्त.

॥ श्री जिनाय नमः ॥

कल्पसूत्र सुखबोधिकानुं गुजराती भाषांतर ॥

टीकाकार श्री विनयविजयजी महाराज मंगलाचरण करे छे.

परम कल्याणने करनारा श्रीजगदीश्वर अर्हंत प्रभुने प्रणाम करी हुं बाल अभ्यासिओने उपकार करनारी सुखबोधिका नामे कल्पसूत्रनी टीका करूं छुं. १ आ कल्पसूत्र उपर निपुण बुद्धिवाला पुरुषोने गम्य एवी जो के घणी टीकाओ छे, तथापि अल्पबुद्धिवाला पुरुषोने बोध थाय तेवा हेतुथी आ टीका करवाविषे मारो प्रयत्न सफल छे. २ जो के सूर्यनी घणी कांतिओ सर्व लोकोने वस्तुनो बोध करनारी होय छे, तथापि भूमिगृह (भोंयरा) मां रहेला माणसोने तो तत्काल दीपिकाज उपकार करे छे. ३ आ टीकामां विशेष अर्थ कर्या नथी, युक्तिओ बतावी नथी, अने पद्य पांडित्य दर्शाव्युं नथी पण मात्र बाल बुद्धि अभ्यासिओने बोध थवाने अर्थनी व्याख्याज आपेली छे. ४ जो के हुं अल्पबुद्धि वालो थई आ टीका रचुं छुं पण सत्पुरुषोने उपहास्य नहीं थाउं. कारण के, ते सत्पुरुषो एवो उपदेश करे छे के, "सर्व माणसोए कल्याणमां यथाशक्ति यत्न करवो जोईए." ५

अहिंआ पूर्व काले नवकल्प विहार करवाना क्रमवडे प्राप्त थयेला योग्य क्षेत्रमां अने सांप्रत काले परंपराथी गुरुए आदेश करेला क्षेत्रमां चातुर्मास रहेला साधुओ कल्याण निमित्ते आनंद पुरमां सभा समक्ष वांच्यापछी संघनीसमक्ष पांच दिवस अने नवक्षणे श्रीकल्पसूत्रने वांचे छे. ते कल्प सूत्रमां कल्प शब्दवडे साधुओनो आचार कहेवाय छे. ते कल्प आचारना दश भेद छे ते आ प्रमाणेः—१ आचेलक्य, २ औद्देशिक, ३ शय्यातर, ४ राजपिंड, ५ कृतिकर्म, ६ व्रत, ७ ज्येष्ठ, ८ प्रतिक्रमण. ९ मास कल्प, १० पर्युषणा. ते दश कल्पनी व्याख्या आ प्रमाणे छे.

१ आचेलक्य. (आचेलक्क.)

जेने चेल एटले वस्त्र न होय ते अचेलक कहेवाय, ते अचेलकनो नाव ते आचेलक्य अर्थात् वस्त्र रहितपणुं. ते तीर्थंकरोने आश्रीने रहेलुं छे. तेमां पेहेला अने छेल्ला तीर्थंकरोने शक्रेंद्रे लावी आपेला देवदूष्य वस्त्रनो अपगम थवाथी तेउने सर्वदा अचेलकत्व एटले वस्त्ररहितपणुं छे अने बीजा तीर्थंकरोने तो सर्वदा सचेलकत्व वस्त्रसहित पणुं छे. आ विषे किरणावली टीकाकारे जे चोवीस तीर्थंकरोने पण शक्र इंद्र आपेला देवदूष्य वस्त्रना अपगम थवाथी अचेलकपणुं कह्युं छे, ते शक जरेलुं छे.

साधुउने आश्रिने एटले अजितनाथ विगेरे बावीश तीर्थंकरोना तीर्थना साधु के जेउ सरल अने प्राज्ञ कहेवाय छे, तेउने घणा मूल्यवाला विविध रंगी वस्त्रोना उपन्नोगनी आज्ञा होवाथी सचेलकपणुं छे अने वली केटलाएक श्वेतरंगी परिमाणवाला वस्त्रने धारण करनार होवाथी तेमने अचेलकपणुंज छे. आ प्रमाणे तेउने आ कल्प अनियतपणे रहेलो छे. जे श्रीरुषन्न अने वीर प्रन्नुना तीर्थना यतिउ छे, तेउ सर्वे श्वेत अने परिमाणवाला जीर्ण वस्त्रने धरनारा होवाथी तेमने अचेलकपणुंज छे. अहिं शंका थाय छे के, वस्त्रनो उपन्नोग छतां तेमने अचेलकपणुं केम कहेवाय? तेनो पत्युत्तर आपे छे. जे जीर्ण वस्त्र होय ते तुछ होवाथी तेवुं वस्त्र छतां पण वस्त्ररहितपणुं कहेवाय छे, ते सर्व लोकोमां प्रसिद्ध छे. जेम के, पोतिया पेहेरी नदीने उतरता लोको कहे छे के, 'अमो नग्न थईने नदी उतरी गया' तेमज वस्त्र छतां पण लोको मेराइ अने धोबी विगेरेने कहेछे के, 'अमोने सत्वर वस्त्र आपो अमे नागा रहीए छीए.' आवी रीते साधुउने वस्त्रो छतां पण अचेलकपणुं जाणी लेवुं. इति प्रथम कल्प.

२ औद्देशिक-कल्प.

उद्देसिय एटले औद्देशिक कल्प अर्थात् आधाकर्मिक. साधु निमित्ते अशन, पान, खाद्य, स्वादिम वस्त्र, पात्र अने उपाश्रय विगेरे जे करेलुं होय, ते पेहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना तीर्थमां एक साधुने एक साधुउना समुदायने, वा एक उपाश्रयने आश्रीने करेलुं होय ते सर्वे साधु विगेरेने कल्पतुं नथी

अने बावीश तीर्थंकरोना तीर्थमां तो जे साधु विगेरेने आश्रीने करेलुं होय ते तेनेज कल्पतुं नथी अने बीजाने कल्पे छे एवी रीते बीजो औद्देशिक कल्प छे.

३ शय्यातर कल्प.

त्रीजो कल्प शय्यातर एटले जे उपाश्रयनो स्वामी होय ते तेनो पिंड जे १ अशन, २ पान, ३ खादिम, ४ स्वादिम, ५ वस्त्र ६ पात्र, ७ कांबल, ८ रजोहरण, ए सोय, १० अस्तरो, ११ नख तथा दांत सुधारवानुं अस्त्र अने १२ कर्णने सुधारवानुं साधन. ए बार प्रकारनो छे, ते बधा तीर्थंकरोना तीर्थोमां सर्व साधुउने कल्पे नहीं, कारण के तेथी अनेषणीय वस्तुनो प्रसंग, अने उपाश्रय मलवो दुर्लभ थाय इत्यादि घणां दोष लागवानो संभव छे. जो साधुउ बधी रात्रि जागे अने प्रातःकाले प्रतिक्रमण बीजे जइ करे तो ते मूल उपाश्रयनो स्वामी शय्यातर थतो नथी. अने जो साधुउ त्यां निद्रा करे अने प्रतिक्रमण बीजे ठेकाणे करे तो ते बंनेना स्वामी शय्यातर थाय छे.

तेमज चारित्रनी इछावाला उपधिसहित शिष्यने शय्यातरना घरनी तृण, डगल, भस्म, (राख) मल्लक, पाटलो, बाजोठ, शय्या, संस्तारो अने लेप विगेरे वस्तुउ ग्रहण करवी कल्पती नथी. ए त्रीजो शय्यातर कल्प जाणवो.

४ रायपिंड कल्प.

राजपिंड एटले सेनापति, पुरोहित, नगरशेठ, मंत्री अने सार्थवाह ए पांचेनी साथे राज्यनुं पालन करनार मूर्द्धाभिषिक्त जे राजा तेनो पिंड जे अशन, पान, खादिम, स्वादिम वस्त्र, पात्र, कांबल अने रजोहरण ए आठप्रकारनो कहेवाय छे. ते पेहेला अने छेल्ला तीर्थंकरोना साधुउने राजापासे जतां आवतां सामंत विगेरेथी स्वाध्यायनो नाश थवानो संभव छे वली साधुउना अपशुकन गणाय तेथी शरीरने व्याघात थवानो संभव छे तेमज खाद्यनो लोभ, लघुता अने निंदा विगेरे दोष थवानो पण संभव छे, तेथी ते राजपिंडनो निषेध करेलो छे. बावीश तीर्थंकरोना साधु हंमेशां सरल अने प्राज्ञ छे तेथी तेमने उ

वडे करीने समस्तपणे रहेवुं ते वार्षिक पर्व बंने पण कहेवाय छे. तेमां ते वार्षिक पर्व भाद्रपद मासनी शुक्ल पंचमीए अने कालकसूरि थया पछी भाद्रपद शुक्ल चतुर्थीए ज थाय छे. समस्तपणाथी रहेवा रूप जे पर्युषणा कल्प छे ते बे प्रकारनो छे. सालंबन अने निरालंबन तेमां जे निरालंबन एटले कारण ना अभाववालो पर्युषणा कल्प ते जघन्य उत्कृष्ट एवा बे भेदवालो छे. तेमां जे सांवत्सरिक प्रतिक्रमणथी मांडीने कार्तिक चातुर्मास्य ना प्रतिक्रमण सुधी सीत्तेर दिवसना परिमाणनो छे. अने उत्कृष्ट पर्युषणा काल चार मासनो छे. आ बे प्रकारनो निरालंबन पर्युषणा काल स्थविरकल्पिओनो छे अने जिनकल्पीओने तो एक निरालंब चातुर्मासिकज कल्प छे. अर्थात् कोइ कारणने लइने सालंबन थाय. हवे जे क्षेत्रमां मास कल्प कर्यो होय, तेज क्षेत्रमां चातुर्मास्य करवाथी अथवा चातुर्मास्य कर्या पछी मास कल्प करवाथी छमासनो कल्प थाय ते पण स्थविरकल्पीओनेज उचित छे अने पांच पांच दिवसोनो वधारो करी गृहस्थोने जणाववा न जणाववानो अधिकार विस्तारथी अहीं लख्योनथी. कारण के, संघनी आज्ञाथी ते विधि हाल उच्छेद थइ गयो छे. तेमज ग्रंथ विस्तारना भयथी अत्रे कहेलो नथी. जो ते विषे विशेष जाणवुं होय तो कल्प किरणावली विगेरे टीकाओमां जोइ लेवु. एवी रीते सर्व ठेकाणे जाणी लेवुं. एवी रीते जेनुं स्वरूप वर्णव्युं छे एवो पर्युषणा कल्प प्रथम अने चरम तीर्थंकरोना तीर्थमां नियत छे अने बाकीना बावीश तीर्थंकरोना तीर्थमां अनियत छे. कारण के, तेओना साधुओतो दोषनो अभाव होय तो एक क्षेत्रमां देश उणी पूर्व कोटी सुधी रहेछे. अने जो दोष जोवामां आवेतो एक मास कल्पसुधी पण रहेता नथी. एवीरीते महाविदेह क्षेत्रमां पण बावीश तीर्थंकरोनी जेम सर्व तीर्थंकरोनी कल्पनी व्यवस्था जाणी लेवी. एवीरीते दशमो कल्प जाणवो ॥ १० ॥ उपर कहेला ए दश कल्पो श्रीऋषभ प्रभु तथा श्रीवर्द्धमान स्वामीना तीर्थमां नियत छे अने बीजा बावीश तीर्थंकरोना तीर्थमां अचेलक, औद्देशिक, प्रतिक्रमण, राजपिंड, मास अने पर्युषणा ए छ कल्पो अनियत छे. बाकीना शय्यातर, चतुर्व्रत, पुरुषज्येष्ठ, कृतिकर्म, ए चार कल्पो नियतज छे–एवी रीतें ते दश कल्पोनो नियत अने अनियत वि-

अहिं कोइ शंका करे के, सर्वने साधवायोग्य मोक्षमार्ग एकज छे, तो तेमां पेहेला, अने बाकीना बावीश तीर्थंकरोना साधुउमां आचारनो भेद केम छे ? तेना समाधानमां कहेछे के, ते भेद थवानुं कारण जीवविशेष छे ते कहेछे–श्रीऋषभ प्रभुना तीर्थना जीवो सरल स्वभावी अने जड छे, तेथी तेउने धर्मनो बोध थवो दुर्लभ छे कारण के, तेमनामां जडपणुं छे. अने श्रीवीर प्रभुना तीर्थना जीवो (साधुउ) वक्र अने जड छे, तेथी तेमने धर्मनुं पालन दुष्कर छे. अने अजित नाथ विगेरे बावीश तीर्थंकरोना साधुउने धर्मनो बोध अने तेनुं पालवुं आ बंने पण सुकर (सहेलुं) छे कारण के, तेउ सरल अने प्रज्ञ स्वभावी छे, तेथी तेमना आचारना बे भेद थया छे, अहिं तेना दृष्टांतो बतावे छे–

पेहेला तीर्थंकरना केटलाएक मुनिउ बाहेरनी भूमिथी गुरु पासे आव्या, त्यारे गुरुए पुछ्युं के, हे मुनिउ, तमो आटली बधी वेला क्यां रोकाया ? मुनिउए कह्युं, हे स्वामी, अमो एक नृत्य करतां नटने जोवामां रोकाया हता, त्यारे गुरुए कह्युं, के, नटना नृत्यने जोवुं, ते साधुउने कल्पे नहीं, त्यारे तेउए (बहु सारुं) एम कही ते वात अंगीकार करी वली एक वखते तेज साधुउ चिरकाले उपाश्रयमां आव्या, त्यारे गुरुए पण पूर्वनी जेम पुछ्युं, एटले तेउ बोल्या के, हे प्रभु, अमो एक नृत्य करती नटीने जोवाने उभा हता, त्यारे गुरुमहाराज बोल्या–हे महाभाग, ते वखते में तमने नट जोवानो निषेध कर्यो हतो. ज्यारे नटनो निषेध थयो तो पछी नटी जोवानो निषेध थइ चुक्योज. पछी तेउए गुरुने विज्ञप्ति करी के, स्वामी, ए वात अमोए जाणी नहीं, हवेथी पुनः तेम नहीं करीए. अहीं ते प्रथम तीर्थंकरना साधुउ जड होवाथी नटनो निषेध करवाथी नटीनो निषेध थइ चुक्यो एम तेउ जाणी शक्या नहीं अने ऋजु स्वभावी होवाथी तेमणे गुरुने सरल उत्तर आपी दीधो. एवी रीते आ प्रथम दृष्टांत जाणवुं.

अहिं बीजो पण दृष्टांत छे, कोइ कुंकण देशना वणिके वृद्धावस्थामां दीक्षा लीधी हती. एक वखते ते वणिक इर्यापथिकी कायोत्सर्ग करी चिरकाल रोकाइ रह्यो. ज्यारे कायोत्सर्ग पारी आव्यो एटले

गुरुए पुब्युं के, आटलो बधो दीर्घकालनो कायोत्सर्ग करी तें शुं चिंतव्युं ? ते बोल्यो– स्वामी ! जीव दया चिंतवी. गुरुए पुब्युं, शी रीते ? त्यारे तेणे कह्युं के, पूर्वे गृहस्थावस्थामां क्षेत्रमां वृक्ष उंमेली वापेलां घणां धान्य थया हता. हमणां मारा पुत्रो जो निश्चिंत थइने प्रथम वृक्षोने मेलशे नही तो पछी धान्य नहीं थवाथी ते बीचारानुं शुं थशे ! आ प्रमाणे सरलपणाथी पोतानो अभिप्राय यथार्थ पणे निवेदन कर्यो एटले गुरुए कह्युं, "महाभाग, तें ए दुष्ट ध्यान कर्युं, मुनिओने एम चिंतववुं अयुक्त छे." गुरुए आ प्रमाणे कहेवाथी ते शिष्ये मिथ्या दुष्कृत आप्युं. ए बीजो दृष्टांत. तेवी रीते श्रीवीर प्रभुना मुनिओ विषे बे दृष्टांतो छे. जेम के, केटलाएक वीर प्रभुना मुनिओ कोइ एक नटने नृत्य करतो जोइ गुरु पासे आव्या. गुरुए पुब्युं अने पछी नट जोवानो निषेध कर्यो. पुनः एकवार तेओ कोइ नटीनुं नृत्य जोइने आव्या त्यारे गुरुए पूब्युं एटले तेओ वक्रपणे जुदा जुदा उत्तर आपवा लाग्या. ज्यारे गुरुए चोक्सपणे पुब्युं त्यारे तेओए साचे साचुं जणाव्युं. पछी गुरुए ठपको आप्यो एटले तेओ गुरुने सामो उपालंभ करवा लाग्या के, ज्यारे तमोए अमने नट जोवानो निषेध कर्यो ते समये नटी जोवानो निषेध केम न कर्यो ? आ दोष तमारोज छे अमो शुं जाणीए ए प्रथम दृष्टांत.

कोइ व्यापारीनो पुत्र हतो. तेनो पिता तेने घणीवार एवी शिक्षा आपतो के, 'पिताविगेरे वडिलोनी सामे बोलवुं नहीं, पितानी आ शिक्षा तेणे वक्रताथी मनमां धारण करी राखी. एकवखते घरना सर्वे स्वजन बाहेर गया हता, ते लाग जोइ ते पुत्रे विचार्युं के, वारंवार शिक्षा आपनार पिताने आज हुं शिक्षा आपुं. आवुं चिंतवी ते कमाड बंध करी अंदर रह्यो ज्यारे पिता विगेरे पाछा आव्या कमाड उघाडवाने घणा पोकार कर्या तो पण ते पुत्रे जबाब आप्यो नहीं तेमज कमाड उघाड्यां नहीं.

पछी पिता भिंत ओलंगी गृहमां पेठो एटले ते पुत्रने हसतो जोयो. ज्यारे उपालंभ आप्यो एटले तेणे कह्युं के, तमेज शीखव्युं छे के, वृद्ध वडिलोनी सामे उत्तर न आपवो आ बीजो दृष्टांत २. हवे अजित विगेरे बावीश तीर्थंकरोना मुनिओ ऋजु अने प्राज्ञ होय छे तेनो दृष्टांत आपे छे. जेम केटलाएक

अजितनाथ प्रभुना मुनिओ कोइ नटने जोइ चिरकाले आव्या. गुरुए पुछ्युं एटले तेओए यथार्थ कह्युं. पछी गुरुए तेम करवाने निषेध कर्यो कोइवार पाछा तेज मुनिओ बाहेर गया, त्यां ते नटीने नृत्य करती जोइ प्राज्ञ होवाथी विचार करवा लाग्या के, जे आपणने गुरुए राग थवामां हेतुरूप जाणी नट जोवानुं निषेध्युं छे तो आ नटी तो स्त्री होवाने लीधे राग थवानुं अत्यंत कारणरूप छे, तो तेथी तेनो सर्वथा निषेधज होवो जोइए. एवुं विचारीने तेओए नटीना नृत्यनुं अवलोकन कर्युं नहीं. अहीं शंका करे के, त्यारे तो रुजु अने प्राज्ञ एवा बावीश तीर्थंकरोना यतिउने ज धर्म हो, रुजु अने जरु एवा प्रथम तीर्थंकरना मुनिउने क्यांथी धर्म होय कारणके, तेउने बोध नथी तेमां वली वक्र अने जड एवा श्रीवीर प्रभुना मुनिउने तो सर्वथा धर्मनो ज अभावछे. एवी शंका करवी नहीं कारणके, प्रथम तीर्थंकरना यतीउ जोके जडपणाने लीधे स्खलना पामवानो संभव छे तथापि तेउनो भाव शुद्ध होवाथी धर्म प्राप्त थाय छे. तेमज वीर प्रभुना मुनिउ वक्र अने जरु होवाथी तेमनो भाव रुजु प्राज्ञनी अपेक्षा ए शुद्ध न होय तथापि सर्वथा धर्मज नथी एम कहेवाय नहीं कारण तेम कहेवामां महान् दोष लागे छे. जे विषे कह्युं छे के, धर्म नथी सामायिक नथी अने तेवा पुरुषने श्रमणसंघे संघनी बाहेर करवो. १ जे पर्युषणाकल्प नियतपणे रहेवानो सीत्तेर दिवसना प्रमाणनो कह्यो छे, ते पण कारणने अभावेज जाणवो. जो कोइ कारण होय तो चातुर्मासमां पण विहार करवो कल्पे छे. ते विषे कह्युं छे के, "अशिव थाय तेम होय, आहार मलतो न होय, अने राजाथी के रोगथी पराभव थतो होय, तो चातुर्मास्यमां पण बीजे विहार करवो कल्पे छे." स्थंडिल स्थान सारुं न होय. उपाश्रयमां जीवात बहु होय, कुंथवा थया होय अग्नि लाग्यो होय, अने सर्प रहेतो होय तो त्यांथी बीजे विहार करवो कल्पे छे. २ वली जो आवा कारणो होय तो चातुर्मास्य वीत्या पछी पण रहेवुं कल्पे छे—ते आ प्रमाणे—"वर्षाद रहेतो न होय अने मार्ग कादवथी भरेलो

होय, तो कार्त्तिकी पूर्णिमानो अतिक्रम थाय तो पण उत्तम मुनिर्ड रहे ले." २ वली उपर कहेला अशिव विगेरे दोष न होय तो पण संयमनो निर्वाह करवाने क्षेत्रना गुणोनी अन्वेषणा करवी. क्षेत्र जघन्य उत्कृष्ट अने मध्यम एवा त्रण प्रकारणनुं ले. तेमां जे चार गुणोथी युक्त होय ते जघन्य कहेवाय. ते चार गुणो आ प्रमाणे ले. ज्यां विहार भूमि एटले १ जिन प्रासाद होय २ ज्यां स्थंडिल (ठल्ले जवानुं) शुद्ध, निर्जिव अने कोई जोवे नहीं तेवुं होय. ३ ज्यां स्वाध्याय– सज्झाय करवानी सुलभ एटले अस्वाध्यायथी रहित होय, अने ४ ज्यां साधुर्डने आहार मलवो सुलभ होय. जे तेर गुणोथी युक्त होय ते उत्कृष्ट कहेवाय. ते गुणो आ प्रमाणे ले– १ ज्यां घणो कादव न होय, २ ज्यां घणां संमूर्छिम जीवो उद्भव थतां न होय, ३ ज्यां ठल्लानुं स्थान निर्दोष होय, ४ ज्यां रहेवानो उपाश्रय स्त्रीना संसर्ग विगेरेथी रहित होय. ५ ज्यां गोरस घणो मले तेम होय, ६ ज्यां लोक समूह महान् अने नजिक होय. ७ ज्यां वैद्यो नजिक होय. ८ ज्यां औषधो सुलभ होय. ९ ज्यां गृहस्थोना घर कुटुंबवालां अने धन धान्यादिकथी पूर्ण होय. १० ज्यां राजा नजिक होय. ११ ज्यां ब्राह्मणादिकथी मुनिर्डनुं अपमान न थतुं होय. १२ ज्यां भिक्षा सहेलाइथी मलती होय. अने १३ ज्यां स्वाध्याय शुद्ध रीते थतो होय. ते तेर गुणोथी युक्त उत्कृष्ट क्षेत्र ले. पूर्वे कहेला चार गुणोथी अधिक पांचथी बधा गुणोए युक्त अने तेरमा गुणथी उणुं एटले बारमा गुण पर्यंत एवुं मध्यम क्षेत्र ले. तेथी प्रथम उत्कृष्ट क्षेत्रमां, जो तेवुं न होय तो मध्यम क्षेत्रमां तेवुं पण न होय तो जघन्य क्षेत्रमां अने हालमां तो गुरुए आज्ञा करेला क्षेत्रमां साधुर्डए पर्युषणा कल्प करवो. उपर दर्शावेलो आ दश प्रकारनो कल्प जो दोषना अभावे कर्यो होय तो त्रीजा वैद्यना औषधनी जेम हितकारक थाय ले. ते विषे आ प्रमाणे कथा ले–कोइ राजाए पोताना पुत्रने भविष्यमां रोग न थाय तेवी चिकित्सा करवाने त्रण वैद्योने बोलाव्या. तेमां प्रथम वैद्य बोल्यो– मारुं औषध जो रोग होय तो तेने हणे ले अने रोग न होय तो गुणके दोष करतुं नथी. राजाए कह्युं, अग्निमां होम्या जेवुं आवुं औषध शा कामनुं? बीजो वैद्य बोल्यो–मारूं औषध

जो रोग होय तो तेने हणे छे अने जो रोग न होय तो दोष उत्पन्न करे छे राजाए कह्युं सुतेला स-र्पने जगाडवा जेवां आवा औषधथी शर्युं. त्रीजो वैद्य बोल्यो—

मारुं औषध जो शरीरे रोग होय तो तेने हणे छे, अने जो रोग न होय तो शरीरमां सौंदर्य वीर्य अने तुष्टि पुष्टि करे छे. राजाए कह्युं के, आ औषध सारुं छे. तेवी रीते आ कल्प पण जो दोष होय तो दोषने नाश करे छे अने दोषनो अभाव होय तो धर्मनुं पोषण करे छे तेथी ए प्राप्त थयेला पर्युष-णा पर्वमां मंगल निमित्त पांच दिवस सुधी कल्पसूत्र वांचवुं. जेम इन्द्र देवताओमां इन्द्र, ताराओमां चंद्र, न्यायीमां राम, स्वरूपवंतमां काम, रूपवती स्त्रीओमां रंभा, वाजित्रोमां भंभा, हस्तीओमां ऐरावण, साहसिकमां रावण, बुद्धिमान्मां अभय कुमार, तीर्थोमां शत्रुंज्य, गुणोमां विनय, धनुर्धारीमां अर्जुन, मंत्रोमां नवकार, अने वृक्षोमां आम्रवृक्ष छे तेम ते कल्पसूत्र सर्वशास्त्रोमां शिरोमणि पणाने धारण करे छे. तेविषे कह्युं छे के, जेम मंत्रोमां परमेष्टी मंत्र, तीर्थोमां शत्रुंजय, दानमां जीवदया. गुणोमां विनय, व्रतोमां ब्रह्मचर्य, नियममां संतोष, तपमां शमता, तत्वमां सम्यग दर्शन, अने श्री सर्वज्ञ प्र-णित कहेला सर्व पर्वोमां श्रीवार्षिपर्व (पर्युषणा) उत्कृष्ट छे. १ वली कह्युं छे के, अर्हंतथी बीजो कोइ देव नथी, मुक्तिथी बीजुं कोई पद नथी, श्री शत्रुंज्यथी बीजुं तीर्थ नथी अने श्रीकल्पसूत्रथी बीजुं कोइ शास्त्र नथी. २ आ कल्पसूत्र साक्षात् कल्पवृक्षज छे ते आनुपूर्वीना क्रम वगर कहेलुं छे, तेथी तेमां कहेलुं श्रीवीर प्रभुनुं चरित्र तेनुं बीज छे, श्रीपार्श्वनाथनुं चरित्र अंकुर छे श्रीनेमिचरित्र स्कंध (थडीआ) छे, श्री ऋषभ चरित्र शाखाओनो समूह छे, स्थविरावलीरूप पुष्पो छे, सामाचारीनुं ज्ञान ते सुगंध छे अने मोक्षप्राप्ति ए कल्पसूत्ररूपी कल्पवृक्षनुं फल छे. वली कह्युं छे के, वांच-वाथी, तेमा सहाय करवाथी, अने सर्व अक्षरो श्रवण करवाथी विधिपूर्वक आराधेलुं आ कल्पसूत्र आठ भवनी अंदर मोक्षदायक थाय छे." १ जेओ श्रीजिनशासन प्रभावना अने पूजामां परायण थई एकाग्र चित्तथी आ कल्पसूत्रने एकवीश वार सांभले छे, हे गोतम, ते आ संसार सागरने तरी जाय

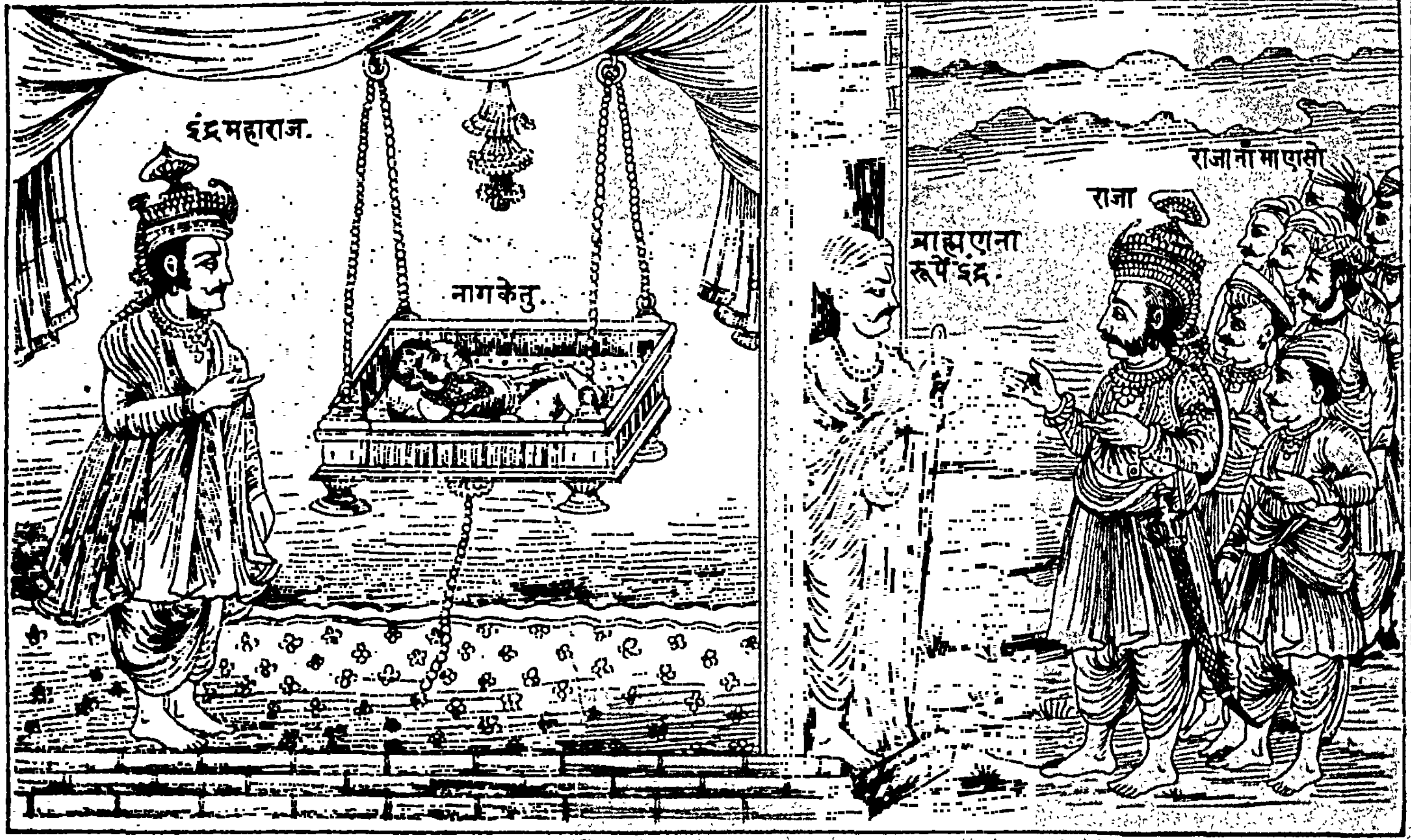
छे. १ आ प्रमाणे श्री कल्पसूत्रनो महिमा सांजली कष्टोथी अने धननो व्यय करवाथी साध्य एवा तपस्या, पूजा अने प्रजावना विगेरे धर्मना कार्योमां आलस्य करवुं न जोइए. कारणके, उपर कहेली तपस्यादि सर्व सामग्रीए युक्त एवुंज कल्पसूत्रनुं श्रवण वांछित फलने आपनारूं छे. जेम बीज पण जो तेनी साथे वृष्टि, वायु विगेरेनी सामग्री होय तोज फलनी सिद्धि करवामां समर्थ थाय छे तेशिवाय थतुं नथी एवी रीते–आ श्रीकल्पवृक्ष पण देव गुरु पूजा, प्रजावना अने साधर्मिक जक्ति प्रमुख सामग्री साथे श्रवण करवाथीज यथार्थ फलनुं हेतुरूप थाय छे. नही तो जेम "सर्व जिनवरोमां श्रेष्ठ एवा श्रीवर्द्धमान स्वामीने करेलो एक पण नमस्कार पुरुष अथवा स्त्रीने आ संसार सागरमांथी तारे छे." आवुं वचन सांजली प्रयासथी साध्य एवा कल्पसूत्रना श्रवणमां पण आलस्य थइजाय.

हवे ग्रंथकर्त्ता पुरुषना विश्वास उपरथी तेना वचननो विश्वास आवे एवो नियम छे तेथी आ कल्पसूत्र कर्त्ताने अहीं जणाववा जोइए. ते चौद पूर्वने जाणनारा युग प्रधान श्री जद्रबाहु स्वामी छे, तेउए दशाश्रुत स्कंधना आठमा अध्ययनपणाथी प्रसिद्ध प्रत्याख्यान प्रवाद नामना नवमा पूर्वमांथी उद्धार करी आ कल्पसूत्र रचेलुं छे. ते चौद पूर्वोनुं प्रमाण आ प्रमाणे छे– प्रथम पूर्व एक हस्तीना प्रमाणवाला मषीना पुंजथी लखाय तेवुं छे. बीजुं पूर्व बे हस्तीना प्रमाणना मषीना ढगलाथी लखाय तेवुं त्रीजुं चार हस्ती प्रमाणना मषीना पुंजथी लखाय तेवुं छे. चोथुं आठ हस्तीप्रमाण मषीपुंजथी लखाय तेवुं छे. पांचमुं शोल हस्तीप्रमाण मषी पुंजथी लखाय तेवुं छे. छठुं बत्रीश हस्तिप्रमाण मषी पुंजथी लखाय तेवुं छे. सातमुं चोसठ हस्तिप्रमाण मषीपुंजथी लखाय तेवुं छे. आठमुं बसोने अठ्यावीश हस्तिप्रमाण मषीपुंजथी लखाय तेवुं छे. नवमुं बसोने छप्पन हस्तिप्रमाणनुं छे. दशमुं पांचसो बार हस्तिउना प्रमाणनुं छे. एग्यारमुं एक हजारने चोविश हस्तिउना प्रमाणनुं छे. बारमुं बे हजारने अडतालीश हस्तीउना प्रमाणनुं छे. तेरमुं चार हजार ने छन्नुं हस्तिउना प्रमाणनुं छे चौदमु आठ हजार एकसो ने बाणुं हस्तीउना प्रमाणनुं छे. एकंदर सर्वे मली चौद पूर्वो सोल हजार त्रणसोने त्याशी हस्तीउना

प्रमाणवाळा मषीपुंजोथी लखी शकाय तेटला छे. तेनी स्थापनानुं यंत्र आ प्रमाणे छे– तेथी ए महापुरुषोए रचित होवाथी मानवा योग्य छे अने तेमां गंभीर अर्थ रहेलो छे.

कह्युं छे के "जो सर्व नदीओनी रेती एकठी करीए अने सर्व समुद्रोनुं जल एकत्र करीए तेओथी अनंतगणो एक सूत्रनो अर्थ थाय छे." १ मुखमां सहस्र जिव्हा होय अने जो हृदयमां केवलज्ञान होय तो पण मनुष्योथी आ कल्पसूत्रनुं महात्म्य कही शकाय तेम नथी. २ ते कल्पसूत्रने वांचवांमां अने सांजलवामां मुख्यरीते साधु अने साध्वीओ अधिकारी छे. तेमां पण कालथी रात्रिने विषे कालगणनादि विधिने करतारा साधुओने वाचन अने श्रवण बंने योग्य छे अने साध्वीओने तो निशीथ चूर्णी विगेरेमां कहेला विधिवडे दिवसे पण योग्य छे. श्रीवीरप्रभुना निर्वाण पछी नवसोने एंशी वर्ष अतिक्रम थतां बीजा मतप्रमाणे नवसोने त्राणुं वर्ष अतिक्रम थतां आनंदपुरमां पुत्रना मृत्युथी दुःखी थयेला ध्रुवसेन राजाना मनने समाधान करवाने आ कल्पसूत्र मोटा महोत्सव साथे सजानी समक्ष वांचवा आरंभ्युं हतुं, त्यारथी मांडीने चतुर्विध संघ तेना श्रवणनो अधिकारी थयो छे पण वांचवाने अधिकारी तो मात्र योग वेहेनार साधुछे आ वार्षिक पर्वमां कल्पसूत्रना श्रवणनी जेम आ पांच कार्य पण अवश्य करवा योग्य छे. ते आ प्रमाणे, पेहेलुं, कार्य चैत्यपरिपाटी एटले प्रत्येक चैत्ये वंदना अर्थे फरवुं, बीजु कार्य सर्व साधुओने वंदना करवी. त्रीजु कार्य सांवत्सरी प्रतिक्रमण करवुं. चोथुं कार्य परस्पर साधर्मी भाईओने खमाववुं अने पांचमुं कार्य अष्टम तप करवुं, ए पांच कार्यो पण कल्पसूत्रना श्रवणनी जेम इछित पदार्थने आपनारां छे, तेमज अवश्य कर्त्तव्य छे, वली श्रीजिन भगवंते ते करवानी आज्ञा करी छे एम जाणवुं. तेमां जे अठम तप छे ते त्रण उपवासथी बने छे, ते तप महा फलनुं कारण, ज्ञान, दर्शन चारित्ररूप त्रण रत्नने आपनार त्रण शल्यने उन्मूलन करनार, त्रण जन्मने पवित्र करनार, मन वचन अने कायाना दोषने शोषण करनार अने त्रण जगतमां श्रेष्ठपदने पमाडनार छे तेथी मोक्षपदना अभिलाषी एवा भविप्राणीओए ते अष्टम तप अवश्य करवा योग्य छे. ते उपर नागकेतुनुं दृष्टांत छेः– चंद्रकांता नामे नगरी

हती, तेमां विजयसेन नामे राजा हतो. ते नगरीमां श्रीकांत नामे एक व्यापारी रहेतो हतो, तेने श्रीसखी नामे स्त्री हती. ते स्त्रीनी बहु प्रार्थनाथी एक पुत्रनो प्रसव थयो हतो ते पुत्र बालक हतो तेवामां पर्युषणापर्व नजिक आव्युं. ते वखते तेना कुटुंबमां अष्टम तपनी वार्त्ता थती हती, ते सांजली जातिस्मरण थयुं अने स्तनपान करनारा पण ते बालके अष्टम तप कर्युं. ज्यारे अष्टम तप कर्युं एटले स्तनपानने नहीं करता ते बालकने वासी थयेला मालतीना पुष्पनी जेम ग्लानि पामेलो जोई. मातापिता अनेक उपाय करवा लाग्या अनुक्रमे ते बालक मूर्छा पाम्यो एटले तेने मृत्यु पामेलो जाणी तेना स्वजन, सगा कुटुंबीउंए तेने ज्रूमिउपर नाख्यो तेवामां राजा विजयसेने ते पुत्रने अने तेनाज डुःखथी तेना पिताने मृत्यु पामेलो जाणी तेनुं ड्रव्य ग्रहण करवा सुजटोने मोकल्या. आ तरफ धरणेंड्रनुं आसन ते बालकना अष्टम तपना प्रजावथी कंपित थयुं. तत्काल तेनुं वृत्तांत जाणी लई ज्रूमिउपर पडेला ते बालकने अमृतनां बांटाथी आश्वासन करी ब्राह्मणनुं रूप लई ड्रव्यने ग्रहण करतां ते राजाना सुजटोने अटकाव्या. ते सांजली राजा पण सत्वर त्यां आव्यो अने कह्युं, हे ब्राह्मण, जे अपुत्र मृत्यु पामे तेना ड्रव्यनुं ग्रहण अमे करीए बीए ए परंपराथी बे, तो ते तुं केम अटकावे बे ? ब्राह्मण रूपी धरणेंड्र बोल्यो—राजन्,आनो पुत्र जीवे बे. ते सांजलतांज राजा प्रमुख बोली उव्या के, ते केवी रीते जीवे अने क्यां बे पबी तेणे ज्रूमिमांथी साक्षात् निधिनी जेम ते बालकने जीवतो बताव्यो. सर्वे विस्मय पामी पुबवा लाग्या के, तमे कोण बो ? अने आ शुं ? त्यारे धरणेंड्र बोल्यो— हुं धरणेंड्र नामे नागराज बुं आ बालके अष्टम तप कर्यु हतुं, तेथी ए महात्मानी सहाय करवाने हुं आवेलो बुं. राजा प्रमुखे कह्युं, स्वामी, मात्र जन्म पामतावेतज तेणे अष्टम तप शी रीते कर्युं ? धरणेंड्र बोल्यो— राजन् आ बालक पूर्वजवे कोइ वणिकपुत्र हतो, बाल्यवयमांज तेनी माता मृत्यु पामी हती, तेने एक अपर माता हती ते तेने अति पीमा आपती हती. तेथी कंटाली तेणे पोताना मित्रने ते अपरमातानुं डुःख जणाव्युं. मित्रे तेने एवो उपदेश कर्यो के, तें पूर्वजवे तप कर्युं नथी, तेथीज आवो पराजव पामे बे. ते पबी ते


चित्र १
इंद्र महाराज.
नागकेतु.
ब्राह्मणना रूपे इंद्र.
राजा
राजाना माणसो

यथाशक्ति तप करवाने तैयार थयो. एक वखते 'हुं आवता पर्युषण पर्वमां अष्टम तप करीश' एवो मनमां निश्चय करी ते तृणनी झुंपडीमां सुइ गयो हतो. ते अवसर मेलवी तेनी अपरमाताए नजिक रहेला अग्निनो एक तणखो तेमां नाख्यो. एटले ते झुंपडी बली जतां साथे ते पण बलीने मृत्यु पाम्यो. अष्टम तपना ध्यानथी ते आ श्रीकांत श्रेष्ठीनो पुत्र थयो छे. तेथी करीने एणे पूर्वभवे चिंतवेलुं अष्टम तप हमणां बाल्यवयमां कर्युं छे. आ महापुरुष लघुकर्मी होइ आ भवमांज मुक्तिगामी थशे. तेथी ते यत्नथी पालन करवा योग्य छे. एथी तमने मोटो उपकार थशे." आ प्रमाणे कही धरणेंद्र तेना कंठमां पोतानो हार नाखी स्वस्थाने चाल्यो गयो.

पछी स्वजनोए आवी श्रीकांत शेठनुं मृतकार्य—उत्तरकार्य कर्युं अने तेनुं नागकेतु एवुं नाम पाड्युं. अनुक्रमे ते बाल्यवयथी जितेंद्रिय अने परम श्रावक थयो. एक वखते विजयसेन राजाए कोइ चोर न हतो ते छतां तेने चोरनुं कलंक लगाडी मारी नाख्यो आथी ते व्यंतर थयो ते व्यंतरे बधा नगरनो विघात करवाने एक मोटी शिला रची. वली राजाने पगना प्रहारथी रुधिरनुं वमन करावी सिंहासन उपरथी पृथ्वी उपर पाडी नाख्यो. आ जोई नागकेतुए वीचार्युं के, हुं जीवतां आ संघ तथा प्रासादनो विनाश थाय ते केम जोयुं जाय ? आवुं विचारी प्रासादना शिखर उपर चडी तेणे ते शिलाने हाथमां धरि राखी. ते पछी ते व्यंतर पण तेनी तपनी शक्ति सहन करी शक्यो नहीं एटले ते शिलाने संहारी नागकेतुने नमी पड्यो. तेना वचनथी राजाने पण उपद्रव रहित कर्यो. एक वखते ते नागकेतु जिनेंद्र पूजा करतो हतो तेवामां पुष्पनी अंदर रहेलो सर्प तेने डस्यो तथापि ते अव्यग्रपणे भावनारुढ थयो तेथी केवलज्ञानने प्राप्त थयो. पछी शासन देवताए तेने मुनिनो वेष अर्पण कर्यो अने ते चिरकाल विहार करवा लाग्यो. आ प्रमाणे नागकेतुनी कथा सांभली बीजाओए पण अष्टम तप करवामां यत्न करवो जोइए इति नागकेतु कथा.

हवे आ कल्पसूत्रमां त्रण वावत मुख्यपणे वांचवानी छे. ते विषे पुरिमचरिमाण ए गाथा छे तेनी

व्याख्या आ प्रमाणे छे– पुरिमचरिमाणत्ति एटले श्रीऋषभ अने वीर प्रभुनो आ कल्प एटले आचार छे के, वृष्टि थाउ के न थाउ पण अवश्य करीने पर्युषणा पर्व करवुं उपलक्षणथी जाणी लेवुं के, ते पर्युषणा पर्वमां कल्पसूत्र पण वांचवुं. एकतो ए आचार छे अने बीजुं ते मंगलनुं कारणरूप छे.

कदि शंका थाय के, श्रीवर्द्धमान तीर्थमां शामाटे कह्युं? तो कहे छे के, जे कारणमाटे अहिं श्री जिन भगवंतनां चरित्रो कहेलां छे. तेमज गणधरादि स्थविरावलीनां चरित्रो कहेलां छे वली ते सामाचारी कहेवाय छे. तेमां प्रथम अधिकारमां सर्व जिन चरित्रोमां नजिक उपकारीपणाने लीधे प्रथम श्रीवीर प्रभुनुं चरित्र वर्णन करतां श्रीभद्रबाहु स्वामी जघन्य तथा मध्यम वाचना रूप प्रथम सूत्र रचे छे–

तेणं कालेणं ए वाक्यथी ते परिनिव्वुडेभयवं त्यांसुधी संबंध छे. तेणंकालेणं केतां ते काले एटले अवसर्पिणी कालना चोथा आरापर्यंत मूलमां सर्व ठेकाणे जे 'ए' अक्षर छे तेवा कया लंकारने अर्थे छे. तेणंसमएणं विशिष्ट एवो जे कालनो विभाग ते समय कहेवाय छे. ते समयमां के जे समय श्रीवर्द्धमान स्वामी चववुं इत्यादि छ वस्तुउनुं कारण थयो हतो, ते समयमां 'समणे भगवं महावीरे' श्रमण एटले तपस्या करवामां तत्पर एवा भगवान् केता सूर्य अने योनि शिवाय भगना बार अर्थवाला, जेने माटे कहे छे के, "सूर्य, ज्ञान, माहात्म्य, यश, वैराग्य, मुक्ति, रूप, वीर्य, प्रयत्न, इच्छा, लक्ष्मी, धर्म, ऐश्वर्य अने योनि–ए चौद अर्थमां भग शब्द प्रवर्त्ते छे. आमां प्रथम सूर्य अने छेवटनो योनि– ए बे अर्थ वर्जवा. अहिं शंका थाय के, जे भग शब्दनो अर्थ योनि थाय ते कदिवर्जवायोग्य होय पण सूर्यवाचक भग शब्द शी रीते वर्जवो? ते सत्य छे अहिं उपमापणाथी सूर्य अर्थ थाय पण वत् प्रत्ययांत होवाथी भगवान् एटले सूर्यवान् एवो अर्थ लागतो नथी. तेथी ते वर्जित कर्यो छे, महावीर एटजे कर्मरुपी वैरीने पराभव करवाने समर्थ अर्थात् श्रीवर्द्धमान स्वामी ते वर्द्धमान स्वामी पंचहत्थुत्तरेहोछति एटले हस्तनक्षत्र उत्तर एवुं नक्षत्र उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रछे कारण के, गणत्रीमां तेउथी हस्त उत्तरमां छे ते उत्तराफाल्गुनीछे पांच स्थानोमा जेने ते पंचहस्तोतर एवा भगवंतवीर प्रभुछे.

त्ति एटले होता हवा. अहिं षट् कल्याणकवादी कहे छे के, "पंचहत्थुत्तरे साहणा परिनिवुडे" ए वचन उपरथी श्रीमहावीर प्रभुने छ कल्याणक संपन्न थाय, आ कहेवुं योग्य नथी कारण जो एम कहेशो तो "उसभेणं अरहाकोस लिए" इत्यादि जंबूद्वीप पन्नत्तिनुं वचन छे, तेथी श्रीऋषभ प्रभुने पण छ कल्याणक कही शकाशे. तमारे पण ते कल्याणकोने माटे तेम कहेवुं नहीं. तेथी जेम "पंच उत्तरा षाढे ए वाक्यमां नक्षत्रना साम्यथी राज्याभिषेक तेमां गणेलो छे. पण कल्याणक तो "अभीइ छठे" एवी रीते एनीसाथे पंचज छे. तेम अहिं पण पंचहत्थुत्तरे ए नक्षनी तुल्यताथी ते मध्ये गर्भनो अ पहार गणेलो छे. अने कल्याणक तो साइणापरिणिवुडे एनी साथे पांचज लीधा छे वली श्री आचारां गटीका विगेरेमां पंचहत्थुत्तरे ए वाक्यमां पांचवस्तुओज व्याख्यान करी छे कल्याणकनी व्याख्या करी नथी. श्रीहरिभद्रसूरिकृत यात्रा पंचाशक उपर श्री अभयदेवसूरिए करेली वृत्तिमां श्रीवीर प्रभुना पंच कल्याणक आ प्रमाणे कहेला छे. आषाढ मासनी शुक्ल छठे गर्भ संक्रम १ चैत्रमासनी शुक्ल तेरसे जन्म २ मागशरमासनी शुक्ल दशमीए व्रत ३ वैशाख शुक्ल दशमीए केवलज्ञान ४ अने कार्तिक मासनी अमासे मोक्ष. ५ एवी रीते श्रीवीर प्रभुना पंच कल्याणक कह्या छे. हवे जो छठुं कल्याणक गणातुं होत तो तेमां तेनो दिवस पण कह्यो होत. वली बीजुं एम पण छे के, छठुं कल्याणक जो गर्भापहार गणाय तो ते नीचा गोत्रना विपाकरूप, अतिनिंदवा योग्य अने आश्चर्यरूप छे तेने कल्याणक कहेवुं ते अनु चित छे. कदि अहिं शंका करशो के, पंचहत्थुत्तरे ए ठेकाणे गर्भापहार केम कह्यो? तो ते सत्य छे पण तेना समाधानमां कहेवानुं के, ज्यारे भगवंत वीरप्रभु श्रीदेवानंदानी कुक्षिमां अवतर्या अने माता त्रिशलाने प्रसव थयो ए असंगत छे तेने निवारवाने माटेज पंचहछोत्तरे ए वचनथी गर्भनो अपहार सूचव्यो छे. ते विषे हवे विशेष कहेवानी जरूर नथी.

एथी एम सिद्ध थयुं के, कल्याणक पंचज छे. ते आ प्रमाणे भगवंतने पंचहस्तोत्तरपणुं मध्यम वा चनाथी दर्शावे छे. हत्थुत्तराहिंतुए एटले उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां प्राणत नामना दशमा देवलोक

मांथी श्रीन्नगवंत चवेला ढे. चइत्तागब्नं वक्कंते एटले त्यांथी चवीने गर्न्नमां उत्पन्न थयेला ढे. हत्थुत्तराहिं एटले उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां गर्न्नमांथी गर्न्नमां संहार थयेला अर्थात् देवानंदाना गर्न्नथी त्रिशलाना गर्न्नमां मुक्त थयेला.

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां थयेला; हत्थुत्तराहिं मुंडे० एटले उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां मुंरु थयेला. ते ड्रव्य अने न्नावथी मुंरु थयेला. ड्रव्यथी मुंरु केशनो लोच करवाथी अने न्नावथी मुंड राग द्वेषना अन्नावथी अगार एटले घरमांथी नीकलीने अनगारिपणाने—साधुपणाने पव्वइ० केता प्राप्त थयेला ढे. तेम उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां अनंत केता अनंतवस्तुना विषयरूप, अणुत्तर केता अनुपम एवुं, निव्वाघा० केता व्याधातरहित, एटले नींत, ढादडी विगेरेनी स्खलना रहित एवुं.

निरावरण० केता समस्त आवरणथी रहित एवुं. कसिण० केता सर्व पर्यायथी युक्त एवुं अर्थात् सर्व वस्तुउंने जणावनारुं, परिपुण केता परिपूर्ण—सर्व अवयवोथी संपूर्ण—एवा प्रकारनुं वरं केता प्रधान एवुं केवलज्ञान अने केवल दर्शन जेने समुप्पुण० केता उत्पन्न थयेलुं ढे. वली उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां तेने प्राप्त थया ढे अने साइणापरिनिव्वु० केता स्वाति नक्षमत्रां न्नगवान् श्रीवीरप्रन्नु मोक्ष गया ढे. हवे विस्तारवाली वाचनाथी श्रीवीरप्रन्नुनुं चरित्र कहेढे—तेणे समएणं इत्यादिनो अर्थ पूर्वनी जेम जाणी लेवो.

जेसे गिह्मा० केता जे ग्रीष्मऋतुना समयनो चउढेमासे केता चोथो मास, अठमे पख्के केता आठमो पक्ष अर्थात् आषाढ मासनो शुक्लपक्ष. तस्सण आषाढ० केता ते आषाढ मासना शुक्ल पक्षनी ढठी पख्केणं० केता ढठीरात्रीए. रात्रि अर्थ लेवानुं कारण ए ढे के, दिवस अने रात्रिवडे अहोरात्रीना बंने पक्ष गणाय ढे. पुव्वरत्तावरत्त० केता पूर्वरात्र अने अपररात्रनो समय, ते आगल कहेवामां आवशे. अहिं पक्ष शब्दवडे रात्रि अर्थ लेवो. महाविजय० केता—

जेमां महान्—मोटो विजय ढे ते महाविजय कहेवाय. वली ते केहेवुं ढे. पुप्फत्तर० केता पुष्पोत्तर नामे ढे. ते पवर पुंमरीय० केता बीजा श्रेष्ठ विमानोमां पुंमरीक केता श्वेतकमलना जेवुं अर्थात् अति

श्रेष्ठ छे. ते महाविमाणा० केतां महाविमान केवुं छे. वीसंसागरोवम० केता वीश सागरोपम स्थिति वाळुं छे. तेमां देवताउनी उत्कृष्ट स्थिति विशसागरोपमनी रहे छे. जगवंत श्रीवीर प्रजुनी स्थिति पण एटलीज हती. हवे ते विमानथी आउक्ख० केतां आयुष्यना क्षयवडे, जवक्खयेणं केतां देवगति नाम कर्मना क्षयवडे, ठिइरकयेणं केता स्थिति एटले वैक्रिय शरीरमां रहेवुं तेना क्षयवडे, केता पूर्ण करवावडे, अणंतरं केता अंतर रहित एवुं चयंचइत्ता केता च्यवन करीने इहेव जंबु० केता आज जंबू द्वीपनामना द्वीपने विषे, जारहे वासे के० जरत क्षेत्रना दक्षिणार्द्ध जरतने विषे अवसर्पिणी काल एटले जे समये रूप रस विगेरेनी हानि थती जाय ते अवसर्पिणी काल कहेवाय, ते कालने विषे सुषमसुषमा नामनो चार कोटाकोटि सागरना प्रमाणवालो पेहेलो आरो उल्लंघन थया पछी सुषमा नामनो त्रण कोटाकोटि सागर प्रमाणवालो बीजो आरो आवे, ते उल्लंघन थया पछी सुषम दुःषमा नामनो बे कोटाकोटि सागर प्रमाणवालो त्रीजो आरो आवे, ते उल्लंघन थया पछी दुःषम सुषमा नामे चोथो आरो आवे, ते घणो उल्लंघन थयेलो छे कांइक उणो छे. ते कहे छे–

बेतालीश हजार वर्षोथी उणी एक सागर कोटा कोटि चोथा आरानुं प्रमाण छे. तेमां चोथा आराना पंचोतेर वर्ष अने साडासात मास शेष रहेतां श्रीवीरप्रजुनो अवतार थयो छे. श्रीवीरप्रजुनी आयुष्य बोंतेर वर्षनी छे. श्रीवीरप्रजुना निर्वाणथी त्रण वर्ष अने साडासात मास जातां चोथा आरानी समाप्ति थाय छे तेथी प्रथम जे बोंतेर हजार वर्ष कह्यां ते एकविश एकविश हजारना प्रमाणवाला पांचमा अने छठा आरासंबंधी जाणवा.

एकवीश तीर्थंकरो इक्ष्वाकु कुलमां उत्पन्न थयेला अने काश्यपगोत्री छे अने बावीशमां मुनिसुव्रत अने त्रेवीशमां नेमिजगवंत ते हरिवंश कुलमां उत्पन्न थयेला अने गौतमगोत्री छे. एवीरीते ते त्रेवीश तीर्थंकरो अतीत थया पछी श्रमण जगवंत श्री महावीर थया छे जे प्रजु चरम-छेल्ला तीर्थंकर छे अने जे पूर्वना तीर्थंकरोए निर्देश करेला छे.

मांथी श्रीभगवंत चवेला छे. चइत्तागब्भं वक्कंते एटले त्यांथी चवीने गर्भमां उत्पन्न थयेला छे. हत्थुत्त राहिं एटले उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां गर्भमांथी गर्भमां संहार थयेला अर्थात् देवानंदाना गर्भथी त्रि शलाना गर्भमां मुक्त थयेला.

उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां थयेला; हत्थुत्तराहिं मुंडे० एटले उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां मुंड थयेला. ते द्रव्य अने भावथी मुंड थयेला. द्रव्यथी मुंड केशनो लोच करवाथी अने भावथी मुंड राग द्वेषना अभावथी अगार एटले घरमांथी नीकलीने अनगारिपणाने–साधुपणाने पव्वइ० केता प्राप्त थयेला छे. तेम उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां अनंत केता अनंतवस्तुना विषयरूप; अणुत्तर केता अनुपम एवुं, निव्वा घा० केता व्याधातरहित, एटले भींत, छादडी विगेरेनी स्खलना रहित एवुं.

निरावरण० केता समस्त आवरणथी रहित एवुं. कसिण० केता सर्व पर्यायथी युक्त एवुं अर्थात् सर्व वस्तुओने जणावनारुं, पडिपुण केता परिपूर्ण–सर्व अवयवोथी संपूर्ण–एवा प्रकारनुं वरं केता प्रधान एवुं केवलज्ञान अने केवल दर्शन जेने समुप्पुण० केता उत्पन्न थयेलुं छे. वली उत्तराफाल्गुनी नक्षत्रमां तेने प्राप्त थया छे अने साइणापरिनिव्वु० केता स्वाति नक्षमत्रां भगवान् श्रीवीरप्रभु मोक्ष गया छे. हवे विस्तारवाली वाचनाथी श्रीवीरप्रभुनुं चरित्र कहेछे–तेणे समएणं इत्यादिनो अर्थ पूर्वनी जेम जाणी लेवो.

जेसे गिह्मा० केता जे ग्रीष्मऋतुना समयनो चउछेमासे केता चोथो मास, अठमे पख्के केता आ ठमो पक्ष अर्थात् आषाढ मासनो शुक्लपक्ष. तस्सण आषाढ० केता ते आषाढ मासना शुक्ल पक्षनी छठी पख्केणं० केता छठीरात्रीए. रात्रि अर्थ लेवानुं कारण ए छे के, दिवस अने रात्रिवडे अहोरात्रीना बंने पक्ष गणाय छे. पुव्वरत्तावरत्त० केता पूर्वरात्र अने अपररात्रनो समय, ते आगल कहेवामां आव शे. अहिं पक्ष शब्दवडे रात्रि अर्थ लेवो. महाविजय० केता–

जेमां महान्–मोटो विजय छे ते महाविजय कहेवाय. वली ते केहेवुं छे. पुप्फत्तर० केता पुष्पोत्तर नामे छे. ते पवर पुंडरीय० केता बीजा श्रेष्ठ विमानोमां पुंडरीक केता श्वेतकमलना जेवुं अर्थात् अति

श्रेष्ठ छे. ते महाविमाणा० केतां महाविमान केवुं छे. वीसंसागरोवम० केता वीश सागरोपम स्थिति वालुं छे. तेमां देवताउनी उत्कृष्ट स्थिति विशसागरोपमनी रहे छे. जगवंत श्रीवीर प्रजुनी स्थिति पण एटलीज हती. हवे ते विमानथी आउक्ख० केतां आयुष्यना क्षयवडे, जवक्खयेणं केतां देवगति नाम कर्मना क्षयवडे, ठिइक्खयेणं केता स्थिति एटले वैक्रिय शरीरमां रहेवुं तेना क्षयवडे, केता पूर्ण करवावडे, अणंतरं केता अंतर रहित एवुं चयंचइत्त केता च्यवन करीने इहेव जंबु० केता आज जंबू द्वीपनामना द्वीपने विषे, जारहे वासे के० जरत क्षेत्रना दक्षिणार्द्ध जरतने विषे अवसर्पिणी काल एटले जे समये रूप रस विगेरेनी हानि थती जाय ते अवसर्पिणी काल कहेवाय, ते कालने विषे सुषमसुषमा नामनो चार कोटाकोटि सागरना प्रमाणवालो पेहेलो आरो उल्लंघन थया पठी सुषमा नामनो त्रण कोटाकोटि सागर प्रमाणवालो बीजो आरो आवे, ते उल्लंघन थया पठी सुषम दुःषमा नामनो बे कोटाकोटि सागर प्रमाणवालो त्रीजो आरो आवे, ते उल्लंघन थया पठी दुःषम सुषमा नामे चोथो आरो आवे, ते घणो उल्लंघन थयेलो छे कांइक जणो छे. ते कहे छे–

बेतालीश हजार वर्षोथी उणी एक सागर कोटा कोटि चोथा आरानुं प्रमाण छे. तेमां चोथा आराना पंचोतेर वर्ष अने साडासात मास शेष रहेतां श्रीवीरप्रजुनो अवतार थयो छे. श्रीवीरप्रजुनी आयुष्य बोंतेर वर्षनी छे. श्रीवीरप्रजुना निर्वाणथी त्रण वर्ष अने साडासात मास जातां चोथा आरानी समाप्ति थाय छे तेथी प्रथम जे बोंतेर हजार वर्ष कह्यां ते एकविश एकविश हजारना प्रमाणवाला पांचमा अने छठा आरासंबंधी जाणवा.

एकवीश तीर्थंकरो इक्ष्वाकु कुलमां उत्पन्न थयेला अने काश्यपगोत्री छे अने बावीशमां मुनिसुव्रत अने त्रेवीशमां नेमिजगवंत ते हरिवंश कुलमां उत्पन्न थयेला अने गौतमगोत्री छे. एवीरीते ते त्रेवीश तीर्थंकरो अतीत थया पठी श्रमण जगवंत श्री महावीर थया छे जे प्रजु चरम-छेल्ला तीर्थंकर छे अने जे पूर्वना तीर्थंकरोए निर्देश करेला छे.

एटले श्रीवीरप्रभु उत्पन्न थशे एम कहेला वलि जे भगवंत ब्राह्मणकुंड नामना नगरमां कोडाल गोत्री एवा ऋषभदत्त ब्राह्मणनी स्त्री देवानंदा ब्राह्मणी के जे जालंधर गोत्री छे तेनी कुक्षिमां गर्भपणाथी उत्पन्न थया हता. ते क्यारे उत्पन्न थया हताके, पूर्वरात्र अने अपर रात्रना समयमां अर्थात् मध्यरात्रे उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र चंद्रना योगने प्राप्त थतां, दिव्यआहार, दिव्यभव अने दिव्यशरीरनो त्याग करवाथी ज्यारे भगवंत गर्भमां उत्पन्न थया त्यारे ते त्रणज्ञानथी युक्त हता. 'हुं च्यवीश' एवुं जाणता अर्थात् पोताना च्यववानो भविष्यकाल जाणता हता.

पोते चवे छे ते वखते जाणता नथी कारणके, ते एकसमये थाय छे अने 'हुं च्यव्यो' एम जाणे छे. जे रात्रे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर प्रभु देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षिमां गर्भपणे उत्पन्न थया ते रात्रिए ते देवानंदा ब्राह्मणी पोतानी शय्यामां अति निद्रा लेती नहती तेम अतिशे जाग्रतपण नहती एटले ते अल्पनिद्रा करती हती तेवखते तेणी ए आवा प्रकारना एटले जेमनुं स्वरूप हवे कहेवामां आवशे एवा, वली ते स्वप्ना केवा छे, जे उदार-श्रेष्ट छे कल्याणना हेतु छे, उपद्रवने हरनारा छे, धनना हेतु छे. मंगलिक छे, अने शोभाए युक्त छे एवा चौद महास्वप्नोने जोइ ते देवानंदा ब्राह्मणी जागी गयां-ते कया कया स्वप्नो तेविषे गयवसह इत्यादि गाथा कहे छे. आ गाथा सेहेली छे, तेमां विशेष कहेवानुं आप्रमाणे छे अभिषेक एटले लक्ष्मी संबंधी अभिषेक जाणवो.

पद्म-कमलथी उपलक्षित एवुं सरोवर. विमान एटले देवसंबंधी भवन. एटले घर—अहिं जे प्रभुनो जीव स्वर्गथी अवतरे तेनी माता विमान जुवे छे अने जे प्रभुनो जीव नरकमांथी आवे तेनी माता भवन घरने जुवे छे. ते बंनेमांथी एकनुं दर्शन होय तेथी चौदज स्वप्न थाय छे शिखी एटले धुमाडा वगरनो अग्नि लेवो. एवीरीते ते देवानंदा ब्राह्मणी यथोक्त चौद स्वप्नोने जोइ जाग्रत थयां.

तेपछी ते देवानंदा ब्राह्मणी हर्ष तथा विस्मय पाम्यां अने परम संतोषने प्राप्त थया. वली चित्तमां आनंद पाम्यां. तेमना हृदयमां प्रीति थइ, मनमां परम तुष्टि थई, हर्षना वशथी तेमनुं हृदय विस्तार

चित्र २





पामी गयुं. मेघना जलनी धाराथी सिंचन थयेलुं कदंबनुं* पुष्प जेम प्रफुल्लित थाय तेम जेना रोमकूप प्रफुल्लित थया. आवीरीते थयेली महानंदा ब्राह्मणी ते स्वप्नोनुं स्मरण करवा लाग्यां. ते स्मरण करीने शय्यामांथी बेठा थयां. पछी ते अत्वरित एटले मानसिक उत्साहथी रहित एवी अचपल एटले काया नी चपलताथी वर्जित एवी असंभ्रांत एटले स्खलनावगरनी अविलंबित एटले विलंब रहित एवी अने राजहंसना जेवी गतिवडे ज्यां रुषभदत्त ब्राह्मण हता, त्यां ते आव्यां, त्यां आवीने रुषभदत्त ब्राह्मणने जय अने विजयथी वधावे छे एटले आशीष आपे छे. तेमां स्वदेशमां जय अने परदेशमां विजय सम जवो ते वधावीने भद्रासन उपर बेठा, ते पछी श्रमने टाली आश्वासन अने क्षोभना अभावथी विश्वा सने प्राप्त करी तेथीज सुखे करी उत्तम आसनने प्राप्त थया.

पछी देवानंदाए पोताना मस्तकउपर अंजलि करी आप्रमाणे कह्युं,जे अंजलि बे हाथवडे करेली हती जेमां दश नख उदय पाम्या हता अने जेनुं प्रदक्षिण भ्रमण मस्तकउपर करेलुं हतुं. हे देवानुप्रिय, आ चौद स्वप्नानुं कल्याणकारी शुं फल थशे ते हुं विचारुं छुं. अहिं फल एटले पुत्रादि अने वृत्ति जीव ननो उपाय प्रमुख, तेमांथी कयुं फल थशे ? ते पछी ते रुषभदत्त ब्राह्मणे देवानंदा पांसेथी ए अर्थ सांभली मनमां अवधारी हर्षादि प्राप्त करी स्वप्नानी धारणा करी, धारणा करीने अर्थ विचारणा करी, अर्थ विचारणा करीने पोतानुं स्वाभाविक मतिपूर्वक एवुं जे बुद्धि विज्ञान तेवडे करीने अहिं जे अ नागत कालनो विषयरूप थाय ते मति अने वर्त्तमान कालनो विषय थाय ते बुद्धि कहेवाय छे.

"विषयने प्राप्त न करे ते मति कहेवाय अने सांप्रतकालने दर्शावनारी ते बुद्धि कहेवाय. जे भूता र्थने बतावे ते स्मृति जाणवी अने त्रणे कालने दर्शावे ते प्रज्ञा कहेवाय." १ अतीत-भूत अने अना गत-भविष्य कालनी वस्तुउना विषयमां आवे ते विज्ञान कहेवाय. ते पछी ते स्वप्नाना अर्थनो निश्चय करे छे, ते निश्चय करीने तेउ देवानंदा ब्राह्मणी प्रत्ये बोल्या- ते शुं बोल्या ते कहे छे- हे देवानुप्रिये,

* कदंबनुं वृक्ष मेघनी धाराथी प्रफुल्लित थाय छे.

तमे उदार, कल्याणकारी, धनदायक, मांगल्यरूप अने शोभायुक्त स्वप्ना जोयां छे. ते स्वप्नां आरोग्य, संतोष, दीर्घआयुष्य, कल्याण एटले उपद्रवनो अभाव, मंगल एटले वांछित फलनी प्राप्ति ए सर्व वस्तुओने करनारा स्वप्नो तमे जोया छे. ते आ प्रमाणे– हे देवानुप्रिये, तेथी तमने अर्थलाभ, भोगलाभ, पुत्रलाभ अने सुखलाभ थशे. तमने नवमास पूरा अने साडासात दिवस गया पछी तमे एक पुत्रने जन्म आपशो. ते पुत्र केवो थशे ते कहे छे.

जेना हाथ अने पग कोमल छे अने जेनां शरीरमां लक्षणवाली अने स्वरूपथी परिपूर्ण एवी पांच इंद्रीयो छे तेमज लक्षण अने व्यंजनना गुणवालो छे एवो पुत्र थशे. अहीं लक्षण एटले छत्र चामरादि जाणवां. ते चक्रवर्त्ती अने तीर्थंकरोने एक हजारने आठ होय छे. बलदेव अने वासुदेवने एकसो आठ होय छे अने बीजा भाग्यवानने बत्रीश लक्षणो होय छे– ते बत्रीश लक्षणो आ प्रमाणे छे–

"छत्र, कमल, धनुष्य, रथ, वज्र, काचबो, अंकुश, वापिका, स्वस्तिक (साथीओ) तोरण, सरोवर, केशरीसिंह, वृक्ष, चक्र, शंख, हस्ती, समुद्र, कलश, मेहेल, मत्स्य, जव, यज्ञस्तंभ, स्तूप, (चोतरो) कमंडल, पर्वत, चामर, दर्पण, बलद, पताका, लक्ष्मीनो अभिषेक, उत्तम माला अने मयुर, ए बत्रीश लक्षणो पुण्यवंत जीवोने होय छे." ए लक्षणवाला पुरुषनां सात लक्षण राता, छ उंचा, पांच सूक्ष्म अने लांबा, त्रण विशाल, त्रण लघु अने त्रण गंभीर–एवी रीते बत्रीश लक्षणो पुरुष कहेवाय छे. तेमां ते नख, पग, हाथ, जिभ, होठ, तालवुं अने नेत्रना खूणा. ए सात रातां श्रेष्ठ छे. काख, हृदय, डोक, नासिका, नख अने मुख–ए छ उन्नत–उंचा श्रेष्ठ छे. दांत, चामडी, केश, आंगलीना पर्व अने नख ए पांच सूक्ष्म श्रेष्ठ छे. नेत्र, हृदय, नासिका, हडपची अने भुजा– ए पांच लाबा श्रेष्ठ छे. ललाट, छाती, अने मुख– ए त्रण विस्तारवाला उत्तम छे. डोक, जंघा अने लिंग–इंद्रिय–ए त्रण लघु सारां छे. सत्व, स्वर अने नाभि–ए त्रण गंभीर सारा छे–ए बत्रीश लक्षणो थयां. शरीरनो अर्द्ध भाग मुख छे अथवा सर्व शरीर मुख कहेवाय छे, तेनाथी नासिका श्रेष्ठ छे अने नासिकाथी लोचन श्रेष्ठ छे. १ जेवां लो

वन होय तेवुं शील समजवुं. जेवी नासिका तेवी सरलता समजवी. जेवुं रूप तेवुं द्रव्य जाणवुं अने जेवुं शील तेवा गुण जाणी लेवा. २ जे पुरुष अति ठींगणो होय, अति लांबो होय, अति जाडो होय, अति डुबलो होय, अतिशे कालो होय अने अतीशे गोरो होय; ते ब जातना पुरुषोमां सत्व रहेलुं होय छे. ३ सद्धर्मी, स्वरूपवान्, नीरोगी, सारा स्वभाववालो, सारी नीतिवालो, अने कवि थयेलो पुरुष पोते स्वर्गमांथी आव्यो छे अने पोताने पाछुं स्वर्गमां जवानुं सूचवे छे. ४ दंभवगरनो दयालु, दानी, इंद्रियोने दमन करनार, डाह्यो, अने हंमेसा सरल एवो पुरुष मनुष्य योनिमांथी आवी पाछो मनुष्य योनिमां जाय छे. ५ माया, लोभ, क्षुधा, आलस्य, अने घणो आहार इत्यादि चेष्टाउथी पुरुष पोते तिर्यंच योनिमांथी आवेलो छे एम सूचवे छे. ६

जे पुरुष रागी, स्वजननो द्वेषी, दुर्भाषा बोलनार, अने मूर्खनो संग करनार होय ते पोते नरकमांथी आवेलो सूचवे छे, ७ पुरुषोने दक्षिण भागमां जो आवर्त्त होय तो ते शुभ फल आपे छे. वाम भागमां होय तो ते अतीनिंद वा योग्य छे अने ते शिवायना भागमां होय तो मध्यम फल आपे छे ८ जे पुरुषोना हाथमां रेखा थोडी होय अथवा घणी होय तो तेउ अल्प आयुष्य वाला, निर्धन अने दुःखी थाय; तेमां कांइपण संशय नथी ए जे पुरुषनी अनामिका (तचली आंगलीनी पांसेनी) आंगलीनी अंत्यरेखाथी कनिष्ठा आंगली जो अधिक होय तो ते पुरुषने धननी वृद्धि थाय अने मोशाल पक्ष घणो होय. १० मणिबंधथी जे रेखा चाले छे ते पितानी रेखा छे अने करभ (टचली आंगलीनी नींचेनो भाग) थी जे बे रेखा चाले छे ते वैभव अने आयुष्यनी रेखाउ छे, ते त्रण रेखाउ तर्जनी (अंगोठांपासेनी आंगली) अने अंगोठानी वचे जइ मले छे. ११

जेउने ते त्रण रेखाउ संपूर्ण अने दोष वगरनी होय तेउने गोत्र, कुल, धन, अने आयुष्यनुं संपूर्ण सुख मले छे, जो तेवुं न होय तो न्यून सुख मले छे. १२ आयुष्यनी रेखा जेटली आंगलीउने उल्लंघन करी आगल जाय तेटला पच्चीश वर्षनी आयुष्य विद्वानोए जाणी लेवी १२ जो जमणा हाथना

अंगोठाना मध्यमां जव रेखा होय तो विद्या, प्रख्याति अने वैभव प्राप्त थाय छे अने ते पुरुषनो जन्म शुकल पक्षमां समजवो १४ जे पुरुषनी आंखो राती होय तेने स्त्री त्यजी शकती नथी, जेनी आंखो सुवर्णना जेवी पीली होय तेने द्रव्य त्यजतुं नथी जेना हाथ लांबा होय तेने ऐश्वर्य छोडतुं नथी अने जेना शरीरमां मांसनी पुष्टि होय तेने सुख छोडतुं नथी १५ जो नेत्रमां स्नेह (चीकास) होय तो सौ भाग्य होय, जो दांतमां स्नेह होय तो सारा भोजनो मले अने जो शरीरमां स्नेह होय तो सुख मले अने जो पगमां स्नेह होय तो वाहन प्राप्त थाय. १६

जेनुं उर (छाती) विशालहोयते धन धान्यनो भोगी थाय, जेनुं मस्तक विशाल होय तेउत्तम राजा थाय, जेनी कटीनो भाग विशाल होय तेने स्त्री अने पुत्रो घणा थाय अने जेना पग विशाल होय ते हंमेसा सुखी थाय १७ आप्रमाणे लक्षणो जाणवा, हवे व्यंजन कहे छे, व्यंजन एटले शरीर उपर जे मसा अने तिलक विगेरे होय छे ते, लक्षण तथा व्यंजनना गुणोथी युक्त एवो तेकुमार हतो. वली ते मान तथा उन्मानना प्रमाणने प्राप्त थयो हतो. तेमां जलना भरेला कुंडनी अंदर एक पुरुषने प्रवेश करावे पछी जे जल बाहेर नीकलीजाय तेटलुं जल द्रोण मान थाय त्यारे ते पुरुष मान प्राप्त कहेवाय अने जो ताजवा उपर अर्धभारना मानवालो थाय तो ते उन्मान प्राप्त कहेवाय हवे जे भार कह्यो तेनुं मान आप्रमाणे छे, “छ सर्षवना दाणानो एक जवथाय त्रणजवनी एक चणोठी थाय. त्रण चणोठीनो एक वाल थाय अने सोलवालनुं एक गद्याणुं थाय १ दश गद्याणानो एक पल थाय अने दोढसो गद्याणानो एक मण थाय. दश मणनी एक घटिका थाय एम विद्वानो कहे छे दश घटिकानो एक भार थाय. प्रथम जे कह्युं के ते दोढसोनो एक मण थाय त्यां गदीआणा लेवा पल लेवा नहीं जो दोढसो पलनो मण थाय एम लइए तो भारना अठ्योतेर मण थइजाय अने तेना अर्धभागे उंगणचालीश मण थाय एथी एटलुं शरीरनुं मान संभवे नहीं जो दोढसो गद्याणानो मण लइए तो भारना चालीश शेरना मान वडे कांइक अधिक एवा पोणा आठमण थाय अने तेनुं अर्धु मान एटले पोणाचारमण अने पांचशेरनुं शरीरनुं प्रमाण संभवे छे.

अने तेथी दोढसो गद्याणानो मण पण संभवे कोइ देशमां कांइक ऊणा त्रणशेरने पण मण कहेवानो व्यवहार छे. हवे प्रमाण विषे कहे छे. पोताना अंगुलवडे एकसो आठ अंगुलनी उंचाइवालो उत्तम पुरुष कहेवाय छे मध्यम अने हीन पुरुष छन्नु तथा चोराशी आंगलनी उंचाइवाला होय छे. अहिं जे उत्तम पुरुष कह्यो ते तीर्थंकरथी अन्य लेवो कारण के, जे तीर्थंकर होय ते बार आंगलनी मस्तकनी पाघडी सुधा गणीए तो एकसोने वीश आंगल उंचा होय छे. हवे तेवी रीतना मान, उन्मान अने प्रमाणथी परिपूर्ण एवा उत्पन्न थया छे.

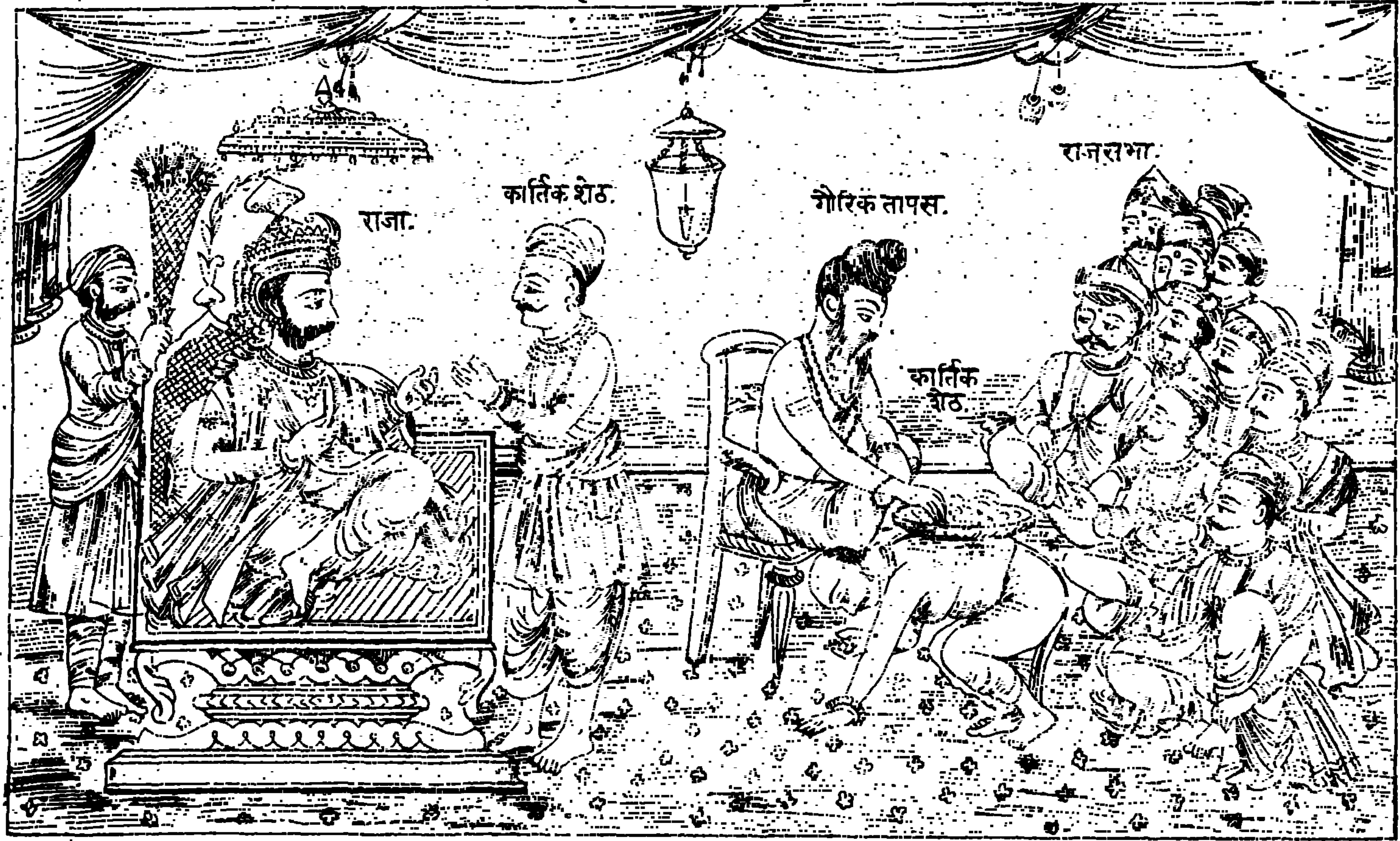
सर्व मस्तक प्रमुख अंग जेमां शोभित छे. एवुं सुंदर जेनुं शरीर छे एवो वली ते केवो बालक के जेनी आकृति चंद्रना जेवी रमणीय छे जे मनोहर छे जेनुं दर्शन प्रिय छे अने जेनुं स्वरूप सुंदर छे एवाबालकने हे देवानुप्रिये, तमे जन्म आपशो. ए हवे बालक केवो थशे ते कहेछे– ज्यारे ते बालभा वने छोडी देशे अर्थात् आठ वर्षनो थशे, त्यारे ते केवो थशे के जेनामां सर्व विज्ञान परिणाम पामशे. अनुक्रमे ज्यारे यौवन वयने प्राप्त थशे त्यारे ते ऋग्वेद विगेरेनो स्मारक थशे. अहिं मूलमां धातु आत्मनेपदी छे ते छतां जे आ प्रयोग कर्यो छे ते विचारवा जेवो छे ऋग्वेद ए पदमां छठी विभक्तिना बहुवचननो लोप थयेलो छे. ते ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद अने अथर्ववेद केवा छे के जेमां इतिहास एटले पुराण पांचमो छे अने निघंटु केता नाम संग्रह कोश जेमां छठो छे. ते वेद केवा के जे अंग तथा उपांगोए सहित छे. तेमां शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, ज्योतिष अने निरुक्ति– ए छ अंग कहेवाय छे. उपांग एटले अंगना अर्थने विस्तार करनारा, वली ते वेद केवा छे, तात्पर्यथी युक्त छे, एवा पूर्वे कहेला चार वेदना जे स्मारक एटले बीजाउने विस्मरण थयेल तेमने स्मरण करावनार छे, वली ते बालक वारक छे एटले बीजाउ अशुद्ध पाठ भणे तेमने निषेध करनार छे. तेमज ते बालक ते वेदोना धारक छे. एटले धारण करवाने समर्थ छे. हे देवानुप्रिये, ते बालक एवो थाशे.

वली ते बालक केवो थशे के पूर्वे कहेला छ अंगने विचार करनार थशे अहिं विद् धातुनो अर्थ

जाणवुं लइए तो पुनरूक्ति दोष आवे छे. वली ते षष्टितंत्र एटले कपिल शास्त्री (सांख्य) मां पंडित थशे. तेमज गणित शास्त्रमां निपुण थशे. गणित शास्त्री एटले गणित विद्या जेम के, "एक स्तंभ एवो छे के, जे अर्धो पाणिमां छे तेनो बारमो भाग कादवमां छे, छठो भाग रेतीमां दबायो छे अने ते दोढ हाथ बाहेर देखाय छे. ते स्तंभनुं मान केटलुं होवुं जोइए ते विचारीने कहो ? तेना जवाबमां गणित उपरथी सिद्ध थाय के, ते स्तंभ छ हाथनो छे. अहिं मूलमां कोइ ठेकाणे 'सिकखाण' एवो पण पाठ छे. सिकखाण शब्दवडे आचार ग्रंथ जाणवो. शिक्षा एटले अक्षरोनी मर्यादानो ग्रंथ. कल्प एटले यज्ञादिविधिनुं शास्त्र तेमां ते निपुण थशे व्याकरण एटले शब्दशास्त्र ते विश व्याकरणो छे ते आ प्रमाणे– ऐंद्र व्याकरण, जैनेंद्र व्याकरण, सिद्ध हेमचंद्र व्याकरण, चांद्र व्याकरण, पाणिनीय व्याकरण, सारस्वत व्याकरण, शाकायन व्याकरण, वामन व्याकरण, विश्रांत व्याकरण, बुद्धिसागर व्याकरण, सरस्वती कंठाभरण व्याकरण, विद्याधर व्याकरण, कलापक व्याकरण, भीमसेन व्याकरण, शैव व्याकरण, गौड व्याकरण, नंदि व्याकरण, जयोत्पल व्याकरण, मुष्टि व्याकरण अने जयदेव व्याकरण– ए वीश व्याकरणो छे.

ते व्याकरणोमां, छंद शास्त्रमां, निरूक्त एटले पदनी व्युत्पत्तिवाली टीका विगेरेमां, ज्योतिष शास्त्र मां अने बीजा ब्राह्मणोने हितकारी एवा घणां शास्त्रोमां तेमज परिव्राजक–संन्यास संबंधी नय एटले आ चार शास्त्रोमां ते घणो निपुण थशे. हे देवानुप्रिये, तमे तेवां उदार स्वप्नां दीठां छे.

एम करीने ते स्वप्नानी वारंवार अनुमोदना करे छे. तएण ए वाक्यथी मांडी वयासि त्यांसुधी सुगम छे. ते पछी ते देवानंदा ब्राह्मणी आ प्रमाणे बोल्या–हे देवानुप्रिय, तमे कह्युं ते एमज छे, हे देवानुप्रिय, ते यथार्थ छे अने ते संदेहवगरनुं छे. ते इच्छेलुं छे, ते अर्थमां प्रतिष्टित छे. ते उभय धर्म एटले इच्छित अने प्रतिष्ठित छे. आ तमे कहेलो अर्थ सत्य छे. तमारा मुखमांथी पडतांज में ग्रहण कर्यो छे. तमे जे कहो छो ते तेमज छे–एम कहीने ते देवानंदा ते स्वप्नाने सारी रीते अंगीकार करे छे. पछी



पा. १९.

ब्राह्मणनी साथे उदार एवा मनुष्य संबंधी जोगने जोगवता थका विहार करे छे. १३ ते स-
मये ते शक्रनामे इंद्र विहार करवाने तत्पर थयो ए संबंध जाणवो. ते इंद्र केवो छे ते कहेछे, ते शक्र
नामना सिंहासननो अधिष्ठाता छे. ते देवताउनो स्वामी छे. ते देवताउने विषे राजा एटले कांतिप्रमुख
गुणोथी विराजमान छे. ते वज्रपाणि एटले हाथमां वज्रने धारण करनार छे. ते पुरंदर एटले दैत्योना
नगरोने विदारण करनार छे. वली ते शतक्रतु छे एटले श्रावकनी पांचमी प्रतिमा वहेवारूपी सोक्र-
तु—यज्ञ जेणे करेला छे. कार्तिक श्रेष्ठीना जवनी अपेक्षाए आ कहेल छे. ते कथा आ प्रमाणे छे— पृ-
थिवीजूषण नगरमां प्रजापालनामे राजा छे अने कार्तिक नामे श्रेष्ठी छे तेणे श्रावकनी सोपडीमा वही
हती तेथी ते शतक्रतु एवा नामथी विख्यात थयो हतो. एक वखते गैरिक नामे एक संन्यासी एक
मासनो उपवासी त्यां आवी चड्यो. एक कार्तिक श्रेष्ठीविना सर्वेलोको तेना जक्त थया. ते जाणी पेलो
गैरिक संन्यासी कार्त्तिक श्रेष्ठीनी उपर रोष पाम्यो एक वखते राजाए ते संन्यासीने जोजन माटे नि-
मंत्रण कर्युं त्यारे तेणे कह्युं के, जो कार्तिक श्रेष्ठी पीरसे तो हुं तारे घेर पारणुं करुं राजाए ते प्रमाणे
अंगीकार करी कार्तिक श्रेष्ठीने कह्युं के, तुं मारे घेर आवी ते गैरिक संन्यासीने जोजन कराव्य. का-
र्त्तिक श्रेष्ठीए कह्युं, हे राजा तमारी आज्ञाथी हुं जोजन करावीश. पछी ते कार्त्तिक शेठे गैरिकने जो-
जन करावामांड्युं. जोजन करतां गैरिके (तुं निर्लज छुं) एम जणावा नासिकानो आंगलीथी स्पर्श
करी चेष्टा करी, ते वखते कार्त्तिक श्रेष्ठीए विचार्युं के, 'जो में प्रथमथी दीक्षा लीधी होत तो आ सं-
न्यासी मारो पराजव न करत.' आ प्रमाणे चिंतवी ते श्रेष्ठि एक हजारने आठ वणिक पुत्रोनी श्रीमु-
निसुव्रत स्वामीनी पासे चारित्र लीधुं. पछी द्वादशांगी जणीने बार वर्षते पर्यायें ते सौधर्म इंद्र थयो.
जे गैरिक संन्यासी हतो तेपण पोताना धर्ममां तत्पर रही ते इंद्रनुं वाहन ऐरावण नामे थयो. ते ऐ
रावण आ कार्तिक श्रेष्ठ छे एवुं जाणी नाशवा लाग्यो एटले शक्रेंद्र तेने पकडी तेना मस्तक उपर आ
रूढ थइ गयो. ऐरावणे तेने जय, पमाडवाने बे रूप कर्यां. इंद्रे पण बे रूप कर्यां. पछी तेणे चार रूप

कर्यां एटले इंद्रे पण चार रूप कर्यां. पछी अवधिज्ञानथी तेनुं स्वरूप जाणी लइ तेणे तेनो तिरस्कार कर्यो. ज्यारे तिरस्कार कर्यो. एटले तेणे पोतानुं स्वाभाविक रूप करी दीधुं. एवी रीते कार्त्तिक श्रेष्ठीनी कथा छे.

सहस्राक्ष एटले तेने पांचसो मंत्रीरूपे देवताओ छे तेओनां नेत्रोइंद्रनुं कार्य करे छे तेथी ते पण इंद्रसंबंधीज समजवा तेथी इंद्र सहस्राक्ष (हजार नेत्रवालो) कहेवाय छे. वली ते मघवान् छे एटले मघ केतां मोटा मेध जेने वश छे तेवो छे

वली ते पाक नामना दैत्यने शिक्षा करनारो छे. ते मेरुथी दक्षिणमां आवेला लोकार्द्धनो अधिपति छे उत्तर लोकार्द्धनो स्वामी इशान छे तेथी. ते ऐरावतना वाहनवालो छे. ते सुर, देवताओने आनंद आपनार छे. ते बत्रीश लाख विमाननो अधिपति छे. रज वगरना अने स्वछपणाथी आकाश जेवा बारीक वस्त्रने धारणकरनारो छे. जेणे घटता स्थान उपर माला अने मुगट धारण कर्यां छे नवीन, सुवर्णना मनोहर आश्चर्य करनारा अने आम तेज कंपता एवा बे कुंडलो तेना गाल उपर अथडाता हता. वली ते केवो थशे जेने छत्रादि राजचिन्हरूप मोटी समृद्धि छे वली जेनी शरीरादिकनी कांति मोटी छे. जे महाबलवान् छे. जे मोटो यशवालो छे जेनो महिमा मोटो छे. जे महासुखी छे. जेनुं शरीर देदीप्यमान छे. जे पगसुधी लटकती पंचवर्णी पुष्पनी मालाने धारण करे छे. ते हाल क्यां रहे छे ते कहे छे. ते सौधर्म कल्पने विषे छे,

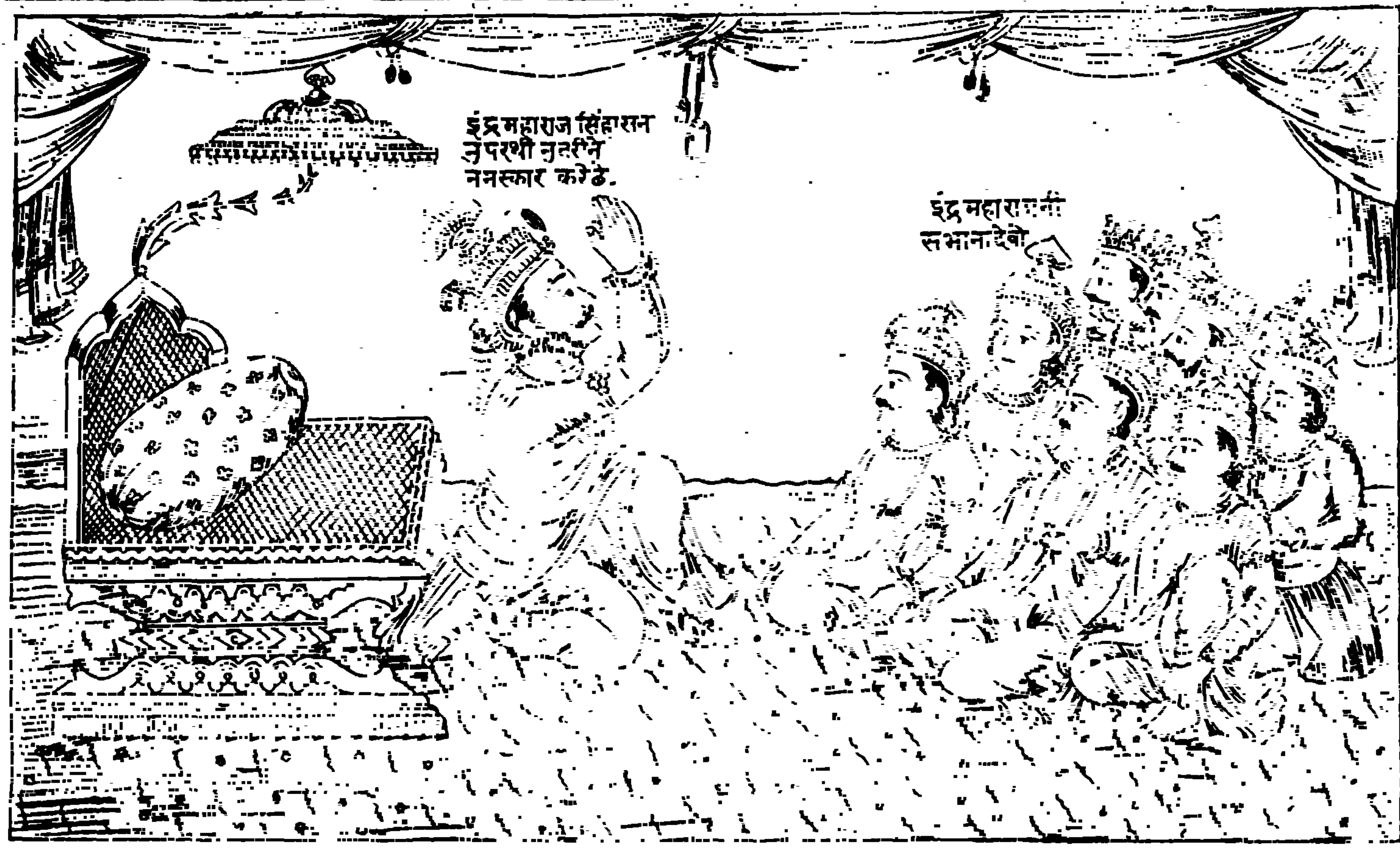
ते सौधर्म देवलोकना आभूषणरूप विमानमां छे त्यां सुधर्मा नामनी सभामां शक्र नामना सिंहासनने विषे रहे छे. त्यां रही ते इंद्र शुं करी विहार करे छे ते कहेछे ते इंद्र बत्रीश लाख विमाननो अधिपति छे. तेमज चोराशी हजार सामानिक देवतानो अधिपति छे ते सामानिक देवतानी समृद्धि इंद्रना जेवी छे.

त्रयस्त्रिंशत् अने त्रायस्त्रिंशक देवता ते इंद्रने पूज्य एवा महत्तर देव छे तेमनो जे अधिपति छे. चार लोकपाल के जेमना नाम सोम, यम, वरुण, अने कुबेर छे तेमनो जे अधिपति छे. पद्मा, शिवा, शची, अंजू, अमला, अप्सरा, नवमिका, अने रोहिणी एवा नामे आठ अग्रमहिषी (पटराणी) के जे

प्रत्येक सोल हजार देवीउंना परिवारवाली छे तेमनो जे स्वामी छे. बाह्य, मध्यम अने आभ्यंतर एवी त्रण पर्षदानो जे अधिपति छे. गंधर्व, नाटक, अश्व, हाथी, रथ, सुजट अने वृषज एवा नामना सात सैन्यनो जे स्वामी छे. जवनपति विगेरे वृषजने स्थाने महिष लेवा. तेमज सात सेनापतिउ चारे दिशा उमां प्रत्येक चोराशी हजार आत्मरक्षक देवता एकंदर संख्याए त्रण लाख अने बत्रीश हजार थाय तेमनो जे अधिपति छे. ते शिवाय बीजा घणां सौधर्म कल्पना निवासी वैमानिक देव अने देवीउंनुं आधिपत्य एटले अधिपतिनुं कर्म अर्थात् रक्षाने, अग्रेसरपणाने, नायकपणाने पोषक स्वामिपणाने अने अतिशे गौरवतावाला पोताना सैन्यप्रत्ये अदजुत आज्ञा ना प्रधानपणाने निमेला पुरुषोनी पांसे जे करावे छे, वली पोते तेमनुं पालन करे छे वली ते शुं करे छे के अविछिन्न एवा नाटक, गीत अने वाजित्रो, तेमां वीणा करूताल, बीजा वाद्यने तोडे तेवा मेघ ध्वनि वाला मादल अने मोटा ढोल, तेमना मोटा शब्द वडे दिव्यजोगने जोगवता विहार करे छे १४ वली ते आ संपूर्ण जंबूद्वीपने विशाल एवा अवधि ज्ञानवडे अवलोकन करता विहार करे छे ते इंद्र जगवंत महाविर प्रजुनो जन्म जाणी हर्षरूप धनथी समृद्धिवान् थइ गयो अतिहर्षनी समृद्धिने पाम्यो एथी चित्तमां हर्षना जारथी मेघनी धाराथी हणाएला कदंब वृक्ष सुगंधी पुष्पनी जेम रोमांचित थयेल छे तेथी जेना रोमकूप उल्लास पामेला छे वली जेनुं मुख अने नेत्रो विकाश पामेला उत्तम कमलना जेवा छे कारण के ते हर्षथी परिपूर्ण छे. तेम श्री जगवंतना दर्शनथी अधिक संभ्रम थवाने लीधे तेना उत्तम कंकण कंपीचालता हता. बेहेरखा अने बाजुबंध तुटी जता हता. मुगट अने कुंडल जे लोकमां प्रसिद्ध छे. ए सर्व आजूषणो जेना प्रचलित थयेलां छे एवो वली जेनुं हृदय हारवडे विराजमान छे. जे लंबायमान झुमणाने हींचका खाता आजूषणोने धारण करे छे. एवो इंद्र अकस्मात् संभ्रम, आदरथी उत्सुकपणाथी अने कायानी चपलताथी एकदम सिंहासन उपरथी बेठो थयो. बेठो थइने पादपीठ एटले पग मुकवाना बाजोठ उपर पोतानी बे पादुका नीचे मुकी ते पादुका मरकत मणि तथा रिष्ट अने अंजन नामना रत्नो वडे निपुण एवा

कारीगरे रचेली हती अने देदीप्यमान एवा चंद्रकांत विगेरे मणिउं अने कर्केतन विगेरे रत्नोथी मंडित हती ते पादुकाने उतारी ते इंद्र एक पट उत्तरासंग करे छे. ते कर्या पछी अंजलि करवाने बंने हाथ योजेछे. तेवो थइ ते इंद्र प्रभुनी सन्मुख सात आठ पगलां पाछल जाय छे पछी डाबा ढींचणने उपाडे छे एटले प्रथ्वीने लग्न न थाय तेम स्थापे अने दक्षिण जानुने पृथ्वी उपर मुके पछी त्रणवार पृथ्वी उपर मस्तक नमावे, नमावीने जरा उत्तरार्द्ध अंगथी उभो थाय तेम करी कंकण अने बेरखाथी स्तंभन करेली भुजाउंने वाले, ते वालीने हाथना संपुटमां रचेली दश नख सहित दक्षिणावर्त्तपणे मस्तक पर भमावा ती एवी अंजलि मस्तकपर करीने आप्रमाणे बोल्यो ते शुं बोल्यो ते कहे छे, मूलमां 'णं' ए अक्षर सर्व ठेकाणे व्याक्या लंकारने माटे छे. त्रण भुवनने पूजवा योग्य एवा अर्हंत प्रभुने नमस्कार हो कर्मरुप वैरीने हणवाथी अरिहंताणं एवोपण पाठ छे अथवा अरुहंताणं एवो पाठ लइए तो रागद्वेष रूप कर्म बीजनो अभाव करनार एवो अर्थ थाय एटले भवक्षेत्रमां ते बीज भगवानोज अभाव थाय छे. वली ते प्रभु भगवंत एटले ज्ञानादिवाला छे तेमज ते आदिकर एटले पोतपोताना तीर्थनी अपेक्षा ए धर्मना आदिकर्त्ता छे. वली जे तीर्थ एटले संघ अथवा प्रथम गणधर तेने स्थापन करनारा छे. जे स्वयंबुद्ध छे एटले परोपदेशथी बोध पामेला नथी पोतानीमेले बोधपामेला छे जे अनंत गुणोना निधानरुप होवाथी पुरुषोमां उत्तम छे. जे कर्मरूपी वैरीउंमां निर्दय शूरवीरहोवाथी पुरुषसिंह छे. वली जे पुरुषोमां प्रधान एवा पुंडरीक, श्वेत कमलनी जेवा छे. जेम पुंडरीक, कमल कादवमां थाय छे अने जलवडे वधे छे पछी ते जल तथा कादवने छोडी उपर रहे छे.

एवी रीते भगवंत पण कर्मरूपी कादवमां उत्पन्न थया छे अने भोगरूपी जलथी वृद्धि पाम्या छे. तेउं कर्म अने भोगनो त्याग करी पछी जुदा रहे छे वली ते उत्तम पुरुषोमां गंधहस्ती एटले मदगंधी हस्ती जेवा छे जेम गंधहस्तिना गंधथी बीजा हाथीउं पलायन करी जायछे तेम भगवंतना प्रभावथी


चित्र ४
इंद्र महाराज सिंहासन उपरथी उतरीने नमस्कार करेछे.
इंद्र महाराजनी सभाना देवो

बीजा डुकाल विगेरे उपद्रवो पण नाशपामीजाय छे तेमज जे लोक एटले भव्य प्राणीउंना समूहमां चोत्रीश अतिशयोए युक्त होवाथी उत्तम छे वली भव्य प्राणीउंना नाथ छे अर्थात् योग क्षेम करनाराछे.
तेमां योग एटले अप्राप्त एवा ज्ञानादिनी प्राप्ति अने क्षेम एटले प्राप्त थयेल ज्ञानादिकनुं रक्षण, तेने करनारा लोक एटले सर्व जीवोना हितकारी कारण के, दया स्वरूपी छे. वली ते मिथ्यात्वरूप अंधकारने नाश करनार होवाथी लोकमां प्रदीप रूप छे. वली सूर्यनी जेम सर्व वस्तुउंना प्रकाशक होवाथी लोकमां उद्योत करनारा छे. तेम वली अभय एटले भयनो अभाव तेने आपनारा छे. ते भय सात प्रकारना छे ते आ प्रमाणे–जे मनुष्य थकी भय ते पेहेलुं इहलोक भय कहेवाय छे.
मनुष्यने देवादिकनो भय ते बीजुं परलोक भय. धन विगेरे लइ लेवानो भय ते त्रीजुं आदान भय. बाहेरना कोइ निमित्तनी अपेक्षा वगर उत्पन्न थयेल भय ते चोथुं अकस्मात् भय कहेवाय छे. पांचमुं आजीविकानुं भय, छठुं मरण भय अने सातमुं अपकीर्त्तिनुं भय–एम सात प्रकारना भय छे. तेवा भयमांथी निर्भय करनारा वली तेने नेत्रसमान श्रुत ज्ञानने आपनारा छे. तेमज मार्ग एटले सम्यग् दर्शन विगेरे मोक्ष मार्गने आपनारा छे अर्थात् बतावनारा छे–जेम कोइ लोको मुसाफरीए जता हता, तेमनु द्रव्य चोरोए लुंटी लीधुं अने पछी तेमने आंखे पाटा बांधीने अवले मार्गे चढावी दीधा. तेवा मां कोइ आवी तेमना नेत्र उपरथी पाटा छोडी लइ धन आपी मार्ग बतावी उपकारी थाय तेम भग वंत पण कामक्रोधादि कषायोए जेमनुं धर्मरूप धन लुंटी लीधु छे अने मिथ्यात्वरूप पाटाथी जेउंना विवेकरूपी नेत्र बंध कर्या छे एवा प्राणीउंने श्रुतज्ञान, सद्धर्म तथा मुक्तिमार्गने बतावी उपकारी थाय छे. वली ते प्रभु केवा छे के जे आ संसारथी भय पाम्या छे तेमने शरण आपनारा छे. वली जीव एट ले मृत्युनो अभाव–जीवन तेने आपनारा छे. कोइ ठेकाणे बोहिदयाणं एवा पाठ छे एटले बोधि एट ले समकित तेने आपनारा, वली ते चारित्ररूप धर्मने आपनारा छे. धर्मनो उपदेश आपनारा अहीं ध र्मनुं उपदेशकपणुं तेउंने धर्मना स्वामीपणाने लीधे कह्युं छे नटनी जेम फोगट नथी ते दर्शाववाने कहेछे

के ते धर्मना नायक छे वली धर्मना सारथि छे जेम सारथि उन्मार्गे जता एवा रथने पाछो मार्गमां लावे छे तेम भगवंत पण मार्ग भ्रष्ट थयेला माणसने पाछा मार्गे लावे छे, ते उपर मेघकुमारनुं दृष्टांत छे—
एक वखते श्रीवीरप्रभु राजगृह नगरीमां समोसर्या हता. तेमनी देशना सांभली श्रेणिक राजा अने धारिणी राणीनो पुत्र मेघकुमार प्रतिबोध पाम्यो. तेणे मातापितानी मांड मांड रजा लइ पोतानी आठ प्रियानो त्याग करी दीक्षा ग्रहण करी प्रभुए शिक्षा आपवाने ते स्थविर साधुओने सोंप्यो. एक वखते उपाश्रयमां अनुक्रमे साधुओना संस्थारा करतां मेघकुमारनो संस्थारो द्वारभागनी पांसे छेल्लो आव्यो. त्यां मात्रु करवाने जता आवता साधुओ चरणना रजथी भराइ गयेला मेघकुमारने आखी रात क्षणवार पण निद्रा न आवी. त्यारे तेणे चिंतव्युं के, मारे घेर सुखशय्या क्यां! अने आवीरीते भूमिउपर आ-लोटवुं क्यां! अरे! आवुं दुःख मारे क्यां सुधी सहन करवुं? माटे प्रातःकाले प्रभुनी रजा लइ पाछो घेर जइश. आवुं चिंतवी प्रभात काले प्रभुनी पांसे आव्यो. प्रभुए मधुर वचनथी बोलाव्यो. हे वत्स! तें रात्रे एवुं दुर्ध्यान कर्युं पण ते विचार्या वगर करेलुं छे. नरकादिकना दुःखनी आगल ए दुःख कोण मात्र छे. तेवा अनेक सागरोपम दुःख प्राणीओए घणी वार सहन कर्या छे. वली कह्युं छे के, "अग्निमां प्रवेश करवो सारो अने शुद्ध कर्मथी मृत्यु पामवुं ते सारुं पण ग्रहण करेला व्रतनो भंग अने शीलनी स्खलना करवी ते सारुं नहीं." १ तेम आ चारित्रादि कष्टनुं आचरण मोटा फलने आपे छे, तें पोतेज पूर्व भवे धर्मने अर्थे कष्ट अनुभव्युं हतुं, तेनुं आ फल प्राप्त थयेलुं छे— तारा पूर्व भवने सांभल—आथी त्रीजे भवे वैताढ्य पर्वतनी भूमिउपर तुं सुमेरुप्रभ नामे हाथी थयो हतो. ते छ दांतवालो, धोलो, अने एक हजार हाथिणीओनो स्वामी थयो. एक वखते दावानलथी भय पामी नाशी जतां तृषा लागवाथी एक घणां कादववाला सरोवरमां आवी पड्यो. मार्गनो अजाण होइ ते कादवमां खुची जइ जल अने तीर बंनेमांथी भ्रष्ट थयो. पछी तारा पूर्वना वैरवाला हाथीओए आवी तने दंतोहलनो मार मार्यो. तेनी वे-दना सात दिवस सुधी भोगवी अंते एकसो विशवर्षनी आयुष्य पूरी करी (मृत्युपामी) विंध्याचल उपर पाछो

हाथी थइ अवतर्यो. ते वखते तुं राता वर्णनो, चार दांतवाळो अने सातसो हाथिणीनो स्वामी थयो. अनुक्रमे एक वार दावानलने जोइ तने जातिस्मरण थयुं. एटले पूर्वभवनुं स्मरण कर्युं. पछी तें दावानलना पराभवमांथी बचवाने एक योजनना प्रमाणवाळुं मंडल कर्युं. तेमां वर्षने आरंभे, मध्ये अने अंते जे कांइ तृण वेल विगेरे थाय ते सर्व उखेडी नाखे. एक वखते दावानलथी भय पामेला वनना प्राणीओ ते हाथीना मंडलमां व्यापी रह्या ते वखते तुं पण सत्वर आवीने ते मंडपमां आवी रह्यो. कोइ वार देहने खुजली करवानी इच्छाथी तें एक पग उपाड्यो, ते पग उपाडतांज कोइ ससलो संकडामणथी पीडाइने तेनी नीचे भरायो. शरीरने खंजवाळी ते पग नीचे मुकतां ते ससलो तारा जोवामां आव्यो. तेनी उपर दया लावी बे दिवस सुधी तुं उंचो पग राखी उभो रह्यो. ज्यारे दावानल शांत थयो अने सर्व जीवो पोत पोताना स्थानमां चाल्या गया त्यारे ते हस्ती पोतानो पग गळी पडवाथी पृथ्वी उपर पडी गयो. पछी त्रण दिवस सुधी क्षुधा अने तृषाथी पीडित थइ ते कृपाळु हाथी सो वर्षनी आयुष्य पूरी करी अहिं तुं आ श्रेणिक राजा अने धारिणी राणीनो पुत्र थयो छुं. हे मेघकुमार, ते वखते तिर्यंचना भवमां पण तें धर्मने अर्थे तेवुं कष्ट सहन कर्युं हतु तो आ जगतने वंदन करवा योग्य साधुओना चरणथी अथडाता तुं केम दूबाय छे ? आवो उपदेश आपी भगवंते तेने धर्ममां स्थिर कर्यो. पछी जेने जातिस्मरण ज्ञान थयेलुं छे एवा मेघकुमारे 'एक नेत्रो शिवाय बीजुं बधु शरीर हुं वोसरावुं छुं' एवो अभिग्रह कर्यो. अनुक्रमे अतीचार रहित चारित्रने आराधी अंते महिनानी संलेखना करी ते श्री विजय विमानमां देवता थयो. त्यांथी चवीने महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिने पामशे. इति मेघकुमार कथा ॥

महामहोपाध्याय श्री कीर्त्तिविजय गणीना शिष्य उपाध्याय श्री विनय विजय गणिए रचेला कल्पसूत्रनी सुखबोधिका टीकानो आ प्रथम क्षण समाप्त थयो. १

इति प्रथम क्षण समाप्त.

त्रण समुद्र अने चोथो हिमालय ए चार अंत (छेडा) मां प्रभुपणे थयेला धर्मना श्रेष्ठ चक्रवर्त्ती

एवा अर्थात् धर्मना नायक एवा समुद्रमां डुबता एवा प्राणीउने द्वीप जेवा एटले संसार सागरमां आधाररूप एवा वली ताण एटले अनर्थनो नाश करवाना हेतुरूप एवा वली कर्मना उपद्रवथी जय- पामेला प्राणीउने शरण रुप एवा अर्थात् गति रुप एवा स्वस्थताने माटे जेने दुःखी माणसो आश्रित थाय ते गति कहेवाय वली आ संसाररूपी कुवामां पडता एवा प्राणीउने अवलंबनरूप एवा मूलमां दीवोताणं इत्यादि पद प्रथमांत छे ते छतां पण ते छठी अने चतुर्थी विभक्ति छेडे होय तेम व्याख्या करवी वली जे अप्रतिहत एटले छादडी के जींत विगेरेथी अस्खलित एवा उत्तम प्रधान ज्ञान दर्शनने धारण करनारा वली छद्मघाति कर्म जेनाथी निवृत्त थया छे एवा. वली राग द्वेषने जीतनारा छे. वली ते उपदेश दान विगेरे आपी भव्य प्राणीउने जीवाडनारा छे. आ संसार समुद्रने तरेला छे अने सेवको- ने तारनारा छे वली तेउ तत्वना बोधवाला छे अने बीजांउने तत्वना बोधक छे पोते कर्मना पांजरामां- थी मुक्त छे अने सेवकोने मुकावनारा छे वली पोते सर्वज्ञ तथा सर्व वस्तुने जोनारा छे. तेमज उप- द्रव रहित, अचल, रोगरहित, अनंत वस्तु विषयनुं ज्ञान स्वरूप आदि अंत रहितपणाथी क्षयरहित, एवुं तेमां अंत एटले सर्वथी नाश अने क्षय देशथी नाश तेणे रहित एवुं. वली बाधारहित, तथा पुनरावृत्ति, पुनरागमन तेणे रहित एवुं सिद्धिगति नामनुं स्थान छे, ते स्थानने प्राप्त थयेला भयने जितनारा श्रीजिनभगवंतने नमस्कार छे. आवी रीते सर्व जिनोने नमस्कार करी शक्र इंद्र श्रीवीरप्रभुने नमस्कार करे छे,

ते श्रमण भगवंत श्रीमहावीर प्रभु के जे आदिकर अने सिद्धिगति नामना स्थान प्रत्ये जवानी इच्छा वाला छे, तेमने नमस्कार हो. श्रीवीरप्रभु हवे मुक्तिए जवाना छे तेथी आ विशेषण आप्युं छे. आ सर्व विशेषणो छठीना एक वचनांत छे ते छतां पण ते चतुर्थीना अर्थमां लेवा इंद्र कहे छे, ते देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षिमां रहेला ते वीरप्रभुने हुं वंदना करुं छुं हुं अहीं रह्यो छुं अने प्रभुते कुक्षिमांरह्याछे तेमने अहिं रहेलाने जुवे एमधारी इंद्रते प्रभुने वंदना करे छे,

ते करीने इंद्र पूर्वाभिमुखे सिंहासन उपर बेठो ते पछी देवताना राजा एवा ते शक्र इंद्रने आवो आत्मविषय संकल्प उत्पन्न थयो जे चिंतात्मक, अभिलाषरूप, अने मनोगत संकल्प हतो ते वचनथी प्रकाशित कर्यो न हतो ते केवो संकल्प थयो ते कहे छे

आ बनाव कोइ दिवस भूतकालमां थयो नथी, वर्त्तमान कालमां थतो नथी अने भविष्य कालमां थयो नथी के जे अर्हंत, चक्रवर्त्ती, बलदेव, अने वासुदेव अंत्य एटले शूद्रकुलमां, अधम कुलमां, तुच्छ अल्प कुल मां, निर्धन कुलमां कृपण एटले लोभी, अदाता कुलमां, भिक्षुकोना कुलमां, ब्राह्मण कुलमां कारण के तेओ भिक्षुक छे. ए कुलमां तेओ भूतकालमां, वर्त्तमान कालमां के भविष्य कालमां उत्पन्न थया नथी त्यारे ते केवा कुलमां उत्पन्न थाय छे ते कहे छे, ते आ प्रकारे निश्चये करीने उग्र एटले श्रीआदिनाथ प्रभुए रक्षकपणे स्थापन करेला लोको तेओना कुलमां भोग एटले गुरुपणे स्थापन करेला तेओना कुलमां, राजन्य एटले श्रीऋषभदेव प्रभुए मित्र तरीके स्थापन करेला तेओना कुलमां, इक्ष्वाक एटले श्रीऋषभदेवना वंशमां उत्पन्न थयेला तेओना कुलमां क्षत्रिय एटले श्रीआदिनाथे प्रजाना रक्षक तरीके स्थापन करेला तेओना कुलमां हरि एटले पूर्वभवना वैरी देवताए आणेला बे हरिवर्षना क्षेत्र तेनां वंशजना कुलमां. ते शिवाय बीजा शुद्ध जाति अने कुलवाला वंशमां. अहिं जाति एटले मातानो पक्ष अने कुल एटले पितानो पक्ष समजवो. एवा कुलमां आवेला, आवे छे अने आवशे–ते शिवाय पूर्वे कहेला नीचादि कुलमां ते अर्हंतादि अवतरता नथी. त्यारे ते प्रभु केम अहीं उत्पन्न थया ते कहे छे– भवितव्यता नामे एक लोकमां आश्चर्यकारी भाव–बनाव रहेलो छे. अनंत उत्सर्पिणी अने अवसर्पिणी काल उल्लंघन थतां जे एवो कोइ पदार्थ उत्पन्न थाय छे. तेमां आ चालता अवसर्पिणी कालमां आवा दश आश्चर्य थयेला छे. ते आ प्रमाणे–

उपसर्ग १ गर्भनुं हरण, २ स्त्री तीर्थंकर, ३ अभावित पर्षदा, ४ कृष्णनुं अपरकंकामां जवुं, ५ चंद्र-सूर्यनुं उतरवुं ६ हरिवंश कुलनी उत्पत्ति ७ चमरेंद्रनो उत्पात, ७ आठसोनुं सिद्ध थवुं, ए तथा असंयतिनी पूजा, १० ए दश आश्चर्य थयेला छे. तेनी व्याख्या आ प्रमाणे छे–

उपसर्ग एटले उपद्रव ते श्रीवीर प्रभुने छद्मस्थावस्थामां घणा थयेला छे ते आगल कहेवामां आवशे. वली ए भगवंतनी केवली अवस्था के जेमां प्रभावथीज सर्व उपद्रव शमी जाय तेमां पण पोताना शिष्याभास एटले अधमशिष्य गोशाले उपद्रव कर्यो हतो. ते आ प्रमाणे वृत्तांत छे. एक वखते श्रीवीरप्रभु विहार करता श्रावस्ती नगरीमां समोसर्या. तेवामां गोशालो 'हुं जिन भगवंत छुं' एम लोकोमां ख्याति करतो त्यां आव्यो. तेथी 'श्रावस्ती नगरीमां बे जिन भगवंत आव्या छे' एवी लोकोमां प्रसिद्धि थइ. ते सांभली गौतमे भगवान् वीर प्रभुने पुछ्युं—स्वामी, 'हुं जिन भगवंत छुं' एम पोताने विख्यात करनार आ बीजो कोण छे? भगवंते कह्युं, ते जिन नथी पण शरवण गामनो रेहेवासी मंखली अने सुभद्रा थकी घणी गायोवाली ब्राह्मणनी गोशालामां उत्पन्न थवाथी गोशाल एवा नामने धारण करनार एक मारो शिष्य छे. ते मारी पांसेथीज जरा बहुश्रुत थइ पोतानुं जिन नाम व्यर्थपणे वीख्यात करे छे. ते पछी आ वात सर्व ठेकाणे प्रसिद्ध थयेली सांभलीने ते गोशालो अति रोष पाम्यो. तेवामां गोचरीए गयेला आनंद नामना भगवंतना शिष्यने कह्युं, हे आनंद एक दृष्टांत सांभल, कोइ वणिक लोको धन मेलववाने जात जातना करीआणा गाडामां भरी परदेश जवा नीकल्या. तेओ कोइ अरण्यमां पेठा त्यां जल न मलवाथी तृषातुर थइ जलनी गवेषणा करवा लाग्या. तेवामां चार राफडाना शिखर जोवामां आव्यां. तेमणे एक शिखर फोड्युं त्यां तेमांथी घणुं जल नीकल्युं. ते जलथी तृषा रहित थइ बाकीना जलथी पात्र भरी लीधा. पछी एक वृद्ध वणिके कह्युं के, आपणुं धारेलुं कार्य सिद्ध थयुं.

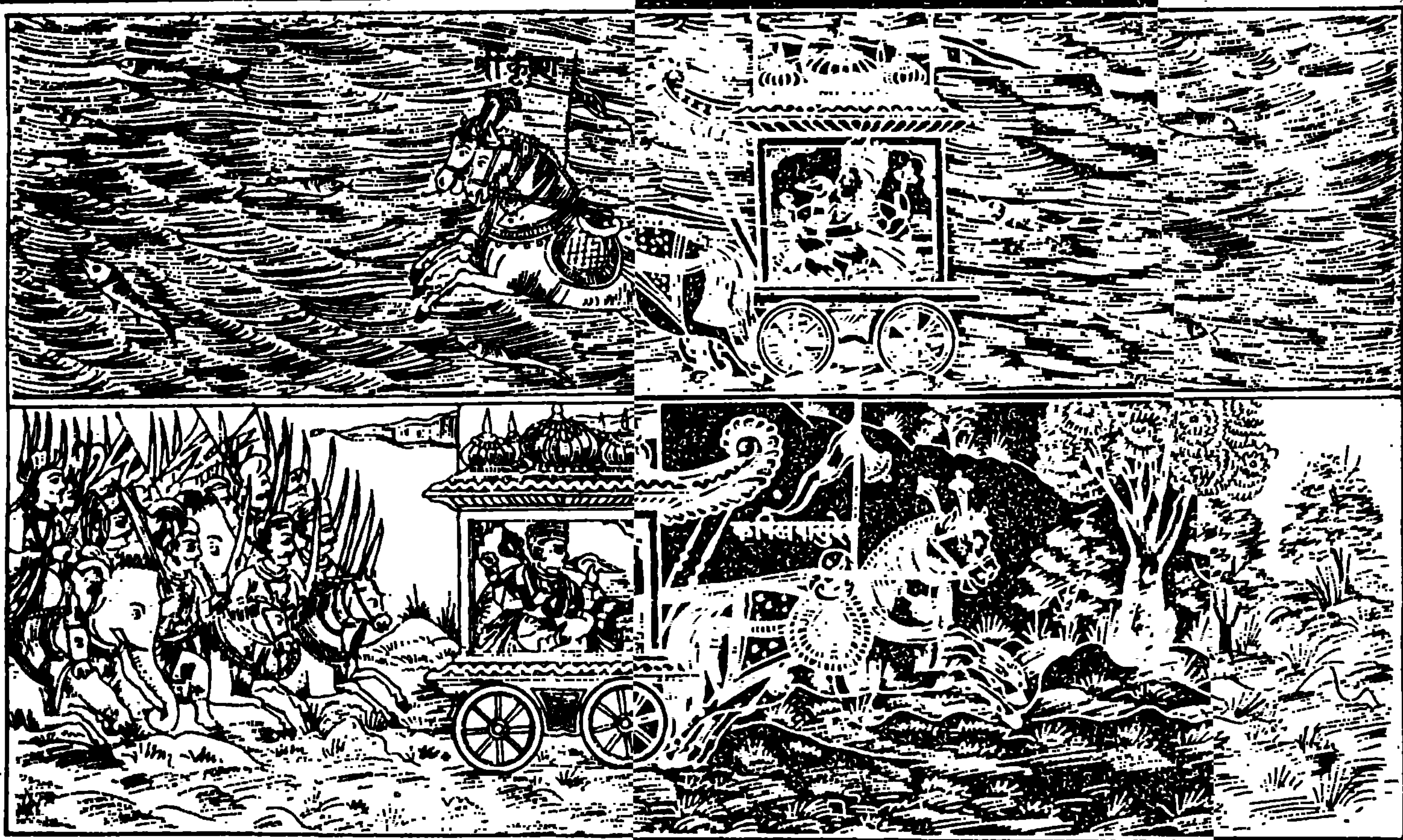
हवे बीजुं शिखर फोडशो नहीं. तेम वार्या तो पण तेओए बीजुं शिखर तोडी पाड्युं. तेमांथी सुवर्ण प्राप्त थयुं. पछी वृद्धे तेवी रीते वार्या तो पण तेओए त्रीजुं शिखर फोड्यु. तेमांथी रत्न प्राप्त थया. पछी घणा वार्या तो पण ते लोभांध व्यापारीओए चोथा शिखरने फोड्युं तेमांथी दृष्टिविष सर्प प्रगट थयो. तेणे पोतानी दृष्टिनो पात करी सर्वने पंचत्व पमाडी दीधा. जे पेलो वृद्ध हितोपदेशक हतो ते न्यायी होवाथी नजिक रहेल देवताए तेने स्वस्थानमां मुकी दीधो. हे आनंद, आ

प्रमाणे तारो धर्माचार्य आटली संपत्ति प्राप्त थइ तो पण तेथी संतोष न पामी जेवा तेवा जाषण करी मने कोपावे ठे. तेथी हुं मारा तपना तेजथी तेने जस्म करी नाखीश. माटे तुं सत्वर जइ आ खबर तेने निवेदन कर्य. पेला वृद्ध वणिकनी जेम तने हितोपदेशक जाणी तारी रक्षा करीश—आ सांजली आनंद साधुए जय पामी ते सर्व वृत्तांत जगवंतनी आगल कह्यो. जगवंते कह्युं, हे आनंद, तुं सत्वर जइ गौतमादि मुनिर्जने जणाव के आ गोशालो अहीं आवे ठे. तो तेनी साथे कांइ जाषण करवुं नहीं. सर्वने आज्ञा अवला चाल्या जवुं. पठी तेमणें तेम कर्युं—गोशाले आवी जगवंतने कह्युं, हे काश्यप गोत्री, आम केम बोले ठे? के आ मंखलीनो पुत्र गोशालो ठे. ते तारो शिष्य मंखलिपुत्र तो मृत्यु पामी गयो ठे. हुं तो जुदोज बुं. परीषहोने सहन करवामां समर्थ एवुं तेनुं शरीर जाणी तेमां अधिष्ठान करी रह्यो बुं. आ प्रमाणे गोशाले करेला जगवंतना तिरस्कारने नहीं सहन करता सुनक्षत्र अने सर्वानुजूति नामे बे मुनि वचमां उत्तर आपवा लाग्या एटले गोशाले तेजोलेश्याथी तेमने बाली नाख्या. तेर्उ दग्ध थइने स्वर्गे गया. पठी जगवंते कह्यु, हे गोशाला, तुं तेज गोशालो बुं. बीजो नथी. शामाटे वृथा आत्माने गोपवे ठे? आप्रमाणे आत्मा गोपवी शकातो नथी. जेम कोइ चोर रक्षकोना जोवामां आव्यो पठी ते तृणथी के आंगलीथी पोताना देहने आठादन करे तेथी शुं ते आठादित थाय ठे?

आवी रीते प्रजुए यथार्थ कह्युं एटले ते डुरात्माए जगवंतनी उपर तेजोलेश्या मुकी. ते लेश्या जगवंतने त्रण प्रदक्षिणा करी ते गोशालानाज शरीरमां पेठी. तेनाथी शरीर दग्ध थइ गयुं अने विविध वेदना अनुजवी ते सातमी रात्रे मृत्यु पामी गयो. जगवंते पण तेना तापथी ठ माससुधी राती चोल कांति धरी बाधाने अनुजवी. आ प्रमाणे जेना नामना स्मरणथी सर्व डुःख शमी जाय तेवा वीरजगवंतने पण जे आ उपसर्ग थयो ते प्रथम आश्चर्य ठे. २ गर्जनुं हरण एटले बीजा उदरमां मुकी देवुं ते पण कोइ जिनने पूर्वे थयुं नथी श्रीवीर प्रजुने थयुं ठे ए बीजुं आश्चर्य ठे. ३ तीर्थंकरो हंमेशा उत्तम पुरुषोज थाय ठे, स्त्री थता नथी. आ अवसर्पिणीमां मिथिला नगरीना पति कुंजराजनां पुत्री मल्लि

नामे उंगणीशमा तीर्थंकर थइ तीर्थने प्रवर्त्ताव्युं हतुं. ए त्रीजुं आश्चर्य छे. ३ अजावितां पर्षदा एटले जगवंतनी देशना कदिपण निष्फल थती नथी. पण ज्यारे श्रीवर्द्धमान स्वामीने केवलज्ञान थयुं त्यारे तेमणे प्रथमना समोवसरणमां देसना आपी हती पण तेथी कोइने विरतिना परिणाम थया नहीं ए चोथुं आश्चर्य. ४ नवमा वासुदेव कृष्णने द्रौपदी निमित्ते अपर कंकामां जवुं पड्युं ते पण आश्चर्य छे. ते आ प्रमाणे कथा छे– पूर्वे पांडवनी स्त्री द्रौपदीए नारदने आवता जोइ ते संयमी न होवाथी तेने सामा उजा थइ मान आप्युं नहीं. तेथी तेणे रोष धरी द्रौपदीने कष्टमां पाडवाने घातकी खंड जरतक्षेत्रमां आवेली अपर कंका नामे राजधानीनो स्वामी पद्मोत्तर के जे स्त्रीउमां लुब्ध हतो तेनी आगल आवी द्रौपदीना रूपनुं वर्णन कर्युं. तेणे पोताना मित्ररूप कोइ देवतानी पांसे द्रौपदीने पोताने घेर आणी. अहीं पांडवोनी माता कुंतीए ते खबर जाणी कृष्णने विज्ञप्ति करी एटले कृष्ण द्रौपदीनी गवेषणा करवामां व्यग्र थया. तेमणे नारदना मुखथी ते समाचार प्राप्त थया एटले तेमणे सुस्थित देवनी आराधना करी. देवताए तेने कृष्णने मार्ग बताव्यो एटले ते एक लाख योजन विस्तारवाला लवण समुद्रने उल्लंघन करी पद्मोतरनी अपर कंका राजधानीमां गया. त्यां पांडवोनो तिरस्कार करनारा ते पद्मोत्तरने नरसिंहरूप करी जिती लइ पछी द्रौपदीना वचनथी तेने जीवतो मुकी पोते द्रौपदी साथे पाछा वल्या. चालता चालता शंखनो नाद कर्यो. ते सांजली "त्यां विहार करता मुनिसुव्रत प्रजुना वचनथी कृष्णने आवेला जाणी मलवाने उत्सुक एवा कपिल वासुदेवेपण समुद्र कांठे आवी शंखनो नाद कर्यो. पछी ते बंनेना शंखना नाद परस्पर मली गया. आ प्रमाणे आ अवसर्पिणीमां कृष्णनुं अपर कंका राजधानीमां गमन थयुं हतुं ए पांचमुं आश्चर्य छे. ५ कौशांबी नगरीमां जगवंत श्री वर्द्धमान स्वामीने वांदवाने सूर्य अने चंद्र पोताना मूल विमानथी उतर्या हता–ए छठुं आश्चर्य. ६

हरिवंश कुलनी उत्पत्ति पण एक आश्चर्य छे. ते आ प्रमाणे–कौशांबी नगरीमां सुमुख नामे राजा हतो. तेणे शालापति वीरक राजानी वनमाला नामनी स्त्री घणी स्वरूपवान जाणीने पोताना अंतःपुर-


चित्र ५
श्रीकृष्ण

मां नाखी. ते शालापति तेना वियोगथी विकल थइ गयो. जे कोइ जोवामां आवे तेने वनमाला वनमाला कही बोलावतो हतो. एवी रीते कौतुकथी अनेक लोकोथी वींटाएलो शालापति नगरमां जमवा लाग्यो. वनमालासाथे क्रीडा करता राजाए तेने जोयो. तेनी एवी स्थिति जोइ 'आपणे आ अनुचित काम कर्युं' एम ते दंपती चिंता करवा लाग्या. तेवामां तेमनी उपर विजली पडवाथी ते मृत्यु पामी गया. त्यांथी तेउ हरिवर्ष क्षेत्रमां जुगलीआ पणे अवतर्या. शालापति तेउने मृत्यु पामेला सांजली अरे ते बंने पापीने पाप लाग्युं—एम कही सावधान थइ गयो ते पछी ए वैराग्यथी तपस्या करी सौधर्म कल्पमां किल्बिषिक व्यंतर थयो. विजंग ज्ञानथी ते बंनेने जोइ चिंतववा लाग्यो अहो, आ मारा वैरी जुगलीयानुं सुख अनुजवी देवता थशे. तेथी ते बंनेने हुं डुर्गतिमां पाडुं—आवुं चिंतवी पोतानी शक्तिथी देह संक्षेप करी तेउने अहीं लाव्यो. लावीने राज्य आपी तेमने सात व्यसनो शीखडाव्या. ते पछी तेउ तेवा व्यसनी थइ मृत्यु पामी नरके गया. तेनो जे वंश ते हरिवंश कहेवाय. अहीं जुगलीयाने अहीं लाववा, शरीर तथा आयुष्यनो संक्षेप करवो अने नरकमां जवुं—ए सर्व आश्चर्य छे—आ सातमुं आश्चर्य. ८ चमर नामना असुर कुमारनो उत्पात ए पण आश्चर्य छे—ए आ प्रमाणे—पूरण नामना एक मुनि तपस्या करी चमरेंद्रपणे उत्पन्न थया. ज्यारे ते नवा उत्पन्न थया त्यारे सौधर्मेंद्रने पोताना शिर उपर रहेला जोइ कोप पाम्या पछी परिघ लइ श्रीवीरनुं शरण करी सौधर्मना अंगरक्षकोने त्रास पमाडी सौधर्म विमाननी वेदिकामां पग मुकी शक्रेंद्र उपर आक्रोश कर्यो. तेथी क्रोध पामी शक्र जाज्वल्यमान वज्र तेनी उपर मुक्युं. तेथी ए जय पामीने जगवंतना चरणमां संताइ गयो. ते वृत्तांत जाणी इंद्र तरत त्यां आव्यो चार आंगल पेशी गयेलुं वज्र लइ लीधुं अने कह्युं के, जगवंतना प्रसादथी तने छोडी मुक्यो छे. एम कही चमरने छोडी मुक्यो. आ चमरनुं जे उर्ध्वगमन ते आठमुं आश्चर्य छे. ९ एक समयमां उत्कृष्ट अवगाहनावाला एकसो आठ जीव सिद्धिए न जाय ते छतां आ अवसर्पिणीमां तेटला सिद्धिए गया छे. जेम के श्रीवृषजनाथ, तेमना जरत शिवाय नवाणु पुत्रो

अने आठ जरतना पुत्र एक समये सिद्धिने पाम्या–ए नवमुं आश्चर्य छे. ९ असंयत एटले संयम वग
रना जे आरंज परिग्रहमां आसक्त छे तेवानी पूजा–जे संयत–संयमवाला छे ते तो सर्वदा पूजाय पण
आ अवसर्पिणीमां एटले नवमा अने दशमा जिननी अंतरे असंयत एवा पण ब्राह्मणादिकनी पूजा
प्रवर्त्ती ए दशमुं आश्चर्य. १० आ दश आश्चर्यो अनंतकाल गया पछी आ अवसर्पिणीमां थयेला छे.
एवी रीते कालनी समानताथी बाकीना चार जरतमां अने पांच ऐरावतमां एम प्रकारांतरे दश दश
आश्चर्यो जाणवा. हवे ते दश आश्चर्यो कोना कोना तीर्थमां थया ते स्पष्ट करे छे–एकसोने आठ सि
द्धिए गया ए आश्चर्य श्रीऋषज देवना तीर्थमां थयुं हतुं. हरिवंशनी उत्पत्तिनुं आश्चर्य शीतलनाथना
तीर्थमां थयुं हतुं. अपर कंका राजधानीमां थवानुं आश्चर्य श्रीनेमिनाथना तीर्थमां थयुं हतुं. स्त्री ती
र्थंकर थवानुं आश्चर्य श्रीमल्लिनाथना तीर्थमां थयुं हतुं. असंयत–ब्राह्मणादिकनी पूजानुं आश्चर्य श्रीसु
विधि नाथना तीर्थमां थयुं हतुं, बाकीना उपसर्ग, गर्जनुं हरण, अजावित पर्षदा, चमरनुं उर्ध्वगमन
अने सूर्य चंद्रनुं अवतरण–ए पांच आश्चर्य श्रीवीरतीर्थमां थया छे.

ए दश आश्चर्य समाप्त थया. हवे एक आश्चर्य थयुं बीजुं आ आश्चर्यके जे नाम गोत्र एटले नाम
वडे गोत्र अर्थात् जे गोत्र नामनुं कर्म छे ते वली ते केवुं छे के जे अक्षीण एटले स्थितिना अक्षयथी
रहेलुं छे वली ते रसना परिजोगथी अज्ञात छे वली अनिर्जीर्ण अटले जीवना प्रदेशथी नहीं सडेलुं
एवुं छे एवा गोत्र अर्थात् नीच गोत्रना उदयथी जगवान् महावीर प्रजु ब्राह्मणीनी कुक्षिमां उत्पन्न थया.
ते नीच गोत्र जगवंते सत्यावीश स्थूल जवनी अपेक्षाये त्रीजा जवमां बांध्युं हतुं, ते आप्रमाणे वृ
त्तांत छे. पेहेला जवमां पश्चिम महाविदेह क्षेत्रमां नयसार नामे एक ग्रामपति हतो. एक वखते ते
काष्ठ लेवाने वनमां गयो. मध्यान्हकाल थतां ते वनमां जोजन समये सार्थमां जुदा थयेला साधुउ ते
ना जोवामां आव्या. तेमने जोइ ते हर्ष पामी चिंतवन करवा लाग्यो अहो मारा मोटा जाग्य! आ स
मये अतिथिनो समागम थयो. पछी घणा हर्षथी ते साधुउने अशन पानादिकथी प्रतिलाज्या जोजन

त्यांपछी ते साधुओने नमीने बोल्यो, महाभाग, चालो आपने मार्ग बतावुं. पछी मार्गमां चालता साधुओए 'आ योग्य छे' एम धारी धर्मनो उपदेश आपी तेने समकितनी प्राप्ति करावी.

अंतकाले नवकार स्मरण करता मृत्यु पामी ते बीजे सौधर्म देव लोकमां पल्योपम आयुष्यवालो देवता थयो. त्यांथी चवीने त्रीजे भवे मरीचि नामे भरत चक्रवर्तीनो पुत्र थयो. वैराग्य प्राप्त करी श्री ऋषभदेव प्रभुनीपांसे तेणे दीक्षा लीधी अने स्थविरपांसे एकादशांगीनुं अध्ययन कर्युं. एक वखते ते ग्रीष्मऋतुमां तापादिकनी पीडा पामी चिंतवन करवा लाग्यो के, "आ संयमनो भार अतिवहन करवो मुस्केल छे. ते माराथी निर्वाह करी शकाशे नहीं अने हवे आवेष छोडी घेर चाल्या जवुं ते सर्वथा अनुचित छे' आवुं विचारी तेणे एक अभिनव वेष धारण कर्यो ते आप्रमाणे, आ साधुओ मन वचन अने कायाना त्रण दंडथी विरत छे अने हुं तेवो नथी तो मारे त्रण दंडनुं चिन्हहो. आ साधुओ द्रव्य अने भावथी मुंडित छे.

हुं तेवो नथी मारा मस्तक उपर शिखा अने क्षौर मुंडन हो. सर्व श्रमणोने प्राणातिपातथी विरति छे अने मारे तो स्थूल हिंसाथी विरति हो. साधुओ शील व्रतथी सुगंधी छे अने हुं तेवो नथी मारे तो चंदनादिकनुं विलेपन हो मुनिओ मोह वगरना छे अने हुं तो मोहथी आछादित छुं. एटले मारे छत्रीनुं आछादन हो मुनिओना चरणउपान वगरना छे अने मारा बे चरणमां उपान हो श्रमण मुनिओ कषाय रहित छे अने हुं कषाय सहीत छु. तेथी मारे कषाय वस्त्र हो. मुनिओ स्नानथी विरत छे अने मारे तो परिमित (मापवालां) जलथी स्नान हो. तेमज पान हो. एवी रीते स्वबुद्धिथी परिव्राजकनो वेष कल्पी लीधो. पछी विरूप वेषवाला तेने जोइ सर्वलोको तेने धर्म पुछवा लाग्या. त्यारे तेओनी आगल साधु धर्मनी प्ररूपणा करवा लाग्यो. देशना शक्तिथी अनेक राजपुत्रोने प्रतिबोध पमाडी भगवंतने शिष्यपणे वर्त्तवा लाग्यो. अने भगवंतनी साथेज विहार करवा लाग्यो. एक वखते भगवंत अयोध्यामां समोसर्या, त्यां वंदना करवाने आवेला भरते प्रभुने पुछ्युं के, स्वामी, आ पर्षदामां आ चोविशीनी अंदर भरतक्षेत्रने

विषे कोइ जिन थाय तेवो पुरुष छे ? जगवंते कह्युं, हे जरत, आ तारो पुत्र मरीचि आ चालती अवसर्पिणीमां वीर नामे चोवीशमा तीर्थंकर, विदेह क्षेत्रनी मूकाराजधानीमां प्रियमित्र नामे चक्रवर्त्ती अने आ जरतक्षेत्रमां प्रथम वासुदेव थशे—आ सांजली हर्ष पामेला जरते मरीचि पासे जइ त्रण प्रदक्षिणा अने वंदना करी कह्युं, हे मरीचि, जेटला लाज छे तेटला तें ज मेलव्या छे कारण के, तुं तीर्थंकर, वासुदेव अने चक्रवर्त्ती थइश. हुं तारा आ परिव्राजक पणाने वांदतो नथी पण तुं तीर्थंकर थइश एम धारी तने वंदना करुं छुं. एम वारंवार स्तुति करी जरत पोताना स्थानमां गयो. मरीचिए पण ते सांजली हर्षना अधिक्यथी त्रिपदी बतावी नृत्य करतां आ प्रमाणे कह्युं, "हुं पेहेलो वासुदेव थइश. मूकापुरीमां चक्रवर्त्ती थइश अने छेल्लो तीर्थंकर थइश अहो, मारुं कुल घणुं उत्तम छे. बधा वासुदेवोमां हुं पेहेलो वासुदेव थइश. मारा पिता जरत बधा चक्रवर्त्तीउमां पेहेला चक्रवर्त्ती छे अने मारा पितामह ऋषजदेव सर्व तीर्थंकरोमां पेहेला तीर्थंकर छे—अहो, मारुं कुल केवुं उत्तम छे." आ प्रमाणे मद करवाथी मरीचिए नीच गोत्र बांध्युं. कह्युं छे के, "जे माणस जाति, लाज, कुल, ऐश्वर्य, बल, रूप, तप अने विद्या ए सर्वनुं अजिमान करे तो तेने पुनः ते बधा हीन मले छे." ते पछी ज्यारे जगवंत निर्वाण पाम्या. एटले ते पूर्वनी जेम लोकोने प्रतिबोध करी साधुउना शिष्य करी तेउनी साथे विहार करवा लाग्या. एक मरीचिना शरीरे व्याधि थयो कोइ तेनी वैयावच्च करतुं नहीं त्यारे तेणे चिंतव्युं के, अहा, आ निर्ग्रंथो घणां परिचित छे तथापि ते पारकां छे. तेथी जो हुं नीरोगी थाउं तो एक वैयावच्च करनारो शिष्य करुं—आम विचार्युं अनुक्रमे ते नीरोगी थयो. एक वखते कपिल नामनो कोइ राजपुत्र मरीचिनी देशना सांजली प्रतिबोध पाम्यो—एटले मरीचिए कह्युं, हे कपिल तुं साधुउनी पांसे जइ चारित्र ग्रहण कर्य. त्यारे कपिले कह्युं, स्वामी, हुं तो तमारा दर्शननुं व्रत लइश. मरीचि बोल्या—हे कपिल, ते साधुउ त्रण प्रकारना दंमथी विरत छे अने हुं तो त्रण दंमवालो छुं. इत्यादि सर्व पोतानुं स्वरूप कही बताव्युं. तथापि ते जारे कर्मी कपिल चारित्रथी विमुख थइ बोल्यो—शुं तमारा दर्शनमां सर्वथा धर्म

चित्र ६





नथी ? ते सांजली मरीचिए विचार्युं के, आ मारो योग्य शिष्य थशे. एवुं विचारीने कह्युं के, कपिल जैन मार्गमां पण धर्म छे अने मारा मार्गमां पण छे. ते सांजली कपिले तेनी पांसे दीक्षा लीधी. मरीचिए आवा उत्सूत्र वचनथी कोटाकोटी सागरोपम संसार उपार्जन कर्यो. जे अहिं किरणावलीकार कहेछे के, कपिलाइत्थं ए वचन उत्सूत्र मिश्रित छे. तेवा उत्सूत्र जाषीने नियतपणे अनंत संसार छे एम कही, पोताना मतनुं स्थापन करवानी रसिकता छे एम जाणवुं. तेउनो मत आ प्रमाणे छे–के उत्सूत्रने कहेनाराने नियतपणेज अनंत संसार थाय छे. जो आ मरीचिनुं वचन उत्सूत्र कहीए तो एनेपण अनंत संसार प्राप्त थवानो प्रसंग आवे, पण तेने अनंत संसार थयो नथी तेथी ते उत्सूत्रमिश्रित छे एवो तेमनो मत युक्त नथी कारण के, 'उत्सूत्र कहेनाराने अनंत संसार छे' एवो नियम नथी. श्रीजगवती सूत्र विगेरे घणा ग्रंथोने अनुसारे उत्सूत्र कहेनाराउमां शिरोमणिरूपज मालिनिह्नवने पण परिमित संसार जोवामां आव्यो छे. वली उत्सूत्र मिश्र कहेवाथी पण आ मरीचिना वचननुं उत्सूत्रपणुं चाल्युं जतुं नथी. विषमिश्रित अन्न विषज गणाय छे. हवे ए विषे वधारे कहेवुं योग्य नथी. एटलुंज बस छे. ते कर्मनी आलोचना कर्या वगर चोराशी पूर्वलाखनुं आयुष्य पूर्ण करी मृत्यु पामी चोथे जवे ब्रह्मलोकमां दश सागरोपमनी स्थितिवालो देवता थयो. त्यांथी चवीने पांचमे जवे कोल्लाक नामना ग्राममां एशी पूर्वलाख आयुष्यवालो ब्राह्मण थयो. ते अतिविषयासक्त अने शूगवगरनो थयो. छेवटे त्रिदंकी थइ बहुकाल सुधी संसारमां जम्यो.–आ तेना जव स्थूल जवनी अंदर गणाता नथी. त्यांथी छठे जवे स्थूणा नगरीमां बोंतेर पूर्व लाखनी आयुष्यवालो पुष्प नामे ब्राह्मण थयो ते त्रिदंडी थइ मृत्यु पाम्यो. सातमे जवे सौधर्म कल्पमां मध्यस्थिति देवता थयो. त्यांथी चवीने आठमे जवे चैत्य ग्राममां साठ पूर्वलाखनी आयुष्यवालो अग्निद्योत नामे ब्राह्मण थयो. ते त्रिदंडी थइ मृत्यु पाम्यो.

नवमा जवमां इशान देवलोके मध्यस्थितिवालो देवता थयो. त्यांथी चवी दशमे जवे मंदर ग्रामे छपन पूर्वलाखनी आयुष्यवालो अग्निजूति नामे ब्राह्मण थयो. अंते त्रिदंकी थइ मृत्यु पाम्यो अगीयारमां

नवमां त्रीजा कल्पनी अंदर मध्यस्थितिवालो देवता थयो. त्यांथी चवी बारमे नवे श्वेतांबी नगरीमां चुम्मालीश पूर्वलाखनी आयुष्यवालो नारद्वाज नामे ब्राह्मण थयो. ते त्रिदंडी थइ मृत्यु पामी तेरमे नवे माहेंद्र कल्पमां मध्यस्थिति देवता थयो. त्यांथी चवीने केटलोक काल संसारमां नमी चौदमे नवे राजगृह नगरमां चोत्रीश पूर्वलाखनी आयुष्यवालो स्थावर नामे ब्राह्मण थयो. ते त्रिदंडी थइ मृत्यु पामी पंनरमा नवमां ब्रह्मलोकमां मध्यम स्थितिवालो देव थयो. शोलमां नवमां कोटिवर्षनी आयुष्यवालो विश्वनूति नामे युवराज पुत्र थयो. ते संनूति मुनिपांसे चारित्र लइ एक हजार वर्ष डुस्तप तपस्या करवा लाग्यो. एक समये मासोपवासना पारणा माटे मथुरापुरी गोचरी करवा गयो त्यां कोइ एक गाये तपस्याथी कृश थवाने लीधे तेने पृथ्वी उपर पाडी नाख्यो. तेने पडेलो जोइ त्यां परणवाने आवेला विशाखनंदी नामना तेना काकाना पुत्रे तेनुं उपहास्य कर्युं. तेथी कोप पामी तेणे ते गायने बे सींगडे पकडी आकाशमां नमावी अने एवुं नियाणुं कर्युं के, में करेला उग्रतपथी हुं नवांतरे घणो पराक्रमी थाउं. त्यांथी मृत्यु पामी सत्तरमे नवे महाशुक्र विमाने उत्कृष्ट स्थितिवालो देवता थयो. त्यांथी चवीने अढारमे नवे पोतनपुरनो राजा प्रजापति के जे पोतानी पुत्री उपर कामी थयो हतो. तेनी पत्नीरूप मृगावती पुत्रीनी कुक्षिमां चोराशी लाख वर्षनी आयुष्यवालो त्रिपृष्ठ नामे वासुदेव थयो. त्यां बाल्यवयमां पण प्रतिवासुदेवना शालि क्षेत्रमां विघ्न करनारा सिंहने शस्त्र ग्रोडी विदारण कर्यो. अनुक्रमे वासुदेवपणाने प्राप्त थयो. एक वखते ते वासुदेवे पोताना शय्यापालकने आज्ञा करी के, ज्यारे अमे सुइ जइए त्यारे तुं आ गायकोने गायन करता अटकावजे. तेवी आज्ञा कर्या छतां गीतरसमां आसक्त थयेला ते शय्यापालके वासुदेव सुता हता अने तेउने वार्या नहीं. ते पछी क्षणवारे जाग्रत थइ वासुदेवे कह्युं—"अरे पापी, मारी आज्ञा पालवाथी पण तने गीत श्रवण प्रिय लाग्युं, तो ले तेनुं फल नोगव्य—" एम कही तेना बंने कानमां तपेलुं सींसु रेड्युं. आ कृत्यथी तेणें पोताना कानमां खीला नखा-

शय्यापालक.

विणा मृदंग वजावनार.

दासी

त्रिपृष्ठ वासुदेव.



कर्म उपार्जन कर्युं. एवी रीते अनेक दुष्कर्म करी त्यांथी मृत्यु पामी ओगणीशमे जवे सातमी नारके नारकीपणे उत्पन्न थयो. १ए

त्यांथी नीकळी विशमा जवमां सिंह थयो. त्यांथी मृत्यु पामी एकवीशमां जवमां चोथी नारकीमां उत्पन्न थयो. त्यांथी नीकळी घणा जव जमी बावीशमे जवे मनुष्यपणुं प्राप्त करी शुज कर्म उपार्जन करी त्रेवीशमे जवे मूका राजधानीमां धनंजय राजानी धारिणी देवीनी कुक्षिमां चोराशी पूर्व लाखनी आयुष्यवाळो प्रियमित्र नामे चक्रवर्त्ती थयो. ते पोटिलाचार्यनी पांसे दीक्षा लइ एक कोटिवर्ष सुधी दीक्षा पाळी चोविशमे जवे महाशुक्र देवलोकमां देवता थयो. त्यांथी चवीने पचवीशमे जवे आ जरतक्षेत्रनी छत्रिका नगरीमां जितशत्रु राजानी जद्रा नामे देवीनी कुक्षिमां पचवीशवर्षनी आयुष्यवालो नंदन नामे पुत्र थयो. ते पोट्टिलाचार्यनी पांसे चारित्र लइ जाव जीव सुधी मासक्षपण करी वीश स्थानकनी आराधना वडे तीर्थंकर नामकर्म निकाचित करी एक लाखवर्ष सुधी चारित्र पर्यायपाली मासिक संलेखनाथी मृत्यु पामी छवीशजे जवे प्राणत कल्पमां पुष्पोत्तरावतंसक विमानमां विशसागरोपमनी स्थितिवाळो देवता थयो. त्यांथी चवीने पूर्वे मरीचि जवमां बांधेला अने जोगववाने बाकी रहेला नीचैर्गोत्रना कर्मथी सत्यावीशमे जवे ब्राह्मण कुंम गाममां रुषजदत्त ब्राह्मणनी देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षिमां ते उत्पन्न थयो. तेथी शक्र इंद्र आप्रमाणे चिंतवे छे—के एवी रीते नीचगोत्र कर्मना उदयथी अर्हत, चक्री वासुदेव विगेरे अंत प्रमुख नीचकुलोमां आव्या छे, आवे छे अने आवशे. पण जन्म लेवाने माटे तेउनुं योनिमांथी नीकलवुं थतुं नथी. तेउ योनिमांथी नीकल्या नथी, नीकलता नथी अने नीकलशे नहीं. जावार्थ एवो छे के, कदाचित् कर्मना उदयथी ते अर्हंत विगेरेनो अवतार तुच्छ प्रमुख नीच गोत्रमां थाय पण योनिथी जन्मतो थयुं नथी, थतुं नथी अने थशे नहीं. अयंचण त्यांथी मांकीने गब्जत्ता ए पर्यंत त्यां सुधी सुगम अर्थ छे. ते माटे आवो आचार छे—ते कोनो आचार छे ते कहे छे—

देवताउना राजा शक्रादि इंद्रोनो आचार छे. ते अतीत, वर्त्तमान अने अनागत एवा इंद्रोनो आ-

चार छे. ते कयो आचार—ते कहे छे. तेवा प्रकारना पूर्वे कहेला स्वरूपवाला अंत्यादि कुलथी तेवा प्रकारना उग्र विगेरेथी बीजी जातना कुलमां अर्हंत प्रजुर्छ थाय छे. ते श्रेय—कल्याण छे, मने पण घटे छे के,ज्ञात एटले श्रीक्रृषजस्वामीना वंशना क्षत्रीयोमां प्रख्यात एवा काश्यप गोत्री सिद्धार्थ राजानी जार्या त्रिशला क्षत्रियाणीनी कुक्षिमां गर्जपणे प्रजुने मुकवा जोइए. जे त्रिशला क्षत्रीयाणीनो पुत्रीरूप गर्ज छे, शक्रइंद्र विचारे छे के ते प्रजुने त्यांथी लइ देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षिमां मुकी देवा मारे युक्त छे. एम करीने ते विचारे छे विचारीने पदाति सेनाना नायक एवा हरिणे गमेसीदेवने बोलावे छे. बोलावीने आ प्रमाणे कहे छे—हे देवानुप्रिय, त्यांथी मांडीते साहराविन्त त्यां सुधीना चार सूत्रो वडे शक्रइंद्र पोतानुं चिंतवेलुं हरिणेगमेषी देवने कहे छे. वली कहे छे के, हे देवानुप्रिय—इंद्रोनो आचार छे ते कारण माटे तुं जा अने देवानंदाब्राह्मणीनी कुक्षीमांथी जगवंतने त्रिशला क्षत्रियाणीनी कुक्षिमां मुकी दे. अने त्रिशलानो जे गर्ज छे तेने देवानंदानी कुक्षिमां मुकी दे.

ए प्रमाणे करीने आ मारी आज्ञाने सत्वर अर्पण कर्य. कार्य करीने आवी,आकार्यमें कर्युं, एम शीघ्र निवेदन कर्य. ते पछी ते हरिणेगमेषी देव के जे पेदल सेनानो अधिपति छे तेने देवेंद्र अने देवराज एवा शक्रइंद्रे आ प्रमाणे कह्युं—एटले हृदयमां हर्ष पामी रोमांचित थई गयो.

एवो हरिणैगमेषी देव मस्तके अंजलि करी बोल्यो. जेवी आप देवनी आज्ञा एम कही आज्ञानुं वचन विनयथी सांजले अने अंगीकार करे अंगीकार करीने इशान कोणमां जाय. त्यां जइने. वैक्रियसमुद्घात एटले वैक्रिय शरीर करवामाटे प्रयत्न करे. ते करीने संख्येय योजन प्रमाण दंडनी आकृतिवाला उपर अने नींचे विशाल जीव प्रदेशना कर्म पुद्गलना समूहने बाहेर काढे. ते करवा वखते आवा प्रकारना पुद्गलोने ग्रहण करे ते आ प्रमाणे— कर्केतनादि रत्नोना, जो के, पुद्गलो औदारिक छे तेथी ते वैक्रिय शरीर करवामां असमर्थ छे. तेमां तो वैक्रिय वर्गणाना पुद्गलोज उपयोगमां आवे. तो पण रत्नोनी जेम ते सार पुद्गलो छे—एम जाणवुं. ते रत्नो जेवा के हीरा, वैडूर्य, लोहिताक्ष, सारगल्ल, हं- ॥ २३ ॥

चित्र ८



चित्र ९





[illegible]

सगर्भ, पुलक सौगंधिक, ज्योतिरस, अंजन, अंजनपुलक, जालरूप, सुभग, अंक, स्फटिक, रिष्ट नामनी रत्नजातिओ छे. तेओना जे बादर—स्थूल अर्थात् असार पुद्गलो छे तेमने छोडीने.

जे सूक्ष्म एटले साररूप पुद्गलो होय तेने ग्रहणकरे फरीवार वैक्रियसमुद्घात वडे पूर्वनी जेम प्रयत्न करे तेकरीने उत्तर वैक्रिय एवा भवने धारण करवानी अपेक्षाए बीजु एवुं रूप करे ते करीने अन्यगतिओथी उत्कृष्ट मनोहर चित्तना उत्सुपणावाली कायानी चपलतावाली, तीव्र, बाकीनी गतिओने जितनारी, शीघ्र कोइ ठेकाणे छेयाए एवो पाठ छे एटले तेनो विघ्ननो परिहार करवामां दक्ष एवी अने देवता योग्य एवी देवगति वडे अतिक्रमण करतो ते तिर्यच् असंख्य द्वीप समुद्रोना मध्यभागे थइ ज्यां जंबूद्वीप छे तेमां भारत क्षेत्रने विषे ब्राह्मण कुंड नामे नगर छे तेमां ऋषभदत्त ब्राह्मणने घेर ज्यां देवानंदा ब्राह्मणी छे त्यां इंद्र आवे, आवीने भगवंत महावीरनु दर्शन थतां तेमने प्रणाम करे प्रणाम करी परिवार सहित देवानंदा ब्राह्मणीने अवस्वापनी निद्रा आपे ते निद्रा आपी अशुचि पुदगलोने हरीले अने शुभ पुद्गलो नाखे ते नाखीने पछी 'भगवंत मने आज्ञा आपो' एम कहे तेम कहीने व्याबाधा रहित एवा भगवंतने अव्याबाध सुखवडे दिव्य प्रभावथी करतलना संपुटमां ग्रहण करे. तेने ग्रहण करती वखते गर्भने कांइ पीडा थती नथी. ते विषे पन्नूणंभंते ए भगवतीनी गाथामां कह्युं छे. छविछेद एटले त्वचानो छेद कर्याविगर गर्भ प्रवेश करवो अशक्य छे. ते गर्भने लइ जेणेवे इत्यादिथी सुभे पुग्गले पक्खिवेइ त्यां सुधी प्रथमनी जेम अर्थ जाणी लेवो पछी ते श्रमण भगवंत श्रीमहावीरने बाधा रहितपणे त्रिशला क्षत्रियाणीनी कुक्षिमां गर्भ पण मुके छे. अहिं गर्भने संहरण करवामां चार भांगा छे गर्भाशयथी गर्भाशयमां १ गर्भाशयथी योनिमां २ योनिथी गर्भाशयमां ३ अने योनिथी योनिमां ४ तेमां अहिं योनिमार्गे लइ गर्भाशयमां मुके ए त्रीजो भांगो अनुज्ञात छे बाकीना भांगानो निषेध कर्यो छे. तेविषे भगवती सूत्रमां लख्युं छे. वली जे त्रिशला क्षत्रियाणीनो पुत्रीरूप गर्भ हतो तेने पण देवानंदा ब्राह्मणीनी कुक्षिमां मुके छे तेम करीने पछी जे दिशामांथी पोते आव्यो ते दिशा

प्रत्ये जाय पछी असंख्य द्वीपसमुद्रोना मध्यमां थइ लक्षयोजन प्रमाण दिव्य गतिवडे थी उतरतो ते ज्यां सौधर्म कल्पमां सौधर्मावतंसक नामना विमानविषे शक्र नामना सिंहासन उपर देवेंद्र, देवराज शक्रेंद्र रहेलो छे त्यां आवे. त्यां आवीने इंद्रनी आज्ञाने प्रत्यर्पित करे छे. ते काले ते समये श्रमण भगवंत महावीर वर्षाकाल संबंधी त्रीजा मासनुं पांचमुं पखवाडीयुं जे आश्वीन मासनुं कृष्णपक्ष त्रयोदशीनो पक्ष पाछलनो अर्ध अर्थात् रात्रि एकंदर बाशी अहोरात्र अतिक्रांत थया पछी त्राशीमा अहोरात्रनो अंतराकाल एटले रात्रिनो काल प्रवर्त्तता ते हरिणैगमेषी देवताए त्रिशलामातानी कुक्षीमां ते भगवंतनो गर्भ संहर्यो. ते हरिणैगमेषी देव केवो हतो के जे पोतानो अने इंद्रनो हितकारी छे वली अनुकंपक एटले भगवंतनो भक्त छे अनुकंपा शब्द भक्तिवाचक छे ते विषे 'आयरिय' ए वचननुं प्रमाण छे. अहिं कवि उत्प्रेक्षा करे छे—"श्रीभगवंत सिद्धार्थराजा राजाना आढ्यकुलना घरमां प्रवेश करवाने क्षणवार मुहूर्त्त आववानी राह जोता होय तेम जे ब्राह्मणना घरमां ब्याशी अहोरात्र सुधी रह्या हता, ते श्रीचरमतीर्थंकर प्रभु पवित्र करो. १ शेष सूत्रनो अर्थ स्पष्ट छे ते संहरण काले श्रमणभगवंत श्रीमहावीर त्रण ज्ञाने युक्त हता.

तेथी पोतानुं संहरण थवानुं छे ते जाणे छे. पण संहरण थती वखते जाणता नथी अने मारुं गर्भमांथी संहरण थयुं ए जाणे छे अहीं शंका थाय छे के, संहरण थती वखते ते जाणता नथी ते वात केम संभवे? कारण के, ते संहरण असंख्य समयनुं छे वली भगवंतने अने संहरण करनार हरिणैगमैषी देवना ज्ञाननो ते विषय छे. तेम तेनी अपेक्षाए भगवंतमां विशिष्ट ज्ञान छे. तेना उत्तरमां कहे छे के आ वाक्य संहरण करनार देवनी कुशलताने जणावे छे ते देवताए भगवंतनुं एवी रीते संहरण कर्युं के जेथी भगवंते जाण्युं तोपण जाणे जाण्युंज न होय तेम लाग्युं कारण के, कांइ पण पीडानो अभाव हतो. जेम कोइ कहे छे के, तमे मारा पगमांथी एवी रीते कांटो काढ्यो के जे मारा जाणवामां ज आव्युं नहीं. ज्यां अतिशे सुख लागे त्यां आवो व्यपदेश थाय छे सिद्धांत मांपण जोवामां आवे छे के,

जे व्यंतर देवता छे तेउ उत्तम स्त्रीउनां गीत अने वाद्यना शब्दथी नित्ये सुखी अने प्रमुदित थइ पोताना गतकालने पण जाणता नथी. वली आचारांग सूत्रमां कह्युं छे के, ते हरण करातां जाणे. ए विरोध पण न आवे एम मानवुं. जे रात्रे श्रमण जगवंत महावीर देवानंदानी कुक्षिमांथी त्रिशलानी कुक्षिमां संहरणथी आव्या, ते रात्रे ते देवानंदाए पूर्वे कहेला चौद स्वप्नो त्रिशलाए हरीलीधेला जोया. ते जोइ जागी जइ जे रात्रे जगवंतने कुक्षिमां मुक्यां ते रात्रे त्रिशला क्षत्रियाणी जे वर्णवी शकाय नहीं तेवा वासगृहमां आवे. जे वासगृह–शयनगृह केवुं छे. महा जाग्यवंतने योग्य छे. जे चित्रकर्मवडे रमणीय छे. जेनो बाहेरनो जाग चुना विगेरेथी धवलित कर्यो हतो. जे कोमल पाषाणादिकथी चणेलुं, तेथी सुकोमल हतो. जेनो उपरनो जाग विविध चित्रोथी युक्त हतो.

जेनो अधो जाग–तलीयुं देदीप्य मान हतुं. पछी कर्म धारय समास करवो. मणिरत्नोथी जे अंधकारने नाश करतो हतो. जे पंचवर्णी मणिउथी निबद्ध होवाथी अत्यंत सम तथा विषम हतो. जेनी जूमिनो जाग विविध स्वस्तिक विगेरेनी रचनाथी मनोहर हतो. पंचवर्णी, सरस सुगंधी अने आमतेम वेरेला पुष्पपुंजना उपचार–पूजाथी जे व्याप्त हतो.

कृष्णागुरु, चीरू जातना, सिल्हक नामना अने दशांग विगेरे धूप जेमां थता हता. अनेक सुगंधी द्रव्यना संयोगथी उत्पन्न थयेलो ए सर्व वस्तु संबंधी मघ मघीने प्रगट थयेल सुगंधवडे जे आल्हा हतो. वली जेमां उत्तम सुगंधीनो गंध प्रसरतो हतो.

वासजवन गंध द्रव्यना जेवुं अर्थात् अतिसुगंधी हतुं. एवा वास जवनमां शय्या–पलंग उपर , ते केवी शय्या छे. जेमां शरीरना प्रमाण जेटली तलाइ छे. उजय तरफ एटले मस्तकांत तमां बे उशीषा छे, ते शिवाय बंने पडखे उशीसा छे तेथी ते शय्या बंने जागमां उंची लागे तेने लीधे मध्यमां नमेली अने गंजीर छे. जेम गंगातटनी रेतीमां पग विगेरे मुकवाथी ते पग

नीचे उतरी जाय तेम ते शय्यामां पण अतिकोमलपणाने लीधे तेम हतुं. अतिकोमल रेशमी वस्त्रना पट्टथी ते आछादित छे.

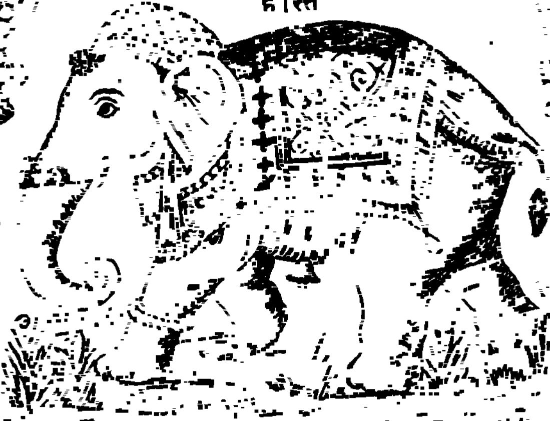
वली जेमां रज पडे नही तेवुं आछादन छे. राता वस्त्रोनी मछरदानीथी ते ढांकेली छे. कपासनी रू वांटी, बुर जातनी वनस्पति, मांखण, अने आकडाना रूना जेवो जेनो स्पर्श छे. सुगंधी, प्रधान एवा पुष्पथी अने वासचूर्णथी जेमां उपचार करवामां आव्यो छे.

बाकीनो अर्थ सुगम छे. पछी मध्यरात्रे ते त्रिशला क्षत्रीयाणी प्रथम स्वप्नामां हाथी जोवे–अहीं 'प्रथम हस्ती जुवे' एम जे कह्युं ते घणी जिनमाताउ तेम जोवे छे, तेथी पाठानुक्रमनी अपेक्षाए कह्युं छे. अन्यथा श्रीऋषभ देवनी माता प्रथम ऋषभ अने वीरमाता प्रथम सिंहने जोवे. हवे ते केवो हाथी जोयो के जेने चार दांत छे. कोइ ठेकाणे तउअ चउद्दंतं एवो पाठ छे तो एवो अर्थ थाय के, तेजथी घणा बलवान् एवा चार दांतवालो. ते हाथी केवो छे. अतिउंचो छे. वली वर्ष्या पछी दुग्धवर्णी थयेलो विशाल मेघ, मोतीनो हार, क्षीरसमुद्र, चंद्रना कीरणो, जलना बिंदुउ, अने रूपानो महान् पर्वत वैताढ्य तेना जेवो उज्वल छे. गंधना लोभथी जेमां भमराउ आवे छे.

एवा विशिष्ट गंधवाला मदजथी जेना गंडस्थल सुगंधी थयेला छे. इंद्रना हस्ती ऐरावत जेवुं जेना देहनुं शास्त्रोक्त प्रमाण छे–एवा हाथीने त्रिशला माता जुवे छे. वली ते केवो हाथी छे. जल पूर्ण मेघनी गर्जना जेवो गंभीर अने मनोहर जेनो ध्वनि छे.

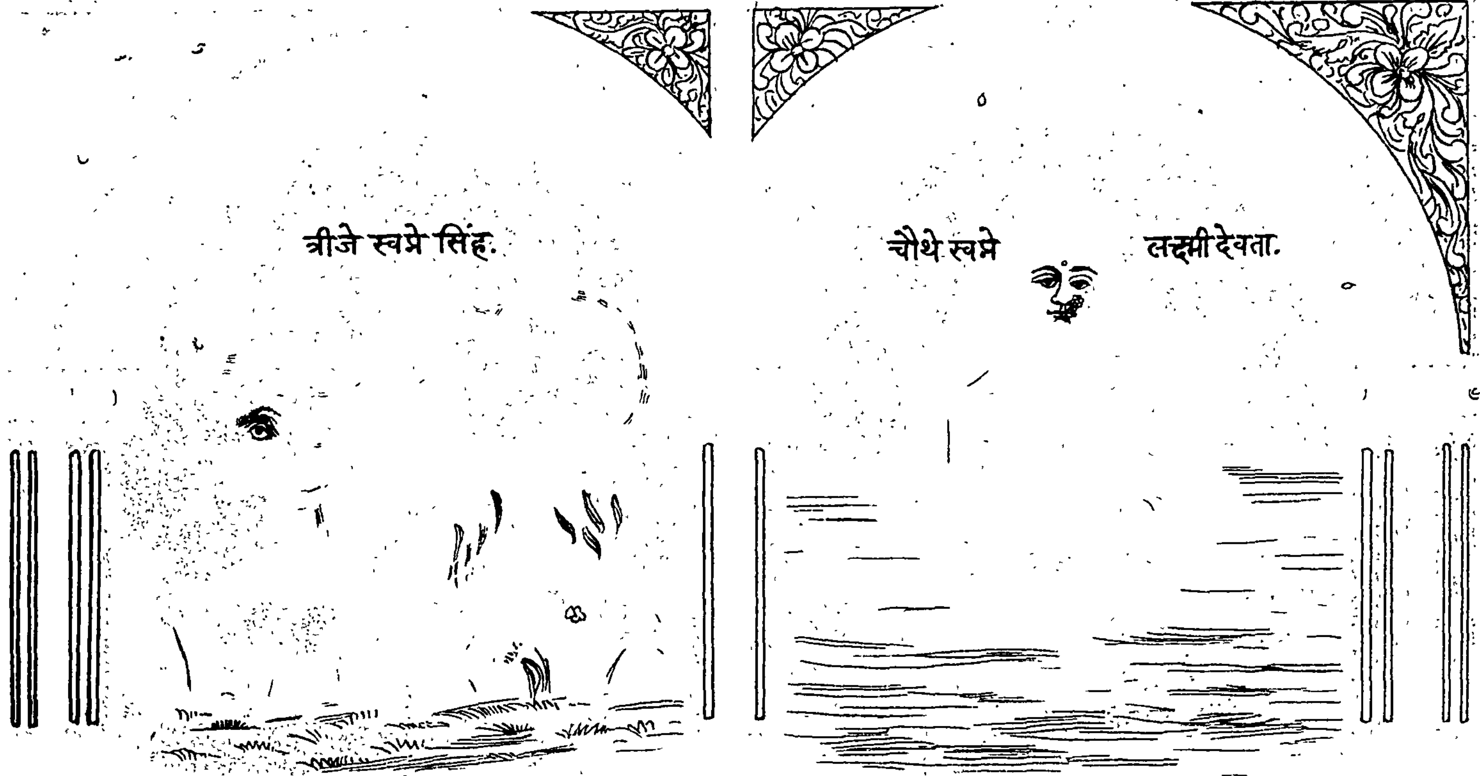
वली ते शुभ एटले प्रशंसवा योग्य छे. जेनामां सर्व लक्षणोना समूह छे. अने जे प्रधान अने विशाल छे. एवा उत्तम हस्तीने त्रिशला माता प्रथम स्वप्नामां जुवे. ते हस्तीना दर्शन थया पछी ते वृषभने जुवे छे. ते वृषभ केवो छे– उज्वल एवा कमल पत्रना सगूहथी जेनी अधिक रूपकांति छे. जे पोतानी कांतिउना समूहने विस्तारी सर्व तरफ दशे दिशाने निश्चय पणे शोभाडे छे. वली जेनो स्कंध भाग शोभाना समूहे करेली प्रेरणाथी होय तेम उल्लास पामती कांतिवडे प्रकाशित, सुशोभित अने

चित्र १०





चित्र ११



मनोहर हतो. जो के स्कंधनो भाग उन्नत होवाथी स्वयमेव उल्लास पामे तथापि लक्ष्मीना समूहनी प्रेरणाथी जाणे उल्लास पामता होय तेवी उत्प्रेक्षा करे छे. सूक्ष्म, शुद्ध अने सुकुमाल रोमवडे स्निग्ध एवी जेनी कांति छे. जेनुं अंग दृढ बांधादार, मांसवालु, एथीज पुष्ट, प्रधान अने यथास्थाने रहेला योग्य अवयववालुं होवाथी घणुं सुंदर लागे छे. जेना बे शींगडा, घाटा वर्तुल, अति उत्कृष्ट, चीकाशवाला अग्रभागे युक्त, अने तीक्ष्ण छे. वली ते वृषभ दांत एटले क्रूर नथी, उपद्रवने हरनारो छे तेना दांत सरखा प्रमाण वाला, सुशोभित अने श्वेत-निर्दोष छे. जेउना अपरिमित गुण छे एवा मंगलोनुं जे मुख द्वार एटले आववानुं कारण छे तेवा वृषभना दर्शन कर्या पछी आकाशमांथी उतरतो अने पोताना मुखमां प्रवेश करतो एक सिंह त्रिशला माताए स्वप्नमां जोयो. ते सिंह केवो छे.

हार, क्षीरसागर, चंद्रकीरण, रूपुं अने वैताढ्यना जेवो उज्वल छे. वली ते मनोहर होवाथी दर्शनीय छे. तेना बे पोंहोचा-पंजा दृढ अने प्रधान छे. वर्त्तुलाकार, पुष्ट, परस्पर जडाएली प्रधान अने तीक्ष्ण दाढोथी तेनुं मुख अलंकृत थयेलुं छे.

जाणे सुधार्या होय तेवा कमल जेवा कोमल अने प्रमाणथी सुशोभित तथा प्रधान एवा तेना बंने होठ छे. राता कमलना पत्र जेवुं कोमल तालवुं छे अने लप् लप् थती प्रधान जिव्हा छे-ए तालवुं अने जिह्वा बंनेथी ते शोभतो हतो.

सोनी जेमां सोनुं नाखीने गाले छे तेवी कुडीमां रहेलुं, तपी गयेलु अने प्रदक्षिणा फरतु एवुं जे उत्तम सुवर्ण तेना जेवा गोल अने निर्मल विजली जेवा चलकता जेना बे नेत्रो छे. विशाल, पुष्ट, अने प्रधान जेना बंने साथोल छे. परिपूर्ण अने निर्मल जेनी कांध छे. कोमल, उज्वल, सूक्ष्म श्रेष्ट लक्षणवाली अने दीर्घ एवी जे केशवाल छे तेना उद्भतपणाथी जे सुशोभित छे. उन्नत, कुंडलाकारे शोभायमान करी जे पोताना पुछडाने अफलावे छे. जे मनथी क्रूर नथी, जेनी आकृति सुंदर छे अने जे विलास सहित गति करे छे-एवा सिंहने आकाशमांथी उतरी पोताना मुखमां पेशतो जोवे.

(ए चार पद पूर्वना संबंधथी योजवा.) गाढ अने तीक्ष्ण अग्रवाला जेना नख छे एवो अने रता-श अनकोमलताथी पल्लव जेवी मनोहर जिह्वा जेणे प्रसार करेली छे. एवा केशरीने जुवे. ते पछी एटले सिंहना दर्शन थया पछी पूर्णचंद्र जेवा मुखवाला त्रिशला देवी पद्महृदना कमलमां वसनारा जगवती लक्ष्मीने देवताने हिमालयना शिखर उपर दिग्गजेंद्रे पोतानी पुष्ट सोंढथी अभिषेक करातां जोया. ते लक्ष्मी केवा छे. उंचा हिमालय पर्वत उपर थयेला प्रधान कमलस्थान उपर बेठा छे—ते आ प्रमाणे ए हिमालय पर्वत एकसो योजन उंचो छे. बार कलाए अधिक एक हजारने बावन योजन विशाल अने सुवर्णनो छे तेनीउपर दश योजन उंडो, पांचसो योजन विशाल अने एक हजार योजन लांबो वज्रमय तलीआवालो पद्महृद नामे धरो छे.

तेना मध्यभागे एक कमल छे—ते जलथी बे कोश उंचुं छे, एक योजन विशाल, छे एक योजन लांबु छे. तेनुं नील रत्नमय नालवुं दश योजननुं छे. तेनुं मूल वज्रमय छे. तेनो कंदरिष्ट रत्नमय छे. तेनी बाह्य पांखडीउ रक्त कनकमय छे. तेनी वचली पांखडीउ सुवर्णनी छे. ते कमलनी कनकमय कर्णिका छे जे बे कोश विशाल, बे कोश दीर्घ अने एक कोश उंची छे. तेना केशरा रक्त सुवर्णमय छे. तेनी मध्यमां अध कोश विशाल एक कोश दीर्घ, कांइ उणुं एक कोश उंचुं श्रीदेवीनुं भवन छे. तेने पांचसो धनुष्य उंचा, अढीसो धनुष्य विशाल, पूर्व दक्षिण अने उत्तर दिशामां रहेला त्रण द्वार छे. तेना मध्यभागे अढीसो धनुष्यना मापवाली रत्नमय वेदिका छे. तेनी उपर श्रीदेवीने योग्य एवी शय्या छे. हवे ते मुख्य कमलनी चारे तरफ श्रीदेवीना आभरणे भरेला, वलयाकारे रहेला प्रथम कहेला मापथी अर्धा मापे उंचां, लांबां अने विशाल एवां एकसो आठ कमलो छे. एवी रीते सर्व पण वलयोमां अनुक्रमे अर्धुं अर्धुं मान जाणवुं.—एवी रीते प्रथम वलय थयुं. ! बीजे वलये वायव्य, इशान अने उत्तर दिशामां चार हजार सामानिक देवतानां चार हजार कमलो छे. पूर्वदिशामां चार महत्तरा कमलो छे. अग्निदिशामां

र पर्षदानां देवतानां आठ हजार कमलो छे. दक्षिण दिशामां मित्रस्थाने रहे
। दश हजार कमलो छे.

नैर्ऋतदिशामां किंकरस्थाने रहेला बाह्यपर्षदाना देवताउनां बार हजार कमलो छे. पश्चिमदिशामां हाथी, अश्व, रथ, पेदल, पाडा, गंधर्व अने नाट्यरूप सात कटक नायकोनां सात कमल. एवीरीते बीजुं वलय थयुं. २ त्रीजे वलये तेटला अंग रक्षक देवताउनां सोल हजार कमलो छे. ए त्रीजुं वलय ३ चोथे वलये अभ्यंतर आभि योगिक देवताउनां बत्रीश लाख कमलो छे ए चोथुं वलय छे. ४ पांचमे वलये मध्यम आभियोगिक देवतानां चालीश लाख कमलो छे ए पांचमुं वलय ५ छठे वलये बाह्य आभियोगिक देवतानां अडतालीश लाख कमलो छे. ए छठुं वलय. ६ मूल कमल साथे सर्व संख्याए एक कोटी, विश लाख. पचाश हजार एकसोनेविश कमलो थाय छे. एवी जातना कमल लक्षणस्थान उपर जे श्रीदेवी रहेलां छे वली ते केवां छे. मनोहर रूपवालां छे तेमना बंने चरण सारीरीते स्थापित करेला कनकमय काचबाजेवा छे अति उन्नत अने पुष्ट एवा अंगोठा उपर रहेला श्रीदेवीना नख स्वाभाविक तेवा राता छे के जाणे, लाख विगेरेथी रंग्या होय, तेवा पुष्ट मध्ये उंचा सूक्ष्म ताम्रवर्णी अने स्निग्ध नखो हता. तेमनी आंगलीउ कोमल होवाथी श्रेष्ठ हती. कुरुविंद जातना आवर्त्तथी अथवा तेवा आभूषणथी शोभित, अने वृत्तानुपूर्व एटले हाथीनी सोंढनी जेम पूर्वथी उत्तरोत्तर स्थूल एवी जेनी बे जंघा हती जेना जानु गुप्त हता जेना बंने उरु गजेन्द्रनी सुंढ जेवा हता. सुवर्णनी मेखलाए युक्त होवाथी मनोहर अने विस्तारवालुं जेनुं कटीतट हतुं उंचीजातनुं काजल, भ्रमरा अने मेघना समूहना जेवावर्णवाली, सरल, सरखी, घाटी, सूक्ष्म, सुंदर, विलासथी मनोहर, शिरीष पुष्पादि वस्तुउथी कोमल अने रमणीय एवी तेनी रोमराजी हती. तेनुं जघनस्थल नाभि मंडलथी सुंदर, विशाल अने श्रेष्ठ लक्षणोवालुं हतुं. तेना शरीरनो मध्य भाग मुष्टिमां आवे तेवो अने श्रेष्ठ त्रिवलीनो हतो. विविध जातना चंद्रकांत विगेरे मणि, वैदूर्य विगेरे रत्नो, कनक एटले पीतवर्णी सुव

र्ण अने निर्मल, मोटी जातनुं रक्तवर्णी सुवर्ण तेना रचेला आजरण एटले अंग उपर पेहेरवाना गल
चवा कंकण विगेरे अने जूषण एटले उपांग उपर पेहेरवाना मुद्रिका विगेरे तेउथी जेना मस्तकादि
अंग अने अंगुलि विगेरे उपांग शोजता हता अर्थात् ते श्रीदेवीना अंग आजरणोथी अने उपांग आ
जूषणोथी विराजित हता वली मोतीना हारथी शोजायमान, जोलर विगेरेनां पुष्पोथी व्याप्त अने दे
दीप्यमान एवा स्तन युगलनी समान आकृतिवाला बे कलश तेणीए धारण कर्या हता.

वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे, तो के यथायोग्य स्थानके स्थापन करेलां जे मरकतपत्र केतां पानां, ते-
उवडे करीने शोजायुक्त थयेला, तथा आंखोने अत्यंत आनंद आपनारा, एवा जे मोतीउनां गुछा, ते
उए करीने मनोहर थएलो जे मोतीउनो हार, तेणे करीने शोजायुक्त थएली. (अहीं "शोजा युक्त
थएली" एटलुं पद मूल सूत्रमां नथी आप्युं, ते अध्याहार तरिके लेखवुं; अने एवी रीतेज आगलनां
पण बन्ने विशेषणोमां लेइ लेवुं.) वली ते लक्ष्मी केवी छे, तो के, उदरस्थ केतां हृदयमां रहेली जे दी
नारमाला केतां सोनानां सिक्काउनी जे माला तेणे करीने शोजायुक्त थएली, एवी. वली ते लक्ष्मी देवी
केवी छे, तो के, मनोहर अने कंठमां रहेलो जे मणिसूत्र केतां मणिउनो जे रत्नमय दोरो, तेणे करीने
शोजायुक्त थएली, एवी. वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे, तो के, आवी रीतनां शोजागुणनां समुदयथी,
एटले कांतिगुणनां अतिशयपणांथी शोजित थएली, हवे ते शोजागुणसमुदय केवो छे, तेनां विशेषणो
कहे छे. अंस केतां जे खजा तेउनां पर लागीने रहेलुं जे कुंफलनुं युग्म, तेनी उलसायमान थती. शो-
जती, अने समीचीन छे, कांति जेमां, एवो, वली ते शोजागुणसमुदय केवो तो के, लक्ष्मी देवीनां मु-
खनो जाणे कुटुंबीज होय नहीं, एवो. अर्थात् जेम राजा कुटुंबीउ अने सेवकोथी शोजे छे, तेम लक्ष्मी
देवीनुं मुख, ते शोजागुणसमुदयें करीने शाजे छे. ("अहीं खजासुधि लटकता" ए विशेषण कुंडलोनुं छे.)
त्यारे अहीं कोइ शंका करे के, शोजागुणसमुदयनां बन्ने विशेषणोनी वच्चे, कुंडलयुगलनुं विशेषण शामाटे
मुक्युं ? तथा ते विशेषणने परनिपात केम कर्यो ? तेने माटे कहे छे, के, आ मूल सूत्र प्राकृत जाषा-

छे अने तेथी ते भाषामां अन्य विशेषणोनी वच्चे पण बीजां विशेषणो आवे छे, तथा विशेषणोनो परनिपात पण थाय छे. अने एवी रीते सर्व जगोए विशेषणनां परनिपातमाटेनो खुलासो जाणी लेवो. हवे वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे, तो के, कमलनी पेठे निर्मल अने विस्तारवालां छे, लोचनो जेणीना, एवी. वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे, तो के, देदीप्यमान एवा जे हाथो, तेणे करीने ग्रहण करेलां जे, बे कमलो, तेउमांथी खरतुं जे मकरंदरूप पाणी, तेणे करी युक्त एवी. अर्थात् लक्ष्मी देवीए पोतानां बन्ने हाथोमां बे कमलो ग्रहण करेलां छे, अने तेउमांथी मकरंदनां एटले पुष्पोमां थता रसनां बिंदुउ नीचे पमतां जाय छे. वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे, तो के, केवल क्रीमाए करीने, (पण पसीनो दूर करवामाटे नहीं, कारणके, देवसंबंधि शरीरने पसीनो थतोज नथी.) पवन लेवामाटे हलावेलो जे तालवृंत केतां पंखो, तेणे करीने शोभायुक्त थएली. (अहीं पण) "(शोभायुक्त थएली)" (ए पद अध्याहार जाणवुं.) वली ते लक्ष्मी देवी केवी छे, तो के, सारी रीते बुटो करेलो; (पण जटाजूटनी पेठे परस्पर चोंटी गयला वालवालो नहीं.) तथा वली श्यामवर्ण एटले काली कांतिवालो तथा घाटो, (पण वच्चे आंतरावालो नहीं.) अने सूक्ष्म केतां कोमल, (पण फुक्करनां वालनी पेठे जामा केशवालो नहीं) तथा अत्यंत लंबायमान थएलो, एवो छे वेणिदंम केतां चोटलो जेणीनो, एवी रीतनी लक्ष्मी देवीने त्रीशला क्षत्रियाणीए चोथा स्वप्नमां जोइ.

एवी रीते महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणी, शिष्योपाध्याय श्री विनयविजयगणिए रचेली कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीकानां गुजराती भाषांतरमां बीजो क्षण समाप्त थयो. श्रीरस्तु ॥

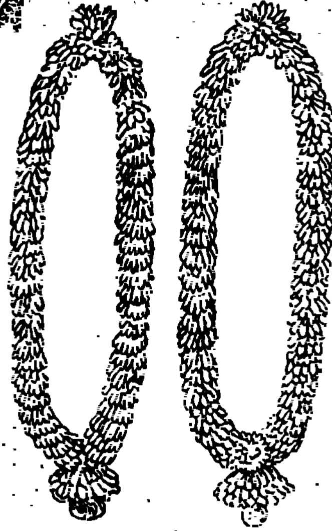
॥ श्री जिनाय नमः ॥

तृतीयं व्याख्यानं प्रारभ्यते

हवे एवि रीतनुं लक्ष्मीनुं स्वप्न जोयाबाद, त्रिशला क्षत्रियाणीए नभस्तल कहेतां आकाशतलमांथी

पकती एवी जे दाम कहेतां पुष्पनी मालानुं, पांचमुं स्वप्न जोयुं. ते पुष्पोनी माला केवी छे, तो के, सरस कहेतां मकरंदे करीने युक्त छे पुष्पो कहेतां फुलो जेमां, एवा जे कल्पवृक्षोनां पुष्पो, तेउंवडे करीने रमणीय केहेतां मनोहर थएली, एवी. वली, ते पुष्पोनी माला केवी छे, तो के, चंपो, अशोक, तथा सहकार आदिकनां पुष्पोनी छे, सुगंधि जेमां एवी, वली ते पुष्पोनी माला केवी छे, तो के, अनुपम एटले जेने कंइ पण उपमा आपी शकाय नहीं, एवो अद्वितीय, अने मनने अत्यंत आनंद उपजावे एवो जे सुगंध, तेणें करीने आसपास दशे दिशाउंने सुगंध युक्त करती एवी. वली ते पुष्पोनी माला केवी छे, तो के. सर्वर्तुकं केहेतां सघली ऋतुउंमां मलतां जे पुष्पो तेणें करीने युक्त थएली, एवी. अर्थात् ते पुष्पमालामां छए ऋतुमां थतां पुष्पो गुंथेलां हतां. वली ते पुष्पोनी माला केवी छे, तो के, अत्यंत देदीप्यमान थतां, अने तेथीज अत्यंत मनोहर लागतां, एवां जे जुदी जुदी जातनां लाल, पीला विगेरे रंगोनां जे पुष्पो, तेउंए करीने वच्चे वच्चे करेली जे रचना केतां गुंथणी, तेथी चित्र कहेतां आश्चर्य करनारी, एवी. आ विशेषणथी एवो भावार्थ कह्यो के, ते पुष्पमालामां घणो सफेद वर्ण वर्त्ते छे, अने अंदर थोडा थोडा बीजा पण वर्णो छे, एम सूचव्युं. वली ते माला केवी छे, तो के, गुमगुमायमान एटले कर्णने मधुर मधुर लागे एवो, जे, शब्द, तेने करतो, अने अन्य स्थानकेथी त्यां आवीने, ते पुष्पोनी मालामां अत्यंत आसक्त थतो, तथा न समजी शकाय एवा गुंजारवने करतो, एवो जे, षट्पद, मधुकरी (मधमाख) तथा भ्रमरोनो जे समूह ते छे, अग्र भागमां, बन्ने पकखांना भागमां, तथा नीचेना भागमां जेने, एवी अर्थात् ते पुष्पमालानो विस्तार पामतो जे अत्यंत सुगंध, तेथी करीने, ते मालानां सघला भागोपर भमराउं आवीने वलगेला हता. अहीं षटपद (छ पगवालो) मधुकरी, तथा भ्रमर विगेरे जुदा जुदा रंगना भमराउंनी जातिउं कहेली छे, एम जाणी लेवुं. एवी रीतनी पुष्पोनी मालाने
आकाशमांथी पकती त्रिशला क्षत्रियाणीए पांचमा स्वप्नमां जोइ.

त्यार पछी छठा स्वप्नमां त्रिशला क्षत्रियाणीए चंद्रने जोयो. ते चंद्र केवो हतो, तो के, गोक्षीर क-


माला.


स्वप्ने चंद्रमा.


सातमे स्वप्ने



हेतां गायनुं दूध, फीण, पाणीना कणीआ, तथा रजतकलश कहेतां रुपानो कलश, तेना सरखा सफेद रंगवालो. वली ते चंद्र केवो हतो, तोके, शुभ्र एटले शांतता आपनारो, एवो. वली ते चंद्र केवो हतो, तो के, आ दुनियामां रहेता जे लोको, तेउनां हृदय एटले मन, अने नयन केहेतां आंखोने कांत कहेतां वल्लभ लागे, एवो. वली ते चंद्र केवो हतो तो के, संपूर्ण छे मंडल जेनुं एवो वली ते चंद्र केवो हतो, तो के, तिमिर केहेतां अंधकारोनो जे समूह. तेणे करीने निबिड अने, गंभीर एवा जे वननां गह्वरो केहेतां झाडीउथी भरपूर एवा वनना भागो, तेउमां अंधकारनो अभाव करनारो, अर्थात् झाडीउमां रहेला अंधकारनो पण नाश करनारो. कह्युं छे के,

विरम तिमिर साहसादमुष्मा, द्यदि रविरस्तमितः स्वतस्ततः किं ॥
कलयसि न पुरो महोमहोर्मिं, स्फुटतरकैरवितांतरिक्षमिंदुं ॥ १ ॥

अर्थ–हे अंधकार, आ तारां साहसथी तुं अटकी जा? (एटले विराम पाम) कारणके, सूर्यनां आथम्या पछी, तेजनां मोटां मोजांउए करीने, प्रफुल्लित थयेलां चंद्रविकासी कैरवसरखुं करेल छे, आकाश जेणें, अथवा कांतिवाला किरणोए करीने रक्षण करेलुं छे आकाशनुं जेणे एवा आ चंद्रने शुं, तुं आगाडी जोतो नथी?

वली ते चंद्र केवो, तो के, वर्ष अने मास आदिकना प्रमाणे करनारा, शुक्ल अने कृष्ण एवा जे बे पक्षो, तेनी मध्यमा रहेली जे पूर्णिमा, तेने विषे राजती कहेतां शोभती छे, लेखा कहेतां कला जेनी, एवो. वली ते चंद्र केवो छे, तो के, कुमुद कहेतां चंद्रविकासी जे कमलो, तेउने विकस्वर करनारो कह्युं छे के.

दिनकरतापव्याप, प्रपन्नमूर्छानि कुमुदगहनानि ॥ उत्तस्थुरमृतदीधिति, कांतिसुधासेकतस्त्वरितं ॥१॥

अर्थ–दिनकर केहेतां सूर्यना तापनी जे व्याप्ति केहेतां फेलावुं, तेथी प्राप्त थएली छे, मूर्छा जेउने, अर्थात् करमाइ गएलां, एवां जे कुमुदगहनानि केहेतां चंद्रविकासि कमलोनां जे वनो, ते, अमृतदी

धिति केहेतां चंद्रनी जे कांति, ते रूपी जे अमृत, तेनां सिंचावाथी, अर्थात्, तेउनांपर चंद्रना किरणो पमवाथी, एकदम पाठां विकस्वरपणाने केहेतां प्रफुल्लितपणाने पाम्यां.

वली ते चंद्र केवो तो के, निशा कहेतां जे रात्रि, तेने शोजावनारो, वली ते चंद्र केवो, तो के, सुपरिमृष्ट कहेतां राख आदिकथी माजीने उज्ज्वल करेलो. जे अरिसो, तेना तलीयांनी ठे, उपमा जेने एवो. वली ते चंद्र केवो ठे, तो के, हंसनी पेठे पटु कहेतां सफेद ठे, वर्ण कहेतां रंग जेनो, एवो. वली ते चंद्र केवो, तो के ज्योतीष केहेतां जे ताराउ, तेउनां मुखोने शोजावनारो, अर्थात् तेउनो उपरी, एवो. वली ते चंद्र केवो, तो के, तम केतां जे अंधकार, तेनां प्रते रिपु केतां वैरी सरखो, एवो. वली ते चंद्र केवो तो के, मदन कहेतां जे कामदेव, तेना शरापूर कहेतां जाथां (जेमांतीरो रखाय ठे, तथा जेने पीठपाठल योद्धाउ बांधी राखे ठे ते सरखो. अर्थात् धनुषने धारण करनारो माणस, तुणीर केहेतां जाथांने मेलवीने, हर्षित थयो थको, जेम हरीण आदिकनो वध करे ठे. तेम मदन केहेता कामदेव पण चंद्रना उदयने पामीने जरा पण शंका राख्या विना माणसोने पोताना पुष्पोरूपी बाणोथी व्याकुल करे ठे. वली ते चंद्र केवो तो के, जलधि कहेतां जे समूद्र, तेनी जे वेला, केहेतां पाणीनी ठोल, तेने वधारनारो, एवो. वली ते चंद्र केवो तो के, प्राणवल्लज कहेतां जे जरतार, तेनाथी थयेलो ठे विरह जेणीने, अने तेथी करीने दुर्मनस्क केहेतां व्यग्रचित्तवाली एवी जे स्त्री, तेने पोताना किरणोए करीने शोषमां (शोकमां) गरकाव करतो, अर्थात् स्त्रीनां जर्तारनां वियोगरूपी दुःखने उलटो वृद्धि करतो. वली ते चंद्र केवो, तो के, सौम्य केहेतां मनोहर ठे, रूप जेनुं एवो, वली ते चंद्र केवो तो के, गगनमंमल केहेतां आकाशमंडल प्रते विशाल, अने सुंदर आकारवालुं तथा चंक्रम्यमाण केहेतां चलनस्वजाववालुं, एवुं शोजा करनारूं जाणे तिलकज होय नहीं, एवो. वली ते चंद्र केवो ठे, तो के, रोहिणी नामनी जे पोतानी स्त्री तेनो स्वामी ठे, तथा तेणीने हित करनारो ठे, हितकारी एवुं विशेषण एक पक्षनां प्रेमने दूर करवा माटे ठे. (अर्थात् बन्ने पक्षना प्रेमने बतावनारुं ठे) आवी रीतनो चंद्र अने रो

हिणी वच्चे स्त्रीजरतारनो संबंध कविसमयनी अपेक्षाथी छे. केमके रोहिणी तो एक नक्षत्रविशेष छे, अने चंद्र तथा नक्षत्रनी वच्चे तो स्वामिसेवकपणानो जाव सिद्धांतमां प्रसिद्ध छे. पण कंइ स्त्रीजरतारपणानो जाव कहेलो नथी. एवी रीतें छठा स्वप्नमां त्रिशला क्षत्रियाणीए उल्लसायमान थता एवा संपूर्ण चंद्रने जोयो. तेवार पछी सातमा स्वप्नमां त्रिशला क्षत्रियाणीएं सूर्यने जोयो. हवे ते सूर्य केवो हतो, तेनुं वर्णन करे छे. निश्चयें करनी तमःपटल केहेतां अंधकारनो जे समूह, तेने परिफोटक केहेतां नाश करनारो, एवो. वली ते सूर्य केवो, तो के, तेजवडे करीने प्रज्वलत् केहेतां जाज्वल्यमान छे, रूप जेनुं एवो. हवे सूर्यनां बिंबमां रहेलां बादर एवा जे पृथ्वीकाय. ते तो हमेशां शीतल केहेतां ठंडक आपनारां छे, पण आतपनाम कर्मनो तेने (सूर्यने) उदय होवाथी तेजे करीने, तेओ माणसोने व्याकुल एटले पीडा युक्त करे छे, एवी रीते जाणवुं. वली ते सूर्य केवो छे, तोके, रक्ताशोक कहेतां लाल रंगवालुं अशोक जातनुं कोइ वृक्षविशेष, तथा प्रफुल्लित थएलुं जे किंशुक कहेतां केसुडानुं पुष्प, तथा शुकमुख कहे तां पोपटनुं मुख, (चांच) तथा गुंजार्ध कहेतां चणोठीनो अरधो जाग, के जे लोकोमां प्रसिद्ध छे; एटली वस्तुओनी जे रताश, तेनां सरखो छे, लाल वर्ण जेनो, एवो. वली ते सूर्य केवो, तो के, कमलो- नां जे वनो, तेओने अलंकरण केहेतां शोजा करनारो, अर्थात् तेओने विकस्वर करनारो. कारणके विक- स्वर एटले प्रफुल्लित थएलां, एवां जे ते कमलो, ते जाणे के, अलंकारोज होय नहीं तेवां शोजी निकले छे. वली ते सूर्य केवो तो के, ज्योतिषनुं जे चक्र, ते प्रते अंकन केहेतां चिह्नरूप, अर्थात् मेष आदिक जे राशिओ, तेओमां जे पोतानुं संक्रमण, तेणें करीने ज्योतिषनां लक्षणने जणावनारो. वली ते सूर्य के वो छे, तो के अंबरतल केहेतां जे आकाशतल, तेप्रते प्रदीपक केहेतां प्रकाशनो करनारो. वली ते सूर्य केवो तो के, हिमपटल केहेतां बरफनो जे समूह तेने गलग्रह एटले गलहस्त देनारो, अर्थात् बरफना समूहनो नाश करनारो. वली ते सूर्य केवो छे. तो के ग्रहगण केहेतां ग्रहोना जे समूहो तेओ- नो उरु केहेतां मनोहर एवो नायक केहेतां स्वामि छे. वली ते सूर्य केवो, तो के, रात्रिविनाश केहेतां

रात्रिने नाश करवाना एक कारणरूप एवो, वली ते सूर्य केवो, तो के, उदयास्त केहेतां तेना उदय थवाना अवसर वखते तथा तेना अस्त थवाना अवसर वखतें, फक्त एक मुहूर्तवार सुधि छे, सुखदर्शन केहेतां सुखें करीने जोवापणुं जेनुं, एवो. अने ते शिवाय बीजे वखते डुर्निरीक्ष्यरूपं केहेतां डुःखें करीने जोइ शकाय एवुं, छे स्वरूप जेनुं, एवो अर्थात् जेनी सन्मुख पण जोइ शकातुं नथी एवो. वली ते सूर्य केवो, तो के,रात्रिने वखते उद्धत केहेतां पोतानी इछा प्रमाणे चालनारा, अर्थात् स्वेछाचारी एवा जे अन्याय करनारा चोर आदिको, तेओनो जे प्रचार, एटले चोरीमाटे आमतेम जटकवुं, तेने निवारक केहेतां अटकाव करनारो, वली ते सूर्य केवो तो के शीतवेग, केहेतां ठंमीनो जे वेग, तेने मथन करनारो, अर्थात् पोताना तापथी ठंडीने डुर करनारो, एवो, वली ते सूर्य केवो, तोके, मेरू नामनो जे पर्वत तेनो आश्रय करीने प्रदक्षिणावडे करीने, (तेनी) मेरूनी आसपास जमनारो, एवो. वली ते सूर्य केवो, तोके, विशाल केहेतां विस्तारवालुं छे, मंडल केहेतां मांडलुं जेनुं, एवो. वली ते सूर्य केवो छे, तोके रश्मिसहस्रेण केहेतां दश सो, अर्थात् एक हजार एवां जे पोतानां किरणो तेणे करीने प्रदलित केहेतां नाश करेली छे, दीप्तिवंत केहेतां चलकाटवाला, एवा जे तारा आदिको, तेओनी शोजा जेणें, एवो; अर्थात् तेणें पोताना किरणोए करीने सघला तेजस्वी पदार्थोनी कांतिनो नाश करेलो छे. हवे अहीं जे सूर्यना एक हजार किरणो कह्यां, ते तो, फक्त लोकमां एवी रीतें प्रसिद्ध होवाथी कह्यांछे पण तेनां किरणो तो, काल विशेषनी अपेक्षाए अधिक पण थइ शके छे. लौकिक शास्त्रोमां पण कह्युं छे के,

ऋतुजेदात्पुनस्तस्या, तिरिच्यंतेपि रश्मयः ॥ शतानि द्वादश मधौ, त्रयोदश तु माधवे. ॥ १ ॥

अर्थ–ऋतुओनां जेदो प्रमाणे वली ते सूर्यनां किरणो वृद्धि पण पामे छे, जेम के, चैत्र मासमां तेनां बारसो किरणो थाय छे, अने वैशाख मासमां तेनां तेरसो किरणो पण थाय छे. ॥

चतुर्दश पुनर्ज्येष्ठे नजोनजस्ययोस्तथा, ॥ पंचदशैव त्वाषाढे, षोमशैव तथाश्विने ॥ २ ॥

अर्थ–वली जेठ महिनामां तेना किरणो चौदसो थाय छे, तेम श्रावण अने जादरवामां पण तेटलां

ज एटले चौदसो थाय छे, अने आषाढ मासमां तेना किरणो पंदरसो थाय छे, अने आसु महिनामां तेनां किरणो सोलसो थाय छे. ॥

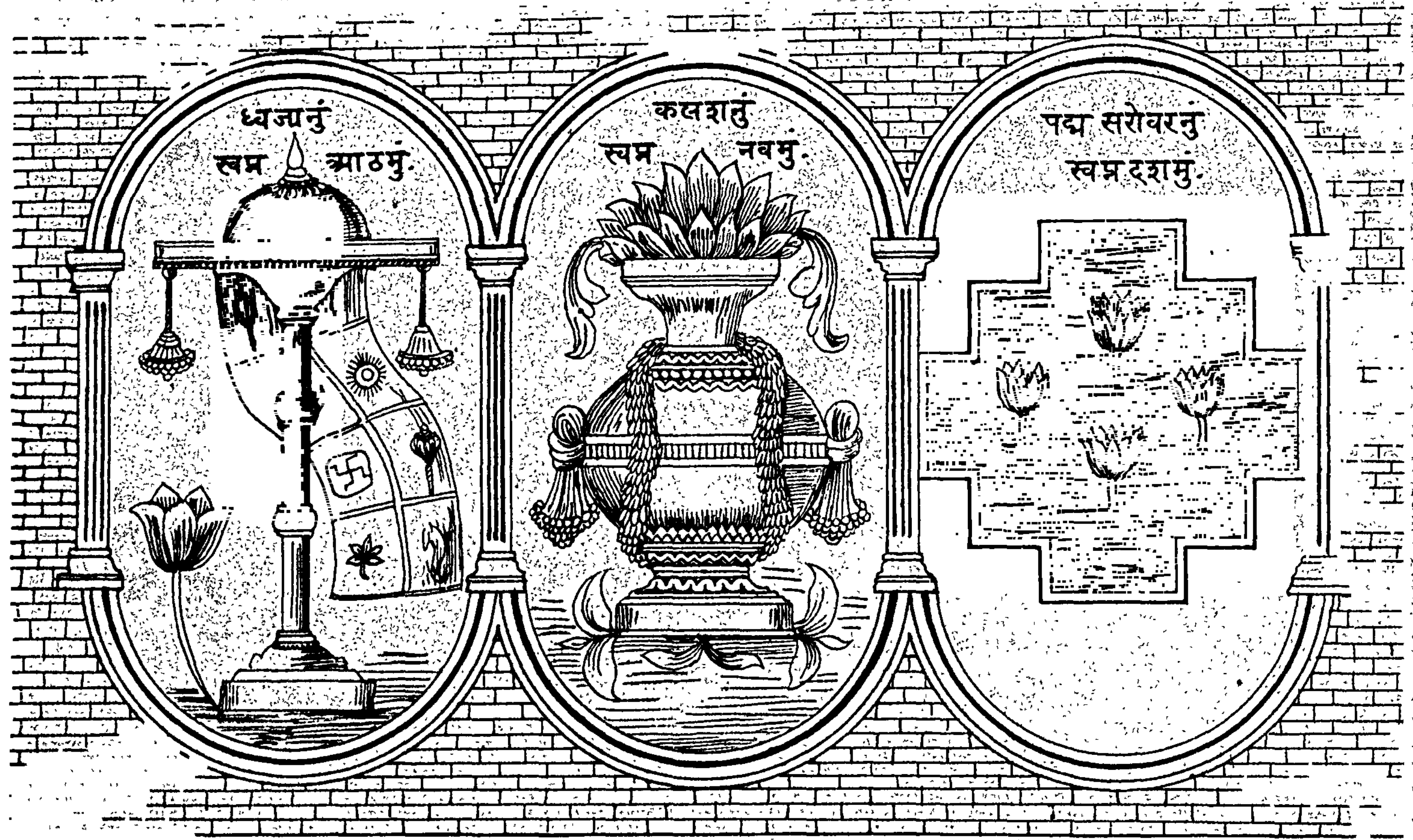
कार्तिकेत्वेकादश च, शतान्येवं तपस्यपि ॥ मार्गे च दशसार्धानि, शतान्येवं च फाल्गुने ॥ ३ ॥ पौषे एव परं मासि, सहस्त्रकिरणा रवेः ॥

अर्थ—कार्तिक मासमां तेनां किरणो अग्यारसो थाय छे; अने माघ महिनामां पण तेटलांज एटले अग्यारसो किरणो थाय छे. अने मागशर महिनामां एक हजार अने पचास किरणो तेना होय छे, अने फागण महिनामां पण तेटलांज, एटले एक हजार अने पचास किरणो होय छे. वली पोस महिनामां तेनां एक हजार किरणो होय छे. एवी रीते सूर्यनुं यंत्र जाणवुं.

एवी रीतें सातमा स्वप्नमां सूर्यने जोया बाद त्रिशला क्षत्रियाणीए आठमां स्वप्नमां ध्वजने जोयो. ते ध्वज केवो, तो के, जात्य केहेतां उत्तम जातिनुं एटले सो टचनुं जे, कनक केहेतां सुवर्ण तेनो बनावेलो जे दंड, तेनापर रहेलो; अर्थात् सुवर्णमय जे दंड तेनां शिखरपर रहेलो. वली ते ध्वज केवो, तो के, समूहीभूत केहेतां जथाबंध रहेलां, एवां, अने लीलां, कालां रातां, पीलां, अने सफेद, एवी रीते पांचे जातिनां रंगवालां, अने तेथी मनोहर लागतां अने वली सुकुमाल केहेतां कोमल, तथा उल्लसायमान थतां, एटले आम तेम फरकतां एवी रीतना जे मयूरपिछ, केहेतां मोर नामना पक्षिना जे पींछां, तेउंए करीने जाणे ध्वजपर वाल बनावेला होय नहीं, एवी रीतें ते पिंछांउं जेनापर शोभी रह्यां छे, एवा ध्वजने, अर्थात् जेम माणसना मस्तकपर चोटलो शोभे छे, तेम आ ध्वजपर पण वेणिनी जगोए मोर पींछनो गुछो स्थापेलो छे. वली ते ध्वज केवो, तो के, अधिकश्री केतां अत्यंत शोभाए करीने युक्त एवो. वली ते ध्वज केवो, तो के, नीचे वर्णन करेलां विशेषणोवाला सिंहे करीने शोभायुक्त थएलो. ते सिंह केवो, तेनुं वर्णन हवे करे छे. स्फटिक एटले, स्फटिक जातिनुं रत्नविशेष, शंख एटले समुद्रमां जे थाय छे, ते, अने वली जे लोकमां प्रसिद्ध छे ते, अंक पण रत्ननी जातिविशेष छे, ते, कुंद, ए सफेद पुष्पनी

जाति छे, जेने फोलर पण कहे छे, ते, करजस् एटले पाणीना कणीया, ते, रजतकलश केहेतां रुपानो बनावेलो जे कलश, ते, एवी रीतें उपर जणावेली सघली वस्तुउनी पेठे उज्वल वर्णवालो; वली ते सिंह केवो, तो के, मस्तकपर रहेलो, अर्थात्, चित्रामणरुपें ध्वजना उपरना जागपर चित्री राखेलो, एवो. वली ते सिंह केवो तो के, राजमान केहेतां पोतानां सुंदरपणाथी अत्यंत शोजायुक्तथएलो, एवो; वली, ते सिंह केवो, तो के आकाशतलनां मंडलने फोमी नाखवानेज जाणे उद्यमवालो थयो होय नहीं, एवो. अर्थात् पवननां ऊपाटाथी ध्वजा आकाश मार्गमां उंचे उंचे उड्या करती हती, अने तेथी करीने तेमां चित्रामण रुपे करेलो सिंह पण आकाशप्रते उछल्या करतो हतो; तेनापर कवीए उत्प्रेक्षा करी के, आ सिंह जे आकाशतरफ उछल्या करे छे, ते शुं आकाशने फोमी नाखवानोज उद्यम करे छे शुं ? एवो जावार्थ जाणवो. एवी रीतें उपर वर्णन करेला सिंहना चित्रामणवालो ध्वज. वली ते ध्वज केवो, तो के, मंद मंद अने सुखकारी एवो जे मरुत केतां पवन, तेनुं जे आश्लेष केतां मलवुं, तेणें करीने जे आंदोलन केहेतां चलायमान थवुं, ते छे स्वजाव जेनो, एवो. अर्थात् मंद मंद वाता एवा वायुथी चला यमान थएलो. वली ते ध्वज केवो, तो के, अति प्रमाणवालो एटले मोटो, एवो. वली ते ध्वज केवो तो के, माणसोने जोवाने लायक छे स्वरुप जेनुं, एवो; एवी रीतनो आठमां स्वप्नमां त्रिशला क्षत्रिया णीये ध्वजने जोयो. हवे ते जोयाबाद नवमां स्वप्नमां तेणीए रजतपूर्णकलश, एटले रुपाना बनावेला अने संपूर्ण जरेला एवा कलश एटले कुंजने जोयो. ते कलश केवो, तो के जात्य केहेतां अत्यंत उंची जातिनुं जे कांचन केहेतां सोनुं तेनी पेठे अत्यंत देदीप्यमान छे, रुप जेनुं, एवो. अर्थात् जेम उत्तम जातिनां सुवर्णनुं तेज अत्यंत निर्मल होय छे, तेम ते कलशनुं तेज पण अत्यंत निर्मल जाणवुं. वली ते कलश केवो, तो के, निर्मल एटले बीलकुल मेल विनानुं जे पाणी, तेनाथी संपूर्ण रीते जरेलो. अने तेथीज कल्याणने सूचवनारो, एवो. वली ते कलश केवो, तो के, देदीप्यमान छे शोजा केहेतां कांति जेनी, एवो; वली ते कलश केवो, तो के, कमलोनो कलाप केहेतां जे समूह, तेवडे करीने आसपास सर्व बाजु

चित्र १२



ओनी , एवो. वली ते कलश केवो, तो के, प्रतिपूर्ण एटले जरा पण न्युन नहीं, एवा जे मंगल जेदो, केहेतां मंगलना प्रकारो, तेउनो जे समागम केहेतां संकेत तेना स्थानकरुप; अर्थात् जेम संकेत करी राखेलां स्थानकप्रये माणसो अवश्य दाखल थाय छे, तेम आ कलश पण दृष्टिगोचर थयाथी सर्व प्रकारना जे मंगलो, ते पण प्राप्त थाय छे; एवो जाव जाणवो. वली ते कलश केवो, तो के, प्रवररत्नो एटले अत्यंत उत्तम उत्तम जातिनां जे रत्नो, तेउए करीने शोजतुं जे कमल तेनांपर रहेलो, एवो. अर्थात् रत्नोए करीने विकस्वर एटले प्रफुल्लित थएलुं जे कमल, तेनांपर ते कलश मुक्यो हतो; एवो जावार्थ जाणवो. वली ते कलश केवो, तो के, नयन केहेतां जे आंखो, तेउप्रते जूषण करनारो, एटले आंखोने आनंद आपनारो कारणके, कमलनुं विकस्वर थवुं, ते जेम कमलनुं जूषण छे, तेम आंखोने आनंद थवो ते पण तेनुं जूषण छे. वली ते कलश केवो, तो के, अत्यंत देदीप्यमान, एवो. वली ते कलश केवो, तो के, सर्वतः केहेतां सर्व जे दिशाउ, तेउप्रते निश्चयें करीने दीपतो, एवो. वली ते कलश केवो, तो के, सौम्य एटले अत्यंत प्रशस्त केहेतां अत्यंत उत्तम प्रकारनी जे लक्ष्मी, तेना तो स्थानक समान, एवो. वली ते कलश केवो, तो के, सर्वे प्रकारनां जे पापो केहेतां अमंगलो, तेउए करीने परिवर्जित, केहेतां बिलकुल रहित, अने तेथी करीनेज शुज अने देदीप्यमान देखातो, एवो. तथा श्री एटले जे शोजा, तेथी करीने प्रधान केहेतां अत्यंत मनोहर लागतो, एवो. वली ते कलश केवो, तो के, सर्वर्तुज एटले सघली ऋतुउमां उत्पन्न थतां जे सुगंधयुक्त पुष्पो, तेउनी गुंथेली जे मालाउ, तेउने स्थापन करेली छे, जे कलशनां कंठनां जागमां, एवा कलशने त्रिशला क्षत्रियाणीए नवमा स्वप्नमां जोयो. पछी दशमा स्वप्नमां तेणीए पद्मसरोवरने जोयुं. हवे ते पद्मसरोवर केवुं छे तो के, तरुण केतां नूतन नवो उगेलो जे सूर्य, तेना जे किरणो, तेउए करीने बोधित एटले विकस्वर थएलां जे सहस्रपत्रो मोटां मोटां जे कमलो, तेउए करीने अत्यंत सुगंधिवालुं, तथा जरा पीलाश अने रताश मारतुं छे, जेवुं एवुं. वली ते पद्मसरोवर केवुं छे, तो के, जलचर केहेतां पाणीमां वसनारा जे प्राणी, तेउनोजे

समूह, तेणे करीने परिपूर्ण केतां चारे बाजुउथी व्याप्त थएलुं, एवुं वली ते पद्मसरोवर केवुं छे, तो के मत्स्य केहेतां माछलांए करीने वपराइ रहेलो छे, पाणीनो समूह जेनो एवुं वली ते पद्मसरोवर केवुं छे, तो के ज्वलत् केहेतां देदीप्यमान एवुं शाथी देदीप्यमान, ते हवे कहे छे. कमलो एटले सूर्यना प्रकाशथी विकस्वर थतां कमलविशेषो, कुवलयो केहेतां चंद्रनां प्रकाशथी विकासने पामतां कमलजातिविशेषो, उत्पल एटले लाल रंगनां कमलो, तामरस एटले मोटां मोटां कमलो, तथा पुंडरीक एटले सफेद रंगनां कमलो, एवी रीतें जुदी जुदी जातिओनां कमलोनो,विस्तीर्ण अने फेलावो पामतो,एवो जे श्रीसमुदय केहेतां शोभानो जे समूह; (कमलोने तो शोभानां समूहथीज शोभापणुं मले छे; पण कंइ तेमने सूर्यनां बिंब आदिकनी पेठे देदीप्यमानपणुं होतुं नथी.) तेणें करीने जाणे देदीप्यमानज लागतुं होय नहीं, एवुं पद्मसरोवर; (एवी रीतें कविए एटले श्री जद्रबाहुस्वामिजीए अत्रे उत्प्रेक्षा अलंकार मुक्यो छे) वली ते पद्मसरोवर केवुं, तो के, रमणीय केहेतां मनने अत्यंत आनंद उपजावे एवी छे, रूपनी शोभा जेनी, एवुं वली ते पद्मसरोवर केवुं तो के, प्रमुदित केहेतां अत्यंत हर्षित थएलुं छे, अंतःकेतां अंतःकरण जेउनुं एवा जे जमरानां अने मत्त केतां मदोन्मत्त थएलीउं, जे जमरीउं, तेउनां समुहो, तथा बीजी जातीउना पण जमराना जे समूहो, तेउए करीने अवलिह्यमान केतां चुंबन करातां छे, कमलो जेमां, एवुं वली ते पद्म सरोवर केवुं छे, तो के, कादंब जातिनां पक्षिउ, बलाका केतां बगलांउ, चक्र केतां चक्रवाक नामनां पक्षिउ, कलहंस, एटले कल केतां मधुर छे शब्द जेउनो एवा जे हंसो, एटले राजहंसो, तथा सारस कहेतां लांबां छे घुंटणो जेउना एवा एक जातिनां पक्षिउ, इत्यादिक, गर्वित, एटले आवां मनोहर स्थानकनी प्राप्तिथी थएलो छे, अहंकार जेउने, एवा जे शकुनिगण केहेतां पक्षिउनी जातिउनां जे समूहो, तेउना जे द्वंद्व केहेतां स्त्रीजरतारोनां जे जोडलां, तेउए करीने, सेवातुं छे पाणी जेनुं, एवुं वली ते पद्मसरोवर केवुं छे तो के, पद्मिनी, एटले जे कमलिनी, तेउनां जे पत्रो केहेतां पांदडांउ, तेउपर लागेलां एटले चोटेलां जे जलबिंदुनिचय कहेतां पाणीउनां बिंदुउना जे समुहो तेणें करीने, जाणे

चित्र १८



मंकन युक्त थएलुं होय नहीं; अर्थात् तेमां रहेलां कमलिनीनां पांदमांउं, जाणे के नील रत्नोमय छे, अने तेउंपर मुक्ताफल केहेतां मोतीउंनुं अनुकरण करनारा, पडेला जे पाणीना बिंदुउं, तेउंए करीने, कमलो अत्यंत शोजा आपनारां देखाय छे. एवां पत्रोए करीने ते तलाव कृतचित्रंछत्र, केहेतां करेलुं छे आश्चर्य जेणें, एवुं होय नहीं, जेम, तेम देखाय छे. वली ते पद्मसरोवर केवुं छे, तो के, हृदय केतां जे अंतःकरण, अने नयन केहेतां जे आंखो, तेउंने अत्यंत वल्लज केहेतां मनोहर लागे, तथा "पद्मसरोवर" छे नाम जेनुं, एवुं. वली ते पद्मसरोवर केवुं छे, तो के, सरस्सु केहेतां तलावोने विषे पूज्य केहेतां पूजा करवाने लायक एवुं, अने तेथीज अजिराम केहेतां अत्यंत रमणीय लागे छे. एवी रीतना पद्मसरोवरने त्रिशला क्षत्रियाणीए दशमां स्वप्नने विषे जोयुं. पछी अग्यारमे स्वप्ने शरद नामनी जे ऋतु, तेना चंद्रमा सरखुं छे, वदन केहेतां मुख जेनुं, एवी ते त्रिशला क्षत्रियाणीए क्षीरसमुद्रने जोयो; ते क्षीरसमुद्र केवो तो के, चंद्रकिरणराशि केहेतां चंद्रना जे किरणो, तेउंनो जे समूह, तेना सरखी जे, श्री केहेतां शोजा, ते सरखी छे, वक्षस्थलनी शोजा जेनी एवो. हवे वक्षः शब्दनो अर्थ तो हृदय थाय छे, अने ते हृदय तो प्राणीउंने होय छे, पण कंइ समुद्रने होतुं नथी. माटे अहीं हृदय शब्द वडे करीने मध्य जाग कह्यो छे, एम जाणवुं. वली ते क्षीरसमुद्र केवो, तो के, चतुर्षु दिग्मार्गेषु केहेतां चारे दिशाउंना जे मार्गो, तेउंने विषे प्रकर्ष एटले अत्यंत वेगवडे करीने प्रवर्धमान केहेतां वृद्धि पामतो छे जलसंचय केहेतां पाणीनो समूह जेनो, एवो. अर्थात् चारे दिशाउंमां ते समुद्रमां, अत्यंत ऊंडो एवो जलनो प्रवाह छे, एवो जावार्थ जाणवो. वली ते क्षीरसमुद्र केवो छे, तो के, चपल अने अत्यंत चपल एवा, अत्यंत मोटा मोटा जे कल्लोलो केहेतां मोजाउं, तेउंए करीने चलायमान थतुं, तथा वली पाछुं एकठुं थइने जुदुं पडतुं, एवी रीतनुं छे, तोय केहेतां पाणी जेनुं, एवो. वली ते क्षीर समुद्र केवो, तो के, पटु एटले जरा पण मंदता विनानो, एवो जे पवन, तेणें करीने आहत केहेता हणाएला, अने तेथी करीनेज, ऊपरा ऊपरी दोमवाने प्रवृत्त थएला, अने तेथी करीनेज चपल जणाता, अने प्रकट

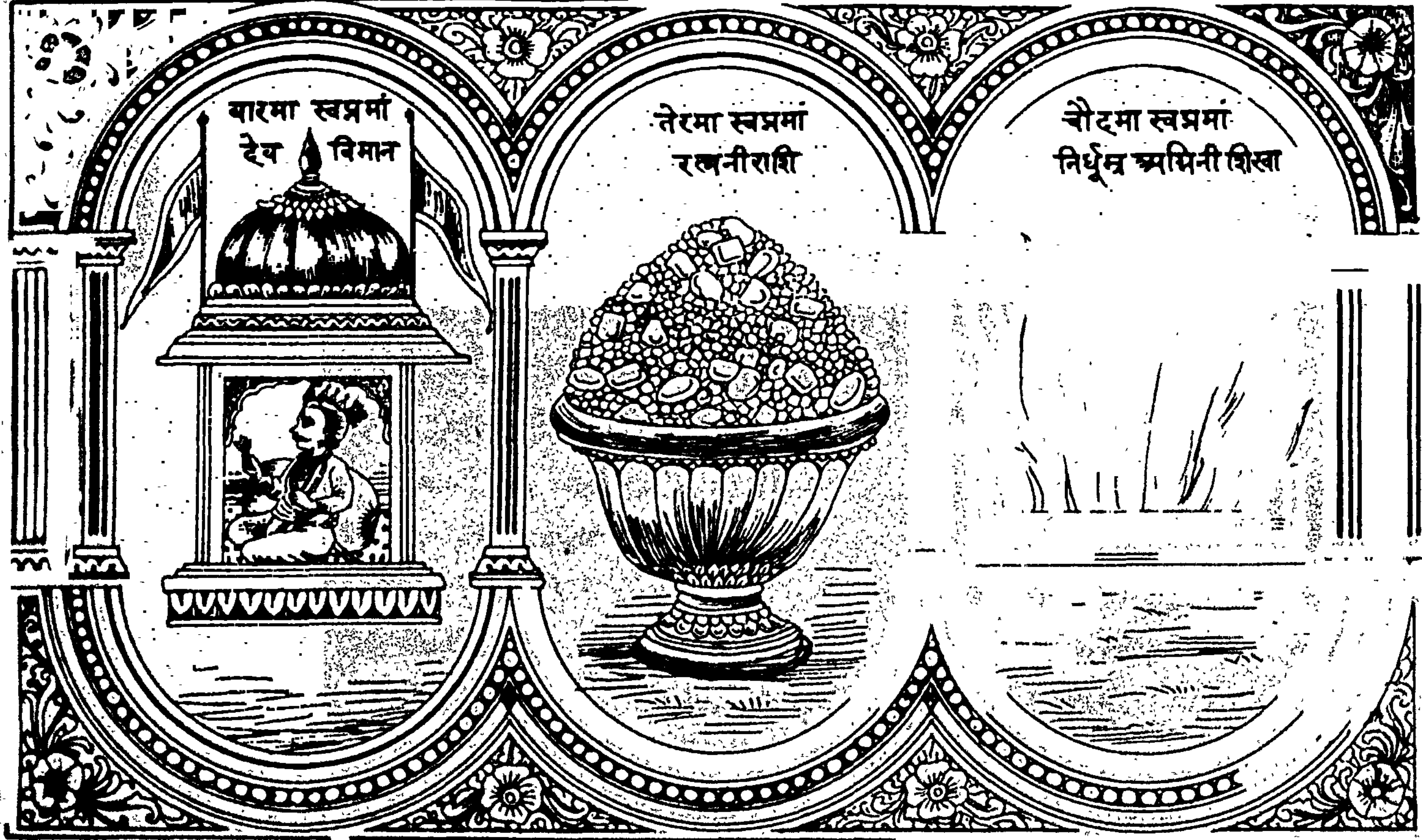
रीतें देखाता, एवा जे तरंगो केतां कल्लोलो, तथा आसपास (आजु बाजु) नाचता,एवा पण जे कल्लोलविशेषो, तथा अत्यंत क्षोभ पामेला, अर्थात् जाणे भयभ्रांतज थया होय नहीं, जेम तेम चारे कोरे भ्रमण करता, अर्थात् अथडाता अने तेथी करीने शोभावाला थएला, तथा निर्मल एटले जरा पण मलीनता विनाना, अने उत्कट एटले उंचे उछलता, एवा जे उर्मिउ केहेतां तरंगो (मोजांउ) (एवि रीतें तरंग, भंग, कल्लोल, उर्मि विगेरे मोजाउना प्रकारो जाणवा.) एवी रीतना मोजाउनो जे संबंध केहेतां परस्पर मलवुं, तेणे करीने, अत्यंत उतावलथी तीराभिमुख केहेता कांठानी सन्मुख दोडतो तथा अपनिवर्तमान केहेता कांठाथी पाछो वलतो थको, भासुरतर केहेतां अत्यंत दीप्तिवालो लागतो अने तेथी करीने अभिराम केहेतां मनने आल्हाद उपजावतो, एवो, वली ते क्षीर समुद्र केवो, तो के महान् केहेतां मोटा मोटा जे मगरमछो, तथा प्रसिद्ध एवां जे माछलांउ, तथा तिमि, तिमिंगल, निरुद्ध, तिलितिलिका, विगेरे जुदी जुदी जातिना जलचर प्राणी विशेषो, तेउना जे अभिघातो केहेतां पुंछडीउना पाणीपर करवामां आवता जे पछाडाउ, तेणें करीने उत्पन्न थएलो, अने कर्पूरवत् केहेतां कपूरनी पेठे उज्ज्वल केहेतां सफेद छे, रंग जेनो, एवो जे फीणनो समूह ते छे, जेनी अंदर, एवो वली ते क्षीरसमुद्र केवो छे, तो के, मोटी मोटी एवी जे गंगा आदिक नदीउ, तेउना अत्यंत वेगथी जोसभर दोडी आवता जे प्रवाहो. तेउथी उत्पन्न थतुं जे गंगावर्त्त नामनुं भ्रमण एटले आवर्त्तविशेष (पाणीनी घूमरी अथवा वंटोलीउ) त्यां व्याकुल थतुं एटले मुंझाइ जतुं, अने तेथीज उंचा उछाला मारतुं, अने बीजी जगोतरफ जवाने अवकाश नहीं मलवाथी पाछुं फरीने तेना तेज आवर्तमां पडतुं, अने तेथी पाछुं उछली निकलतुं, अने एवी रीते उंचुं उछल्याबाद पाछुं पण त्यांज पडतुं; अने तेथी करीनेज ते आवर्त्तनी अंदर भ्रमणपणाने प्राप्त थएलुं, अने तेथी करीनेज, तथा स्वभावथी पण चपल थएलुं, एवी रीतनुं छे, पाणी जेनी अंदर, एवा क्षीरसमुद्रने त्रिशला राणीए अग्यारमा स्वप्ननी अंदर

. ते अग्यारमुं स्वप्न जोयाबाद तेणीए बारमां स्वप्नमां एक अति उत्तम एवां विमानने जोयुं. हवे

ते विमान केवुं हतुं तो के, तरुण केहेतां नवो, उगेलो जे सूर्य, तेनुं जे मंडल केहेतां बिंब, तेना सरखी छे, प्रभा केतां कांति जेनी, वली ते विमान केवुं छे. तो के, देदीप्यमान केतां, अत्यंत तेजयुक्त छे, शोभा जेनी एवुं. वली ते विमान केवुं छे, तो के, उत्तम प्रकारनुं जे कंचन केतां सुवर्ण, अने मणिउनो जे समूह तेणें करीने बहुज मनोहर थएला जे, एक हजार ने आठ स्तंभो, तेउए करीने अत्यंत देदीप्यमान होवाथी नभ केहेतां आकाशने पण कांतियुक्त बनावतुं, एवुं, वली ते विमान केवुं, तो के, कनकप्रतर केहेतां सोनानां बनावेलां जे पत्रांउ, तेउमां लटकतां जे मोतीउ, तेणे करीने उज्ज्वल थएलुं, एवुं. वली ते विमान केवुं छे, तो के, अत्यंत जाज्वल्यमान थएलीउं, अने देवताउने लायकनी, लंबायमान थएलीउं एटले लटकेली छे, एवी रीतनी पुष्पनी मालाउ जेनापर एवुं. वली ते विमान केवुं छे, तो के हरिण, वृक केहेतां वरगडां, तुरग केहेतां घोडा, नर केहेतां माणसो, मकर केहेतां मगरमछो, विहग केहेतां पक्षिउ, व्याल केहेतां सर्पो, किन्नर केहेतां देवजातिविशेष, रुरु केहेतां हरिणजाति विशेष, शरभ केहेतां अष्टापद नामना जीवो, चमरी, केहेतां जेनां छेडानां वालनां चमर बने छे एवी गायो, संसक्त केतां कोइ जंगली प्राणिविशेष, कुंजर केहेतां हाथीउ, वनलता केहेतां अशोक वृक्षनी लताउआदिक लताउ, तथा पद्मलता केहेतां कमलिनीउ, ते सघलांउनां चित्रोनी जे विचित्र प्रकारनी रचना, तेउए करीने, चित्रकारी केहेतां मनने अत्यंत आश्चर्य उपजावनारुं. वली ते विमान केवुं छे तो के ("गांधर्व" शब्दें करीने अहीं गीतनो अर्थ करवो, तथा "उपवाद्य मानशब्दनो" अर्थ वाजीत्रो करवो) गांधर्वोए करीने गवातां जे गायनो, तथा वगाडातां जे वाजीत्रो तेउनो संपूर्ण रीतें छे, घोष केहेतां नाद जेमां, एवुं. वली ते विमान केवुं छे, तो के, नित्य केहेतां जरा पण आंतरारहित, सजल केहेतां वरसादनां पाणीए करीने संपूर्ण केहेतां भरेलो, अने निबिड, तथा पृथुल एटले विस्तारवालो, एवो जे जलधर केतां मेघ, तेनो जे गर्जित शब्द, केतां गर्जारव, एटले गर्जना वखते थतो जे ध्वनि, तेनो अनुनादि केहेतां तेनां तुल्य नादवालो, एवो जे, देवसंबंधि डुंडुभिनो मोटो शब्द, तेवडे

करीने समस्त एवो जे आ जीवलोक, तेने पुरतुं, अर्थात् दुंदुभिना नादथी समस्त जगतने व्याप्त करतुं, एवुं. वली ते विमान केवुं, तो के, कालागुरु एटले कृष्णागुरु, प्रवरकुंदुरक, (कोइ सुगंधवालो द्रव्यविशेष) तथा तुरुष्क, इत्यादि, के, जेओनां नामो अगाडी आवी गएलां छे, तेओनो, अने बीजां पण सुगंधिओनां अंगभूत द्रव्यो, तथा दशांग आदिक धूपोनो बलातो, अने तेथी मघमघायमान थइ रहेलो, अने वली आजुबाजु फेलावो पामतो जे गंध, तेणें करीने अभिराम, केहेतां मनोहर थएलुं, एवुं. वली ते विमान केवुं छे, तो के, सुरवर केतां उत्तम उत्तम जातिनां जे देवो, तेओए करीने भरपूर थएलुं, पण खाली नहीं रहेलुं एवुं. वली ते विमान केवुं छे, तो के, शातावेदनीय नामनुं जे कर्म, तेनो छे, उपभोग जेनी अंदर एवुं. वली ते विमान केवुं छे, तो के, विमानवरपुंडरीक केहेतां बीजां सघलां विमानोमां पुंडरीकनी पेठे अतिउत्तम, एवुं. एवी रीतनां विमानने त्रिशला क्षत्रियाणीए स्वप्ननी अंदर जोयुं. अने ते जोया बाद तेणीए तेरमां स्वप्ननी अंदर रत्ननिकरराशि, केहेतां रत्नोनां समूहनो ढगलो जोयो. ते रत्ननो ढगलो केवो हतो, तो के, पुलक जातिनां रत्नो, वज्र केहेतां हीरानी जातिओनां रत्नो, इंद्रनील केहेतां नीलमनी जातिनां रत्नो, सस्यक जातिनां रत्नो, कर्केयण केतां करकेतन जातिनां रत्नो, लोहियख्ख केहेतां लोहिताक्ष जातिनां रत्नो, मरगय केहेतां मरकत जातिनां रत्नो, मसारगल्ल जातिनां रत्नो, प्रवाल जातिनां रत्नो, स्फटिक जातिनां रत्नो, सौगंधिक जातिनां रत्नो, हंसगर्भ जातिनां रत्नो, अंजण केहतां अंजनजातिनां रत्नो, तथा चंद्रकांतमणिनी जातिनां रत्नो, इत्यादि अनेक जातिओनां रत्नोए करीने, महीतल केहेतां पृथ्वीतलपर रह्या छतां पण गगनमंडल केतां आकाशनां मंडलनां अंत भागने पण प्रभाए करीने युक्त करतो, एवो. अर्थात् लोकमां प्रसिद्ध एवो जे, आकाश, तेना शिखरने पण पोतानी कांतिथी शोभावतो एवो. वली ते रत्नोनो ढगलो केवो, तो के, तुंग केहेतां उंचो, एवो, ते केटलो उंचो? ते हवे कहे छे. मेरु गिरिसदृशं केता मेरु नामनो जे पर्वत, तेना सरखो, एवो उंचो थएलो रत्नोनो समूह ते त्रिशला क्षत्रियाणीए तेरमां स्वप्ननी अंदर जोयो.

चित्र १५



हवे "सिंहिंचेत्यादितः सिंहिं यावत्" एटले शिखि केतां अग्निथी मांकीने शिखि केहेतां अग्नि सुधिनुं पद ग्रहण करवुं. हवे अहीं कोइ शंका करे के, पेहेलां पण शिखि पद अने पाछुं पण शिखि पद ग्रहण करवाथी पुनरुक्ति दोष शुं न आवे? तेने माटे कहे छे. पेहेलां "शिखि" ("सिंहिं") एवुं पद कहेलुं छे, ते पद "गयवसहेति" गाथामां कहेलुं जे "सिंहिं" पद तेनां ग्रहण माटे छे. अने अंते रहेलुं "सिंहिं" पद स्वरूपना ग्रहण करवामाटे छे. माटे तेनो जावार्थ ए के, "गयवसह" ए गाथामां जे "सिंहिं" पद कहेलुं छे, ते चौदमुं स्वप्न जाणवुं. अने तेथी आवी रीतनां "सिंहिं" (शिखि) केहेतां अग्नि ने जुए छे, एम योजना करी लेवी. अने तेथी करीनेज " तउ पुणो " एटले अने वली पण, एवुं पद कह्युं नथी; केमके "सिंहिंच" ए पदथी तेनो जावार्थ स्वयमेवज जणाइ आवे छे. माटे जे गाथाना अंतमां " सिंहिं " पद रहेलुं छे, तेनेज विशेष्यपद तरिके तो जाणवुं. एवी रीतें चौदमा स्वप्नमां त्रिशला क्षत्रियाणीए अग्निने जोयो; ते अग्नि केवो हतो, तो के, विपुल केहेतां विस्तारवाली, अने उज्ज्वल एवुं जे घी, तथा पीला रंगनुं जे मधु केहेतां मध, ते बन्नेथी सिंचाती, अने तेथी करीनेज धुंवाडा वनाती अने " धग् धग् " एवी रीतनां शब्दने प्रगट करती, तथा जाज्वल्यमान एटले बहुज तेजवाली थएली एवी जे ज्वालाउ, तेउए करीने उज्ज्वल लागतो अने तेथी करीनेज अजिराम केहेतां मनने अत्यंत आनंद आपतो, एवो. वली ते अग्नि केवो हतो, तो के, तरतम योगें करीने युक्त एवी जे ज्वालाउ, तेउनो जे समूह, तेणे करीने, अनुक्रम प्रमाणेज जाणे निचित थएली होय नहीं, एवी, अर्थात् तरतमयोग एटले एक ज्वाला उंची, बीजी तेथी पण उंची, त्रीजी तेनाथी पण वधारे उंची, एवी रीतना तरतमयोगें करीने युक्त थएला जे ज्वालाओना समूहो तेणें करीने, अन्योन्य केहेतां अरसपरस सघली ज्वालाओ आपो माहें प्रवेशज करी गइउ होय नहीं, एवो. (अर्थात् बिलकुल अंतर विना ज्वालाओ ते अग्निमां हती.) वली ते अग्नि केवो, तो के, ज्वालाओनुं जे उर्ध्व केहेतां उंचेना जागोमां प्रसरीने जे "ज्वलनक" केहेतां बलवुं, (अहीं "ज्वलनक" शब्दने जे "क" प्रत्यय लागेलो

छे, ते "स्वार्थेक" एवी रीतनां व्याकरणना सूत्रें करीने लागेलो छे.) (वली अहीं तृतीया विभक्तिना एक वचननो लोप थइने समास थयेलो छे.) ते बलवाए करीने कोइ कोइ प्रदेशमां आकाशने पण पकावतोज होय नहीं जाणे एवो. अर्थात् ते अग्निनी शिखाओ आकाशप्रते पहोंचवाथी, जाणे तेने (आकाशने) पण पकाववानीज तैयारि करतो होय नहीं एवो. (एवी रीतनो कविए उत्प्रेक्षा अलंकार मेल्यो.) वली ते अग्नि केवो, तो के, अतिशय एवो जे वेग, तेणें करीने चंचलपणाने प्राप्त थएलो, एवो अग्नि त्रिशला क्षत्रियाणीए चौदमां स्वप्नोनी अंदर जोयो. एवी रीतनां शुभ केहेतां कल्याणना हेतुरुप, तथा भमया एटले कीर्तिए करीने पण सहित एवां, तथा प्रियदर्शन केहेतां फक्त जोवा मात्र थीज प्रीतिने उत्पन्न करनारां एवां, तथा उत्तम छे स्वरूप जेनुं एवां ते स्वप्नोने, निद्रानी अंदर जोइने, प्रतिबुद्धा केहेतां जागीने उठेली, तथा अरविंद केहेतां कमलना सरखां छे, लोचन केहेता आंखो जेनी तथा हर्षे करीने पुलकित केहेतां रोमांचयुक्त थएलुं छे शरीर जेणीनुं, एवी ते त्रिशला क्षत्रियाणी, ते उपर कहेलां स्वप्नोनुं अवग्रह केहेतां स्मरण करती हवी. हवे अहीं प्रसंग होवाथी उपर कहेलां स्वप्नोने, गर्भकालना समय वखते सघला जिनेश्वरोनी माताओ पण जुए छे, एवुं देखाडता थका गाथा कहे छे.

एए चउदस सुविणे, सव्वा पासेइ तित्थयरमाया ॥ जं रयणिं वक्कमइ, कुच्छिंसि महायसो अरिहा ॥ १॥

अर्थ—जे रात्रिए महायशवाला एवा अरिहंत प्रभुओ, मातानी कुक्षिमां आवे छे, ते रात्रिए सघला जिनेश्वर प्रभुनी सघली माताओ उपर कहेलां चौदे स्वप्नांओ जुए छे.

एवी रीतें स्वप्नोनुं पोताना मनमां स्मरण कर्या बाद ते त्रिशला क्षत्रियाणी, ज्यां सिद्धार्थ क्षत्रिय हता त्यां जइने, तेवी रीतनी वाणीओए करीने, बोलती थकी तेने जगाडवा लागी. हवे ते वाणीओ केवी, तो के, विशिष्ट केहेतां उत्तम उत्तम जातिओना जे गुणो तेओए करीने संयुक्त कहेतां भरेली, एवी; वली ते वाणीओ केवी, तो के, इष्ट कहेतां ते सिद्धार्थ क्षत्रियना मनने वल्लभ लागे एवी, अर्थात् तेना, मनने विनोद करावववावाली. अने तेथी करीनेज मनने गमे तेवी. वली ते वाणी केवी, तो के कोइ

चित्र १६



सिद्धार्थ राजा. त्रिशलाराणी दासीउं

जे भुली जवाय नहीं, एवी. वली ते वाणी केवी, तो के, उदार केहेतां सुंदर सुंदर एवा छे केतां अवाज जेनो एवा जे वर्णो केहेतां अक्षरो, तेओए करीने संयुक्त थएली, एवी. वली ते वाणी केवी. तो के, कल्यांण केहेतां समस्त प्रकारनी जे समृद्धिओ, तेओने करनारी. वली ते वाणी केवी, तो के, शिव केहेतां कोइ पण प्रकारना जे उपद्रवो केहेतां विघ्नो, तेओए करीने रहित एवी. कारण के, ते वाणीमां एवा तो अक्षरो गोठवेला हता, के जेथी बीलकुल उपद्रव थवानो तो संबंधज नहोतो, अने तेथी करीनेज धन्य केहेतां धननी जे प्राप्ति, तेने करावनारी. वली ते वाणी केवी, तो के, मंगल केहेतां जे कल्याण, ते करवामां प्रवीण एवी, वली ते वाणी केवी, तो के, शोभाए करीने युक्त, अर्थात् अलंकारोए करीने विराजित थयेली. वली ते वाणी केवी तो के, सुकुमाल केहेतां सुखे करी ने तेनो अर्थ जणाइ जाय, अने तेथी करीने हृदयने अत्यंत प्यारी लागे एवी, वली ते वाणी केवी तो के, हृदयने प्रल्हाद करनारी, एटले हृदयमां रहेलो जे चिंता आदिकनो शोक, तेना उच्छेदने करनारी, वली ते वाणी केवी, तो के, मित केहेतां अल्प एटले थोडा छे शब्दो जेनी अंदर एवी, अने बहु छे अर्थ केहेतां भावार्थ जेनी अंदर एवी, तथा मधुर केहेतां कानने अत्यंत सुखनी करनारी एवी, तथा मंजुल केहेतां उत्तम लालित्य केहेतां झमझमकवाला शब्दो अने वाक्यो तथा वर्णोवाली, (एवी रीतें अहीं त्रणे पदनो कर्मधारय समास करी लेवो,) अर्थात् मित, मधुर अने मंजुल एवी वाणीउए करी- ने बोलती थकी ते त्रिशला क्षत्रियाणी सिद्धार्थ राजाने जगाडती हवी. तेवी रीतें तेने जगाड्याबाद, तेनी एटले सिद्धार्थ राजानी आज्ञा थवाथी ते त्रिशला क्षत्रियाणी, नाना प्रकारना एटले जुदी जुदी जातिनां जे मणि, कनक केहेतां सुवर्ण, तथा रत्नो, तेउनी जे रचना, तेणे करीने चित्र केहेतां मनने आश्चर्य उपजावे एवा भद्रासन केहेतां सिंहासनपर बेठी. बेसीने, मार्गे चालतां थएलो जे खेद तेनो नाश थवाथी, शांतताने पामी, अने तेथी करीनेज, क्षोभना अभावें करीने, अत्यंत सुखे करीने ते आसनपर बेठी थकी सिद्धार्थ राजाने, आगल करेलुं छे वर्णन जेनुं एवी वाणीए करीने केहेवा लागी

के हे स्वामि ! आजे में चौद माहास्वप्नो जोयां छे, अने तेथी मनोहर एवां जे ते स्वप्नो, तेउनुं कल्याण एटले मंगलने करनारुं, एवुं शुं फल तथा वृत्तिविशेष थशे ? त्यारे सिद्धार्थ राजा पण त्रिशला क्षत्रियाणीना मुखथी एवो अर्थ (शुं कल्याणकारी फल वृत्ति विगेरे) सांजलीने, तथा तेने हृदयमां सारी रीतें धारीने हर्षित थयो थको, संतुष्ट थयो थको, मेघनी धाराथी सिंचाएलां कदंबना पुष्पनी पेठे प्रफुल्लित थयो थको, तथा रोमांचित थयो थको, ते स्वप्नोने ग्रहण करतो हवो, तथा ग्रहण करीने चित्तने विषे धारण करतो हवो; तथा हृदयमां धारण करीने इहा केहेतां खरा अर्थनी विचारशक्तिमां लीन थतो हवो; अने एवी रीतें लीन थइने, ते स्वप्नोना अर्थोनो निश्चय करतो हवो. अने अर्थनो निश्चय कर्याबाद ते सिद्धार्थ राजा त्रिशला क्षत्रियाणीने, आगल जेनुं वर्णन करवामां आवेलुं छे, एवी उत्तम प्रकारनी वाणीउंए करीने बोलतो थको कहेवा लाग्यो के, हे देवानुप्रिये, केहेतां सरल छे स्वजाव जेणीनो एवी हे त्रिशला क्षत्रियाणि, तें उदार केहेतां मनोहर स्वप्नां जोयां छे, कल्याण कहेतां कल्याणना करनारां स्वप्नो तें जोयां छे; शिव कहेतां निरुपद्रव करनारां स्वप्नो तें जोयां छे, धन्न केहेतां धन्य एवां तें स्वप्नो आजे जोयां छे; मंगल केहेतां मंगलने अर्थात् कल्याणने करनारां स्वप्नो तें आजे जोयां छे; वली लक्ष्मीए करीने युक्त एवां ते स्वप्नो आजे तें जोयां छे, वली आरोग्यने पण करनारां एवां, तें आजे स्वप्नो जोयां छे, वली तुष्टि कहेतां संतोषने आपनारां एवां तें आजे स्वप्नो जोयां छे. वली कल्याण अने मंगलिकनां करनारां, एवां स्वप्नो तमोए आजे जोएलां छे. माटे हवे एवां मनोहर स्वप्नोनुं तमोने शुं फल थशे ? ते हवे हुं कहुं छु. हे देवानुप्रिये, ते स्वप्नोथी अर्थनो केहेता मणि माणिक सुवर्ण आदिकनो लाज थशे, वली जोग कहेतां शब्दादिक जे जोग्य पदार्थो तेनो पण लाज थशे, पुत्र एटले संतान आदिकनो पण लाज थशे, सुख एटले निवृत्तिनो पण लाज थशे, वली राज्य केहेतां सात लक्षणो युक्त जे राज्य, तेनो पण लाज थशे, राज्यनां ते सात लक्षणो कयां कयां, ते नीचे प्रमाणे जाणी लेवां. स्वामी एटले राजा, अमात्य एटले प्रधान, सुहृद् एटले मित्र. कोश एट-

बे भंडार, राष्ट्र एटले देश, दुर्ग एटले किल्लो; तथा सैन्य एटले चतुरंगी (हाथी, घोडा, पाला अने रथ) सेना. एवी रीतनां सात अंगयुक्त राज्यनो लाभ थशे. एवी रीते सामान्यपणाथी फलनुं वर्णन करीने हवे विशेषपणाथी तेनुं वर्णन करे छे.

हे देवानुप्रिये, आजथी नव महिनाओ संपूर्ण गयाबाद, तथा ते उपरांत साडा आठ रात्रिदिवसो पण अतिक्रमण थये छते, उत्तम छे स्वरूप जेनुं, एवा एक पुत्रने तुं जन्म आपीश. हवे ते पुत्र केवो, तो के, अमारां कुलने विषे केतु केहेतां ध्वज सरखो, एवा अति अद्भुत पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो, तो के, अमारां कुलने विषे दीपक समान, अर्थात् कुलने प्रकाश करनारो, तथा मंगल करनारो, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो, तो के, कुलने विषे पर्वत समान; अर्थात् पर्वतनी पेठे जेने कोइ पण दुश्मन पराभव न करी शके, एवो, तथा स्थिर अने कुलनां आधारभूत एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो, तो के कुलने विषे अवतंस केहेतां मुकुट समान, कारण के ते यश अने शोभाने धारण करनारो थशे, वली ते पुत्र केवो तो के तेथीज करीने लोकोने विषे तिलक समान, अने वली कुलने विषे कीर्तिनो करनारो, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश, वली ते पुत्र केवो तो के, कुलनी वृत्ति करनारो, एटले कुलनो निर्वाह केहेतां, आजीविका चलावनारो, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश; वली ते पुत्र केवो, तो के, कुलने विषे दिनकर केतां सूर्य सरखो, कारणके, ते कुलने प्रकाश करनारो थशे; एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो थशे, तो के, पृथ्वीनी पेठे कुलने आधारभूत थशे, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो, तो के, पृथ्वीनी पेठे कुलने आधार भूत थशे, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो, तो के. कुलनी जे नंदि केहेतां वृद्धि, तेने करनारो, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो तो के, कुलने विषे यश करनारो, अर्थात् सर्व दिशाओमां कुलनी प्रख्यातिनो करनारो कह्युं छे के:—

"एकदिग्गामिनी कीर्त्तिः, सर्वदिग्गामुकं यशः" ॥ अर्थ—कीर्ति एक दिशामां जनारी होय छे, अने जे सर्व दिशाओमां व्यापे ते यश कहेवाय. ॥

माटे एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश, वली ते पुत्र केवो, तो के, कुलने विषे पादप एटले वृक्ष समान अर्थात् वृक्ष जेम पंथे चालनाराओने आश्रयरूप थइने छाया आपे छे, तेम तुं पण, कुलने आश्रयभूत एवा पुत्रने जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो, तो के, सुकुमाल छे, हाथ अने पगो जेना, तथा जरा पण न्यूनता विनाना अने संपूर्ण पांचे इंद्रियो सहित शरीरवाला, तथा लक्षण अने व्यंजन आदिक गुणोए करीने सहित, तथा मानोपमानें करीने सुंदर छे सर्व अंग जेनुं एवा, तथा चंद्र सरखा सौम्य आकारवाला, तथा कांत एटले मनोहर तथा प्रिय छे दर्शन जेनुं एवा, तथा उत्तम रुपवाला एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो, तो के, बाल्यपणुं वित्याबाद, सर्व जातना, विज्ञाने करीनें युक्त एवा. अर्थात् परिपक्व थएलुं छे, विज्ञान जेनुं, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश, वली ते पुत्र केवो, तो के, यौवनपणाने प्राप्त थइने, ते राज्यनो स्वामि केहेतां राजा थशे. वली ते पुत्र केवो, तो के, दान देवामां शूरो, अर्थात् अंगीकार करेलां कार्योने निर्वाह करवामां समर्थ; एवा पुत्रने तुं उत्पन्न करीश. वली ते पुत्र केवो, तो के, वीर केहेतां रणसंग्राम करवामां समर्थ, एवो, तथा विक्रांत केहेतां, परराज्यने आक्रमण करवामां समर्थ; अर्थात् महा पराक्रमे करीने युक्त, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. वली ते पुत्र केवो, तो के, विस्तीर्णथकी पण अत्यंत विस्तारवालां एवां छे बल अने वाहन जेनां, एवा पुत्रने तुं जन्म आपीश. तेमां बल एटले सेना, अने वाहन एटले वेल आदिक जाणवां. माटे हे देवानुप्रिये, त्रिशला क्षत्रियाणि, तें अत्यंत मनोहर एवां स्वप्नो जोयां छे. ते सांजलीने ते त्रिशला क्षत्रियाणीए, अत्यंत हर्षयुक्त थइने, बन्ने हाथो एकठा करीने, तथा मस्तके अंजली करीने सिद्धार्थ राजाने कह्युं के, स्वामि, आप कहो छो, तेमज छे, तेमां बिलकुल संदेह नथी, अने में जे अर्थ इछयो हतो, तेज ए ते स्वप्नने सारी रीते अंगीकार कर्या; तथा तेम करीने सिद्धार्थ राजा.

इ तेने अनुज्ञा आपवाथी, एटले तेने स्थानकें जवानी तेणीने रजा आपवाथी, ते त्रिशला क्षत्रियाणी, नाना प्रकारनां मणी अने रत्नोथी जडेलां एवां ते स्थानकपरथी उठी; तथा उठीने अत्वरित केहेतां चापल्यपणांए करीने रहित एवी, तथा संभ्रातविनानी एवी, तथा विलंबविनानी एवी तथा राजहंस जे गतिथी चाले तेवी गतिथी ज्यां पोतानी शय्या हती, त्यां चाली गइ; तथा तेम करीने, एटले त्यां जइने, एम कहेवा लागी के, मारां आ उत्तम केहेतां स्वरूपथीज सुंदर, एवां, तथा प्रधान केहेतां उत्तम फलने देनारां, अने तेथीज मंगलिक करनारां, एवां आ स्वप्नो, बीजां खराब स्वप्नोथी नाश न पामे तो सारुं, एम विचारिने, देवगुरु विगेरेना संबंधवाली, अने तेथी करीनेज प्रशस्त केहेतां महामंगलकारी एवी धर्मसंबंधी कथाओए करीने, स्वप्नजागरिका केहेतां स्वप्नोने रक्षण करवामाटेनुं जे जागरण, तेने करती थकी; तथा स्वप्नोनेज याद करती थकी रहेवा लागी.

हवे ते सिद्धार्थ राजा पण प्रत्युष काले, केहेतां जे वखते प्रभातकाल थयो ते वखते, कौटुंबिक पुरुषो केहेतां, पोतानां गोत्री अने बीजां पण सगांओने, बोलावतो हवो; तथा बोलावीने तेओने ते कहेवा लाग्यो के, हे देवानुप्रिय, आज उत्सवदिन केहेतां मोटा महोत्सवनो दिवस छे, तेथी एकदम विशेष प्रकारथी जेम थाय तेम, बहारना भागपर रहेली उपस्थानशाला केहेतां बेठकनी जगो, अर्थात् कचेरी, तेने गंधोदक केहेतां सुगंधयुक्त थएलुं जे पाणी, तेनाथी, पवित्र करो, तथा त्यां रहेलो जे कचरो, तेने दूर फेंकावीने, ते साफ करो; तथा छाण आदिकथी तेने लींपावो; तथा सुगंधि एवां पांच वर्णोनां जे उत्तम उत्तम पुष्पो, ते त्यां पथरावो ? तथा कृष्णागुरु, तुरुष्क विगेरेनां उत्तम, अने मघमघायमान थइ रहेलो जे धूप, तेणें करीने ते कचेरीने अत्यंत सुगंधमय करो; अने त्यां सुगंधवाली गोलीओ पण पथरावो; ए सघलुं कार्य, तमो पोते जाते जइने करो; बीजाओनी पासे पण करावो अने तेम कर्या बाद त्यां तमो सिंहासन मंडावो ? अने तेम करीने, आवीने मने कहो के, तमारी आज्ञाप्रमाणे अमो ए सघलुं तैयार करी राख्युं छे. ते सांभलीने ते कौटुंबिको पण, एवी रीतें सिद्धार्थ राजाथी आज्ञा करा

या हता, अत्यंत हर्षित तथा संतुष्ट थया, अने हाथ जोमीने तथा मस्तके अंजली करीने, तेओ सिद्धार्थ राजाने कहेवा लाग्या के, जेम आप कहो हो, ते प्रमाणेज अमो पण करीशुं; अने तेम करवुं ते अमोने लायकज हे. एम कही, तेओ त्यांथी गया. अने तेमना कहेवा प्रमाणे सघली सामग्री तैयार करीने तेओ पाछा राजा पासे आव्या, अने कहेवा लाग्या के, हे स्वामि, आपना कहेवा प्रमाणें अमोए सघळुं तैयार करी लीधेलुं हे.

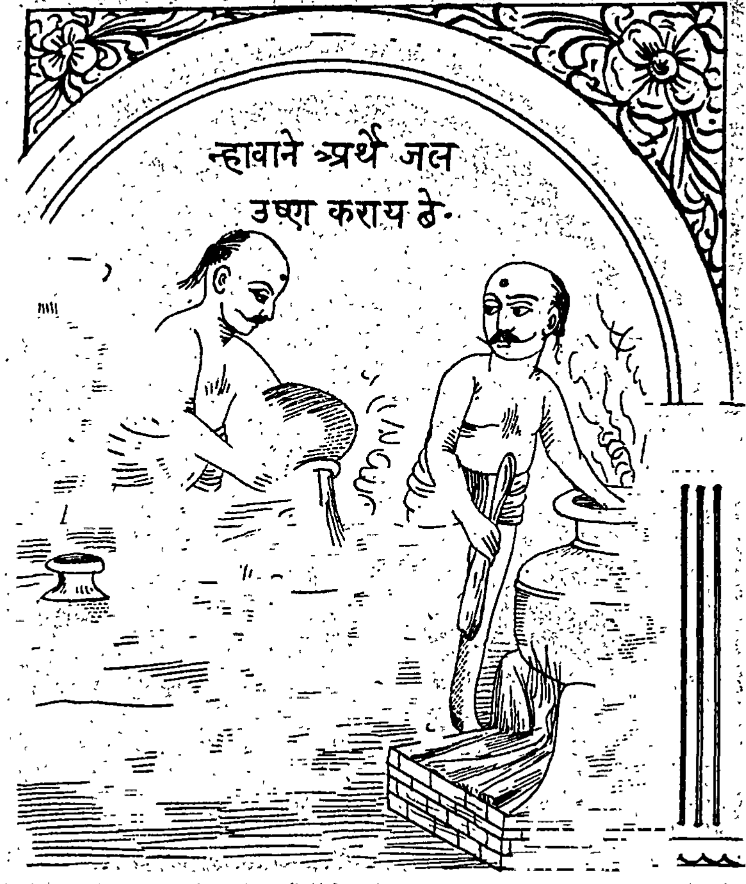
हवे तेवार पही सिद्धार्थ राजा पण रजनी केहेतां रात्रि वीत्याबाद, पद्म, तथा "कमल" एटले हरिणनी जातिविशेष, तेनुं जे नयन, केहेतां लोचन, ते प्रफुल्लित केहेतां विकस्वर थाते हते, अर्थात् जे वखते कमलोनां पत्रो तथा हरिणना नेत्रो पण विकस्वर एटले खुल्लां थया हता. एवो, पांडुर केहेतां श्वेत रंगवालो प्रभातकाल होते हते, एवी रीतें रात्रिना वीत्या बाद, प्रभात थवाथी, अनुक्रमें सूर्य पण उगते हते; ते सूर्य केवो, तो के, रक्त केहेतां लाल रंगनुं जे अशोक नामनुं वृक्ष. तेनी कांति, तेना समूह सरखो, वली ते सूर्य केवो, तो के, किंशुक केहेतां केसुमांनां पुष्प सरखो, वली ते सूर्य केवो, तो के, शुक केहेतां जे पोपट तेनी चांच सरखो, वली ते सूर्य केवो, तो के, चणोठीनो जे अर्ध भाग तेना जेवो, एटले चणोठीमां रहेलो कालो भाग वर्जिने बाकी जे लाल भाग होय तेना जेवो; वली ते सूर्य केवो, तो के, बंधुजीव एटले, एक फुलनी जातनुं नाम हे, के, जेने लोको बपोरीया कहे हे, तेनां जेवो, वली ते सूर्य केवो, तो के, पारापत केतां जे पारेवां (कबुतर) तेना पग अने रांखो जेवो, वली ते सूर्य केवो तो के परभृत केहेतां जे कोयल, तेणें क्रोध आदिकथी लाल करेली जे आंखो, ते आंखोनां जेवो, वली ते सूर्य केवो, तो के, जपापुष्प केतां जासुद नामनी जातिनां जे पुष्पो, तेओनो जे राशि केहेतां ढगलो, तेना जेवो, वली ते सूर्य केवो, तो के, प्रसिद्ध एवो जे हिंगलो तेनो जे ढगलो, तेना जेवो. उपर जे सघली लाल रंगनी वस्तुओ कही, तेनाथी पण अधिक शोभतो. एवो. तेजनाथी पण अधिक शोभतो, एम शा माटे कह्यो? एम जो कोइ शंका करे, तो तेने माटे खुला

सो एवो के, रताशमां तो तेना सरखो, पण कांतिए करीने तो तेनाथी पण अधिक, सूर्य शोने बे, एम वृद्ध आचार्योनो मत बे. अथवा लाल रंगमां अशोकथी मांडीने बेक हिंगलाना ढगला सुधिनां जे विशेषणो, तेउनो शोनतो एवो जे अतिरेक केतां प्रकर्ष, तेना जेवो सूर्य एवो अर्थ पण करवो. वली ते सूर्य केवो, तो के, कमलोना जे आकरो, केहेतां उत्पत्तिनां स्थानको, अर्थात् पद्मनी उत्पत्ति थवानां जे तलावो, तेने विषे रहेलां जे कमलोनां वनो, तेउने विकस्वर करनारो, एवो. वली ते सूर्य केवो, तो के, हजार बे, किरणो जेनां, एवो. वली ते सूर्य केवो बे, तो के, दिनकर केतां दिवसने उत्पन्न करवामां समर्थ एवो वली ते सूर्य केवो, तो के, तेजें करीने देदीप्यमान एवो, वली ते सूर्य केवो, तो के, तेनां (सूर्यनां) किरणोनां जे अनिघात तेणे करीने, अपराधी एटले दुश्मनरूप, एवो जे अंधकार, तेनो नाश होते बते, नवो एवो जे तेनो लाल रंगनो ताप, ते जाणे के, कुंकुमज होय नहीं तेनाथी तमाम मनुष्य लोक व्याप्त होते बते, अर्थात् जेम कुंकुमें करीने कंइक वस्तुने पिंजरी कराय बे, तेम, ते सूर्यनां तेजें करीने पण समस्त मनुष्य लोक पण पिंजरा रंगनो (कंइक रातो अने कंइक पीला रंगनो) कराते बते, ते सिद्धार्थ राजा शयनीय केहेतां पोतानी शय्यामांथी उठतो हवो. ते शय्यामांथी उठीने ते पादपीठपरथी (पलंगउपरथी नीचे उतरवामाटे मुकेली सीडी उपरथी) नीचे उतर्यो. नीचे उतरीने ज्यां अट्टनशाला केहेतां कसरतशाला हती, ते तरफ चाल्यो. ते तरफ चालीने, ते तेनी अंदर दाखल थयो. त्यां दाखल थइने, अनेक प्रकारनां जे कसरतने लायकनां साधनो, (मुद्गल आदिक) ते तेणे लीधां. तथा तेथी वल्गन, व्यामर्द्दन तथा मल्लयुद्ध आदिक तेणें कर्यां. वल्गन एटले कुदका मारवा विगेरे. व्यामर्द्दन एटले परस्पर हाथ आदिक अंगोने मोडवा ते. तथा मल्लयुद्ध तो लोकोमां प्रसिद्ध बे. ए सघली क्रियाउ करीने, श्रांत थएलो, एटले सामान्य प्रकारें श्रमने प्राप्त थयो थको, तथा परिश्रांत एटले सर्व अंगो प्रते श्रमने प्राप्त थयो थको, मर्द्दन कराववा लाग्यो. ते मर्द्दन केवा प्रकारनुं ? तेनुं वर्णन हवे करे बे. शतपाकतैल केहेतां सो वखत नवी नवी औषधिउनां रसोए करीने पकावेलुं, अथवा जेने पकाववामां

एक सो सोनामोहोरो लागे एवुं; अने एवीज रीतें सहस्रपाकतैल केहेतां एक हजार औषधीउंना रस थी पकावेलुं, अथवा जेने पकावतां एक हजार सोनामोहोरो लागे एवुं. एवी रीतनां अत्यंत सुगंधि उंए करीने युक्त थएलां जे तैल आदिको, (आदि शब्दथी कपूरनां पाणी आदिकनुं पण ग्रहण करवुं.) तेउंए करीने तेणे मर्दन कराव्युं. हवे ते तैल आदिको केवां, तेनुं वर्णन करे छे. प्रीणनीय केहेतां, रस, रुधिर एटले लोही, इत्यादि शरीरनी अंदर रहेली धातुउंने समता करनारा; वली ते तैलादिक केवां, तो के, दीपनीय केहेतां जठराग्निने प्रदीप्त करनारां; वली ते तैलादिक केवां, तो के, मदनीय केहेतां कामने वृद्धिकरनारां; वली ते तैलादिक केवां, तो के, बृंहणीय केहेतां, मांसने पुष्टि करनारां; वली ते केवां तो के, दर्पणीय केहेतां बलने करवावालां, वली ते केवां तो के, सघलां इंद्रिय अने अंगोने प्रह्लादनीय केहेतां आनंद उपजावनारां; एवी रीतनां तैल आदिकथी तेणें माणसो पासे पोताना अंगनुं मर्दन कराव्युं. अने तेथी तेनो थाक पण उतरी गयो. हवे ते मर्दन करनारां माणसो केवां, तो के, निपुण केहेतां सघला प्रकारना उपायोमां विचक्षण एवा. वली ते माणसो केवां. तो के, संपूर्ण छे, हाथ अने पगो जेउंनां, अर्थात् हाथ पगमां कंइ पण खोडखापणविनाना. वली ते माणसो केवां तो के, जेउंनां हाथनां तलीओउं पण अत्यंत सुकुमाल छे, एवां. (अहीं किरणावली नामनी टीका करनार श्री धर्मसागर उपाध्याये, तथा दीपिका नामनी टीका करनारें पण "पाणिपादस्य" ने बदले "पाणिपादानां" एवो प्रयोग लख्यो छे, ते विचारवा जेवो छे; अर्थात् ते व्याकरणनां नियमथी विरुद्ध छे. कारणके "प्राणितुर्यांगाणां" एवी रीतनां हेमचंद्र माहाराजें कहेलां व्याकरणनां सूत्रने अनुसारे तेनो "एकवद्भाव" थवो जोइए. अर्थात् "पाणिपादानां" एम पद नहीं मुकतां "पाणिपादस्य" एवुं पद मुकवुं जोइए. वली ते पुरुषो केवा, तो के, अभ्यंगन केहेतां तेल आदिकनुं चोपडवुं ते, तथा मर्दन केहेतां तेने चोलवुं ते, तथा उद्धलन केतां तेज तेलने चोलीने तेनी वाटो करीने पाछुं कहाडी नाखवुं ते, इत्यादिक जे प्रकारो, तेओमां उत्कृष्ट अभ्यासवाला, एवा. वली ते माणसो केवां, तो के,

चित्र १७





अवसरने, एटले उचित कालने जाणनारा, एवा, वली ते माणसो केवां, तो के, अवसरने, एटले उचित कालने जाणनारा, एवा, वली ते माणसो केवां, तो के, दक्ष केहेतां तुरतातुरत कार्य करनारा, एवा वली ते माणसो केवां तो के, मर्दन करनार माणसोमां पण अग्रेसर एवा. वली ते माणसो केवां तो के, कुशल केहेतां विवेके करीने युक्त एवा. वली ते माणसो केवां तो के, मेधावी केहेतां अपूर्व, एटले अति उत्कृष्ट जे चतुराइ तेने ग्रहण करवामां समर्थ एवा, वली ते माणसो केवां तो के, जितेलो छे परिश्रम जेने एवा, अर्थात् जे थाक लागेलो होय, तेने दूर करनारा, एवा पुरुषोए करीने चतुर्विध केतां चार प्रकारनी, एटले अंगने केहेतां शरीरने सुख करनारी जे चार प्रकारनी दाबवा आदिकनी शुश्रुषा तेणे करीने चंपावेलुं छे शरीर जेनुं, एवो ते सिद्धार्थ राजा. ते चार प्रकारो कया कया तेनुं हवे वर्णन करे छे. पेहेलो अस्थिसुखया केहेतां जे चंपीए करीने शरीरमां रहेलां हाडकांओने सुख उपजे एवो प्रकार. बीजो मांससुखया केहेतां जे चंपीए करीने शरीरमां रहेला मांसने पण सुख उपजे, एवो प्रकार. त्रीजो त्वचासुखकारिएया केहेतां जे चंपीथी त्वचा केहेतां चामडीने पण सुख उपजे, एवो प्रकार, तथा चोथो रोमसुखकारिएया केहेतां, जे चंपीथी रोमोने पण सुख उपजे, एवो प्रकार, एवी रीतनी चार प्रकारनी चंपीथी, चंपाएला थइने ते सिद्धार्थ राजा तुरत अट्टनशाला केहेतां कसरतशालामांथी बहार निकल्या. त्यांथी निकल्याबाद तुरतज ते, ज्यां मज्जनगृह केहेतां स्नान करवानुं गृह एटले स्थानक हतुं, ते तरफ ते सिद्धार्थ राजा चाल्या. ते तरफ जइने तेणे तेमां प्रवेश कर्यो. त्यां प्रवेश करीने मुक्ताफल केहेतां मोती आदिकथी व्याप्त एटले जडेलां, एवां जे गवाक्षो केहेतां झरुखाओ, ते छे जेनी अंदर, अने तेओए करीने अभिराम केहेतां मनने अत्यंत आनंद आपनारा, एवा, तथा विचित्र एटले जुदी जुदी जातिना अथवा आश्चर्य उपजावनारां, एवां जे मणि अने रत्नो, तेओए करीने जडेलो छे, कुट्टिमतल केहेतां तलीआनो भाग जेनो, एवी छे, भूमि ज्यां, एवा प्रकारनां स्नानमंडप केहेतां स्नान करवाने माटे बनावेला मांडवामां ते दाखल थया, त्यां दाखल थइने, नाना

प्रकारना केहेतां विचित्र प्रकारनां जे मणिओ तथा रत्नो, तेओए करीने जडेला, अने तेथी मनने आश्च सुख०
र्य उपजावनारा, एवा स्नानपीठ केहेतां स्नान करवा माटे तैयार करी राखेला बाजोठपर ते सुखें करीने बेठा अने एवीरीतें सुखें समाधे त्यां बेठा बाद पुष्पोदक केहेतां फुलोना रसथी मिश्रित थयेलां जे जलो केहेतां पाणी, तेउए करीने, तथा गंधोदक एटले, श्रीखंड केहेतां जे सुखड, तेनो जे रस, तेणें करीने मिश्रित थएलां जल, तेउए करीने, तथा उष्णोदक केहेतां अग्निए करीने वासण आदिकोमां गरम करेलां पाणीओथी, तथा शुन्नोदक केहेतां पवित्र एवां जे तीर्थो, त्यांथी मगावेलां एवां जे पाणी, तेओए करीने, तथा शुद्धोदक एटले स्वन्नावथीज निर्मल केहेतां जरा पण मेल विनानां, एवां जे पाणी तेओए करीने, एवी रीतनां विविध केहेतां जुदा जुदा प्रकारनां जे पाणी, तेओए करीने, कल्याणकरणप्रवर केहेतां मंगलिक कार्योने कर वामां समर्थ एवो जे स्नान करवानो विधि, तेणें करीने, मज्जितः केहेतां, उपर जेनुं वर्णन करवामां आवे लुंठे. एवा पुरुषोए करीने ते सिद्धार्थ राजाए स्नान कर्युं. ते स्नान कर्याबाद, बहु प्रकारनां सेंकडो कौतु कोए करीने युक्त थयो थको, ते राजा, पद्मल केहेतां रुंवाटीवालां, अने तेथी करीनेज स्पर्शमां अत्यं त कोमल लागे, एवां; तथा उत्तम प्रकारनी ठांटेली ठे सुगंधिओ जेनी अंदर, एवां लाल रंगनां साडी नां जे कापड, तेणें करीने, निर्जलीकृत केहेतां बिलकुल पाणी विनानुं पोतानुं अंग केहेतां शरीर करतो हवो. तथा त्यारबाद बहुमूल्य केहेतां जेने खरीदवा जतां, अथवा बनावतां घणुं द्रव्य लागे एवुं, तथा अत्यंत उत्तम जातिनुं जे वस्त्ररत्न केहेतां रेशमी कापडनुं बनावेलुं जे वस्त्र. तेणें करीने तेणें पोतानां शरीरने लपेटी लीधुं; अर्थात् तेणें ते उत्तम वस्त्र पेहेर्युं. वली ते राजा केवो, तो के, सरस केहेतां रसें करीने संयुक्त थएलुं एवुं, तथा सुरन्नि केहेतां सुगंधयुक्त थयेलुं एवुं जे गोशीर्षचंदन केहेतां गायनां मस्तकमांथी निकलतुं एवुं जे गोरुचंदन (गोरोचन) तेणे करीने अनुलिप्त केहेतां लेपनयुक्त थएलुं ठे शरीर जेनुं एवो; वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के, माला एटले पुष्पोनी माला, तथा वर्णक एटले ॥४०॥
पीठी, अने शरीरने शोन्नावनारुं कुंकुम आदिकनुं विलेपन, ते सघलुं शुचि केहेतां पवित्र ठे जेने एवो.

राजा केवो, तो के, परिहित केहेतां शरीरपर पेहेरेलां छे, मणि अने सुवर्णमय केहे-
तां भूषण केहेतां अलंकारो जेणें, एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो, तो के कल्पित केहेतां
शरीरपर योग्य स्थानकें पेहेरेलां छे, हार, केहेतां जेमां जुदी जुदी अढार सेरो होय ते, तथा अर्धहार
केहेतां जेमां जुदी जुदी नव सेरो होय ते, अने त्रिसरिक एटले जेमां त्रण सेरो जुदी जुदी होय, एवो
हार, तथा प्रलंबमान केहेतां लांबो लटकतो एवो, प्रालंब केहेतां झुंबनक (झुमणुं) तथा कटीसूत्र
केहेतां केडने स्थानके पेहेरवानुं जे आभूषण ते, अर्थात कंदोरो, एटलां उपर वर्णवेलां जे आभूषणो
तेओये करीने करेली छे, उत्तम प्रकारनी शोभा जेणें एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो, तो के पिनद्ध
केहेतां पेहेरेलां छे, ग्रैवेयक केहेतां कंठमां पेहेरवानां कंठा आदिक जुदी जुदी जातिनां आभूषणो जे
णें, एवो, वली ते सिद्धार्थ राजा केवो, तो के, अंगुलीयक केहेतां आंगलीओमां पेहेरवानां जुदा जुदा प्र
कारनां आभूषणो के, जेओ वेढ, वींटी विगेरेना नामथी दुनीयामां प्रसिद्ध छे, ते, तथा ललित केहे
तां अत्यंत शोभा आपे एवां कचाभरण केहेतां केशोने शोभावनारां पुष्प अधिकनां आभूषणो, ते जे
णें योग्य स्थानके पेहेरेलां छे, एवो; वली ते सिद्धार्थ राजा केवो, तो के, वर एटले अत्यंत उत्तम जाति
नां एवां जे कटक केहेतां कडां तथा त्रुटित केहेतां पोंची बाजुबंध विगेरे जातिनां आभूषणोथी स्तंभित
थयेला छे, हाथो जेना, एवो वली ते सिद्धार्थ राजा केवो, तो के, अधिक एवुं जे तेनुं पोतानुं स्वाभा
विक रुप, तेणें करीने अत्यंत शोभायुक्त थएलो, एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो, तो के, कानमां
ां जे कुंडलो, तेणे करीने अत्यंत प्रकाशित थएलुं छे, आनन केहेतां मुख जेनुं, एवो वली
राजा केवो, तो के, मस्तकपर पेहेरवानो जे मुकुट तेणें करीने अत्यंत तेजवालुं थएलुं छे
वो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो तो के हारें करीने आछादित एटले आछादन युक्त
। जोनार माणसोने प्रमोद केहेतां अतिशय हर्षने आपनारुं छे, हृदय केहेतां
वक्षः । ते सिद्धार्थ राजा केवो छे ? तो के मुद्रिका केहेतां वींटी आदिकथी पिंग

थ केहेतां पीला रंगवाली थएली छे, हाथनी आंगलीयो जेनी एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो, तो के, प्रलंब केहेतां लांबो, अने तेथी करीनेज नीचे लटकतो एवो जे डुपट्टो तेणें करीने उत्तम रीतें करेलुं छे, उत्तरासंग जेणे, एवो. वली ते सिद्धार्थ राजा केवो, तो के, नाना प्रकारना एटले जुदी जुदी जातिना जे मणि अने कनक केहेतां जे सुवर्णो, अने रत्नो, तेणें करीने दीप्तिमंत केहेतां कांतिवालां, अने तेथी करीनेज महार्घ्य केहेतां जेने खरीद करतां अने बनावतां पण घणुं मूल्य पडे एवां, तथा निपुण एटले शिल्पविद्यामां अत्यंत प्रवीण थएलो, एवो जे शिल्पि केतां कारिगर, तेणें उपचित केहेतां घडीने बनावेलां, तथा अत्यंत दीपतां, तथा घणीज चीवट राखीने बनावेलां, तथा कोइ जाणी न शके, तथा उखडी पण न जाय, एवी रीते जोडेला छे सांधाओ जेओनी अंदर एवां, अने तेथी करीनेज विशिष्ट केहेतां बीजां आभूषणोथी अत्यंत रमणीय लागे एवां; तथा मनने पण हरी लीए एवां, धारण करेल छे, वीरवलय, केहेतां वीरपणानो जे पोतानो अहंकार तेने सूचवनारां वलयो केहेतां कडां ओ जेणें, एवा. अर्थात् जे कोइ पोताने वीर तरिके मानतो होय, ते मने जीतीने आ कडांओ उतरावे, एवी बुद्धिथी धारण करेल छे, वीरवलय जेणें, एवो सिद्धार्थ राजा. हवे कवि कहे छे, के, वधारे तेनुं शुं वर्णन करवुं? ते राजा तो कल्पवृक्षनी पेठे विभूषित थएलो हतो; एटले कल्पवृक्ष जेम पत्र केहेतां पांदडां आदिकथी अलंकृत होय, अने पुष्प एटले फुल आदिकथी जेम भूषित होय, तेम आ सिद्धार्थ राजा पण मुकुट आदिकथी अलंकृत हतो, तथा वस्त्र आदिकथी विभूषित थयो हतो. वली ते राजा, कोरिंट नामना वृक्षनां जे पुष्पो, तेनी बनावेली जे मालाओ, तेओए करीने सहित, एवुं, अने तेनापर धारण करातुं जे छत्र, तथा श्वेत वर्णवालां अने मनोहर एवां, अने बन्ने बाजुए वींझातां एवां जे चामरो तेओए करीने भूषित थएलो, एवो. वली ते राजा केवो, तो के,मंगलभूत केतां कल्याणकारी एवो जे "जय जय" नो शब्द ते कराइ रहेलो छे, आलोकमात्रे, केहेतां जेना जोवा मात्रथी, एवो. अर्थात् जेने जोतां थकांज लोको जय जय शब्द करी रह्या छे, एवो. वली ते राजा केवो, तो के,

अनेक केहेतां घणा एवा जे गणनायको, केहेतां पोतपोतानां समुदायना स्वामिओ केहेतां उपरीओ, तथा दंडनायक, केहेतां तंत्रपाल एटले देशनी चिंता करनाराओ; तथा राजाओ एटले मांडलिक राजाओ, अर्थात् पोताना ताबातलेना देशोना खंडिआ राजाओ, तथा ईश्वरो एटले युवराजा; (अहीं कल्पसूत्रनी किरणावली नामनी टीका करनारा धर्मसागर उपाध्याय, तथा दीपिका नामनी टीका करनार ए बन्ने ए, ईश्वरनो अर्थ "युवराजाः ने" बदले "युवराजानः" एम करीने प्रयोग मुकेलो छे, ते विचारवालाय क छे, केमके, ते व्याकरणनां नियमथी उलटो छे; कारणके, "अट् समासांतागमने" एवी रीतनां व्याक रणना सूत्रथी "युवराजाः" एवी रीतनो प्रयोग थाय छे. पण "युवराजानः" थइ शकतो नथी; तेथी विद्वानोए तेओए मुकेलो प्रयोग विचार करवा जेवो छे) तथा तलवरा केहेतां संतुष्ट थएला राजाओए दीधेलो जे पट्टबंध केहेतां चांद तेणें करीने विभूषित थएला एवा राजस्थानीय केतां राजदरबारी माण सो जाणवा. तथा मांडलिक केतां मंडलनां स्वामि एटले उपरीओ. तथा कौटुंबिक केतां केटलांक एवां जे कुटुंबो, तेओनां स्वामिओ, तथा मंत्रिओ केहेतां राज्यना अधिष्टायक एवा सचिवो, के जेओ तमा म राज्यसंबंधि कार्यने चलावे छे, तेओ तथा महामंत्रिओ केहेतां उपर कहेलां मंत्रिओ करतां पण जेने वधारे अधिकार छे, एवा; तथा गणक एटले ज्योतिष संबंधि विद्यानां शास्त्रोने पार पहों चेला ज्योतिषिओ; तथा दौवारिक केहेतां द्वारपासे चोकी करनारा प्रतिहारो एटले छडीदारो; तथा अमात्यो केहेतां पोतानी सायेज जेओनो जन्म थएलो होय, एवा मंत्रिओ, तथा चेटो केहेतां चाकरोनुं कार्य करनारां माणसो; पीठमर्दको एटले, पीठ केहेतां आसनने जे मर्दन करे, ते अर्थात् नजदिकमां रही सेवा करनारा, एटले मित्रो, (कारणके, तेओ मित्रो होवाथी, तेमने कोइ वखते पोताना आसनपर पण जोडमां राजाओ बेसाडे छे.) तथा नागरो केहेतां नगरमां वसनारा लोको, तथा निगमो एटले वेपार करनारा लोको, तथा श्रेष्टि केहेतां नगरना मुख्य मुख्य वेपार करनारा लोको, तथा सेनापति एटले चतुरंगी सेनाना अधिकारीओ; तथा सार्थवाहो केहेतां सा

थैना नायको, एटले उपरीउं. तथा दूतो केहेतां बीजा राजाउंनी पासे जइ, पोताना राजाउंनो संदेशो कहेनारा. तथा संधिपालो केहेतां, अन्य राजाउंनी साथे पोतानां राजाउंने संधि करावनारा, अर्थात् एलचीउं, ए उपर कहेला सघला माणसोथी विंटाएलो, एवो ते सिद्धार्थ राजा स्नानगृह केहेतां ते स्नान करवाना घरमांथी बहार निकलतो हवो. हवे अहीं तेनां संबंधमां महाकवि श्री नद्रबाहुस्वामी उपमा अलंकार मुके छे, के, देदीप्यमान एवो जे ग्रहसमूह केहेतां ताराउंनो जे समूह, तेउं वच्चे वर्ततो एवो, जाणे, ते राजा चंद्र होय नहीं जेम, तेम, शोजतो हतो; केमके उपर वर्णवेलो जे परिवार ते ताराउं सरखो हतो, तथा तेउंनी वच्चे राजा चंद्र सरखो शोजतो हतो. हवे ते सिद्धार्थ राजा जे स्नान करवाना घरमांहेथी बाहेर निकल्यो, तेने माटे कवि उपमालंकार मुके छे. ते राजा स्नानगृहमांथी बाहेर निकल्यो, ते जाणे के, सफेद रंगनां जे वादलांउं, तेउंमांथी ग्रहोना समूहोनी साथे चंद्र जाणे बहार निकल्यो होय नहीं, एवो ते राजा शोजतो हतो. वली ते राजा केवो, तो के, नरेंद्र केहेतां माणसोनो इंद्र कहेतां राजा. तथा नरवृषन केतां माणसोने विषे वृषन समान एटले पृथ्वीनो नार धारण करवामां समर्थ एवो, तथा नरसिंह केहेतां मनुष्योमा सिंहसमान, केमके ते दुःखे करीने सहन थइ शके, एवां पराक्रमवालो हतो. वली ते राजा केवो, तो के, अत्यंत अधिक एवी जे राज्यसंबंधिनी लक्ष्मी, तेणें करीने अत्यंत देदीप्यमान एवो; ते राजा मज्जनगृह एटले स्नानगृहमांथी निकलीने, बहार रहेली जे उपस्थानशाला केहेतां बेठकनी जगो, अर्थात् कचेरी तेनी अंदर आव्यो. त्यां आवी ते पूर्व दिशा तरफ पोतानुं मुख करीने बेठो. एवी रीतें सिंहासनपर पूर्व सन्मुख बेसीने, तेणें पोताथी इशान खुणानी बाजुमां आठ नद्रासनो केहेतां सिंहासनो मंडाव्यां. तथा तेमना पर श्वेत एटले सफेद वस्त्रो बिछाव्यां. तथा तेउंने सिद्धार्थ केहेता सफेद सरसवोना दाणाउंथी मांगलिक उपचार कराव्यो; अर्थात् ते सफेद सरसवोना दाणाउंथी तेउंनी पूजा करी. तेम कराव्या बाद तेणें पोताना सिंहासनथी नहीं बहु नजदीकमां, तेम नहीं बहु छेटे, एवी रीते तेणें एक जवनिका केहेतां कना-

त तणावी. हवे ते कनात केवी तो के, नाना प्रकारना एटले जुदी जुदी जातना जे मणि माणिक, रत्नो, विगेरे जवाहीरथी मंडित थएली, अने तेथी करीनेज अधिक रीतें जेम थाय तेम प्रेक्षणीय केहेतां जोवा लायक एवी. वली ते जवनिका केहेतां कनात केवी तो के, महार्घ्य केहेतां जेनुं अत्यंत मूल्य थाय एवी, वली ते कनात केवी, तो के, वर केहेतां प्रधान एवुं जे, पत्तन केहेतां नगर; ते नगर पण केवुं तो के, ज्यां उत्तम उत्तम जातिनां वस्त्रो वणाय छे, तथा ज्यां उत्तम उत्तम जातिनां रत्नो निपजे छे, एवां नगरनी अंदर बनावेली; वली ते जवनिका कहेतां कनात केवी तो के, अत्यंत कोमल छे स्पर्श जेनो एवी; वली ते कनात केवी, तो के, उतम जातिनां रुनुं बनावेलुं बारिक एवुं जे सूतर, तेनी सेंकडो गमे जे रचनाउ, तेउए करीने मनने आश्चर्य उपजे एवो छे, ताणं केहेतां ताणो जेनी अंदर एवी. वली ते कनात केवी तो के, इहा केतां एक जातिनां हरिणो, रुषन्न केहेतां बलदो, तुरग केहेतां घोडाउ, नर केहेतां मनुष्यो, मगर केहेतां मगरमछो; विहंग केहेतां जुदी जुदी जातनां पक्षियो व्याल केहेतां सर्पो, किन्नर केहेतां किन्नरो, रुरु केहेतां एक जातिनां हरिणो, सरन्न केहेतां अष्टापद नामनां प्राणीउ, चमरी केहेतां जेनां पुंछडांउना वालोना चामरो बनेछे, एवी चमरी गाइउ, कुंजर केहेतां हाथीउ, तथा वनलता केहेतां अटवीमां थती चंपक, आंबा विगेरेनी लताउ, पद्मलता केहेतां कमलनी लताउ, के जेउ दुनिआमां प्रसिद्ध छे, एवी रीतें उपर वर्णवेलां सघलांउनी जे रचना केहेतां चित्रकामो तेउए करीने चित्र केहेतां मनने अत्यंत आश्चर्य उपजावनारी, एवी रीतनी आभ्यंतर जवनिका केहेतां अंतेउरने (राणीवासने) बेसवानी जे कनात, तेने रचावीने, तेणें (राजाए) तेनी अंदरना भागमां एक सिंहासन मंडाव्युं. ते सिंहासन केवु, तो के, नाना प्रकारनां जे मणि माणेकादि झवेरात, तेनी जे रचना तेणे करीने चित्र केहेतां चितने आश्चर्य उपजावे एवुं. वली ते सिंहासन केवुं, तो के, मसरु केहेतां जे रेशमी कापड तेणें करीने आछादित करेलुं, अर्थात् निर्मल अने कोमल एटले सुकुमाल एवी गादीए करीने आछादित करेलुं; एवुं. वली ते सिंहासन केवुं तो के, श्वेत केहेतां स-

फेद एवुं जे मलमल आदिकनुं सुकुमाल वस्त्र, तेणे करीने प्रत्यवस्तृत केहेतां पाबुं उपर आछादित कलुं एवुं. (उपर खोल चडावेलुं.) वली ते सिंहासन केवुं, तो के, तेथी करीने (रेशमनी गादी तेनापर बिछाववावडे करीने) अत्यंत सुकुमाल थयेलुं एवुं. वली ते सिंहासन केवुं, तो के अंगने सुख आपनारो छे, स्पर्श जेनो एवुं; अने तेथी करीनेज अत्यंत शोभाए करीने युक्त थयेलुं एवुं ते सिंहासन सिद्धार्थ राजाए त्रिशला क्षत्रियाणीने बेसवामाटे तैयार कराव्युं. एवी रीतनी सघली तैयारीउ कर्याबाद तेणें कौटुंबीक पुरुषोने बोलाव्या. अने तेउने बोलावीने तेणे कह्युं के, हे देवानुप्रियो, तमो क्षिप्र केहेतां तुरतज जईने स्वप्नपाठको, केहेतां स्वप्नशास्त्रोमां पार पहोंचेलां एवा पंक्तिोने बोलावी लावो? ते स्वप्नपाठको केवा तो के आठ अंगो छे जेनी अंदर, एवी रीतनुं जे महानिमित्त शास्त्र, एटले नविष्य कालमां थता बनावोने सूचवनारुं जे शास्त्र तथा जेमां स्वप्नादिकनां फलोनुं माहात्म्य कहेलुं होय. एवा जे ग्रंथो, तेउनां मूलसूत्रो, अने वली तेउना जे अर्थो, तेउने संपूर्ण रीतें जाणनारा, एवा. वली, ते स्वप्नपाठको केवा तो के, विविध प्रकारनां जे शास्त्रो तेउने विषे पण कुशल केहेता पंडित एवा. हवे ते ज्योतिषशास्त्रनां आठ अंगो कयां कयां ते देखाडे छे.

अंगं स्वप्नं स्वरं चैव, जौमं व्यंजनलक्षणे ॥ उत्पातमंतरिक्षं च निमित्तं स्मृतमष्टधा ॥ १ ॥

अर्थ—पेहेलुं अंग एटले अंगस्फुरणनी चेष्टाउ जाणवी ते, जेमके पुरुषनुं जमणुं अंग स्फुरे तो सारुं, अने स्त्रीनुं माबुं अंग स्फुरे तो, सारुं. बीजुं स्वप्न एटले उत्तम जातिनां, मध्यम जातिनां तथा अधम जातिनां जे माणसोने स्वप्नो आवे छे, तेनां फलादिकने जे जाणवां, ते. त्रीजुं स्वर केहेतां डुर्गा (पक्षिविशेष) रुपारेल, काली, शियाल विगेरेनां शब्दोथी थतां फलादिकने जाणवुं ते. चोथुं जौम केहेतां पृथ्वीमां थता कंप एटले धुजारा आदिकनुं जे ज्ञान जाणवुं ते. पांचमुं व्यंजन केहेतां मषा, तल आदिकनां फलोनुं जे ज्ञान जाणवुं ते. छठुं हाथपगोनी रेखा आदिकनुं, जे ज्ञान सामुद्रिक शास्त्रोमां कहेलुं छे, तेनां विज्ञानने जाणवु ते. सातमुं उत्पात तथा उल्कापात केहेतां तारा आदिकना खरवाथी

नरना फलने जे जाणवुं ते. तथा आठमुं अंतरिक्ष केहेतां ग्रहोना उदय अथवा अस्त आदिक थवाथी जे सारा माठा बनावो बने तेनुं जे विज्ञान थवुं ते.

एवी रीतें सिद्धार्थ राजाए करेल छे, हुकम जेउने एवा ते कौटुंबिक लोको अत्यंत हर्षित थया राजानी ते आज्ञाने हाथ जोडीने अंगीकार करता हवा. अने पछी त्यांथी तेउ क्षत्रियकुंडग्राममां ज्यां स्वप्नपाठकोनां घरो हतां, त्यां गया, त्यां जइ ते स्वप्नपाठकोने बोलववा लाग्या. त्यारे ते स्वप्नपाठको पण सिद्धार्थ राजाना, कौटुंबिकोने बोलववा आवेला जाणीने अत्यंत हर्षित थया; तथा पछी तेओए स्नान कर्युं, त्यारबाद तेओए बलिकर्म केहेतां पूजा करी. वली ते स्वप्नपाठको केवा तोके, करेलां छे तिलक आदिक जेओए एवा; वली ते स्वप्नपाठको केवा तो के, दधि केहेतां दही, दुर्वा केतां धोकड, तथा अक्षत केहेतां चोखा आदिकथी करेलुं छे मंगल जेओए एवा; ते मंगलो शाने माटे तो के दुःस्वप्न केहेतां खराब एवां जे स्वप्न आदिक तेओनो नाश करवामाटे. वली ते स्वप्नपाठको केवा, तो के. शुद्ध एटले पवित्र अने उज्वल एवां तथा प्रवेश्य केहेतां राजानी सभामां जेवां कपडांओ पेहेरीने जवाय, एवां पेहेरेलां छे, कपडां जेणे एवा. वली ते स्वप्नपाठको केवा, तो के, अल्प केहेतां थोडां अने महार्घ केहेतां मोटी कीमतना जे आभूषणो, तेओए करीने अलंकृत केहेतां शोभावेलुं छे, शरीर जेओए, एवा. वली ते स्वप्नपाठको केवा तो के सिद्धार्थ केहेतां जे सफेद रंगनां सरसवो तथा हलितालिका एटले जे दूर्वा ते बन्ने वस्तुओने जेओए मंगल केहेतां कल्याणने माटे धारण करेली छे, मस्तकमां जेओए एवा. एवी रीतना थइने तेओ सघला पोतपोताने घेरथी निकल्या. एवी रीतें पोताना घरोमांथी निकल्याबाद तेओ ते क्षत्रियकुंड ग्रामनी मध्यमां थइने, ज्यां सिद्धार्थ राजानुं, भुवनवर केहेतां उत्तम मेहेलोने विषे पण अवतंस केहेतां मुकुट सरखुं, एवुं जे भुवन छे, तेनां प्रतिद्वार केहेतां मूल दरवाजापासे तेओ आव्या. त्यां आव्याबाद तेओ सघला एकठा थइने, एक सरखा मतवाला थया. अने तेओए पोतामांनां एकने अगाडी करीने बीजा सघलाओ तेना अनुयायि केहेतां ते उपरी कहे तेम

करनारा तथा बोलनारा थया. अर्थात् तेओ सघला संप करीने एक मतवाला थया. कारणके, कह्युं छे के,

सर्वेऽपि यत्र नेतारः, सर्वे पंमितमानिनः ॥ सर्वे महत्त्वमिछंति, तद्वृंदमवसीदति ॥ १ ॥

अर्थ—ज्यां सघला माणसो उपरी थइने बेसे, तथा ज्यां सघलाउ पोताने पंमित माननाराउ होय, तथा ज्यां सघलाउ पोताने मोटाइ मलवानी इछा करे, ते टोलुं अंते नाशने प्राप्त थाय.

तेनापर अत्रे पांचसो सुन्नटोनुं एक दृष्टांत कहे छे. एक दहामो कोइक पांचसें सुन्नटो एकठा थइने मांहों मांहें संबंधविनाना थया थका, नोकरी माटे एक राजापासे आव्या. त्यारे राजाए मंत्रिना वचनथी, तेउनी परीक्षा करवामाटे, तेउने सुवामाटे एकज शय्या मोकली. हवे तेउमां सघलाउ अहंकारी हता, अने तेथी तेउ नानामोटानो पण व्यवहार राखता नहोता. तेथी ते एक शय्या आवेली जोइने, ते लेवामाटे मांहोमांहें विवाद तथा क्लेश करवा लाग्या. अंते एवा ठरावपर आव्या के कोइ पण ते शय्यापर सुवे नहीं; अने तेथी तेउ ते शय्याने वचमां राखीने तेनीतरफ पोतानां पगो राखीने सुता. हवे राजाए तेउनुं वृत्तांत जाणवामाटे गुप्त पुरुषोने राखेला हता; तेउए ते वृत्तांत प्रन्नातमां राजाने निवेदन कर्युं. त्यारे राजाए विचार्युं के आवी रीतें ठेकाणाविनाना, अने मांहोमांहे संपविनाना तथा अहंकारी एवा आ सुन्नटो युद्धादिक शीरीतें करी शकशे? एम विचारी तेउने निर्न्नछीने कहामी मेल्या.

तेथी ते स्वप्नपाठको पण सघला एकठा मलीने तथा एकसंपवाला थईने, ज्यां सिद्धार्थ क्षत्रिय बेठो हतो, त्यां आव्या. तथा आवीने हाथ जोमीने राजाने तेउ आशिष देवा लाग्या के हे राजा तुं जय पाम ? विजय पाम ? वली तेउए कह्युं के

दीर्घायुर्नव, वृत्तवान् नव, नव श्रीमान्, यशस्वी नव, प्रज्ञावान् नव, नूरिसत्वकरुणादानैकशुंमो नव, नोगाढ्यो नव नाग्यवान् नव महासौनाग्यशाली नव, प्रौढश्रीर्नव, कीर्तिमान् नव, सदा विश्वोपजीव्यो नव ॥ १ ॥ ॥४४॥

अर्थ—हे राजा, तुं दीर्घ केहेतां लांबां आयुष्यवालो था ? वृतवान् केहेतां, यम, नियमादि व्रतने

धारण करनारो था? श्रीमान् केहेतां लक्ष्मीवान् था? यशस्वी केतां यशवालो था? प्रज्ञावान् केहेतां बुद्धिवालो था? ज्ञूरि केहेतां घणां एवां जे सत्व केहेतां प्राणीउ, तेउंप्रते जे करुणादान केहेतां दयादान, तेने विषे शुंम केहेतां पराक्रमी था? अर्थात् प्राणीउंपर दयालु था! ज्ञोगोए करीने आढ्य केतां सहित था! ज्ञाग्यवान् केतां ज्ञाग्यवालो था! तथा उत्तम प्रकारनुं जे सौज्ञाग्य तेणे करीने पण मनोहर था? प्रौढ केतां मोटी एवी जे श्री केतां लक्ष्मी अथवा शोज्ञा तेणे करीने युक्त था? वली कीर्तिए करीने पण तुं युक्त था? तथा हमेशां समस्त जगत्ने उपजीवनिक केतां, आजीविका देनारो, अने रक्षण करनारोथा?

(अहीं किरणावलीकारे तथा दीपिकाकारे "कोटिंज्ञर" एवो प्रयोग मुक्यो ठे, ते व्याकरणथी विरुद्ध होवाथी विद्वानोने विचारवाजेवो ठे.)

वली पण तेउ बीजा काव्ये करीने पण राजाने आशिर्वाद आपे ठे, ते नीचे प्रमाणे जाणवुं.

कल्याण मस्तु शिवमस्तु धनागमोऽस्तु, दीर्घायु रस्तु सुतजन्मसमृद्धिरस्तु ॥
वैरिक्षयोऽस्तु नरनाथ सदा जयोऽस्तु, युष्मत्कुले च सततं जिनज्ञक्तिरस्तु ॥ २ ॥

अर्थ–हे नरनाथ, तने कल्याण थाओ? निरुपद्रवपणुं थाओ? धननुं आवागमन थाओ? लांबुं आयुष्य थाओ? पुत्रजन्मनी समृद्धि थाओ? वैरिओनो नाश थाओ? हमेशां तमारो जय थाओ तथा तमारा कुलमां हमेशां जिनेश्वर प्रज्ञुनि ज्ञक्ति रहो?

एवी रीते महोपाध्याय श्री कीर्तिविजयगणिना शिष्य उपाध्याय श्री विनयविजयगणिए रचेली कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीकाना गुजराती ज्ञाषांतरमां त्रीजो क्षण समाप्त थयो. श्रीरस्तु.

श्रीजिनायनमः ॥

चतुर्थं व्याख्यानं प्रारज्यते ॥

तेवार पठी ते सिद्धार्थ राजाए ते स्वप्नपाठकोने वांद्या, तथा तेमना गुणोनी स्तुति करीने तेमने

पूज्या, पुष्पादिकथी तेमनो सत्कार कर्यो, फल वस्त्र आदिकना दानथी तेमनुं सन्मान कर्युं. एवी रीतें थया थका तेओ अगाऊ राखेला आसनोपर बेठा; तेवार पछी ते सिद्धार्थ राजा त्रिशला क्षत्रियाणीने पडदानी अंदर राखीने पुष्प तथा नालीएर आदिक फलोए करीने, जरेला छे हाथ जेनां (केमके खाली हाथे देव, गुरु, राजा तथा निमित्तिआने मलवुं नहीं, केमके फलथी फल मले छे) एवो राजा ते स्वप्नपाठकोने एम कहेवा लाग्यो के, आ राणीए आवी रीतनां स्वप्नो जोयां छे; एम कही सघलां स्वप्नो कही देखाड्यां. ते सांजली तेउ मांहोमांहें ते स्वप्नोसंबंधि विचार करवा लाग्या; पछी पोतानी बुद्धिथी जाणेल छे अर्थ जेउए, परस्पर ग्रहण करेल छे, अर्थ जेउए, संशय पडते छते परस्पर पुछेलो छे अर्थ जेउए, निश्चित करेलो छे, अर्थ जेउए, अवधारण करेल छे, अर्थ जेउए, एवा थया थका, सिद्धार्थ राजानी पासे स्वप्नशास्त्रोने उच्चारता थका एम कहेता हवा. अनुजवेलुं, सांजलेलुं, दीठेलुं, प्रकृतिना विकारथी उत्पन्न थएलुं, स्वजावें उत्पन्न थएलुं, चिंतानी परंपराथी उत्पन्न थएलुं, देवतादिकना उपदेशथी उत्पन्न थएलुं. धर्मकार्यना प्रजावथी उत्पन्न थएलुं, तथा पापना उद्वेगथी उत्पन्न थएलुं. एवी रीते नव प्रकारनुं माणसोनुं स्वप्न जाणवुं. पहेला छ प्रकारोथी दीठेलुं, शुज अथवा अशुज स्वप्न निरर्थक जाय छे; अने पछीनां त्रण प्रकारोथी दीठेलुं स्वप्न सार्थक थाय छे; रात्रिना चारे पहोरमां दीठेलुं स्वप्न, बार, छ, त्रण तथा एक मासे अनुक्रमें फलदायक थाय छे. रात्रिनी छेल्ली बे घडीए जोएलुं स्वप्न दश दिवसोमां फले छे, तथा सूर्योदय वखते दीठेलुं स्वप्न तुरत फले छे. आधिव्याधि तथा मलमूत्रादिकनी पीडाथी उत्पन्न थएलुं स्वप्न निरर्थक जाणवुं. धर्ममां रक्त, (आसक्त) समधातुवालो, स्थिर चित्तवालो, जितेंद्रिय तथा दयालु माणस प्रायें करीने प्रार्थित अर्थने साधे छे. खराब स्वप्न कोइने संजलाववुंज नहीं; सारुं स्वप्न गुरु आदिकने संजलाववुं; अने ते न होय, तो गायना कानमां संजलाववुं. उत्तम स्वप्नने जोइ बुद्धिवान् माणसे सुवुं नहीं; केमके तेथी तेनुं फल मलतुं नथी, अने तेथी आखी रात्र जिनेश्वरप्रजुनां स्तवनमांज गुजारवी. खराब स्वप्न जोइने, फरीने पाछुं सुइ जवुं, अने ते


राजसभा
सखीउसहित
शला देवी
सिद्धार्थराजा
निमित्तप्र शकजण
आठ

इने कहेवुं पण नहिं; अने तेथी ते फलवंत थतुं नथी. जे माणस पेहेलां अनिष्ट स्वप्नने जोइने, पाछलथी शुभ स्वप्न जुए छे. ते तेने फलदायक थाय छे. स्वप्नमां घोमा, हाथी, वाहन, आसन, घर, निवसन आदिकनो जे अपहार, ते, राजा तरफनी शंका, तथा शोक करनारो, बंधुओनो विरोध करनारो, तथा पैसानी हानि करनारो थाय छे. जे पुरुष सूर्यचंद्रनां संपूर्ण बिंबने गली जाय, ते गरीब होय, तो पण सुवर्ण अने समुद्रसहित पृथ्वीने मेलवे छे. प्रहरण, आभूषण, मणि, मोती, सोनुं रुपुं तथा धातु ओनुं जे हरण, ते धन अने मानने नाश करनारुं, तथा भयंकर मरण करनारुं छे. सफेद हाथीपर चडे, अथवा नदीने कांठे भातनुं भोजन करे, ते जातिहीन होय, तो पण धर्मरुपी धनने ग्रहण करतो थको आखी पृथ्वीने भोगवे. पोतानी स्त्रीना हरणथी धननो नाश थाय, पराभवथी क्लेश थाय, अने गोत्रनी स्त्रीना हरण तथा पराभवथी बंधुओने वधबंधन थाय. सफेद सर्पथी जे माणस पोतानी जमणी भुजामां रुंखाय, ते माणसने पांच रात्रिमां सोनामोहोरो मले. जे माणसनी शय्या तथा पगरखांनुं हरण स्वप्नमां थाय, तेनी स्त्री मृत्यु पामे, तथा तेना शरीरे अत्यंत पीडा थाय. जे माणस मनुष्यनां मस्तक, पग, तथा हाथनुं स्वप्नमां भक्षण करे छे, तेने अनुक्रमे राज्य, हजार सोनामोहोरो, तथा तेथी अरधी सोनामोहोरो मले छे. जे माणस बारणानी भोगलनो, शय्यानो, हिंचोलानो, पाडुकानो, तथा निकेतनो भंग जुए छे, तेनी स्त्रीनो नाश थाय छे. जे माणस तलाव, समुद्र, जलथी भरेली नदी, तथा मित्रनुं मरण जुए छे, ते माणसने निमित्तविना पण अत्यंत धन मले छे. छाणवालुं गंमुल, तथा औषधसहित तपेलुं पाणी जे माणस पिए छे, ते माणस निश्चये अतिसार रोगथी मृत्यु पामे छे. जे माणस स्वप्नमां देवनी प्रतिमानी यात्रा स्नात्र, भेट तथा पूजा आदिक करे छे, ते माणसने सर्व जगोएथी वृद्धि थाय छे. जे माणस स्वप्नमां पोताना हृदयरुपी तलावमा उत्पन्न थएलां कमलोने जुए छे, त माणस कुष्टी थइने तुरत मृत्यु पामे छे; जे माणस स्वप्नमां मनोहर घी मेलवे छे, तेनो यश वृद्धि पामे छे; स्वप्नमां हसे तो शोक थाय, नाचवाथी वधबंधन थाय, भणवाथी कलेश थाय, एम मांह्या माणसे जाणवुं; सघला काला रंगनां स्वप्नो

खराब जाणवां; तेमां बलद, घोडो, चंद्र, हाथी अने देव शिवायनां. वली सघलां सफेद स्वप्न सारां जाणवां. तेमां कपास अने लवण शिवायनां. खराब स्वप्न देखाय तो देवगुरुने पूजवा, तथा शक्तिप्रमाणे तप करवो; केमके हमेशां धर्ममां रक्त थएला माणसोने खराब स्वप्न पण उत्तम स्वप्नतुल्य थाय छे. एवी रीतें हे देवाणुप्रिय, अरिहंतनी माता अथवा चक्रवर्त्तिनी माता एवा चौद स्वप्नो जुए छे. अने वासुदेवनी माता वासुदेव गर्भमां आवते छते तेओमांथी सात स्वप्नांओ जुए छे. बलदेवनी माता बलदेव गर्भमां आवते छते चौद स्वप्नोमांहेंथी चार स्वप्नोने जुए छे. अने मंडलीकनी माता मंडलीक गर्भमां आवते छते ते चौद स्वप्नोमांहेला एक स्वप्नने जुए छे. माटे हे देवानुप्रिय! आ त्रिशला क्षत्रियाणीए तो आ चौदे महास्वप्नो जोएला छे. माटे ते महास्वप्न होवाथी मोटां फलने देखाडे छे. तेथी करीने हे देवानुप्रिय, तमोने अर्थनो लाभ, भोगनो लाभ, पुत्रनो लाभ, सुखनो लाभ, अने राज्यनो लाभ थशे. अने एवी रीते हे देवानुप्रिय, त्रिशला क्षत्रियाणी नव मास संपूर्ण थइ आठ रात्रिदिवस जाते छते, तमारा कुलमां ध्वज समान, दीपकसमान, पर्वत समान, अवतंस समान, तिलकसमान, कीर्तिने करनार, धनने करनार, कुलमां सूर्य समान, कुलना आधाररुप, कुलमां यश करनार, कुलनो वृक्षनीपेठे आश्रयरुप, विगेरे आगल जणावेलां लक्षणोए करीने युक्त एवो पुत्र थशे. वली ते बालक बाल्यपणुं तजीने ज्यारे यौवन अवस्थाने पामशे, त्यारे राज्यनो स्वामि थशे, एटले चक्रवर्ति थशे, अथवा त्रण लोकना नायक एवा धर्मचक्रवर्ती, जिन थशे. तेमां जिनपणामां ते चौदे स्वप्ननां प्रथक प्रथक फलो नीचे प्रमाणे जाणवां. चार दांतोवाला हाथीने जोवाथी चार प्रकारना धर्मने ते कहेशे. वृषभने जोवाथी आ भरत क्षेत्रमां ते बोधीरुपी बीजने वावशे, सिंहने जोवाथी कामदेव आदिकरुप जे उन्मत हाथीओ तेणें करीने भंगातुं एवुं जे भव्यजनरुपी वन, तेनी रक्षा करशे. लक्ष्मीने जोवाथी वार्षिक दान दइने तीर्थंकरनी लक्ष्मीने भोगवशे. माला जोवाथी त्रणे भुवनने मस्तकमां धारवाने ते लायक थशे. चंद्रने जोवाथी भव्यरुपी जे कुवलय केहेतां चंद्रविकासि कमल, तेने विकस्वरपणुं आपशे. सूर्यने जोवाथी

कांतिना मंकूलें करीने ते नूषित थशे. ध्वजने जोवाथी धर्मरूपी ध्वजें करीने ते नूषित थशे. कलशने जोवाथी धर्म रुपी मेहेलनां शिखरपर, ते रहेशे. पद्मसरोवर जोवाथी, देवोए संचार करेलां जे कमलो तेनापरस्थापन करेलां ठे चरणो जेणे एवा ते थशे. समुद्रने जोवाथी केवलज्ञानरुपी रत्नना स्थानकसरखा थशे. विमान जोवाथी वैमानिक जे देवो तेओनेपण पूजनीय थशे, रत्नना राशिने जोवाथी रत्नना गढोए करीने ते नूषित थशे. धुंवाका विनाना अग्निने जोवाथी नव्यजनरुपी सुवर्णने शुद्ध करनारा थशे. चौदे स्वप्ननां एकठां फलरूप चौदे रज्वात्मक लोकनां अग्र नागपर रहेनारा थशे. माटे हे त्रिशला क्षत्रियाणि ! तें अत्यंत उदार विगेरे आगलनांविशेषणोवालां एवां आ चौद महास्वप्नो जोएलां ठे. पठी ते राजा स्वप्नपाठकोने विपुल एवा शालि आदिकना अशन एटले नोजननी वस्तुओए करीने, अत्यंत उत्तम एवां पुष्पोए करीने, वस्त्रोए करीने सुगंधिओए करीने, पुष्पोनी गुंथेली मालाओए करीने, मुकुट आदिक आनूषणोए करीने, तेमनो सत्कार करता हवा; तेमनें विनयपूर्वक वचनोथी सन्मान करता हवा; ठेक जीवितपर्यंत तेमनो निर्वाह चाले एटलुं तेमने दान देता हवा. तथा तेम करी तेओने विसर्जन करता हवा. पठी सिद्धार्थ राजा सिंहासनपरथी उठीने ज्यां त्रिशलाक्षत्रिआणी बेठां हतां, त्यां, आव्या; तथा तेमने कहेता हवा के, हे देवानुप्रिय, त्रिशला राणी ! तें अत्यंत उत्तम एवां आ चौद महास्वप्नो जोयां ठे. तेथी तने अत्यंत उत्तम फलप्राप्ति थशे. ते सांनली त्रिशला क्षत्रियाणी जे मार्गे आवी हती, तेज मार्गेथी पोताना नुवनमां दाखल थइ.

पठी जेओ धनदनां स्वाधीनपणाने धारण करे ठे, एवा जे तिर्यग् लोकमां रहेनारा जृंनक देवताओ, तेओ शक्रनां वचने करीने, अर्थात् इंद्रे वैश्रमण एटले कुबेरने कह्युं, अने कुबेरें तिर्यक् जृंनकोने कह्युं, अने तेथी ते जृंनक देवो, जेनुं आगल स्वरुप वर्णववामां आवशे, एवा पूर्वे निधान रुपें दाटी राखेला अने तेथीज पुराणां एवां महानिधानो लाव्या. ते नीचे प्रमाणे जाणवा. नाश थएला ठे मालिको जेओनां, नाश थएला ठे एकठा करवावाला जेओना, एवां निधानो, वली ते निधानो केवां तोके,

जे निधानोना गोत्रियो नाश पामेला छे, एवां, तथा सर्वथा प्रकारे अजावने प्राप्त थएला छे, स्वामिओ जेना; हवे ते निधानो कयां कयां स्थानकोमां छे ? ते कहे छे. गाममां, आकर केहेतां लोखंड आदिकनी उत्पत्तिनां स्थानकमां, नगर एटले ज्यां कर न लेवातो होय, तेमां. खेट केहेतां जेनी आसपास धूलिनो कोट छे, तेमां, कर्बट एटले कुनगरोमा, मंडप एटले चारे बाजुएथी अरधा योजन दुर रहेलां गामोमां. द्रोण एटले ज्यां थलवाटे अने स्थलवाटे बन्ने वाटे रस्ताओ होय छे, त्यां, पत्तन एटले जल अथवा स्थल बन्नेमांथी एक मार्ग ज्यां होय, तेमां, आश्रमो केहेतां तीर्थनां स्थानको, अथवा ऋषिओने रहेवाना स्थानकोमां; संबाह केता सपाट भूमिमां, खेडुतो ज्यां धान्यने रक्षामाटे राखे छे, ते स्थानकोमां; सन्निवेश केतां ज्यां संघ, लश्कर विगेरे आवीने उत्तरे छे, ते स्थानकोमां; तथा शृंगाटक केतां सिंघाटक (सींघोडां) नामें फलना आकारे त्रण खुणावालुं जे स्थानक होय तेमां, त्रिक एटले ज्यां त्रण रस्ताओ आवीने एकठा थाय छे, ते स्थानकमां; चतुष्क केहेतां ज्यां चार रस्ताओ एकठा थाय छे, ते स्थानकमां. चत्वर केहेतां ज्यां अनेक रस्ताओ एकठा थाय छे, ते स्थानकमां, चतुर्मुख केहेतां जेनां चार बारणाओ होय, एवा, देवकुल केहेतां देवालयोमां; महापथ केहेतां राजमार्गमां, एटलां सघलां स्थानकोमां, तथा ग्रामस्थान केहेतां गामडांओनां जे स्थानको तेओने विषे, तथा नगरस्थानक केहेतां नगरनां स्थानकोमां, तथा ग्रामनिर्धमन केहेतां गाममांथी पाणी जवानां मार्ग रुप जे खालो, तेओमां, एवी रीतेंज नगरनिर्धमन केहेतां नगरमांथी पाणी जवाना मार्ग रुप जे खालो तेओमां, एवी रीतेंज नगर निर्धमन केहेतां नगरमांथी पाणी जवाना मार्ग रूप जे खालो तेओमां आपण एटले जे दुकानो, तेओमां, देवकुल केहेतां यक्ष आदिकना जे स्थानको तेओमां, सभा केहेतां माणसोने बेसवानां जे स्थानको तेओमां, प्रपा केहेतां पाणीनां जे परबो, तेओमां, तथा आराम केहेतां केल आदिक वृक्षोए करीने आछादित थएला, तथा स्त्री पुरुषोने क्रीडा करवानां स्थानकरूप एवा बगीचाओमां, तथा उद्यान केतां पुष्प अने फलोए करीने सहीत एवां जे वृक्षो, तेओए करीने शोभायुक्त

, तथा घणां माणसोने उपजोगमां आवी शके, एवा उद्यानिकानां स्थानकोमां, तथा वन केहेतां जातिनां वृक्षना समूहो छे जेमां, एवां स्थानकोमां, तथा वनखंड केहेतां अनेक जातिनां छे, वृक्षो-समुदायो जेमां एवा स्थानकोमां, तथा स्मशान केहेतां ज्यां माणसोनी लासोने अग्निदाह करवामां आवे छे, एवां स्थानकोमां, शून्यागार केहेतां जेमां कोइनी वस्ती न होय, एवां शून्य घरोमां, तथा गिरिकंदरा केहेतां, पर्वतोनी जे गुफाउ, तेउमां, तथा शांतिगृह केहेतां ज्यां शांतिनां कार्यो थाय छे, एवां स्थानकोमां, तथा उपस्थानगृह केहेतां ज्यां आस्थानसजानां मकानो छे, एवां स्थानकोमां, तथा जवनगृह केहेतां कुटुंबिउने वसवानां जे स्थानको तेउमां, एवी रीतें ग्रामादिक अने शृंगादिकनेविषे, रहेलां महानिधानो, के जेउ त्यां पूर्वे थइ गएला कृपण माणसोए डाटेलां छे, ते सघलां निधानोने लेइने तिर्यक् जृंजक देवो, सिद्धार्थराजानां घरमां संघरता हवा.

हवे जे रात्रिने विषे श्रमण जगवंत श्री महावीर स्वामी, ज्ञातकुलनी अंदर संहराया, ते रात्रिए, ते ज्ञातकुल हिरण्य आदिकथी वृद्धि पामतुं हवुं, ते हिरण्य एटले रूपुं अथवा नहीं घडेलुं सुवर्ण, सुवर्ण एटले घडेलुं सोनुं, धन चार प्रकारनुं एक तो गणीशकाय तेवुं, बीजुं धारी शकाय तेवुं, त्रीजुं मापी शकाय तेवुं; तथा चोथुं पारिछेद्य थइ शके तेवुं, तेमां फल पुष्पादिक गणी शकाय एवुं. कुंकुम गोल, आदिक धरी शकाय तेवुं, (जोखी शकाय तेवुं.) चोपड तथा लुण विगेरे मापी शकाय तेवुं, तथा रत्नादिक परिछेदी शकाय तेवुं जाणवुं. तथा धान्य चोवीस प्रकारनुं जाणवुं. तेनां नामो नीचे प्रमाणे जाणवां.

जव, घउं, शालि, व्रीहि, सठीय, कुद्रव, चणुआ, कंगु, रालय, तिल, मग, अडद, अलसी, हरिमंथ तिउडा, निष्पाव, सलिंद, रायमासाय, उख्खु, मसूर, तुबरी, कलथी, धन्नय अने कलाय, ए चोवीश प्रकारनुं धान्य जाणवुं. तथा राज्यनां सात अंगो जाणवां, ते नीचे प्रमाणे. एकतो राष्ट्र केहेतां देश, बीजुं बल केहेतां चतुरंगी सेनां, त्रीजुं वाहन केहेतां खचर आदिक वाहनो, चोथुं कोश केहेतां जंडार,

पांचमुं कोष्ठागार केहेतां धान्य भरी राखवाना कोठारो. छठ्ठुं पुर एटले नगर, तथा सातमुं अंतःपुर केहेतां राणीउने रहेवानुं स्थानक अर्थात् जनानखानुं; तथा जनपद केहेतां देश, तथा यशोवाद एटले कीर्त्ति, ए सघलाथी ते ज्ञातकुल वृद्धि पामतुं हवुं. तथा विपुल एटले विस्तारवालुं धन एटले गायो आदिक, तथा कनक एटले घडेलुं अथवा नहीं घडेलुं एवुं बन्ने प्रकारनुं सुवर्ण, तथा रत्न एटले कर्केतन आदिक तथा मणि एटले चंद्राकांत आदिक तथा मौक्तिक एटले मोती के, जे प्रसिद्ध छे, तथा शंख केहेतां दक्षिणावर्त्तादिकशंखो तथा शिल एटले राजाउ तरफथी मलता (खिताबो) उप-नाम पदवीयो, तथा प्रवाल एटले विद्रुमो, तथा रक्तरत्न केहेता पद्मराग आदिक अर्थात् माणिक आदिक, अहीं " आदि " एवा शब्दथी वस्त्र, कंबल विगेरेने ग्रहण करवां. तथा सत् एटले विद्यमान एवुं, पण इंद्रजालनी पेठे असत् नहीं एवुं जे सारस्वापतेय केहेतां प्रधान अर्थात् उत्तम जातिनुं जे द्रव्य, तेणें करीने, तथा प्रीति केहेता मनसंबंधिनी जे तुष्टि, तथा सत्कार केहेतां वस्त्र आदिकथी स्व-जनोए करेली भक्ति, ते सघलाउना समुदायें करीने ते ज्ञातकुल अत्यंत वृद्धि पामतुं हवुं.

हवे श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुनां मातापिताने एवो मनमां अध्यवसाय उपजतो हवो. ते अध्यवसाय केवो ? ते हवे कहे छे. ज्यारथी अमारो आ पुत्र कुक्षिनेविषे गर्भपणाए, करीने उत्पन्न थ-एलो छे, त्यारथी मांडीने आपणे सुवर्णथी वृद्धि पामीए छिए, हिरण्यथी वृद्धि पामीए छिए, धनथी वृद्धि पामीए छिए, एवी रीतें उपर कहेलां छेक प्रीतिसत्कार सूधिनां विशेषणोए करीने अत्यंत वृद्धि पामिए छिए, तेथी करीने ज्यारे आ पुत्रनो जन्म थशे, त्यारे अमो पण आ धनादिकनी वृद्धिने अनु-रूप एवुं आ बालकनुं, गुणोए करीने निष्पन्न एवुं नाम पाडशुं. ते नाम शुं ? ते हवे कहे छे. "वर्धमान इति" एटले " वर्धमान " एवुं अमो तेमनुं नाम पाडशुं.

तेवार पछी श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामीए गर्भमांज रहीने विचार्युं के, मारा हलनचलनथी माताने कष्ट मा थाउ ? एवी रीतें मातानी अनुकंपामाटे, अर्थात् मातानी भक्ति माटे, तथा बीजाए

पण आवी रीतें मातानी भक्ति करवी, एवुं देखाडवामाटे, पोते निश्चल, निष्पंद, अर्थात् कंइं पण हाल्या चाल्याविना, अने तेथी करीनेज निष्कंप केहेता कंपविना, तथा अंगोनां गोपववाथी जरा लीन थएला, तथा अंगोपांगनां गोपववाथी प्रकर्षे करीने लीन थएला, अने तेथी करीनेज गुप्त रहेला, एवा श्री वीरप्रभु होता हवा. (तेनापर कविए उत्प्रेक्षा करीके, शुं एकांतमां माताना गर्भमां रहीने प्रभु मोहराजाने जितवामाटे विचार करे छे? अथवा परब्रह्ममाटे कंइं अगोचर एवा ध्यानने रचे छे? अथवा शुं कल्याण रसने साधे छे? अथवा कामनो नाश करवामाटे पोतानां रूपने तेणें लोपी नाख्युं छे शुं? एवा श्रीवीर प्रभु तमारी लक्ष्मीने माटे थाओ?

एवी रीतें प्रभुनां निश्चल रहेवाबाद ते त्रिशला क्षत्रियाणीने एवी रीतनो अध्यवसाय उत्पन्न थयो; ते अध्यवसाय केवी रीतनो? ते हवे कहे छे. शुं आ मारो गर्भ कोइ देवादिकें हरी लीधो छे? अथवा शुं मारो गर्भ मृत्यु पाम्यो? अथवा शुं ते मारो गर्भ च्युत थएलो छे? अर्थात् गर्भना स्वभावथी शुं परिभ्रष्ट थएलो छे? अथवा शुं ते मारो गर्भ गली गयो छे? अर्थात् द्रवरूप थइने शुं खरी गयो छे? के जेथी पेहेलां तो मारो गर्भ कंपायमान थतो हतो, अने हवे तो बिलकुल कंपतो नथी. एवा विचारथी उपहत केहेतां कलुषीभूत थयेल छे, मननो संकल्प जेणीनो एवी, तथा एवी रीतें गर्भहरणादिकना विकल्पथी उत्पन्न थएली जे आर्त्ति केहेतां पीडा, तेथी थएलो जे शोक, ते रूपी जे समुद्र, तेमां पडी. अर्थात् बुडी; अने तेथीज करतल केहेतां हथेलीमां स्थापन करेल छे मुख जेणीए एवी, तथा आर्त्तध्यानने प्राप्त थएली, तथा भूमितरफ राखेली छे दृष्टि जेणीए, एवी त्रिशलाक्षत्रिआणी मनमां विचारवा लागी के,

आवी रीतें मारा गर्भने जो कंइं नुकशानी थइ होय, तो खरेखर हुं पुण्यरहित जीवोनी अवधिरुप प्रख्यात थएली छुं. अथवा चिंतामणिरत्न भाग्यहीन माणसने घेर समृद्धि पामी शकतुं नथी अर्थात् रही शकतुं नथी; केमके रत्ननो भंडार कंइं दरिद्रीनां घरनी सोबत करतो नथी. वली पृथ्वीनां अभा-

ग्यनां वशथी मारवाड देशमां कल्पवृक्ष ऊगतुं नथी, तेम पुण्यरहित एवा तृषाकुल माणसने पण अमृतनी सामग्री मलती नथी; अरे !

दैव, प्रते पण धिक्कार छे, हमेशां वक्र एवा ते दैवे, अरे ! आ शुं कर्युं ? तेणें मारो मनोरथरूपी वृक्ष मूलमांथी उखेडी नांख्यो. वली आ पापी दैवें मने मेरु पर्वतनां शिखरपर चडावीने पाडी नाखी; तथा ते निर्लज्जे भोजननुं भाजन पीरसीने खेंची लीधुं. अथवा हे विधात्रि, में भवांतर अथवा आ भवमां पण कंइं तारो शुं अपराध कर्यो छे? के जेथी आम करतां तुं उचित अनुचितनो विचारज करतो नथी ! हवे हुं शुं करुं ! ! क्यां जउं ! ! ! अथवा कोनी पासे कहुं ! ! आ अधम दुर्दैवे मने बाली तथा खाधी. हवे मारे आ राजनी शी जरुर छे ? अथवा विषयजन्य एवां आ कृत्रिम सुखोनी पण मारे हवे शी जरुर छे ? अथवा दुकूलनी शय्यामां शयनथी उत्पन्न थतुं छे सुख जेमां, एवा आ मेहेलनी पण मारे शी जरुर छे ? हाथी, वृषभ आदिक स्वप्नथी सूचित थएला, उचित, पवित्र तथा त्रण जगतने पूजनिक, त्रण भुवननां माणसोप्रते अतुल्य, एवा पुत्ररुपी रत्नविना हवे मारे कशानी शी जरुर छे? आ असार संसारने धिक्कार छे, तथा दुःखथी प्राप्त थता एवा विषयसुखना क्लेशोने पण धिक्कार छे, तेम मधथी लेपयुक्त थएली खड्गनी धारानें चाटवासरखा लाडोने पण धिक्कार छे. अथवा ऋषिओए धर्मशास्त्रोमां कहेलुं, एवुं कंइंक दुष्कर्म में पूर्व भवमां करेलुं छे. (ते दुष्कर्म कयुं, तोके पशु पंखी अथवा माणसोना बालकोनो में तेमनां मातपिताथी वियोग पडाव्यो लागे छे) अथवा अधम बुद्धिवाली एवी जे हुं, तेणीए शुं नानां वाछडांओने तेमनी माताओथी वियोग कराव्यो छे ? वली तेओने दूधनो में अंतराय कर्यो छे, अथवा कराव्यो छे, अथवा शुं बच्चांओसहित में उंदरनां दरो पाणीएथी पुर्यां छे ? अथवा शुं में इंडा अने बच्चांओ सहित पक्षीओनां माला नीचे जमीनपर पाडी नाख्या छे ? अथवा कोयल, पोपट तथा कुकडा आदिकना बच्चांओनो में शुं वियोग कराव्यो छे ? अथवा में शुं बाल

कर्यां छे ? अथवा में कोइना गर्भोनुं स्तंजन, नाश, अथवा पाडवाप्रमुख शुं कर्युं छे? अथवा ते संबंधिकंइ में मंत्र अथवा औषधो कर्यां छे ? अथवा जवांतरमां में शुं घणीवार शीलखंकन कर्युं छे ? कारणके ते विना जीवोने आवुं डुःख होय नहीं. एवी रीतें चिंतातुर थएली, तथा तेथी करमाइ गएला कमलसरखुं छे मुख जेणीनुं, एवी ते त्रिशला राणीने जोवाथी सखीए तेनुं कारण तेणीने पुछयुं. त्यारे ते त्रिशला क्षत्रियाणी आंखोमां अश्रुलावीने, निःश्वासहित वचने करीने कहेवा लागी के, हुं मंदजाग्य वाली हवे शुं कहुं ? मारुं तो जीवित पण चाल्युं गयुं छे. त्यारे सखिओए कह्युं के, हे सखि; बीजुं सघलुं अमंगल शांत थाओ ? पण तारा गर्जने तो कुशल छे के नहीं ? ते वात हे चतुर सखि; तुं सत्य कहे ? त्यारे तेणीए कह्युं के, हे सखियो ! ज्यारे मारा गर्जनेज कुशल होय त्यारे तो बीजुं मारे शुं अकुशल छे ? इत्यादिक कहीने मूर्छा खाइने ते पृथ्वीपर पमी. पछी सखियोए शीतल पवन आदिकथी घणां उपचारो कर्याथी, तेणीने चैतन्य आव्याबाद पाछी ते रुवा लागी. अपार पाणीवाला, मोटा, तथा रत्नोनां निधानरूप एवा समुद्रमां पडेलो छिद्रवालो घमो ज्यारे जराइ शकतो नथी, त्यारे तेमां समुद्रनो शो दोष छे ? वली वसंत ऋतुमां ज्यारे सघली वनस्पतिओ प्रफुल्लित थाय छे, अने ते वखते ज्यारे कयेरने (केरमानावृक्षने) पत्रो आवतां नथी, तेमां वसंत ऋतुनो शो दोष छे? उंचुं अने सीधुं एवुं वृक्ष घणां एवां फलोना जारे करीने ज्यारे नमेलुं छे, अने ते उपरना फलने ज्यारे कुबमो माणस मेलवी शकतो नथी, त्यारे ते वृक्षनो शो दोष छे ? माटे हे प्रजु ! ज्यारे हुं मारा इछितने मेलवी शकती नथी तेमां तमारो शुं दोष छे ? तेमां मारा कर्मनोज दोष छे, केमके घुवम ज्यारे दिवसें जोइ शकतो नथी, त्यारे तेमां सूर्यनो शो दोष छे ? माटे हवे तो मारे मरणनुंज शरण लेवुं, केमके फोकट जीववावडे करीने शुं ? एवी रीतें तेणिना विलापने सांजलीने सघली सखीओ आदिक परिवार पण रुवा लाग्यो. अरे ! ! आ शुं थइ गयुं ? कारणविना दैव वैरीरूप थयो छे; अरे ! कुल ! तमो क्यां गइयो ? आम उदासीन थइने केम बेठीओ छो ? हवे एवी रीतें विघ्न आवी पम

ते ठते विचक्षण एवीयो कुलनी वृद्ध स्त्रीयो शांति,तथा मंत्रना उपचारो तथा मानता आखडी (बाधा) आदिक करवा लागीयो. जोशीओने बोलावीने पुछवा लागीयो, नाटक आदिकने अटकाववा लागीयो. तथा अत्यंत उंचा सादनां वचनोने निवारवा लागीओ उत्तम बुद्धिवालो एवो राजा पण लोको सहित चिंतातुर थयो, तथा सघला मंत्रिओ पण हवे शुं करवुं ? एवी रीतें अत्यंत विमूढ थया.

हवे ते अवसरने विषे सिद्धार्थराजानुं जवन केवुं थयुं हतुं ? ते सूत्रकार पोते वर्णवे ठे. ते सिद्धार्थ राजानुं जवन, मृदंग केहेतां मर्दल, तंत्री एटले वीणा, ताल एटले हाथनी तालीउं, तथा नाटकनां पात्रो तेउंनु जे मनोज्ञपणुं ते निवृत्त थएलुं ठे जेमां, एवुं थयुं. अने तेथी करीने विमनस्क केहेतां चपलचित्तवालुं थयुं. एवी रीतनो वृत्तांत ते श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजु गर्जमां रह्या थका, अवधिज्ञानथी जोइने विचारवा लाग्या के, हवे शुं करवुं ? अथवा कोने कहेवुं ? मोहनी गति आवी रीतनीज ठे. डुष्ट धातुनी पेठे अमारो जे गुण ते उलटो दोषनी पुष्टि वास्ते थयो. में तो मारी माताना सुखमाटे कर्युं, ते उलटुं तेणीना खेदमाटे थयुं. माटे आ जावी एवो जे कलिकाल तेने सूचववावालुं आ लक्षण ठे. माटे जेम नालीएरनां पाणीमां नाखेलो कपुर मृत्युमाटे थाय ठे, तेम आ पंचम आरामां गुण पण दोषने करनारो थशे. एवी रीतें श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजु माताने उत्पन्न थएला एवी रीतना संकल्पने जाणीने, एक देश केहेतां आंगली आदिकथी कंपता हवा. ते जाणीने ते त्रिशला क्षत्रियाणी हर्षित थइ थकी, तथा संतुष्ट थइ थकी कहेवा लागी. शुं कहेवा लागी ? ते हवे कहे ठे. मारो गर्ज हणाएलो नथी. हरायेलो नथी, चवेलो नथी, इत्यादि आगलनी पेठे सघलां वीशेषणो जाणी लेवां. एवी रीतें ते त्रिशला क्षत्रीयाणी केवी रीते हर्षित थइ? तेनुं हवे वर्णन करे ठे. उलसायमान थयलां ठे, नयनयुगल जेणीनां, तथा विस्मेर थयला ठे, कपोल जेणीनां, तथा प्रफुल्लित थएल ठे मुखरुपी कमल जेणीनुं, तथा जाणेल ठे, गर्जने कुशलपणुं जेणीए, एवी थइ थकी मधुर वाणीथी, कहेवा लागी के, मारा गर्जने कल्याण ठे, अरे ! धिक्कार ठे ! के में अति मोहयुक्त मतिपणांए करीने

कुविकस्यो चिंतव्या; हजु मारां जाग्यो विद्यमान छे, तेम हुं त्रणे जुवनोमां माननीय बुं, तथा धन्य बुं. मारुं जीवित वखाणवालायक छे, तथा मारो जन्म कृतार्थपणाने प्राप्त थयो छे. श्री जिनेश्वर प्रजु मारापते प्रसादयुक्त थएला छे, तथा गोत्रदेवीए पण मारापर कृपा करी छे; अने छेक जन्मपर्यंत जे में जिनधर्मरूपी कल्पवृक्षनी आराधना करी, ते आज मारी सफल थइ छे. एवी रीतें अत्यंत हर्षयुक्त चित्तवाली त्रिशलादेवीने जोइने वृद्ध स्त्रिउनां मुख कमलोमांथी "जयजय नंदा" इत्यादि आशिषना ध्वनिउ निकलवा लाग्या. वली कुलांगनाउ हर्ष पूर्वक मनोहर एवां धवलो गावा लागीयो. तथा ध्वज, पताकाउ उरुवा लागीयो. मोतीउना साथीआउ पुरावा लाग्या, तथा ते वखते सघलुं राज्यकुल आनंदमय थइ रह्युं. तथा वाजित्र, गीत अने नाटकोए करीने समस्त राजकुल देवलोक सरखी शोजावालुं थयुं. तथा क्रोमो गमे धननां वधामणांउने सिद्धार्थ राजाए ग्रहण कर्यां, तथा क्रोडो गमे धन आप्युं अने एवी रीतें सिद्धार्थ राजा अत्यंत हर्षयुक्त थयो थको कल्पवृक्षनी पेठे शोजवा लाग्यो. तेवार पछी श्रमण जगवंत श्री महावीर स्वामि प्रजु गर्जमां रह्या थकाज पक्षथी अधिक छ मास, एटले साकाछ महिनाउ गये छते, आवी रीतना अजिग्रहने ग्रहण करता हवा. ते कयो अजिग्रह ! ते हवे कहे छे. खरेखर मारां मातापिता ज्यांसुधि जीवे, त्यांसुधि मारे अणगारपणुं, एटले दीक्षा लेवी नहीं. एवी रीतना अजिग्रहने तेमणे ग्रहण कर्यो. हुं उदरमां बुं त्यारे पण मारी मातानो मारापर ज्यारे आवो स्नेह छे, त्यारे ज्यारे मारो जन्म थशे, त्यारे तो ते स्नेह केवो थशे ? एवी रीतनी बुद्धि लावीने तेमणे एवो अजिग्रह ग्रहण कर्यो. अने वली बीजाउने पण माताने विषे बहु मान देखाडवा माटे तेमणे तेम कर्युं. केमके कह्युं छे के, पशुउ ज्यां सुधि माता धवरावे छे, त्यांसुधि स्नेह राखे छे, अधम माणसो ज्यांसुधि स्त्री मले छे, त्यांसुधि मातापर स्नेह राखे छे, मध्यम माणसो ज्यांसुधि माता घरनुं कामकाज करे छे, त्यांसुधि स्नेह राखे छे, तथा उत्तम माणसो छेक जीवित पर्यंत माताने तीर्थसमान गणी तेनापर स्नेह राखे छे.

तेवार पछी ते त्रिशला क्षत्रियाणीए स्नान कर्युं, तथा त्यारबाद पूजादिक कर्युं, तथा सर्व प्रकारनां

आभूषणोथी ते भूषित थइ; पछी ते गर्भने ते त्रिशला क्षत्रियाणी नहीं अति ठंडां, नहीं अति उष्ण, नहीं अति तिखां, नहीं अति कडवां, नहीं अति कषाएलां, नहीं अति खाटां, नहीं अति मधुरां, नहीं अति चीकणां, नहीं अति लुखां. नहीं अति आर्द्र, नहीं अति सुकेलां, एवी रीतनां भोजन, तथा आछादन तथा सुगंधि पुष्पोए करीने पोषवा लागी. तेमां भोजन तो प्रसिद्ध छे, आछादन एटले वस्त्र, गंध एटले पटवासादिक, माल्य एटले पुष्पमालाओ. तेओए करीने गर्भने पोषवा लागी. अति शीतल एवा आहारादिक गर्भने हितकारी होता नथी; केमके, तेओमांथी केटलाक, वायु करनारा होय छे, केटलाको पित्त करनारा होय छे, केटलाको, श्लेष्म करनारा होय छे, ते गर्भने अहितकारी होय छे. कारणके वाग्भट्ट नामना वैद्यक ग्रंथमां पण कह्युं छे के, वायुवाला पदार्थो खावाथी गर्भ कुबडो, आंधलो, जड तथा वामनरूप थाय छे, पित्तवाला पदार्थो भक्षण करवाथी खलति पीलो, तथा चित्रीवालो थाय छे, तथा कफवाला पदार्थो भक्षण करवाथी पांडुरोगवालो थाय छे; अति खारूं भोजन नेत्रोने नाश करनारुं छे, अति ठंडुं पवनने कोपाववावालुं छे, अति उष्ण बलने हरे छे, तथा अति काम सेववाथी जीवितने हरे छे. वली पण मैथुन, वाहन, मार्गमां जवुं, स्खलना पामवी, पडीजवुं, अत्यंत दोडवु, अथडावुं, विषम जगोपर सुवापणुं, विषम जगोपर बेसवुं ते, उपवास करवा ते, वेग, विघात, अतिलुखां, अति तीखां, तथा अति कडवां भोजन, अति राग, अति शोक, अति खारी वस्तुओनुं सेवन, अतिसार, वमन, जुलाब, हींचकाखावा, तथा अजीर्ण आदिकथी गर्भ तेना बंधनथी मुक्त थाय छे. माटे एवी रीतें अति शीतल आदिक आहारथी गर्भने पोषवो नहीं. वली केवां भोजन आछादन, तथा गंधमाल्यथी, ते कहे छे. सघली ऋतुओमां भोजन करातां, अने जे सुखनां हेतुओ होय छे, अने गुणोने करवावालां होय छे, तेवां. तेनुं हवे वर्णन करे छे, वर्षा ऋतुमां लवण खावुं ते अमृततुल्य छे, शरद् ऋतुमां पाणी अमृत सरखुं छे, हेमंत ऋतुमां गायनुं दूध अमृततुल्य छे, शिशिर ऋतुमां खाटुं भोजन अमृततुल्य छे, वसंतमां घीनुं भोजन अमृत सरखुं छे, तथा छेल्ली ऋतुमां गोलनुं भोजन अ-

. हवे ते त्रिशला क्षत्रियाणी केवी छे ? ते कहे छे, रोग एटले ज्वर आदिक, शोक एटले इष्टना वियोग आदिकथी उत्पन्न थती दिलगिरि, मोह एटले मूर्छा, भय एटले बीक, परिश्रम एटले कसरत, इत्यादिक दूर गयां छे, जेणीनां एवी, अर्थात् रोग आदिकथी रहित थएली, कारण के ते सघलां गर्भने अहित करनारां छे, सुश्रुत नामना वैद्यक ग्रंथमां पण कह्युं छे के. गर्भवती स्त्री जो दिवसे ऊंघे तो गर्भ पण ऊंघणसी थाय, अंजन करवाथी गर्भ आंधलो थाय, रोवाथी विकारवाली आंखोवालो थाय, स्नान अने लेपनथी दुःशील थाय, तैलना मर्दनथी कुष्टरोगवालो थाय, नख कातरवाथी खराब नखवालो थाय, दोडवाथी चंचल थाय, हसवाथी काला दांतवालो, काला होठवालो, कालां तालवांवालो, तथा काली जीभवालो थाय, बहु बोलवाथी बकबकीओ थाय, अति शब्दो सांभलवाथी बेहेरो थाय, अवलेखनथी, खलति थाय, वींझणो आदिक हलाववाथी (पवन लेवाथी) उन्मत्त थाय, एवी रीतें कुलनी वृद्ध स्त्रिओ तेणीने शीखामण आपती हवी. वली ते स्त्रियो तेने कहेती हवी के, हे त्रिशला क्षत्रियाणी, तुं धीरे धीरे चाल ? धीरे धीरे बोल, क्रोधना क्रमने तजी दे ? पथ्य वस्तुओनुं भोजन कर ? नाडी पोची बांध ? खडखड हस नहीं ? आकाशमां (खुल्ली जगामां) बेश नहीं ? पथारीमां सुती रहे ? अतिशय नीचे अथवा बहार जा नहीं ? एवी रीतें गर्भना सबबथी मंद थएली त्रिशला क्षत्रियाणीने सखियो कहेती हवी. वली ते त्रिशला क्षत्रियाणी केवी हती ? ते कहे छे. ते गर्भने जे हित लागे एवुं, अने ते पण परिमाणवालुं, ओछुं नहीं, तेम वधारे पण नहीं, पथ्य केहेतां आरोग्यताने करनारुं, अने तेथीज गर्भने पुष्टि करे एवुं, अने ते पण उचित एवा स्थानके, पण आकाश आदिक भागमां नहीं, अने ते पण समये एटले भोजननो समय होते छते, आहार करती हवी. तथा विविक्त एटले दोषोए करीने रहित तथा मृदु एटले कोमल, एवां जे शयन, अने आसनो, तेओए करीने, तथा प्रतिरिक्त एटले अन्य माणसोनी अपेक्षाए माणसो विनानी, अने तेथी करीनेज सुख करनारी, अने तेथी करीने मनने अनुकूल लागे एवी, एटले मनने हर्ष उपजावे एवी, एवी रीत

ना जे विहारनी पृथ्वी, तेपर विहार करती हवी. तथा सुखेथी एटले जेम गर्नने बाधा न आवे, एवी रीतथी, स्तंन आदिकनुं अवलंबन लेती हवी. तथा निद्राकरती हवी, उन्नी थती हवी, आसनपर बेसती हवी, तथा निद्राविना शय्यापर सुइने आलोटती हवी, कुट्टीमतल केहेतां जमीनपर विहार करती हवी, अने एवी रीतें सुखें सुखें गर्नने धारण करती हवी. हवे ते त्रिशला क्षत्रियाणी केवी रीतें गर्नने धारण करती हवी ? ते कहे छे. उत्तम प्रकारना गर्नना प्रनावथी उत्पन्न थएला छे दोहद केहेतां मनोरथो जेणीने एवी, ते मनमां एम जाणती हवी के, हुं अमारी पमो, एटले सर्व जीवोनी हिंसा बंध करवानो पटह वगमावुं. दान देउं, गुरुओने सारी रीतें पूजुं, तीर्थंकरोनी पूजा रचावुं, संघने विषे घणे प्रकारें वात्सल्यता करुं, सिंहासनपर बेसुं, उत्तम छत्र माथे धारण करावुं, उत्तम सफेद चमरो मारी आसपास वींझावुं, सघलाओपर आज्ञा चलावुं, तथा राजाओ आवीने मारा पादपीठने नमे, एवी हुं थउं. वली हाथीना मस्तकपर बेसीने पताका उमते छते तथा वाजीत्रोना नादोथी दिशाओना नागो पुराते छते, तथा लोको जयजय शब्दोथी स्तुति करते छते, हर्षथी हुं उद्याननी क्रीडा करुं. वली ते त्रिशला क्षत्रियाणी केवी ? तो के, सिद्धार्थ राजाए सर्व मनोरथो संपूर्ण करवाथी संपूर्ण थएल छे, दोहद जेणीनो एवी, तथा तेथी करीने सन्मानयुक्त करेल छे, दोहद जेणीए एवी; अने तेथी करीनेज, नथी करेल कोइ पण दोहदनी अवगणना जेणीए एवी; वली ते केवी ? तो के, संपूर्ण रीतें वांछित थएल छे, दोहद जेणीनो एवी, तथा सर्व प्रकारे संपूर्ण थएल छे, दोहद जेणीनो एवी, एवी रीतनी थइ थकी, ते गर्नने धारण करती हवी.

हवे ते कालनेविषे, तथा ते समयने विषे श्रमण नगवंत श्री महावीर स्वामी गर्नमां आव्या बाद, नव महीनाउं संपूर्ण होते छते, तथा अरधी आठमी रात्रि जाते छते, एटले नव महीना अने साडासात दिवसो जाते छते; पुत्रने जन्म आप्यो. एवी रीतें सघला जिनेश्वरोनुं गर्नवासनी स्थितिनुं मान कंइ तुल्य नथी, रुपनदेव प्रनु नव मास अने चार दिवस गर्नमां रह्या, अजीतनाथ प्रनु आठ मास

पचीस दिवस गर्भमां रह्या, संभवनाथ प्रभु नव मास अने छ दिवस गर्भमां रह्या, अभिनंदन आठ मास ने अगावीश दिवस गर्भमां रह्या, सुमतिनाथ प्रभु नव मास अने छ दिवस गर्भमां रह्या, पद्मप्रभस्वामी नव मास अने छ दिवस गर्भमां रह्या, सुपार्श्वनाथ प्रभु नव मास अने उंगणीस दिवस गर्भमां रह्या, चंद्रप्रभ प्रभु नव मास ने सात दिवस गर्भमां रह्या, सुविधिनाथ प्रभु आठ महिना ने छवीश दिवस गर्भमां रह्या, शीतलनाथ प्रभु नव मास अने छ दिवस गर्भमां रह्या, श्रेयांस नाथ प्रभु नव मास ने छ दिवस गर्भमां रह्या, वासुपूज्यस्वामी आठ महिना ने वीश दिवस गर्भमां रह्या, विमलनाथ प्रभु आठ महीना ने एकवीश दिवस गर्भमां रह्या, अनंतनाथ प्रभु नव मास अने छ दिवस गर्भमां रह्या, धर्मनाथ प्रभु आठ महीना ने छवीश दिवस गर्भमां रह्या, शांतिनाथ प्रभु नव महीना ने छ दिवस गर्भमां रह्या, कुंथुनाथ प्रभु नव महिना ने पांच दिवस गर्भमां रह्या अरनाथ प्रभु नव महिना ने आठ दिवस गर्भमां रह्या, मल्लिनाथ प्रभु नव महिना ने सात दिवस गर्भमां रह्या, मुनिसुव्रतस्वामि नव महिना ने आठ दिवस गर्भमां रह्या, नमिनाथ प्रभु नव महिना ने आठ दिवस गर्भमां रह्या, नेमनाथ प्रभु नव महिनाने आठ दिवस गर्भमां रह्या, पार्श्वनाथ प्रभु नव महिना ने छ दिवस गर्भमां रह्या, तथा महावीर प्रभु नव महीना ने साढा सात दिवस गर्भमां रह्या, एवी रीतें श्री सोमतिलक सूरीश्वरें करेला सप्ततिशक स्थानक नामें ग्रंथमां तेनुं यंत्र कहेलुं छे.

ते वखते सघला ग्रहो उंच स्थानक प्रत्ये आवते छते; एटले मेषादि राशिमां रहेला सूर्यादिक उंचा जाणवा, तेमां पण दशादिक अंशो सुधि परम उंच जाणवा. तेउनुं फल, जोगी, धनवान, स्वामी, मंडलाधिप, राजा, चक्री एम अनुक्रमें उंच ग्रहोनुं फल जाणवुं. तेउमां त्रण उंचा होय तो राजा थाय, पांच उंचा होय तो अर्धचक्री थाय, छ होय तो, चक्रवर्त्ति थाय, तथा सात उंचा होय तो तीर्थंकर थाय.

एवी रीतें उत्तम चंद्रनो योग आवते छते, दिशाउ पण सौम्य केहेतां रजनी वृष्टि आदिकथी रहित होते छते, वली ते दिशाउ केवी ! तो के, अंधकारें करीने रहीत होते छते, केमके प्रभुना जन्म व-

खते सर्व जगोए उद्योतज थइ रहे छे; तथा दिग्दाह आदिकना अजावथी शुद्ध होते छते, तथा, काग्गा, घुवड, डुर्गा आदिकनां पण जयकारक शुकन होते छते, तथा दक्षिणावर्त्तवालो, अने अनुकूल केहेतां सुगंधि अने शीतल, तथा सुखने देनारो, तथा मंद होवाथी पृथ्वीने स्पर्श करतो, केमके प्रचंड वायु तो उपरनां जागमां फेलाय छे, एवी रीतनो वायु वाते छते, तथा जे वखते सघला प्रकारनां जमीनपर धान्य उगेलां छे, एवो काल होते छते, तथा सुकाल होवाथी खुशी थएला अने वसंतोत्सवादिकथी क्रीडामां पडेला, एवा देशना लोको होते छते, अपररात्रिना समय वखते, चंद्रनो उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रसाथे योग आवते छते जरा पण बाधारहित थएलां ते त्रिशला क्षत्रियाणी, आरोग्य केहेतां पीडारहित एवा पुत्रने जन्म आपतां हवां.

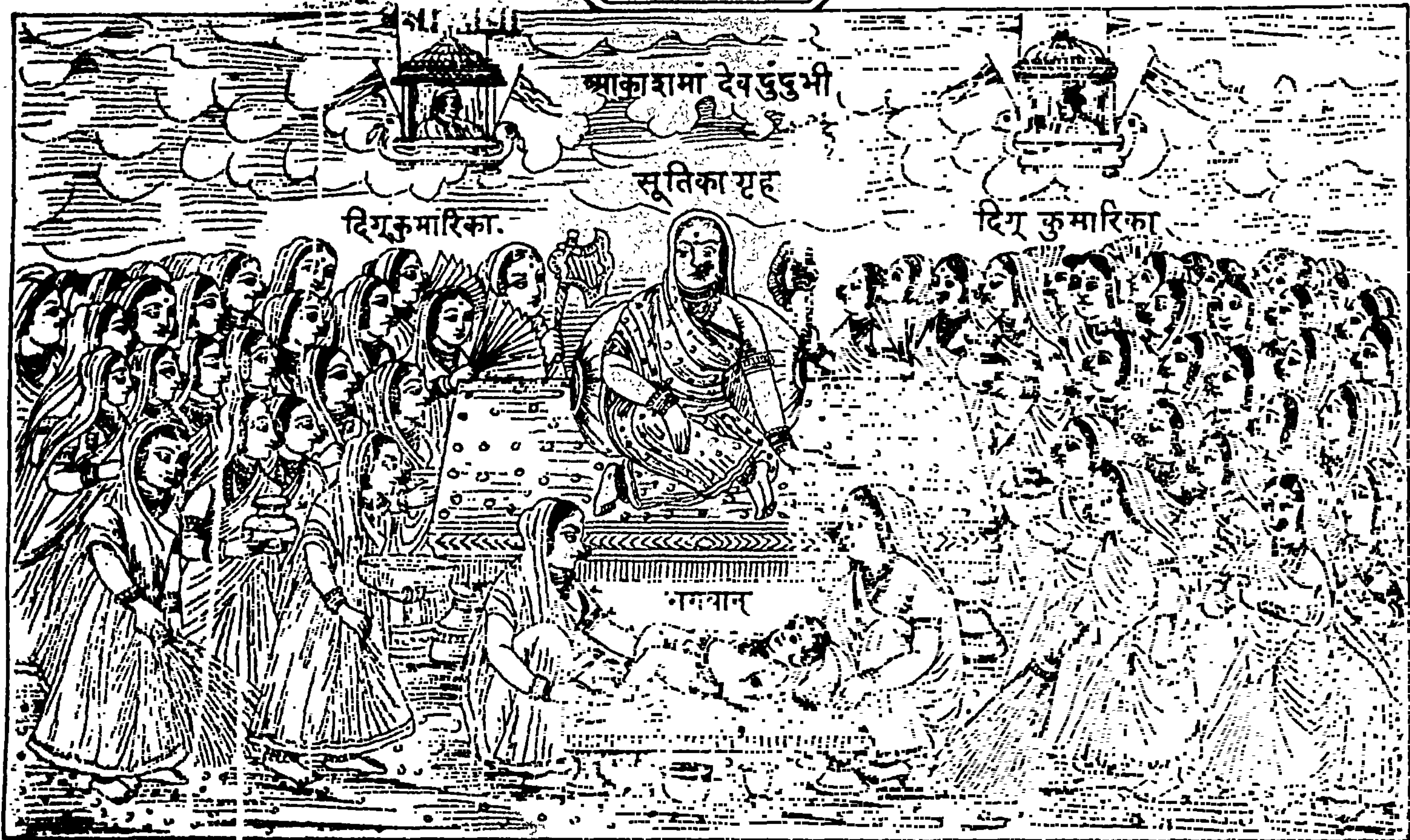
एवी रीते महोपाध्यायश्री कीर्तिविजयगणिना शिष्योपाध्यायश्री विनयविजयगणिए रचेली श्री कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीकाना गुजराती जाषांतरमां चोथो क्षण समाप्त थयो, श्रीरस्तु.

॥ श्री जिनाय नमः ॥

॥ पंचमं व्याख्यानं प्रारंज्यते ॥

जे रात्रिए प्रजुनो जन्म थयो, ते रात्रि केवी हती? तेनुं हवे वर्णन करे छे.

इंद्र आदिक घणा देवोए करीने, तथा प्रजुना जन्मोत्सवमाटे आवती एवी घणी दिक्कुमारिकाउ तथा देवांगनाउए करीने, तथा स्वर्गथी पृथ्वीपर आवता, अने मेरुना शिखरपर जवामाटे उंचे चडता एवा देवोए करीने अत्यंत व्याकुल थइ. ए सूत्रे करीने विस्तार सहित प्रजुनो जन्मोत्सव देवोए कर्यो, एम सूचव्युं. ते वखते अचेतन एवी दिशाउ पण जाणे हर्षितज थएली होय नहीं, तेम आनंद पामवा लागीउ, तथा ते वखते सुखे[illegible] छे, स्पर्श जेउनो, एवा वायुउ पण मंद मंदवावा लाग्या. त्रणे जगतमां उद्योत थइ रह्यो, आका[illegible]ां डुंडुजिनाद वागवा लाग्यो, नारकीउमां रहेला जीवो पण खुशी थवा लाग्या, तथा पृथ्वी पण उछवासने पामी.



पा. ५३

हवे ते पेहेलां तीर्थंकर प्रभुना जन्मना सूतिकर्मने विषे, उपन्न दिक्कुमारिकाउ आवीने, पोतानो श्रतो एवो आचार करवा लागी. ते आचार नीचे प्रमाणे जाणवो.

अधोलोकमां रहेनारि आठ दिक्कुमारिकाउ पोताना आसनो कंपवाथी, अवधिज्ञानें करीने अरिहंत प्रभुनो जन्म थएलो जाणीने ते सूतिकागृहने विषे आवीउं. तेउंना नामो, जोगंकरा, जोगवती, सुजोगा, जोगमालिनी, सुवत्सा, वत्समित्रा, पुष्पमाला तथा अनिंदिता. तेउं प्रभुने तथा तेमनी माताने नमीने, ईशानदिशामां सूतिका गृहने करती हवी, तथा त्यांथी एक योजन सुधिनी पृथ्वीने संवर्त वायुथी शोधती हवी. वली मेधंकरा, मेघवती, सुमेधा, मेघमालिनी, तोयधारा, विचित्रा, वारिषेणा, अने बलाहका नामनी आठ दिक्कुमारिकाउं, उर्ध्व लोकथी आवीने प्रभुने मातासहित नमीने, हर्षपूर्वक गंधोदक तथा पुष्पोना समूहनी वृष्टि करती हवी. तथा नंदोत्तरा, नंदा, आनंदा, नंदिवर्धना, विजया, , जयंती, अने अपराजिता नामनी आठ दिक्कुमारिकाउं, पूर्वरुचकथी आवीने अगाडीमां जोवामाटे दर्पणने धारण करती हवी. तथा समाहारा, सुप्रदत्ता, सुप्रबुद्धा, यशोधरा, लक्ष्मीवती, शेषवती, चित्रगुप्ता, तथा वसुंधरा नामनी आठ दिक्कुमारिकाउं, दक्षिण रुचकथी आवीने, स्नानने माटे भरेला कलसाउंने, धारण करीने गीतगान करवा लागी. तथा इलादेवी, सुरादेवी, पृथिवी, पद्मावती, एकनासा, भद्रा, अने शीता नामनी आठ दिक्कुमारिकाउं पश्चिम रुचकथी आवीने पवनमाटे हाथमां पंखाउं लेइने उभी. तथा अलंबुशा, मितकेशी, पुंडरीका, वारुणी, हासा, सर्वप्रभा, श्री अने ह्री, नामें आठ दिक्कुमारिकाउं उत्तर रुचकाद्रिथी आवीने चामर विंझवा लागी. तथा चित्रा, चित्रकरा, शतेरा, वसुदामिनी, दीपहस्ता, ए चार कुमारिकाउं विदिकरुचकाद्रिथी आवीने विदिशामां उभी. तथा रुचक द्वीपथी रुपा, रुपासिका, सुरुपा अने रुपवती नामनी चार दिक्कुमारिकाउं रुचकद्वीपथी आवी.

पछी चार अंगुलथी छेटे नालने छेदीने, खोदेला खाडामां दाटी, तथा ते खाडाने वैडुर्य मणिथी पूरीने, तेनापर पीठ बनाव्युं. तथा तेने दुर्वाथी बांधीने, ते जन्मगृहथी पूर्व दिशामां, दक्षिण दिशा-

मां, अने उत्तर दिशामां एम त्रण दिशाउंमां त्रण केलनां घरो बनाव्यां. तेउंमांथी दक्षिण तरफनां केलीगृहमां तेउं बन्नेने (मातापुत्रने) लेइ जइने, तेउंए, तेमने अभ्यंग (तैलमर्दन) कर्युं. तथा पछी पूर्व तरफना घरमां स्नान करावी कपडां, तथा आभूषणो पहेराव्यां. पछी उत्तर तरफनां केलिगृहमां बे अरणीनां काष्टो घसीने, तेमांथी अग्नि निपजावी, चंदनथी होम करीने, तेउंए बन्नेने रक्षापोटली बांधी. तथा पछी मणिनां बे गोलाउं, आस्फालती थकी; "तमो पवर्त जेटला आयुष्य वाला थाउं" एम कही, प्रभुने तथा तेमनी माताने जन्मस्थानके मुकीने तेउं पोतपोताने स्थानके गइ. ते दिक्कुमारिउंनी साथे प्रत्येकना चार हजार सामानिक देवो होय, चार महत्तराउं होय, सोल हजार अंगरक्षको होय, सात लश्कर तथा तेना अधिपतिउं होय, तथा बीजा पण महर्धिक देवो होय; तथा तेउं आभियोगिक देवोए योजनप्रमाण करेलां विमानोमां बेसीने त्यां आवे छे.

एवी रीतें दिक्कुमारिकाउंनो महोत्सव जाणवो.

तेवार पछी पर्वत सरखुं निश्चल एवुं इंद्रनुं आसन चलायमान थयुं, त्यारे इंद्रे अवधिज्ञानथी जेल्ला तीर्थंकरनो जन्म थयो, एम जाण्युं. अने तेथी तेणें वज्रमय एवो एक योजननो सुघोषा नामनो घंट नैगमेषिदेव पासे वगडाव्यो, अने तेथी सघला विमानोमां रहेला घंटाउं पण वागवा लाग्या.

पछी ते नैगमेषी देवे उंचे प्रकारे पोतेज इंद्रनो हुकम देवोने जणाव्यो, अने तेथी देवो पण हर्षयुक्त, थइ चालवानी तैयारी करवा लाग्या. पालक नामना देवें बनावेलां, तथा लाख योजननां मानवालां, एवा पालक नामना विमानपर इंद्र बेठो; ए पालक नाममा विमानमां इंद्रनी सन्मुख अग्र महिषीउंना आठ भद्रासनो हतां, डाबी बाजुमां चोराशी हजार सामानिक देवोनां चोराशी हजार भद्रासनो हतां. दक्षिणनी बाजुमां बार हजार आभ्यंतर पार्षदाना बार हजार भद्रासनो हतां; तथा चौद हजार मध्य पार्षदोनां चौद हजार भद्रासनो हतां; एवी रीतें सोल हजार बाह्य पार्षदोनां सोल हजार भद्रासनो हतां. पाछलनां भागमां सात सेनापतियोनां सात भद्रासनो हतां. चारे दिशाउंमां

चित्र २०





प्रत्येकमां चोराशी हजार आत्मरक्षक देवोनां चोराशी हजार भद्रासनो हतां. तथा एवी रीतें बीजा पण घणा देवोथी वींटाएलो, तथा सिंहासनपर बेठेलो, तथा गवाता छे, गुणो जेना, एवो ते इंद्र त्यांथी चालवा लाग्यो, तथा बीजा देवो पण एवी रीतें त्यांथी चालवा लाग्या. तेओमां केटलाको तो इंद्रना हुकमथी, केटलाको मित्रना अनुवर्त्तनथी, केटलाको स्त्रियोथी (देवीयोथी) प्रेराएला, केटलाको पोताना जावथी, केटलाको कौतुकथी, केटलाको विस्मयपणाथी, तथा केटलाको भक्तिथी, एवी रीतें सघला देवो विविध प्रकारनां वाहनोए करीने युक्त थया थका चालवा लाग्या. ते वखते, विविध प्रकारनां वाजित्रोना शब्दोथी तथा घंटाओना नादोथी, तथा देवोना कोलाहलथी, सघलुं ब्रह्मांड गाजी रह्युं. तेओमांथी सिंहपर स्वार थएलो देव हाथीपर स्वार थएला देवने कहेवा लाग्यो के, तारा हाथीने तुं दूर कर ? केमके नहींतर मारो आ जोरावर केसरी सिंह खरेखर तारा हाथीने मारी नाखशे. तथा एवीज रीते पाडापर बेठेलो घोडेस्वारने, गरुडपर बेठेलो सर्पवालाने तथा चित्रापर बेठेलो बकरापर बेठेलाने आदरपूर्वक कहेवा लाग्यो. ते वखते देवोनां क्रोडो गमे विमानो आदिक वाहनोए करीने, विस्तीर्ण एवो पण आकाशमार्ग सांकडो थइ गयो. केटलाक देवो तो मित्रने पण तजीने दक्षपणाए करी अगाडी जता हवा, तथा बीजो देव वली कोइने एम कहेतो हवो, के हे भाइ, तुं जरा मारे माटे थोडीवार तो थोभ ? केटलाको तो वली एम कहेवा लाग्या के, हे देवो, पर्वनां दिवसो तो एवी रीते सांकडाज होय छे, माटे हमणां तो मौन करीनेज चालो. एवी रीतें आकाशमां आवता थका मस्तकोपर चंद्रनां किरणो पडवाथी, तेओ "निर्जर" छतां पण जाणे जरायुक्त थएला होय नही, तेम शोभता हवा (केम के तेमनां मस्तको चंद्रना किरणोथी सफेद लागतां हतां) देवोना मस्तरहेला ताराओ घटिकासरखा, कंठमां कंठा सरखा, तथा शरीरपर पसीनाना बिंदुओ सरखा शोभता एवी रीतें इंद्र नंदीश्वर द्वीपपासे विमानने संक्षेपीने त्यां आव्यो, तथा जिनेंद्र अने तेमनी माताप्रदक्षिणा करी. तथा तेमने नमस्कार करी ते कहेवा लाग्यो के, हे रत्नकुक्षि, तथा जगत्मां

दीपिका सरखी माता ! तमाराप्रते नमस्कार थाओ ? हुं देवोनो स्वामि इंद्र छुं, तथा देवलोकथी अहिं आव्योछुं, तथा आ प्रभुनो हुं जन्ममहोत्सव करीश. माटे हे माता, तमारे डरवुं नहीं, एम कही तेणीनेअवस्वापिनी निद्रा तेणें आपी; तथा जिनेश्वर प्रभुनुं प्रतिबिंब करीने ते मातानी पासे राख्युं. पछी तीर्थंकर प्रभुने तेणें हस्तसंपुटमां ग्रहण कर्या, तथा सघलो लावो पोते लेवामाटे तेणें (इंद्रे) पोताना पांच रूपो कर्या.

एक रुपें करी प्रभुने ग्रहण कर्या, बे रुपोए करीने पडखे रही चामर उडाड्यां, एक रूपें करी छत्र धर्युं, तथा एक रुपें करीने वज्र धारण कर्युं.

हवे देवोमांथी जे अगाडी होय छे, ते पछाडी रहेलाने धन्य माने छे, तथा पछाडी रहेलो अगाडी रहेलाने धन्य माने छे, तथा केटलाक अगाडीना भागमां गएला देवो, प्रभुने जोवा माटे पोतानी पीठमां पण नेत्रने इछवा लाग्या. एवी रीतें इंद्र मेरूपर्वतनां शिखरपर जइ, त्यां दक्षिण भागमां रहेला पांडुक वनमां पांडुकंबला नामनी शिलापर गयो. त्यां प्रभुने खोलामां लेइ, पूर्व सन्मुख ते बेठो; तथा ते वखते सघला देवो पण प्रभुनां चरणनी समीप आव्या.

दश वैमानिक, वीश भवनपतिओ, बत्रीश व्यंतरो, बे ज्योतिष्क एम मली चोसठ इंद्रो त्यां आव्या. त्यां सोनानां, रुपानां, रत्नोनां, सोनारुपानां, सोनां अने रत्नोनां, रुपा अने रत्नोनां, सोनां रुपां अने रत्नानां, तथा माटीनां, एवा प्रत्येकनां एक हजारने आठ योजननां मुखवाला कलशो तथा एवी रीतें भंगार, दर्पण, रत्नकरंडक, सुप्रतिष्ठक एवा थाल, पुष्प, चंगेरिकादिक पूजानां उपकरणो, प्रत्येक कुंभनी पेठे एक हजारने आठ प्रमाणे जाणवां; तथा मागध आदिक तीर्थनी माटी, गंगादिकनां जल, पद्मसरोवर आदिकना पाणी तथा कमलो, क्षुद्रहिमवंत वर्षधर, वैताढ्य विजय, तथा वक्षस्कर आदिक पर्वतो परथी सर्षव, पुष्प, विगेरे सर्व प्रकारनी औषधीओने, अच्युतेंद्र, आभियोगिक देवोनी मारफते मगावी लेतो हवो. ते वखते वक्षःस्थलपासे राखेल छे, क्षीरसमुद्रनां पाणीना घडाओ जेओए, एवा देवो,



पा. ५५

त्र २२



जाणे संसारनो समूह तरवामाटे घमाओनेज तेओए बांध्या होय नहीं, तेम शोजवा लाग्या; तथा जाणे वृक्षने सिंचता होय नहीं, अथवा पोतानो मेल जाणे धोइ नाखताज होय नहीं; एवी रीते कलशने धारण करता देवो शोजता हवा.

हवे ते वखते इंद्रना संशयने जाणीने वीरप्रजुए जमणा अंगुठाथी चारे बाजुएथी मेरु पर्वतने कंपाव्यो; ते वखते पृथ्वी धुजवा लागी, शिखरो पमवा लाग्यां, तथा समुद्रो क्षोजायमान थवा लाग्या. तथा एवी रीतें ब्रह्मांम फुटी जाय, एवा शब्दो थते छते, इंद्रे अवधिथी जाणी, प्रजुपासे क्षमा मागी. असंख्याता तीर्थंकरोमांहेथी आजदिनसुधि मने कोइए पगेथी स्पर्श कर्यो नथी, अने आजे आ वीर प्रजुए कर्यो, एवा हर्षथी जाणे ते मेरु नाचतोज होय नहीं, तेम देखावा लाग्यो. वली तेणें विचार्युं के, आ स्नात्रनी रनां अजिषेकथी झरता सघला झरणांउरुपी मेंहारो पहेर्यां, तथा जिनेश्वररुपी मुकुटने धारीने हुं सघला पर्वतोनो राजा थयो छुं. हवे त्यां पेहेलां अच्युतेंद्र प्रजुने नवरावे, तथा एवी रीतें अनुक्रमें छेक चंद्र सूर्यादिक सुधि सघलाओ अजिषेक करे. अहीं कवि घटना करे छे. के, स्नात्र महोत्सव वखते चरम तीर्थंकरनां मस्तकपर श्वेत छत्रनी पेठे आचरण करतुं, मुखरुपी चंद्रप्रते किरणोनां समूहनी पेठे आचरण करतुं, तथा कंठमा हारनी पेठे आचरण करतुं, तथा समस्त शरीरपर चीन देशनां कपमांनी पेठे आचरण करतुं, एवी रीतें इंद्रोनां समूहोए उंचा करेला घमाओना समूहना मध्य जागमांथी नीचे पडतुं, एवुं क्षीरसमुद्रनुं पाणी, तमारी लक्ष्मीने माटे थाओ ?

पछी इंद्रे पोतें चार वृषजोनुं स्वरूप कर्युं, तथा तेना आठ शिंगमांओमांथी पमता दूधथी पोते प्रजुनुं अजिषेचन करवा लाग्यो. ते देवो प्रजुने पाणीथी स्नान करावतां, एवी रीते उलटा पोते निर्मलपणाने प्राप्त थया ! ! पछी तेओ मंगलदीवो तथा आरात्रिक क्रिया करीने, नृत्य, गीत, वाद्य आदिकथी विविधप्रकारें महो[illegible] गंधकाषाय्य नामना दिव्य वस्त्रथी प्रजुना अंगने लुछीने, इंद्रे चंदन आदि[illegible]सी. पछी इंद्रे प्रजुनी सन्मुख, रत्ननां पाट-

लापर रुपानां चा ... ुगल, श्रीवत्स, स्वस्तिक, नंदावर्त्त तथा सिंहासन, ए अष्ट ... स्तुत करवा मांमी. पढी प्रभुने तेमनी मातापासे लावीने मुक्या, तथा पेलुं प्रतिबिंब अने अवस्वापिनी निद्राने पोतानी शक्तिथी इंद्रे पाबां ग्रहण करी लीधां.

पढी इंद्रे ओशीकाप्रते कुंमल अने रेंशमी कपमांनी जोमी मुकी, तथा चंद्रवामां श्रीदाम, रत्नदाम अने सोनानो दडो राख्यो. तथा बार क्रोम रत्न, अने सोना रुपांनी वृष्टि करीने, इंद्रे आभियोगिक देवोने महोडेथी घोषणा करावी के, प्रभु अथवा प्रभुनी माता तरफ जे कोइ अशुभ चिंतवशे, तेना मस्तकना अर्जुन वृक्षनी मांजरनी पेठे सात टुकमा थशे. वली प्रभुना अंगुठापर अमृत मुकीने, तथा नंदीश्वर द्वीपमां अठाइ महोत्सव करीने सघला देवो पोताने स्थानके गया.

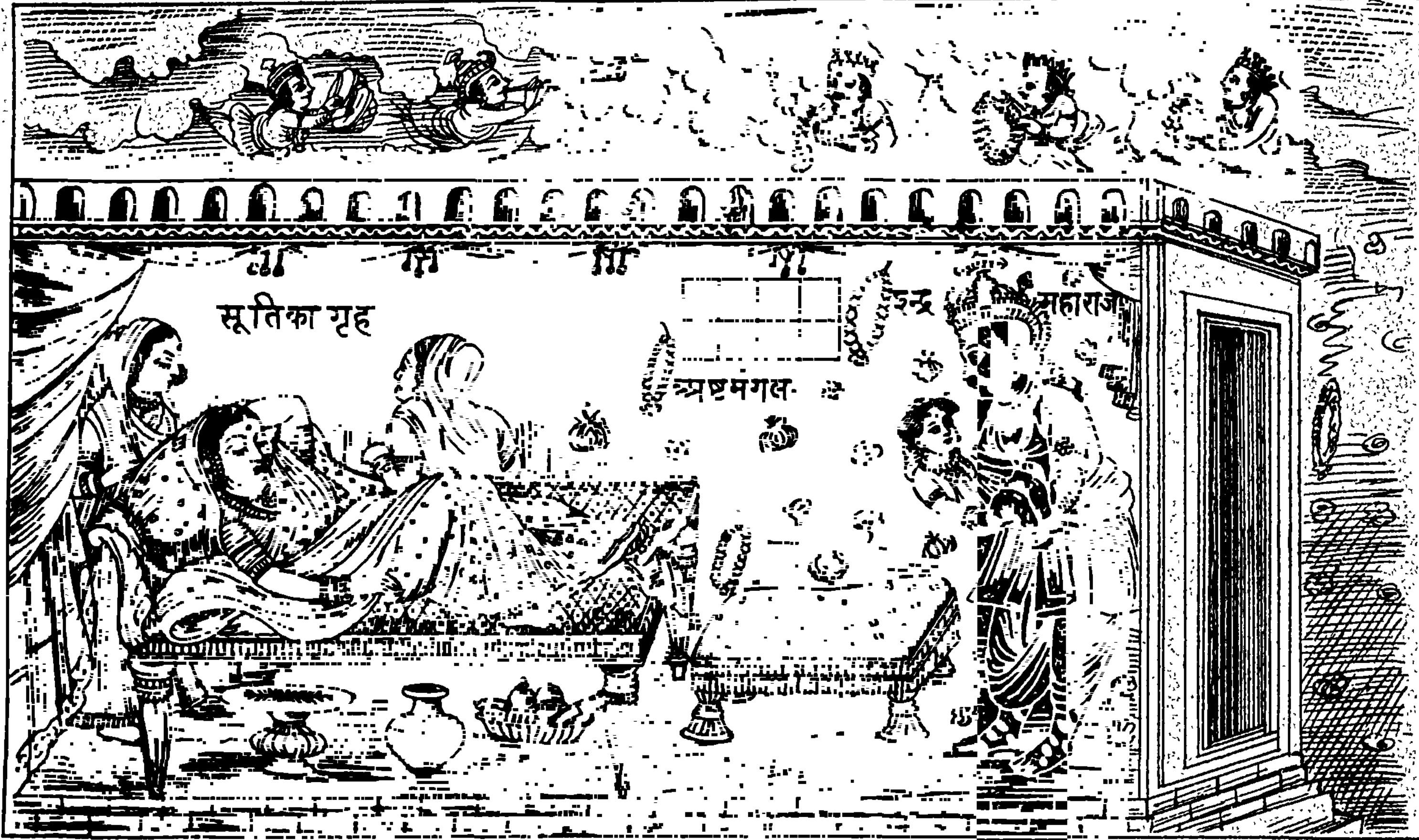
एवी रीतें देवोए करेलो श्री वीरप्रभुनो जन्मोत्सव जाणवो.

हवे ते अवसरने विषे प्रियंवदा नामनी दासी, जलदी राजापासे जइ, ते पुत्रना जन्मना वृत्तांतने कहेती हवी. सिद्धार्थ राजा पण ते वृत्तांतने सांभलीने अत्यंत हर्षित थयो, तथा हर्षथी तेनी वाचा पण गद्-गद् शब्दोवाली थइ, तथा तेनां शरीरपर रोमांच थयां. वली तेणीने राजाए मुकुट शिवाय सघलां आभूषणो वधामणीमां आप्यां, तथा तेणीने दासीपणांथी मुक्त करी.

हवे सिद्धार्थ राजाए प्रभातमां, रात्रिए देवोए करेला प्रभुना महोत्सवने जाणीने, नगरना आरक्षकोने बोलाव्या, तथा तेमने कह्युं के, हे देवानुप्रियो, आ क्षत्रियकुंमग्राम नामना नगरमां जे केदखानाओ होय, तेने साफ करो ? अर्थात् तेमां रहेला केदीओने ढोमी मुको ? केमके कह्युं ढे के, युवराजना अभिषेक वखते, शत्रुना राज्यनो नाश करती वखते, तथा पुत्रजन्मना महोत्सवने दिवसे केदीओने बंधनमुक्त कराय ढे. वली तमो मान, एटले रस अने धान्यनां विषयरुप, तथा उन्मान एटले जोखाय ते, ते सघलामां वधारो करो ? तथा आ क्षत्रियकुंमग्राम नामना नगरने बहारथी अने अंदरथी पण तमे अत्यंत शोभायुक्त करो ? ते नगरने केवी रीतें शोभायुक्त करो ? ते हवे कहे ढे. सुगंधि

वाए करीने, दर्पण, वर्धमान, कलश, मत्स्यग

मंगलो आलेखीने प्रभुनी



चित्र २४

सिद्धार्थ राजा

दासी वधामणी आपेछे



जळनो छंटकाव करीने, तेथी श्रासिक्त करो ? तथा कचरो विगेरे दूर करो ? तथा छाण श्रादिकथी लींपावो ? वली केवुं करो तो के, शृंगाटक केहेतां त्रण खुणावालां स्थानको, त्रिक केहेतां ज्यां त्रण मार्गो नेगा थाय एवां स्थानको, चतुष्क केहेतां ज्यां चार मार्गो नेगा थाय एवां स्थानको, चत्वर केहेतां ज्यां श्रनेक मार्गो नेगा थाय एवां स्थानको, चतुर्मुख केहेतां देवालय श्रादिक, महापथ केहेतां राज्यमार्ग, पंथ केहेतां सामान्य मार्गो, एटलां स्थानकोमां, पाणीए करीने सींचेला, श्रने तेथी करीने ज पवित्र, तथा कचरो विगेरे दूर करवाथी शोजायुक्त करेला, एवा जे रथ्यांतर केहेतां मार्गनां मध्य-जागो, तथा श्रापणवीथि कहेतां डुकानोना मार्गो, श्रर्थात् बजारो, ते छे जेनी श्रंदर एवुं, तथा वली ते नगर केवुं ? तो के मंच केहेतां महोत्सव जोवामाटे लोकोए घरनी उपर करेला ऊरुखाश्रो, तथा श्रतिमंच केहेतां तेश्रोनी पण उपर करेला ऊरुखाश्रो, तेश्रोए करीने शेहेरने शोजायुक्त करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के नाना प्रकारनी रंगबेरंगी जे ध्वजाश्रो, केहेतां जेनी श्रंदर सिंह श्रादिकनां चित्रामणोए करीने सहित एवां मोटां लुगडांश्रो लटकी रह्यां छे, एवी ध्वजाश्रो, तथा पताका कहेतां नानी ध्वजाश्रो, तेश्रोए करीने शोजायुक्त करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के, छाण श्रादिकथी जूमिपर लेपनवालुं, तथा चाक श्रादिकथी जींतोपर करेली छे सफेदाइ ज्यां एवुं करो ? वली ते नगर केवुं तो के, गोशीर्ष चंदन तथा रसयुक्त एवुं जे रक्तचंदन, तथा दर्दर एटले पर्वतमां उत्पन्न थएलुं जे चंदन, तेश्रोए करीने, जिंत श्रादिकपर दीधेला छे, पांच श्रांगलीयोना हाथाश्रो ज्यां, एवुं ते नगर करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के, घरनी श्रंदर चोकमीश्रोपर राखेल छे, चंदननां कलशो ज्यां एवुं करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के, बारणांश्रोनां जागोमां, चंदनना कलशोए करीने करेलां छे, तोरणो जेमां एवुं ते नगर करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के, जूमिपर तथा उपरना जागमां पण, विस्तीर्ण श्रने गोल श्रा-कारो, लटकावेल छे, पुष्पोनी मालाश्रोनो समूह जेमां, एवुं ते नगर करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के, पंच वर्णना तथा रसें करीने युक्त श्रने सुरजि केहेतां सुगंधवाला, एवा जे पुष्पोना समूहो,

दीपावो ? वली केवुं करो तो के, शृंगाटक केहेतां त्रण खुणावालां स्थानको, त्रिक केहेतां ज्यां त्रण मार्गो जेगा थाय एवां स्थानको, चतुष्क केहेतां ज्यां चार मार्गो जेगा थाय एवां स्थानको, चत्वर केहेतां ज्यां अनेक मार्गो जेगा थाय एवां स्थानको, चतुर्मुख केहेतां देवालय आदिक, महापथ केहेतां राज्यमार्ग, पंथ केहेतां सामान्य मार्गो, एटलां स्थानकोमां, पाणीए करीने सींचेला, अने तेथी करीनेज पवित्र, तथा कचरो विगेरे दूर करवाथी शोभायुक्त करेला, एवा जे रथ्यांतर केहेतां मार्गनां मध्यजागो, तथा आपणवीथि केहेतां दुकानोना मार्गो, अर्थात् बजारो, ते बे जेनी अंदर एवुं, तथा वली ते नगर केवुं ? तो के मंच केहेतां महोत्सव जोवामाटे लोकोए घरनी उपर करेला झरुखाओ, तथा अतिमंच केहेतां तेओनी पण उपर करेला झरुखाओ, तेओए करीने शेहेरने शोभायुक्त करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के नाना प्रकारनी रंगबेरंगी जे ध्वजाओ, केहेतां जेनी अंदर सिंह आदिकनां चित्रामणोए करीने सहित एवां मोटां लुगडांओ लटकी रह्यां छे, एवी ध्वजाओ, तथा पताका केहेतां नानी ध्वजाओ, तेओए करीने शोभायुक्त करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के, छाण आदिकथी भूमिपर लेपनवालुं, तथा चाक आदिकथी भींतोपर करेली छे सफेदाइ ज्यां एवुं करो ? वली ते नगर केवुं तो के, गोशीर्ष चंदन तथा रसयुक्त एवुं जे रक्तचंदन, तथा दर्दर एटले पर्वतमां उत्पन्न थएलुं जे चंदन, तेओए करीने, भिंत आदिकपर दीधेला छे, पांच आंगलीयोना हाथाओ ज्यां, एवुं ते नगर करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के, घरनी अंदर चोकडीओपर राखेल छे, चंदननां कलशो ज्यां एवुं करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के, बारणांओनां भागोमां, चंदनना कलशोए करीने करेलां छे, तोरणो जेमां एवुं ते नगर करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के, भूमिपर तथा उपरना भागमां पण, विस्तीर्ण अने गोल आकारवालो, लटकावेल छे, पुष्पोनी मालाओनो समूह जेमां, एवुं ते नगर करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के, पंच वर्णना तथा रसें करीने युक्त अने सुरभि केहेतां सुगंधवाला, एवा जे पुष्पोना समूहो, तेओ

॥५७॥ नो करेल जे उपचार केहेतां शोभा, तेणें करीने ते नगरने युक्त करो ? वली ते नगर केवुं ? तो के, कृष्णागुरु, किंदरु, तुरुष्क विगेरे सुगंधि पदार्थोथी सुगंधि करो ? वली ते नगर केवुं तो के, नट कहेतां नाटक करावनारा, तथा नर्तक केतां पोते नाचनारा, तथा जल्ला एटले दोरीओपर खेल करनारा, तथा मल्ल, तथा मुठीओथी युद्ध करनारा, तथा विडंबक एटले माणसोने हास्यकुतूहल करावनारा विदूषको, अथवा जेओ मोहडांओनां चालाओ करीनें कुदे छे तेओ, तथा रसें करीने युक्त एवी वार्त्ताओना करनाराओ, तथा लासक केहेतां रास रमनाराओ, तथा आरक्षको केहेतां कोटवालो, तथा लंख केतां वांसपर चढी तेनां अग्रभागपर खेल करनाराओ, तथा मंख केतां हाथमां छबीओ राखी भिक्षा मागनाराओ, के जेओ 'गौरीपुत्रो' एवा नामथी प्रसिद्ध छे, तेओ, तथा तूण नामनां वाजित्र वगाडनाराओ, तथा तुंबवीणिका एटले वीणा वगाडनाराओ, तथा जेओ तालीओ वगाडीने कथाओ कहे छे, एवां लोको, तेओए करीने संयुक्त, एवा आ क्षत्रियकुंडग्राम नामनां नगरने तमो पोते करो ? बीजाओ पासे तेम करावो ? तथा हजारो गमे गाडांनां धोंसरांओ, तथा प्रसिद्ध एवां हजारो गमे मूसलो उत्सवनी अंदर ऊभां करावो ! (तेम कराववानो मतलब ए के, ते महोत्सव चालते छते, तेम करवाथी, गाडां खेडवानी, तथा खांडवा आदिकनी मनाइ करेली छे, एम वृद्ध आचार्योनो मत छे.) एम करीने ते मारी आज्ञा तमो पाछी आपो ? तथा ते पाछी आपीने, आवीने मने कहो के, तमारी आज्ञा प्रमाणे सघलुं तैयार कर्युं छे.

एवी रीतें सिद्धार्थ राजाथी आज्ञा कराएला ते कौटुंबिक पुरुषोए, हाथजोडी ते सघलुं अंगीकार करी त्यांथी जइ, राजानां कहेवाप्रमाणे सघली आज्ञाओ पालीने, ज्यां सिद्धार्थ राजा बेठा हता, त्यां पाछा आवीने, तेमने तेमनी आज्ञा पाछी सोंपता हवा. ॥५७॥

तेवार पछी ते सिद्धार्थ राजा, ज्यां कसरतशाला हती, त्यां गया; तथा त्यां जइ आवीने सर्व प्रकारनी ऋद्धिए करीने युक्त, तथा सघली उचित वस्तुओना संयोगवाला एवा सर्व सैन्यवडे करीने, तथा

पालखी घोडा आदिक सर्व प्रकारनां वाहनोए करीने, तथा परिवार आदिकना समूहें करीने, तथा सघला अंतःपुरें करीने, तथा सघली, पुष्प, गंध, वस्त्र, माल्य, अलंकार आदिकनी जे शोजा, तेणें करीने तथा सघली प्रकारना वागतां एवां जे वाजित्रो, तेना निनादो केहेतां शब्दोए करीने, तथा वाजित्रो ना एकी वखते यता शब्दोए करीने, तथा शंख, माटीना पटह, तथा जेरी, तथा झालर, तथा खरमुखी एटले काहला नामनुं वाजित्र, तथा मुरज केहेतां ढोल, तथा मृदंग, तथा डुंडुजि, ए सघलां वाजित्रोनो जे मोटो शब्द, तथा तेना पडघारूप थतो जे प्रतिशब्द, तेणें करीने, तथा एवी रीतें सामग्री सहित सिद्धार्थ राजा दश दिवसो सुधि, महोत्सवपूर्वक कुलमर्यादा करतो हवो. हवे ते कुलमर्यादा केवी ? ते कहेठे. तेणें वेंचाण थती वस्तुओने जगातथी मुक्त करी; वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के, कर केहेतां दरेक वर्षे राजाओ जे प्रजापासेथी लेठे ते करे करीने प्रजाने रहित करी. अर्थात् कर माफ कर्या. अने तेथीज सघलाओने हर्षना हेतुरूप होवाथी उत्कृष्ट एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के, जे जे वस्तुओ जे जे माणसोने जोती होय, ते ते बजारमांथी मूल्य दीधाविनाज लोकोए ग्रहण करवी, केमके तेनुं मूल्य राजा आपशे, एवी रीतनी जाहेरखबरवाली, अने तेथी करीनेज अनुपम, केहेतां कोइने पण जेनी उपमा न आपी शकाय एवी. वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के, नास्तिकोने घेर पण, राजानी आज्ञाने आपनारा राजपुरुषोनो ठे, प्रवेश जेनी अंदर एवी, वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के, दंड केहेतां राजाना अपराधथी प्रजापासेथी ग्रहण करातुं जे धन, ते, तथा कुदंड केहेतां मोटो अपराध होते ठते पण, अल्प एवो जे राजा दंड लेठे ते, ते बन्नेथी रहित एवी; वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के, करजे करीने पण रहित एवी, अर्थात् सघलानुं करज पण राजा आपशे एवी, वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के, उत्तम एवी गणिकाओ, तथा नाटकना प्रतिबंधवालां पात्रोए करीने सहित एवी, वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के, अनेक एवा जे प्रेक्षकारको, तेओए करीने सेवित थयेली, वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के, नथी तजाएलां मृदंगो जेनी अंदर एवी; वली ते

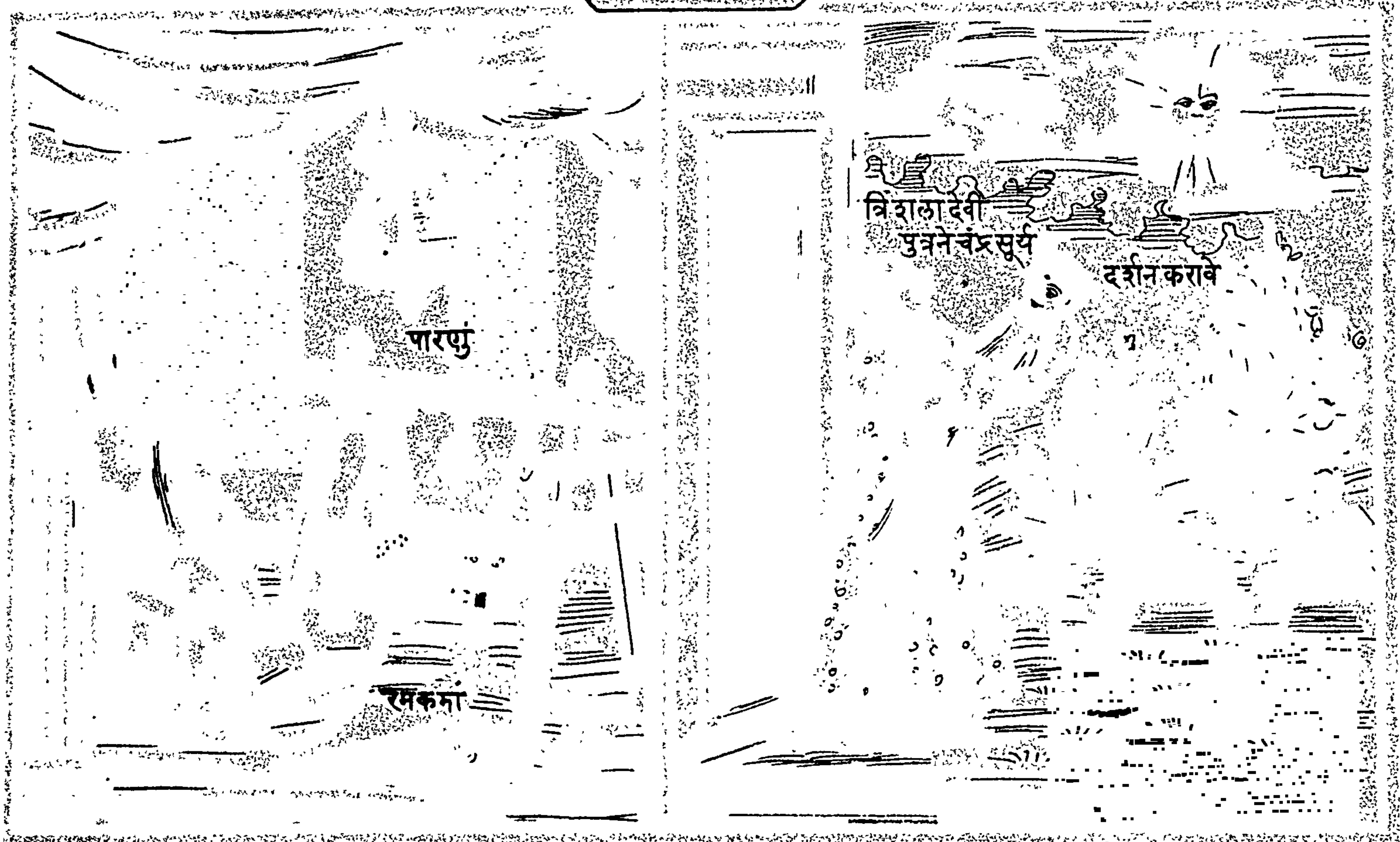
कुलमर्यादा केवी ? तो के, नथी करमाएली पुष्पनी मालाओ जेनी अंदर एवी; वली ते कुलमर्यादा केवी ? तो के, प्रमुदित केतां हर्षवंत, अने तेथी करीनेज क्रीडा करवाने लागेला छे, नगरना लोको सहित देशना लोको जेनी अंदर एवी, एवी रीतनी कुलमर्यादा सिद्धार्थ राजा पालवा लाग्या.

पछी ते सिद्धार्थ राजा, तेवी रीतें दश दिवसो सुधि कुलमर्यादा पालते छते, सेंकडो, हजारो अने लाखो प्रमाणे अरिहंतप्रभुनी पूजाओ करता हवा. केमके, प्रभुनां मातपिता श्री पार्श्वनाथप्रभुनां संताननना श्रावको हता. "यज" धातु देवपूजाना अर्थने कहेनारी छे, माटे अहीं "याग" एवा शब्दथी जननी प्रतिमानी पूजाज ग्रहण करवी. केमके बीजा यज्ञोनो असंभव छे; वली तेओ पार्श्वनाथ प्रभुनां संताननना श्रावको हता, एम आचारांगमां कहेलुं छे. वली ते राजा पर्वने दहाडे द्रव्योनुं दान देता, तथा देवरावता हवा.

तेवारपछी श्रमण भगवंत श्री महावीर प्रभुना मातापिताए पेहेले दिवसे, एवी रीतें कुलमर्यादा करी. तथा त्रीजे दिवसे चंद्रसूर्य देखाडवानो महोत्सव करता हवा.

तेनो विधि नीचे प्रमाणे जाणवो. जन्मथी मांडी बे दिवसो जाते छते, गृहस्थ गुरु, अरिहंत प्रभुनी प्रतिमानी पासे रुपानी चंद्रनी मूर्तिने प्रतिष्ठित करीने, पूजीने विधिपूर्वक स्थापे. तेवारपछी स्नान करेली, तथा उत्तम वस्त्राभूषणो पेहेरेली, एवी प्रभुनी माताने पुत्रसहित, चंद्रनो उदय होते छते, प्रत्यक्ष चंद्रनी सन्मुख लेइ जइने "ॐ अर्हं चंद्रोऽसि, निशाकरोऽसि, नक्षत्रपतिरसि, सुधाकरोऽसि, औषधीगर्भोऽसि, अस्य वृद्धिं कुरु कुरु स्वाहा" एवी रीतनो चंद्रनो मंत्र उच्चारण करतो थको चंद्रने देखाडे; पछी माता पुत्रसहित थइ थकी, गुरुने नमे; त्यारे गुरु पण आशिर्वाद आपे के, सघली औषधिओए करी मिश्रित थएल छे, किरणोनी पंक्ति जेनी, तथा सघली आपदाओने हरवामां जे प्रवीण छे, एवो आ चंद्र हमेशां प्रसन्न थयो थको, तमारा समस्त वंशने विषे वृद्धि करो ? एवीज रीतें सूर्यनुं पण दर्शन करावे; तेमां मूर्ति, सोनानी अथवा तो त्रांबांनी करे. अने मंत्र नीचे प्रमाणे बोले. "ॐ अर्हं सूर्योऽसि,

चित्र २५



पा.

चित्र २६





दिनकरोऽसि, तमोपहोऽसि, सहस्रकिरणोऽसि, जगच्चक्षुरसि प्रसीद" पछी गुरू आशिर्वाद आपे के सघळा देव अने असुरोने वंदनीय, तथा सर्व अपूर्व कार्योना करनारा, एवा सूर्य, पुत्रसहित तमोने मंगलना देनारा थाओ ?

एवी रीतें चंद्रसुर्यना दर्शननो विधि जाणवो.

हमणाना कालमां तो तेने बदले बालकने आरिसो देखाडे छे.

तेवार पछी छठे दहाडे एटले, कुलधर्मे करीने छठी रात्रिए जागता थका जागरणमहोत्सव करे. एवी रीतें अग्यार दिवसो गये छते, अशुचि एवां जे जन्मकार्यों, जेवां के, नालछेद इत्यादि कार्यो समाप्त होते छते, बारमो दिवस आवते छते प्रभुनां मातापिताए घणां एवां भोजन आदिक तैयार कराव्यां; तथा ते वखते मित्रोने, ज्ञाति एटले पोतानी जातवालाउने, पुत्रादिक सगांउने, पित्राईउने, पुत्र तथा पुत्रीनां ससरा आदिकने, दास दासीउने तथा श्री ऋषभदेव प्रभुना वंशना क्षत्रियोने, तेउए जमवा माटे नोतरुं आप्युं. तेवार पछी पूजा आदिक कार्यो करीने तथा महामूल्यवालां वस्त्राभरणो पेहेरीने, भोजन समये, भोजन मंडपमां सारां आसनो बीछावी तेपर तेउ बेठा. तथा उपर कहेला स्वजनादिकनी साथे पीरसेलां भोजनोने, सेलडीनी पेठे थोडुं खाता थका वधारे तजता थका, खजुर आदिकनी पेठे, घणुं खाता अने थोडुं तजता थका, एकबीजाने मांहोमांहें भोजननी वस्तुउ आपता थका जमवा लाग्या; अर्थात् एवी रीतें भोजन करता हवा. एवी रीतें भोजन कर्या बाद तेउ बेठकनी जगोपर आवी बेठा; एवी रीतें रहेता थका त्यां शुद्ध एवुं पाणी पीता हवा. तेवार पछी परम पवित्र थइने, ते मित्रादिक वर्गनो, तेउए घणां एवां पुष्प तथा वस्त्र आदिकथी सत्कार कर्यो. तथा तेम करीने ते मित्रादिक वर्गने प्रभुनां मातापिताए कह्युं के, ज्यारथी आ बालक गर्भमां आवेल छे, त्यारथी अमो, सुवर्ण, धन, हीरा, माणेक विगेरेथी, वृद्धि पाम्यां छिए, तेथी तेमनुं "वर्धमान" एवुं गुणनिष्पन्न नाम पाडशुं

हवे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर प्रभुनां त्रण नामो जाणवा. तेउमांथी माता पिताए "वर्धमान"

एवुं प्रथम नाम पाड्युं; रागद्वेषनां अजावथी "श्रमण" एवुं बीजुं नाम जाणवुं. तथा जय अने जैरवमां निष्कंप रहेवाथी; तेमां जय एटले अकस्मात् वीजली आदिकथी उत्पन्न थएलो जय, तथा जैरव एटले सिंह आदिक, तथा जुख, तरस आदिक बावीस परिसहो, तथा देवता संबंधि चार उपसर्गो, तथा तेना जुदा जुदा जेदो लेखीए तो सोल उपसर्गो, तेने प्रजुए क्षमाए करीने सहन कर्या छे, पण असमर्थपणाए करीने नहीं; वली जद्रादिक तथा एकरात्रिकी आदिक प्रतिमाउना, तथा अजिग्रहोना पालनारा, तथा त्रण ज्ञानें करीने मनोहर होवाथी, तेम तेमणे रतिअरति पण सहन करेली छे, अर्थात् तेमां हर्षशोक तेमणें कर्यो नथी; एवी रीते ते ते गुणोनां ते जाजनरूप छे, अर्थात् रागद्वेषरहित छे; एम वृद्ध आचार्योनो मत छे; तथा वीर्य केहेतां पराक्रमें करीने संपन्न छे. एवी रीतनां प्रजुने, देवोए "श्रमण जगवान् महावीर" एवुं, नाम आप्युं छे. एवुं नाम देवोए केम कर्युं? तेने माटे वृद्ध संप्रदायनो मत छे.

एवी रीतें उपर वर्णवेली युक्तिए करीने सुरासुरनरेश्वरोए करेल छे, जन्मोत्सव जेमनो एवा ते वीरप्रजु बीजना चंद्रनी पेठे, अथवा कल्पवृक्षना अंकुरानी पेठे वृद्धि पामता थका अनुक्रमे केवा थया? ते कहे छे. चंद्रसरखुं तेमनुं मुख थयुं, ऐरावण हाथीसरखी तेमनी चाल थइ, तेमना होठ लाल थया, दांतोनी पंक्ति सफेद थइ, केशोनो समूह कालो थयो. हाथो कमलसरखा कोमल थया; श्वासोश्वास सुगंधि थयो, तथा कांतिए करीने पण ते उलसायमान थया. वली ते मति, श्रुत, तथा अवधिज्ञानसंयुत हता, वली तेमने पूर्वजवनुं पण स्मरण हतुं, रोगरहित हता, वली, मति, कांति, धीरज आदिक पोताना गुणोए करीने जगत्थी पण अधिक हता, तेम जगत्मां तिलक समान हता.

एक दहाडो ते वीरकुमार कौतुक रहित हता, तो पण, समान वयवाला कुमारोनां उपरोधथी तेमनी साथे क्रीडा करता थका, आमलकीक्रीडा करवाने माटे नगरनी बाहेर गया; त्यां ते कुमारो वृक्षपर चडवा आदिके करीने क्रीडा करता हता.


ताडजेवो रूप करीने प्रभुने लइजायछे.
पीपळीनो वृक्ष
आमली नो वृक्ष.
छोकरा रमत करेछे.

एटलामां सौधर्मेंद्र, पोतानी सजामां वीरप्रजुना धैर्यता आदिक गुणोनुं वर्णन करता हवा; तेमणे कह्युं के, हे देवो, हमणानां कालमां मनुष्य लोकमां श्री वर्धमान कुमार, बालक छे, तो पण महा पराक्रमी छे; तेने इंद्रादिक देवो पण बीवराववाने समर्थ नथी; ते सांजली कोइक मिथ्यादृष्टि देवें विचार्युं के, अहो! इंद्रने तो पोताना स्वामिपणाना अजिमानें करीने निरंकुश अने विचारोविनानी, एक पुंबडुं नाखी, नगरने दाटी देवाजेवा नहीं श्रद्धा आवे एवां वचनोनी चतुराइ आवी होय तेम लागे छे, के, जेथी एक मनुष्यकीटने पण आटली हदे चढावी दे छे. माटे आजेज त्यां जइ, तेने बीवरावीने, इंद्रनां वचनने हुं जूवुं पाडुं. एम विचारि ते देवें मनुष्यलोकमां आवीने, सांबेलां सरखा जाडा, चपल एवी बे जीजोवाला, जयंकर फुंफाडावाला, अत्यंत क्रूर आकारवाला, विस्तार पामता कोपवाला विस्तारवाली फणावाला, तथा चलकता मणिवाला, एवा सर्पे करीने, तेणे ते क्रीडा करवाना वृक्षने वींटयुं. ते जोइ सर्व कुमारो त्यांथी नाशी गया, त्यारे श्रीवीरकुमारें, जरा पण जय राख्याविना, पोते त्यां जइ, ते सर्पने हाथमां लेइ दूर फेंकी दीधो. त्यारे सघला कुमरो पाछा एकठा थइने, दडानी रमत करते छते, ते देव पण एक कुमारनुं रूप विकुर्वीने तेमनी साथे क्रीडा करवा लाग्यो. ते रमतमां नीचे प्रमाणे शरत हती. जे कोइ कुमार हारी जाय, ते जीतेला कुमारने पोतानी पीठपर चढावे. पछी ते देवकुमारें जाणीने हारी जइने, प्रजुने पोतानी पीठपर बेसाडी, पोतानुं सात ताड जेटलुं ऊंचुं शरीर कर्युं. त्यारे जगवानें पण तेनुं स्वरूप जाणीने, तेने पोतानी वज्र सरखी कठिन मुठीथी पीठपर मार्यो. त्यारे ते देव पण ते प्रहारनी वेदनाथी पीडित थयो थको, मशकनी पेठे संकोच पाम्यो. तेवार पछी ते देवें शक्रनुं वचन खरूं मानीने, पोतानुं स्वरूप प्रगट कर्युं, तथा सघलो आगलनो वृत्तांत कही सं-

ने वारंवार प्रजुनी तेणें क्षमा मागी. तथा तेम करीने ते पोताने स्थानकें गयो. ते वखते इंद्रें

थइने प्रजुनुं "वीर" एवुं नाम कर्युं!

रीतें आमलकीक्रीडानुं वृत्तांत जाणवुं.

हवे प्रजुनां मातापिता तेमने आठ वर्षनी उमरना थया जाणीने, अति मोहथी, आजूषणो आदिक पहेरावीने पाठशालामां लेइ गया. ते वखते मातपिताए लग्नस्थितिपूर्वक घणुं धन खरचीने मोटो उत्सव कर्यो. ते वखते हाथी तथा घोमाओना समूहें करीने, तथा मनोहर एवा बाजुबंध तथा हारोए करीने, तथा सोनानां घडावेलां एवां विंटी, कुंडल तथा कंकण आदिकें करीने, तथा अत्यंत मनोहर एवां पंच वर्णनां रेशमी कापडे करीने, स्वजन आदिक राजाओनो तेमणे जक्तिपूर्वक सत्कार कर्यो. तथा पंमितने माटे नाना प्रकारनां वस्त्र, आजूषणो, नालीयेर आदिक तथा निशालीआओने वेंचवामाटे, सोपारी, शींगोडां, खजुर, साकर, खांड, चारोली, तथा डाक आदिक मनोहर खावानी वस्तुओ पण तेमणे साथे लीधी. तथा सोनां, रुपां अने रत्नोनां मिश्रणथी बनावेलां पुस्तकोनां उपकरणो, तथा मनोहर, खडीया, लेखण तथा पाटीयो पण साथे लीधां. वली सरस्वती देवीनी मूर्तिनी पूजा माटे, मनोहर नवुं, तथा घणां रत्नोथी जमित एवुं सोनानुं जूषण, तथा निशालीआओ माटे विविध प्रकारनां वस्त्रो पण साथे लीधां, एवी रीतें सघली जणवानी सामग्रीओ सहित कुलनी वृद्ध स्त्रियोथी, तीर्थोदकें करीने स्नान कराएला, पेहेरेलां एवा घणा जे अलंकारो, तेउए करीने कांतियुक्त थएला, मस्तकपर मेघामंबर सरखुं धारण करेल छे, छत्र जेणें एवा, चार चामरोथी वींजातुं छे, अंग जेमनुं एवा, चतुरंगी सेनाथी वींटाएला, वागतां छे विविध वाजांउ जेनी आगल एवा, ते वीरप्रजु पंमितने घेर जता हवा. ते वखते पंमित पण, राजानां पुत्रने जणाववाने उचित, एवां, क्षीरसमुद्रना पाणीसरखा उज्ज्वल धोतीयां, सोनानी जनोइ, तथा केसरनां तिलक आदिकनी सामग्री करतो हवो.

हवे ते वखते इंद्रनुं आसन, हालतां पीपलानां पाननी पेठे, तथा हाथीना काननी पेठे, तथा कपटीना ध्याननी पेठे, तथा राजाना माननी पेठे चलायमान थयुं. तेथी अवधिज्ञानें करीने ते वृत्तांत जाण्या बाद इंद्र देवोने कहेवा लाग्या के, अहो! आ तो मोटुं आश्चर्य छे के, प्रजुने पण निशाले जणवामाटे मोकलाय छे!!! माटे ते तो, जेम आंबापर तोरण, अमृतमां मिठाश, ब्राह्मीने पाठनी विधि

चित्र २८



[illegible]

चंद्रमां सफेदाइनुं आरोपण, तथा कुंदनमां सुवर्णनुं स्थापन, एटलानी माफक प्रजुने पण पाठशालामां जणवामाटे मोकलवानुं कार्य ठे. तीर्थंकर प्रजुपासे जे वचनो बोलवां ठे, ते तो मानी पासे मामानुं वर्णन, लंका नगरीप्रते समुद्रना मोजाउंनुं वर्णन, तथा समुद्रने लवणनी जेट आपवा जेवुं ठे. केमके जिनेश्वरो तो जणयाविना विद्यावान्, द्रव्यविना परमेश्वर, तथा आजूषणविना मनोहर ठे, माटे एवा प्रजुनुं तमारुं रक्षण करो? एम कही, ते इंद्र तुरत ब्राह्मणनुं स्वरूप करीने, ज्यां प्रजु हता, ते पंडितने घेर आव्यो. तथा त्यां प्रजुने पंडितने योग्य एवा आसनपर बेसाडीने, पंडितना पण मनमां रहेला सं-
प्रजुने पूठतो हवो. ते जोइ लोको विचारवा लाग्या के, आ बालक ते आनो शो उत्तर देइ श-
? एम विचारता हता, तेटलामां श्री वीरप्रजूए तेना सघला उत्तरो दीधा. त्यारथी "जिनेंद्र"
व्याकरण थयुं. ए जोइ सघला लोको आश्चर्य पाम्या, तथा पंडित पण मनमां चिंतववा लाग्यो
! आ बालक एवा वर्धमान कुमारें पण आटली बधि विद्यानो क्यां अज्यास कर्यो होशे!!!
वली आ केटलुं बधुं आश्चर्य ठे के, बालपणाथी मने पडेला जे संदेहोनुं कोइए पण निराकरण
, ते सघला संदेहो, आ बालक एवा पण वीरप्रजूए दूर कर्या. वली आवी विद्या जाणना-
रनुं गंजीरपणुं!! अथवा आवा महात्माउने ते युक्तज ठे. केमके मेघ पण शरद् ऋतुमां
ठे, ते वरसतो नथी, अने वर्षा ऋतुमां जे गाजतो नथी ते वरसे ठे; एवीज रीतें नीच मा
णस पण ठे, अने करतो नथी; अने उत्तम माणस बोलता नथी, पण करी देखाडे ठे. तेमज असार पदार्थनो प्रायें मोटो आडंबर होय, केमके जेवो कांसानो अवाज थाय ठे, तेवो सोनानो अवाज थतो नथी. इत्यादिक विचार करता एवा पंडितने इंद्रें कह्युं के, हे विप्र! तारे मनमां आमने मनुष्य मात्र एवा बालक नहीं जाणवा, पण आने तो सघलां शास्त्रोना पारने पहोंचेला एवा, श्री वीर जिनेश्वर तारे जाणवा. इत्यादिक श्री वीरप्रजुनी स्तुति करीने इंद्र पोताने स्थानकें गयो.

श्री वीरप्रजु पण सघला ज्ञातकुलनां क्षत्रियोथी परिवारयुक्त थया थका, पोताने घेर आव्या. एवी

रीतें प्रभुने पाठशालामां मोकलवानो अधिकार जाणवो. एवी रीतें प्रभूनी बाल्यावस्था गयाबाद यौवन युक्त थये छते, तथा भोगो भोगववाने समर्थ थये छते, प्रभुने मातापिताए शुभ मुहूर्त्तमां समरवीर राजानी यशोदा नामें पुत्री परणावी. तेणीनी साथे सुख भोगवतां प्रभूने एक पुत्री थइ. अने तेणीने पण कोइ मोटा राजाना पुत्र, एवा पोताना भाणेज जमाली साथे परणावी. अने तेणीने पण शेषवती नामनी पुत्री थइ, अने ते प्रभूनी दौहित्री थाय;

हवे दक्ष केहेतां सकल कलाओमा कुशल, तथा निपुण छे प्रतिज्ञा जेनी एवा, ते प्रभु पोतानी प्रतिज्ञाने संपूर्ण रीतें पालता हवा.

वली अत्यंत सुंदर रूपवाला, तथा सर्व प्रकारना गुणोए करीने आलिंगित थएला, तथा सरल, तथा विनयवान्, तथा प्रख्यात, तथा ज्ञात केहेतां जे सिद्धार्थ राजा, तेना पुत्र, तथा केवल पुत्रमात्रज एटलुंज नहीं. पण ज्ञातकुलने विषे चंद्रसरखा, वज्रऋषभनाराच संघयणवाला, तथा मनोहर होवाथी समचतुरस्र संस्थानवाला, तथा मनोहर छे देह जेमनो एवा, तथा वैदेहदिन्न केहेतां त्रिशलाना पुत्र, एटले विदेहा केहेतां जे त्रिशला क्षत्रियाणी, तेणीनी कुक्षिये उत्पन्न थयेलुं छे, शरीर जेमनुं एवा, गृहस्थावासमां सुकुमाल एवा, (केमके दीक्षा वखतें तो परिसहो सहन करवाथी सुकुमालपणाए करीने रहित हता) श्री वीरप्रभु त्रीस वर्षो सुधि गृहस्थावासमां रहीने, मातापिता ज्यारे देवलोके गया, त्यारे नंदिवर्धन आदिक वडीलोनी लीधेल छे रजा जेमणें एवा; एटले प्रभुए गर्भमांज होते छतें प्रतिज्ञा करी हती के, मातापिताना बेठां हुं दीक्षा लेइश नहीं; एवी रीतनी प्रतिज्ञा संपूर्ण थइ छे जेमनी एवा. अहीं आवश्यकसूत्रनां अभिप्रायें, प्रभूने अठावीश वर्षो वीत्याबाद, तेमनां माता पिता चोथे स्वर्गे गयां, अने आचारांगनां अभिप्रायें अनशन करी अच्युत देवलोकें गया. तेवार पछी प्रभूए पोतानां मोटा भाइ नंदिवर्धनने कह्युं के, हे राजन्, मारो अभिग्रह संपूर्ण थयो छे, माटे हुं हवे दीक्षा लेइश. त्यारे नंदिवर्धने कह्युं के, हे भाइ, मातपिताना विरहथी खिन्न थएला एवा मने, आ वात क-

चित्र २९

तिक

श्रीमहावीर

देव.

भगवान्

हीने, ढुं था पर खार मेखला

हीने, हुं घा पर खार मेळवा जेवुं केम करे छे ? त्यारे प्रजूए कह्युं के, हे जाइ, पिता, माता, ज्राता, बेहेन विगेरेनो संबंध आ जीव अनेकवार परस्परना स्नेहथी बांधी चुक्यो छे; माटे शामाटे आपें प्रतिबंध करवो जोइए ? त्यारे नंदिवर्धनें कह्युं के, हे जाइ, ते सघलुं हुं जाणुं छुं, पण प्राणथकी पण अत्यंत वहाला एवा जे तमो, तेनो विरह मने अत्यंत पीडा उपजावे छे. माटे मारा उपरोधथी तमो बे वर्षोसुधि घेरमां रहो ? त्यारे प्रजूए कह्युं के, ठीक; पण हे राजन्, मारामाटे तमारे कोइ पण जातनो आरंज करवो नहीं; हुं प्रासुक एवो आहार ग्रहण करीने रहीश; त्यारे नंदिवर्धन राजाए पण ते कबूल कर्युं. तेथी बीजां बे वर्षोसुधि वस्त्रालंकारथी जूषित एवा प्रजु पण, प्रासुक अने एषणीय एवा आहारथी, सचित्त पाणीने पण नहीं पीता थका, घरमां रह्या. तेवारथी मांडी प्रजुए अचित्त पाणीथी पण सर्वस्नान कर्युं नहीं, तथा त्यारथी जीवितपर्यंत ब्रह्मचर्य तेमणें पाळ्युं. पण दीक्षोत्सवमां तो सचित्त पाणीथी प्रजुए स्नान कर्युं छे, केमके, तेवो कल्प केहेतां आचार छे. एवी रीतें प्रजूने वैराग्ययुक्त जाणीने, चौद स्वप्नोथी सूचित एवा चक्रवर्त्तिपणानी बुद्धिथी तेमनी सेवा करता एवा, श्रेणिक, तथा चंडप्रद्योत आदिक राजकुमारो पोतपोताने स्थानकें गया.

एवी रीतें प्रजूनी प्रतिज्ञा एक बाजुए समाप्त थइ, अने बीजी तरफ लोकांतिक देवोए प्रजुने विनंति करीके, हे जगवान् तीर्थ प्रवर्त्तावो ?

लोकांतिक एटले संसारने अंते रहेला देवो, अर्थात् एकावतारी देवो, केमके जो तेम न मानीए, तो ब्रह्मलोकमां रहेनारा, एवा ते देवोने, लोकांतिकपणुं घटी शकतुं नथी; ते देवो नव प्रकारना छे. तेउनां नाम, सारस्वत, आदित्य, वह्नि, वरूण, गर्द्दतोय, तुषित, अव्याबाध, अग्गिच्च अने अरिष्ट.

हवे प्रभु जोके स्वयंबुद्ध हता, तो पण आम करवुंः ए तेमनो आचार छे. तेज कहे छे.

जित एटले अवश्यजावें करीने छे, कल्प केहेता आचार जेउनो, ते जितकल्पिक कहेवाय; एवा ते देवो इष्ट, मनोहर आदिक गुणोवाळी वाणीथी प्रजूने आंतराविना अजिनंदता थका, तथा स्तुति क-

रता थका एम कहेवा लाग्या के, हे नंदा! केतां हे समृद्धिवाला प्रजु तमो जय पामो? जय पामो? तमो जद्र पामो? बोध पामो? हे जगवान्, हे लोकना नाथ, सघला जगतना जीवोने हितकारी एवा धर्मतीर्थने प्रवर्त्तावो? केमके ते तीर्थ हितने करनारुं तथा मोक्षरूपी सुखने करनारुं थशे, एम कही तेउं जय जय शब्द करवा लाग्या.

हवे श्रमण जगवंत श्री महावीर प्रजुने तो, मनुष्यने उचित एवो जे विवाहादिक गृहस्थधर्म तेथी पेहेलांज, अनुपम, तथा उपयोगवालां, तथा केवलज्ञान उपजे त्यांसुधि स्थिर रहे एवां, अवधिज्ञान अने अवधिदर्शन तो हतांज; अने ते आजोगिक ज्ञान दर्शनें करीने, पोताना दिक्षाकालने जाणता पण हता.

हवे प्रजु सुवर्ण आदिक सघलुं तजीने, तथा वली शुं करीने, तो के, विशेष प्रकारें ते सघलुं तजीने, तथा वली शुं करीने? तो के, ते सुवर्ण आदिकने अस्थिर मानीने, ते सघलुं याचको प्रते, जागे पमतुं वेहेंची आपीने, अथवा आटलुं आने देवुं, आटलुं आने देवुं, एम विचार करीने, गोत्रियो प्रते तेनो जाग पामी आपीने, प्रजु निकल्या. आ सूत्रें करीने प्रजूनुं वार्षिकदान सूचव्युं. अने ते नीचे प्रमाणे जाणवुं. जगवान् दीक्षाना दिवसथी पेहेलानुं एक वर्ष बाकी रहे त्यारे, वार्षिकदान देवा मांडे छे; अने ते दान सूर्योदयथी मांमीने, कल्पवर्तवलापर्यंत आपे; एवी रीते हमेश प्रते प्रजु एक क्रोड ने आठ लाख सोनैया आपे. वली "जेने जे जोइए, ते लो"? एवी रीतनी उद्घोषणापूर्वक जे कंइ जेने जोइए, ते प्रजु तेने आपे छे. अने ते सघलुं द्रव्य इंद्रना हुकमथी सघला देवो पुरुं पामी आपे. एवी रीतें एक वर्षमा त्रणसो अठ्यासी क्रोम, अने एंसी लाख सोनैया देवाय.

ते वर्षीदाननुं अहीं कवि वर्णन करे छे के,

वरसतुं एवुं जे ते वर्षिदान, तेथी नाश थएल छे, दारिद्र्यरूपी दावानलो जेउंना, अने तैयार करेला एवा घोमाउंनी पंक्ति, वस्त्र तथा आजुषणोथी नथी ओलखी शकाती कांति जेउंनी, एवा मागण लोको ज्यारे पोताने घेर दान लेइने पाछा आव्या, त्यारे तेमनी स्त्रीउंए पण ओलखी नहीं शकवाथी ॥६१॥

चित्र १०





महोत्सवनो
वरघोडो



सोमन आदिक देइने तेउने खातरी करवी पड़ी, तथा केटलाक मश्करा लोकोए तो पोतानुं कीने तेमने कयुं के, हे स्वामि, तमो कोण ठो ?

एवी रीतें दान देइने फरीने जगवानें नंदिवर्धनने पुछ्युं, के हे राजन्, तमारा कहेवा प्रमाणे हवे अवधि संपूर्ण थयो ठे, माटे हवे हुं दीक्षा लेउं डुं. ते सांजली नंदिवर्धनें पण ध्वज, तोरण विगेरेथी बजार, तथा आ कुंडपुरनगरने देवलोक सरखुं बनाव्युं. ते वार पठी नंदिवर्धन राजा, तथा इंद्र आदिके, सोनानां, रुपानां, मणिना, सोनारुपानां, सोनां मणिनां, रुपामणिनां, सोना रूपा मणिना, तथा माटीनां, दरेकनां एक हजार ने आठ, कलशो, तथा बीजी पण सघली सामग्री करावी.

ते वार पठी अच्युतेंद्रादिक चोसठ इंद्रें अजिषेक करते ठते, ते देवोए करेला कलशो, देव संबंधि प्रजावथी राजाए करावेला कलशोमां पेठा, अने तेथी तेउ अत्यंत शोजवा लाग्या. पठी नंदिवर्धन राजाए प्रजुने पूर्व सन्मुख बेसाडीने, देवोए लावेला क्षीरसमुद्रना पाणीथी, तथा सर्वतीर्थनी माटीथी, तथा सर्व औषधिउथी अजिषेक कर्यो. ते वखते इंद्रो हाथमां, झारी तथा आरिसाउ सहित, जय, जय शब्द करता थका अगाडी उजा रह्या. एवी रीतें प्रजुने स्नान कराव्याबाद, गंधकाषाय्य नामना वस्त्रथी लुठेलुं ठे, शरीर जेनुं, तथा दिव्य चंदनथी लेपनयुक्त करेलां ठे, गात्रो जेनां, तथा कल्पवृक्षना पुष्पोनी मालाउथी मनोहर थएल ठे, कंठनो जाग जेनो, तथा जेनां ठेडाउमां सोनुं जडेलुं ठे. एवां स्वठ उज्वल, तथा लाखोनां मूल्यनां श्वेत वस्त्रोथी वींटाएलुं ठे, शरीर जेनुं तथा हारथी शोजतुं ठे, वक्षःस्थल जेनुं, तथा बाजुबंध अने कडांउथी शोजतो ठे, जुजदंड जेमनो, कुंडलथी शोजता ठे, गाल जेमना, एवा प्रजु, श्रीनंदिवर्धन राजाए करावेली तथा पचाश धनुष लांबी, अने पचीश धनुष पोहोली, तथा ठत्रीश धनुष उंची, तथा घणा स्तंजोथी शोजती, तथा मणि अने सुवर्णथी विचित्र लागती, तथा दिव्य प्रजावथी अंदर समाएली ठे, देवोए करेली पण पालखी जेमां, एवी चंद्रप्रजा नामनी पालखीमां बेसीने प्रजु दीक्षा लेवामाटे चालवा लाग्या.

बाकीनुं वर्णन सूत्रकार पोतेज कहे छे.

ते कालनेविषे तथा ते समयने विषे मागशर वदी दशमीने दिवसे, पूर्व दिशाप्रते छाया जते पाछलनी पोरसी संपूर्ण होते छते, अने ते पण प्रमाणने प्राप्त होते छते, एटले जरा पण न्यूनाधिक नहीं, एवी रीतें होते छते सुव्रत नामना दिवसे, विजय नामना मुहूर्ते, करेल छे, छठनो तप जेमणें, तथा शुद्ध छे लेश्या जेमनी, एवा ते प्रभु आगल वर्णवेली चंद्रप्रभा नामनी पालखीमां, पूर्वदिशासन्मुख सिंहासनपर बेठा. त्यां प्रभुनी जमणी बाजुए कुलनी महत्तरिका, हंसना लक्षणें करी युक्त एवा पटशाटकने लेइने बेठी, तथा डाबी बाजुए प्रभुनी धावमाता दीक्षानां उपकरणो लेइने बेठी, तथा पाछलनां भागमां एक तरुण स्त्री, उत्तम शृंगार पेहेरीने, तथा हाथमां श्वेत छत्र लेइने बेठी. इशान खुणामां एक स्त्री संपूर्ण भरेलो कलश लेइने बेठी, अग्निखुणमां एक मणिमय एवो हाथमां पंखो लेइने सिंहासनपर बेठी; पछी नंदिवर्धन राजाए हुकम करेला माणसो, जेटलामां ते शिबिका उपाडे छे, तेटलामां शक्रेंद्रे दक्षिण तरफनी उपरनी बाहा उपाडी, इशानेंद्रें उत्तर तरफनी उपरनी बाहा उपाडी; चमरेंद्रें, दक्षिण तरफनी नीचेनी बाहा उपाडी, तथा बलींद्रें उत्तर तरफनी नीचेनी बाहा उपाडी, अने बाकीनां भवनपति, व्यंतर, ज्योतिष्क, तथा वैमानिकना इंद्रो, के जेओ चलायमान थता कुंडल आदिक आभरणोए करीने मनोहर लागता हता, तथा पंच वर्णनां पुष्पोनी वृष्टि करता हता, तथा दुंदुभि वगाडता हता, तेओ पोतपोतानी योग्यता प्रमाणे ते पालखीने उपाडता हवा. पछी शक्रेंद्र तथा इशानेंद्र ते बाहाने छोडीने, प्रभुने चामर वींझवा लाग्या. एवी रीतें प्रभु शिबिकापर चढते छते गगनतल देवोए करीने शरद् ऋतुमां रहेलां पद्मसरोवर सरखुं, प्रफुल्लित थएलां अलशीनां वन सरखुं, करेणना वन सरखुं, चंपानां वनसरखुं, तथा तिलकनां वन सरखुं मनोहर रीतें शोभवा लाग्युं. तेम अंतर रहित वागती, एवी भंभा, भेरी, मृदंग, दुंदुभि, तथा शंख आदिक अनेक वाजीत्रोनां नादो आकाशतलमां विस्तार पामवा लाग्या, ते नादथी नगरनी स्त्रीओ पोतपोतानां कार्यो तजीने, आवती

, पोतानी विविध प्रकारनी चेष्टाओथी माणसोने आश्चर्य करती हवी. केटलीक बालिकाओ
, पोताना गालोपर काजलना अंको करती हवी, अने आंखमां कस्तुरी नाखती हवी,
नुपुर पेहेरती हवी, तथा पगमां कंठो पेहेरती हवी. कोइए तो केडपर हार पेहेर्यो, तथा घम-
घमती घुघरीवालो कंदोरो गलामां पेहेर्यो, तथा गोशीर्ष चंदनथी पगने रंग्या, अने अलताथी शरीरने
रंग्युं. कोइक बालिका तो अरधी स्नान करेली, अने तेथी जेथीना छुटा चोटलामांथी गलतुं छे पाणी,
जेथीनुं, एवी पेहेलां त्रास, तथा जाएयाबाद कोने हास्य न करावती हवी ? कोइक मुग्ध बालाना वस्त्रो
ढीलां थइ खसी जवाथी, तेणी हाथमां केवल नाडी पकडीनेज रहेली हती, तो पण सघला लोको
प्रभुने जोवामां लागते छते, तेणीने जरा पण शरम लागी नहीं. कोइक तरुण स्त्री तो, उत्सुकपणाथी
पोताना रडता बालकने तजीने, तथा हाथमां तेने बदले बीलाडाने लेइने, केडपर बेसाडीने रस्ते जती
थकी कोने हास्य नहीं करावती हवी ? कोइक स्त्री तो कहेवा लागी के, प्रभुनुं अहो महारूप, अहो
तेज, अहो शरीरनुं सौभाग्य केवुं छे ! ! ! हुं तो विधात्राना हाथनी आ चतुराइ जोइ, तेनां डुखणा
लेउं. विकस्वर थएल छे कपोल जेणीना, एवी कोइक स्त्री तो, प्रभुने जोवामा अत्यंत लोलुप थवाथी,
पडी गएलां सोनानां आभूषणोने जाणती पण न हती. कोइक चंचल नेत्रवाली स्त्री तो, पोता
ना हस्तकमलथी पवित्र मोतीओ उछालवा लागी. अने केटलीको तो मंगलोने कोमल स्वरथी गावा लागी,
तथा केटलीको तो हर्षथी संपूर्ण थइने नाचवा लागी.

एवी रीतें नगरनी स्त्रियोथी जोवातो छे, विजयनो प्रकर्ष जेमनो, एवा प्रभुनी अगाडी पेहेलां तो
रत्नमय आठ मंगलो चालतां हवां. ते नीचे प्रमाणे, स्वस्तिक, श्रीवत्स, नंदावर्त्त, वर्धमानक, भद्रासन,
कलश, मत्स्ययुग, अने दर्पण; तेनी पछी पूर्ण कलश, झारी, चामर, पताका, छत्र, मणि अने सुवर्णमय
पादपीठ, सिंहासन, त्यारबाद स्वार विनाना एकसो आठ हाथी, तेटलाज घोडा, तेटलाज घंटा, अने
पताकाओए करीने मनोहर लागता रथो, तेटलाज उत्तम पुरुषो, तेवार पछी अनुक्रमें, घोडा, हाथी,

रथ, तथा पालानां सैन्यो, तेवार पछी, एक हजार नानी पताकाओथी मंडित थएलो, तथा एक हजार जोजन उंचो, एवो ध्वज, तेवार पछी, खड्ग धरनाराओ, तेवारपछी भालांवालाओ, तेवारपछी ढालवालाओ, तेवार पछी हास्य करावनाराओ, तेवारपछी मश्कराओ, तेवार पछी जय जय शब्द करती कंदर्पिकाओ, तेवार पछी घणां उग्र कुलना, भोगकुलना राजाओ, क्षत्रियो, कोटवालो, मांडलिको, कौटुंबिको, शेठीआओ, सार्थवाहो, देवो, देविओ विगेरे प्रभुनी अगाडी चालता हता, तेवारपछी, देव, मनुष्य अने असुरो सहित, एवी पर्षदाए करीने, सारी रीतें अनुगमन करातुं, तथा अगाडी शंख वगाडनाराओ, चक्र धारण करनाराओ, हल धारण करनाराओ एटले गलामां सोनानां लांगलना आकारनां आभुषण धरनारा भट्ट विशेषो, मुखथी चाटु वचन बोलनारा माणसो, पोतानी खांधपर बेसाडेल छे, माणसो, जेओए एवा माणसो, तथा मागध एटले बिरुदावली बोलनारा माणसो, तथा घंटा लेइ चालनारा राउलीआ माणसो, ते सघलाओथी विंटाएला प्रभुने कुलना वडिल आदिक स्वजनो, इष्टादिक विशेषणोवाली वाणीओए करीने प्रभुने अभिनंदता थका बोलवा लाग्या के, "जय जय नंदा, जय जय भदा" एटले हे आनंद देनारा, तथा कल्याण करनारा प्रभु, तमो जय पामो? तमोने भद्र थाओ? तथा अजित् एवी इंद्रियोने, अतिचार रहित एवा ज्ञान दर्शन, चारित्रथी वश करो? तथा तमोए वश करेल एवा श्रमणधर्मने तमो पालो? वली हे प्रभु, तमोए विघ्नने जीत्या छे, तो पण तमो सिद्धिमांहें जइ वसो? अर्थात् तमो त्यां मोक्षमां अंतराय रहित रहो? तथा रागद्वेषरूपी मल्लनो तमो निश्चयपूर्वक नाश करो? शाथी? के बाह्य अने आभ्यंतर एवा तपथी, तथा संतोष अने धैर्यतामां प्रवीण थया थका आठ कर्मोरुपी शत्रुओनुं मर्दन करो? शाथी? तो के, उत्तम एवा शुक्ल ध्यानथी. वली हे वीर, त्रण लोकरूपी जे मल्लयुद्धनो अखाडो, तेनी अंदर आराधनपताकाने तमो ग्रहण करो? तथा तिमिर रहित, एवुं अनुपम जे केवलज्ञान तेने, अने मोक्षरूपी परम पदने तमो प्राप्त थाओ? केवी रीतें? तो के, जिनेश्वर प्रभूए कहेला मार्गवडे करीने. शुं करीने? तो के परिसहोनी सेनाने हणीने;

हे मावसोने विषे वृषभसमान, तथा घणा दिवसो सुधि, घणा पखवाडीयांओ सुधि, तथा घणा सुधि, तथा वळी एवी हेमंत आदिक बे मासना परिमाणवाळी ऋतुओ सुधि, तथा वळी अमासीयो सुधि, तथा घणां वर्षोसुधि, उपसर्गोथी निर्भय थया थका, विजळी, सिंह आदिकनां भयोने क्षमाए करीने सहन करता थका तमो जय पामो? वळी तमारा धर्ममां विघ्नोनो अभाव थाओ? एम कही भजन लोको जय जय शब्दो करवा लाग्या. तेवार पछी श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामि क्षत्रियकुंड नगरनी मध्यमां थइने, ज्यां ज्ञातखंड नामे वन हतुं, तथा ज्यां अशोक वृक्ष हतुं, त्यां आव्या. केवी रीतें आव्या? तो के, हजारो एवां नेत्रोनी पंक्तिथी जोवाता, तथा वारंवार जोवातुं छे, सौंदर्य

एवा; वळी केवा? तो के, श्रेणिबंध थएला लोकोना मुखनी हजारो गमे पंक्तियोथी, वारंवार स्तुति कराता; वळी केवा? तो के, हजारो गमे हृदयनी पंक्तियोथी, तमो जय पामो? जीवो? इत्यादि ध्याने करीने समृद्धिने प्राप्त थता, वळी केवा? तो के, हजारो गमे मनोरथोनी पंक्तिथी विशेष प्रकारें स्पर्श कराता, अर्थात् आपणे एमना सेवको थइए तो सारुं, एवी रीते लोकोथी चिंतवाता; वळी केवा? तो के, कांति, रूप, अने गुणोए करीने प्रार्थना कराता, अर्थात् स्वामिपणाए करीने वांछा कराता, वळी केवा? तो के, आंगळीओनी हजारो पंक्तिथी देखाडाता, वळी केवा? तो के, जमणा हाथथी हजारो स्त्रीपुरुषोनां नमस्कारोने ग्रहण कराता, वळी केवा? तो के, भवनोनी हजारो गमे श्रेणियोने उल्लंघन कराता, वळी केवा? तो के, वीणा, तलताल, आदिक आगळ वर्णववामां आवेला गीत वाजित्र विगेरेना शब्दोथी, तथा मनोहर एवा जय जय शब्दथी मिश्रित थएला, एवा अति कोमळ मनुष्योनां शब्दे करीने सावधान थता, तथा समस्त छत्रादिक राज्यचिन्हनी ऋद्धिए करीने, तथा आभुषण आदिकनी सर्व प्रकारनी कांतिए करीने, तथा हाथी, घोडा आदिक सर्व प्रकारनी सेनाए करीने, तथा शिबिकादिक सर्व प्रकारनां वाहने करीने, तथा सघळा महाजनोनां मेळावाए करीने, तथा सर्व प्रकारना आदरें करीने, तथा सर्व प्रकारनी संपदाए करीने, तथा समस्त शोभाए करीने, तथा सर्व हर्षथी थता

उत्सुकपणाए करीने, तथा सर्व स्वजनोना मेलायें करीने, तथा अढार एवा नैगमादिक नगरमां रहेती प्रजाओए करीने, तथा नाटकोए करीने, तथा सर्व तालचरोए करीने, तथा अंतःपुरें करीने, तथा सर्व गंध, माल्य अने अलंकारोनी शोभाए करीने, तथा सर्व वाजीत्रोनां एकठा मलता एवा महाशब्दें करीने, एवी रीतनी ऋद्धिथी व्रत लेवामाटे जता प्रभुनी पाछल चतुरंगी सेनाथी वींटाएलो, तथा मनोहर छत्र चामरथी शोभतो, एवो नंदिवर्धन राजा पण जवा लाग्यो. एवी रीतें अनुक्रमें ज्ञातवनखंडनी अंदर ज्यां अशोकवृक्ष हतुं, त्यां प्रभु आव्या. तथा ते वृक्षनी नीचे प्रभुए शिबिकाने स्थापन करावी. तथा ते स्थापीने तेमांथी प्रभु नीचे उतर्या. एम करीने प्रभु पोतानी मेलेज आभूषण आदिकने तजवा लाग्या. ते एवी रीतें के, आंगलीएथी वींटीओ, हाथपरथी वीरवलयो, भुजापरथी बाजुबंध, कंठथी हार, कानथी कुंडल, तथा मस्तकपरथी मुकुट पण उतार्यो. ते सघलां आभूषणो कुलनी महत्तराए हंसलक्षणवाली साडिमां लीधां. ते लेइने तेणीए "इख्खागकुल समुप्पन्नेसिणं तुमं जाया" इत्यादि पाठ कह्यो. एम कही प्रभुने वांदीने ते एकबाजु खसी गइ. तेवार पछी प्रभुए एक मुष्टिथी दाढीमुछना वालोनो, तथा चार मुष्टिथी मस्तकपरना केशोनो, एम पंचमुष्टिथी पोतानी मेलेज लोच कर्यो. तेम करीने छठना तपसहित, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र साथे चंद्रनो योग आवते छते, इंद्रे डाबा खभापर धारण करेला एक देवदुष्य वस्त्रने लेइने, प्रभुए अणगारपणुं लीधुं.

एवी रीतें प्रभु एकला, एटले रागद्वेषना सहाय विना, अद्वितीय एटले, जेम ऋषभदेव प्रभुए चोसठ हजार राजाओ साथे, मल्लिनाथ अने पार्श्वनाथजीए त्रणसो साथे, वासुपूज्यजीए छसो साथे, तथा बाकीना जिनेश्वरोए जेम एक हजार साथे दीक्षा लीधी हती, तेम वीर भगवाननी साथे कोइ पण नहोतुं, तेथी अद्वितीय एटले एकाकी, तथा द्रव्यथी केशलोचे करीने मुंडित थएला, तथा भावथी क्रोधादिकने दूर करवाथी मुंडित थएला, प्रभु आगारीपणानो त्याग करी, एटले अनागारताने (साधुपणाने) प्राप्त थया. तेनो विधि नीचेमुजब जाणवो. एवी रीतें उपर कहेवा प्रमाणे कर्यो छे, पंचमूष्टि

भगवान

नंदीव न

जोय जेवे एवा, ते प्रभु, ज्यारे सामायिक करवाने इच्छता हवा, त्यारे इंद्रे सघळो वाजींत्र आदिकनो कोलाहल बंध कराव्यो. त्यारे प्रभुए "नमो सिद्धाणं" इत्यादिक कथनपूर्वक "करेमि सामाइयं सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि" इत्यादि पाठ उच्चारण कर्यो. पण "भंते" एवो पाठ बोल्या नहीं, केमके एवो तेमनो कल्प केहेतां आचार छे. एवी रीते चारित्र ग्रहण कर्युं के, तुरतज प्रभुने चोथुं मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेवार पछी इंद्रादिक देवो प्रभुने वांदीने, नंदीश्वर द्वीपमां यात्रा करीने पोतपोताने स्थानके गया.

एवी रीते महोपाध्याय श्री कीर्तिविजयगणिना शिष्योपाध्याय श्री विनयविजयगणिए रचेली कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीकाना गुजराती भाषांतरमां पांचमो क्षण समाप्त थयो. श्रीरस्तु.

॥ षष्ठ व्याख्यानं प्रारभ्यते ॥

तेवार पछी चार ज्ञानवाळा भगवान्, बंधुवर्गनी रजा लेइने, विहार करवा लाग्या. बंधु वर्ग पण ज्यांसुधि प्रभु दृष्टिगोचर रह्या, त्यांसुधि, त्यां ठेरीने "हे वीर" हवे अमो तमारा विनां शून्य वनसरखा घेरप्रते केम जइशुं? वळी हे बंधु, कोनी साथे अमो वातचित करीने सुख भोगवीशुं? तथा हवे कोनी साथे भोजन करीशुं? वळी सघळां कार्योमां हे वीर, हे वीर, एम बोलावी अमो तमारो आश्रय लेता, हवे अमो कोनो आश्रय लइशुं? वळी हे बांधव, अमारी आंखोने अमृतांजन सरखुं तमारुं दर्शन हवे अमोने क्यारे थशे? वळी रागरहित चित्तवाळा एवा पण तमो, अमोने क्यारे संभारशो? एम बोलता थका, अश्रुसहित आंखोवाळा थया थका, केटलाक कष्टथी पोताने घेर गया.

हवे, प्रभुने, दीक्षा महोत्सव वखते, देवोए जे गोशीर्षचंदन आदिकथी, तथा पुष्पोए करीने जे पूज्या हता, तेनो सुगंध चार महिनाथी पण अधिक प्रभुनां शरीरपर रह्यो हतो, अने ते गंधथी खेंचाइने भमराओ आवीने प्रभुने डंस देवा लाग्या. केटलाक युवानीआओ प्रभुपासे ते सुगंधि मागवा लाग्या, पण प्रभु तो मौन रह्या, तेथी तेओ क्रोधायमान थइने प्रभुने आकरा उपसर्गो करता हवा.

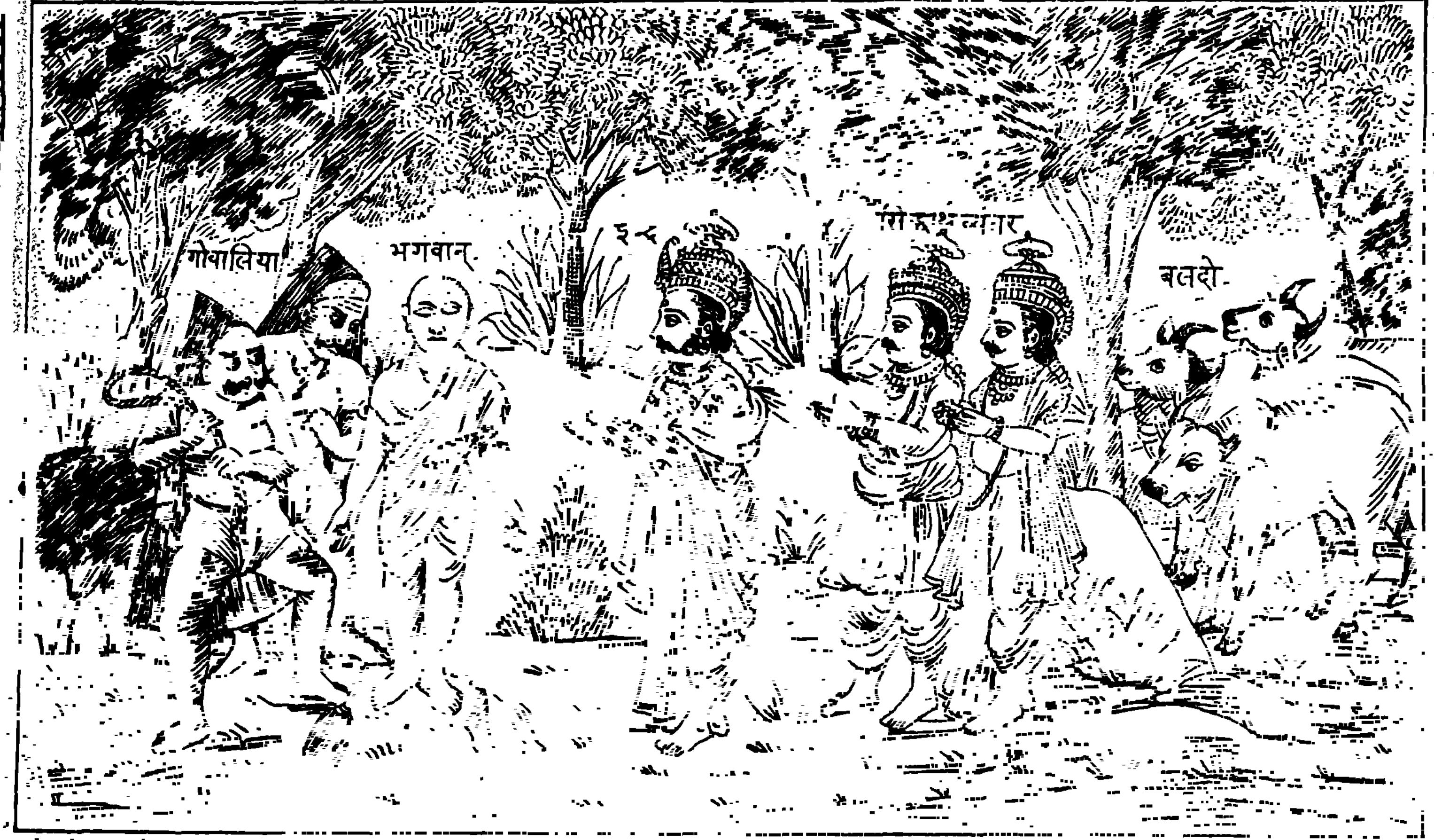
पण प्रभुने अद्भुत रूपवाळा तथा सुगंधयुक्त शरीरवाळा जोइने, कामातुर थइ थकी अनुकूल

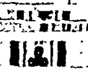
उपसर्गो करती हती. पण प्रभु तो मेरूनी पेठे स्थिर थया थका, ते सघलुं सहन करता थका विहार करवा लाग्या. हवे ते दिवसे बे घडी दिवस बाकी हतो, त्यारे प्रभु कुमार नामे ग्रामप्रते पहोंच्या, तथा त्यां रात्रिए कायोत्सर्गध्यानमां रह्या.

एटलामां कोइ गोवालीउं, आखो दिवस हलमां बलदोने जोडीने, संध्यावखते, तेउने प्रभुनी पासे मुकीने, गायो दोवामाटे घेर गयो. अने ते बेलो तो वनमां चरवामाटे चाल्या गया. पछी ते गोवालीए आवीने प्रभुने पुछ्युं के, हे आर्य; मारा बलदो क्यां छे? पण प्रभु बोल्या नहीं, त्यारे तेणें जाएयुं के, आने खबर नथी, तेथी तेउनी वनमां ते शोध करवा लाग्यो. पछी बलदो तो थोडी रात्रि बाकी रही, त्यारे पोतानी मेलेज प्रभुपासे आव्या. ते वखते गोवालीउं पण त्यां आव्यो, अने बलदोने जोइ तेणें विचार्युं के, अहो! आने खबर होती, तो पण तेणें मने आखी रात भमाव्यो; एम विचारि क्रोधथी, रासडी लेइ मारवामाटे ते प्रभु तरफ दोड्यो. एटलामां इंद्र ते वृत्तांत अवधिज्ञानथी जाणीने गोवालीआने आवीने शिक्षा करी.

पछी इंद्रे प्रभुने विनंति करी के, हे प्रभु, तमोने घणां उपसर्गो थवाना छे, माटे बार वर्षोसुधि वैयावच्चमाटे हुं आपनी पासेज रहुं. त्यारे प्रभुए कह्यु के, हे देवेंद्र, एवुं कदापी थयुं नथी, थतुं नथी, अने थशे पण नहीं, केमके तीर्थंकरो कोइ देवेंद्र अथवा असुरेंद्रना सहायथी केवलज्ञान उपार्जन करता नथी. पण फक्त पोतानांज पराक्रमथी केवलज्ञान उपार्जन करे छे. त्यारे इंद्र पण मरणांत उपसर्गने टालवामाटे प्रभुनी मासीनां पुत्र सिद्धार्थ व्यंतरने प्रभुनी वैयावच्च माटे, स्थापीने पोते देवलोके गयो.

तेवार प्रछी प्रभु सवारमां कोल्लाग नामना सन्निवेशमां, बहुल नामनां ब्राह्मणने घेर "मारे पात्रसहित धर्म प्ररुपवो" एम विचारि पेहेलुं पारणुं त्यां गृहस्थनां पात्रमां परमान्नथी कर्युं. ते वखते चेल्लोत्क्षेप, गंधोदकनी वृष्टि, दुंदुभिनो नाद, "अहोदानमहोदानं" इत्यादि उद्घोषणा, तथा वसुधारानी वृष्टि, एम पांच दिव्यो प्रगट थयां.


चित्र २३
गोवालिया
भगवान्
बलदो

त्यांथी प्रभु विहार करीने मोराक नामना सन्निवेशमां, डुइज्जंत नामनां तापसना आश्रममां गया. त्यांनो, सिद्धार्थ राजानो मित्र एवो ते कुलपति प्रभु पासे आव्यो. प्रभुए पण पूर्वाभ्यासथी मलवा माटे हाथो पोहोला कर्या. पछी तेनी प्रार्थनाथी प्रभु पण एक रात्रि तीहां रहीने पोते निरागी चित्तवाला हता, पण तेना आग्रहथी, त्यां चोमासुं रहेवानुं कबुल करीने, प्रभु बीजी जगोए विहार करवा लाग्या. आठ माससुधी विहार करीने पाछा प्रभु वर्षाऋतु गालवामाटे त्यां आव्या. तथा त्यां कुलपतिए आपेली घासनी झुंपडीमा रह्या. त्यां बहारनां भागमांथी घास नहीं मलवाथी अन्य तापसोए पोतपोतानी झुंपडीउंमांथी निवारण करेली गाइओ, प्रभुथी मंडित थएली झुंपडीने निःशंकपणाथी खावा लागीउं. त्यारे ते झुंपडीना स्वामीए कुलपति आगल तेनी राव खाधी. त्यारे कुलपति पण प्रभुने आवी कहेवा लाग्यो के, हे वर्धमान ! पक्षिओ पण पोतपोताना मालानुं रक्षण करवामां दक्ष होय छे, अने तुं तो राजपुत्र थइने पोताना आश्रमनुं रक्षण करवाने केम अशक्त थाय छे ? त्यारे प्रभुए विचार्युं के, मारा अहीं रहेवाथी आमने अप्रिती थाय छे, एम विचारि वर्षाकालनां असाडशुदि पूनमथी मांडी पंदर दिवसो गया बाद, प्रभु, पांच अभिग्रहो लेइने अस्थिक ग्रामे गया. ते पांच अभिग्रहो नीचे प्रमाणे जाणवा. अप्रिती उपजे एवा घरमां मारे वास करवो नहीं, हमेशां प्रतिमा धारीने रहेवुं, गृहस्थीनो विनय करवो नहीं, मौन रहेवुं, तथा हाथमांज आहार करवो.

हवे एवी रीते श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी, एक वर्ष अने एक माससुधि वस्त्रधारी रह्या, तथा तेवार पछी वस्त्ररहित रह्या. तथा हाथरूपीज पात्रवाला रह्या. प्रभुनुं वस्त्ररहितपणुं नीचेना वृत्तांतथी जाणवुं.

प्रभुए दीक्षा लीधाबाद एक वर्ष अने एक मास गयाबाद दक्षिणवाचाल नामनां नगरनी पासे, सुवर्णवालुका नामनी नदीने किनारे, कांटामां भरावाथी अरधुं देवडुष्य वस्त्र पडीजते छते, प्रभुए सिंहावलोकथी, तेनी पाछल दृष्टि करी. अहीं केटलाको कहे छे के, ममताथी प्रभुए पाछल जोयुं; अने बीजा केटलाको कहे छे के, ते स्थंडिल जगोपर पड्युं के, अस्थंडिल जगोपर पड्युं, ते जोवामाटे

प्रज्ञुए पाबुं वाली जोयुं. अने केटलाको कहे छे के, अमारी संततिमां वस्त्रपात्र सुलज्ञ या डुर्लज्ञ थशे, ते जोवामाटे पाबुं वाली जोयुं. तथा केटलाक वृद्धो वली एम कहे छे के, कांटामां वस्त्र जरायुं, तेथी पोतानुं शासन कंटकबहुल थशे; एम विचारि पोते निर्लोज्ञि होवाथी ते अर्ध वस्त्र प्रज्ञुए पाबुं लीधुं नहीं.

हवे ते वस्त्र प्रज्ञुना पिताजीना मित्र, एवा कोइ ब्राह्मणे लीधुं. अने अरधुं तो प्रज्ञुए तेने पेहेलांज आपी दीधुं हतुं. ते वृत्तांत नीचे प्रमाणे जाणवुं.

ते ब्राह्मण दरिद्री हतो, पण प्रज्ञु ज्यारे वार्षिक दान देता हता, त्यारे ते परदेशमां गयो हतो. त्यां पण डुर्ज्ञाग्यपणाथी कंइ नहीं मलवाथी, घेर पाछो आव्यो, त्यारे स्त्रीए तेनी तर्जना करी; के, हे अज्ञाग्यमां शिरोमणि, ज्यारे श्रीवर्धमान प्रज्ञुए सुवर्णनो वरसाद वरसाव्यो, त्यारे तुं परदेश गयो हतो, अने पाछो पण तुं निर्धनज रहीने आव्यो, माटे दूर जा ? मोहोरुं देखाम मां ? अथवा तो हजु पण ते जंगम कल्पवृक्षसरखा प्रज्ञु पासे जइ याचना कर ? के जेथी ते तारुं दरिद्रपणुं हरें; केमके, जेणे पेहेलां दान दीधां छे, ते फरी पण आपवाने समर्थ थशे, केमके, पाणीनां अर्थी माणसो सुकाइ गएलो एवो पण नदीनो मार्ग खोदे छे. एवी रीतनां स्त्रीनां वाक्योथी प्रेराएलो ते ब्राह्मण प्रज्ञुनी पासे आवीने विनंति करवा लाग्यो के, हे जगतना उपकारी प्रज्ञु, तमोए सघलानुं दारिद्र्य निर्मूल कर्युं छे, अने हुं निर्ज्ञागी ते वखते त्यां नहीं हतो, अने मने परदेशमां ज्रमतां थकां पण कंइ मल्युं नहीं. माटे पुण्य रहित तथा आश्रय विनानो, अने निर्धन, एवो हुं, जगतनां वांछितने आपनार एवा आपने शरणे आव्यो छुं. अने आखा जगतनुं दारिद्र्य हरनार एवा आपने मारुं दारिद्र्य हरवुं, ए शुं हिसाबमां छे ? केमके ज्ञरी दिधेल छे, सघलुं महीतल जेणे, तथा अद्भुत शक्तिवाला एवा वरसादने एक तुंबडुं ज्ञरवामाटे शुं प्रयास पमी शके तेम छे ? एवी रीते याचना करता करता एवा ते ब्राह्मणने करुणावंत ज्ञगवाने अरधुं देवडुष्य वस्त्र आप्युं. अहीं केटलाक आचार्यो कहे छे के, एवा दानेश्वरी ज्ञगवाने पण प्रयोजनविनानां वस्त्रनुं पण जे अरधुं दान दीधुं, ते प्रज्ञुनी संततिमां थनारी वस्त्रपात्र-

नी मूर्छा सुचवे छे. अने बीजाओ कहे छे के, पेहेलां जे विप्रकुलमां उत्पन्न थया हता, तेना ते संस्कार छे.

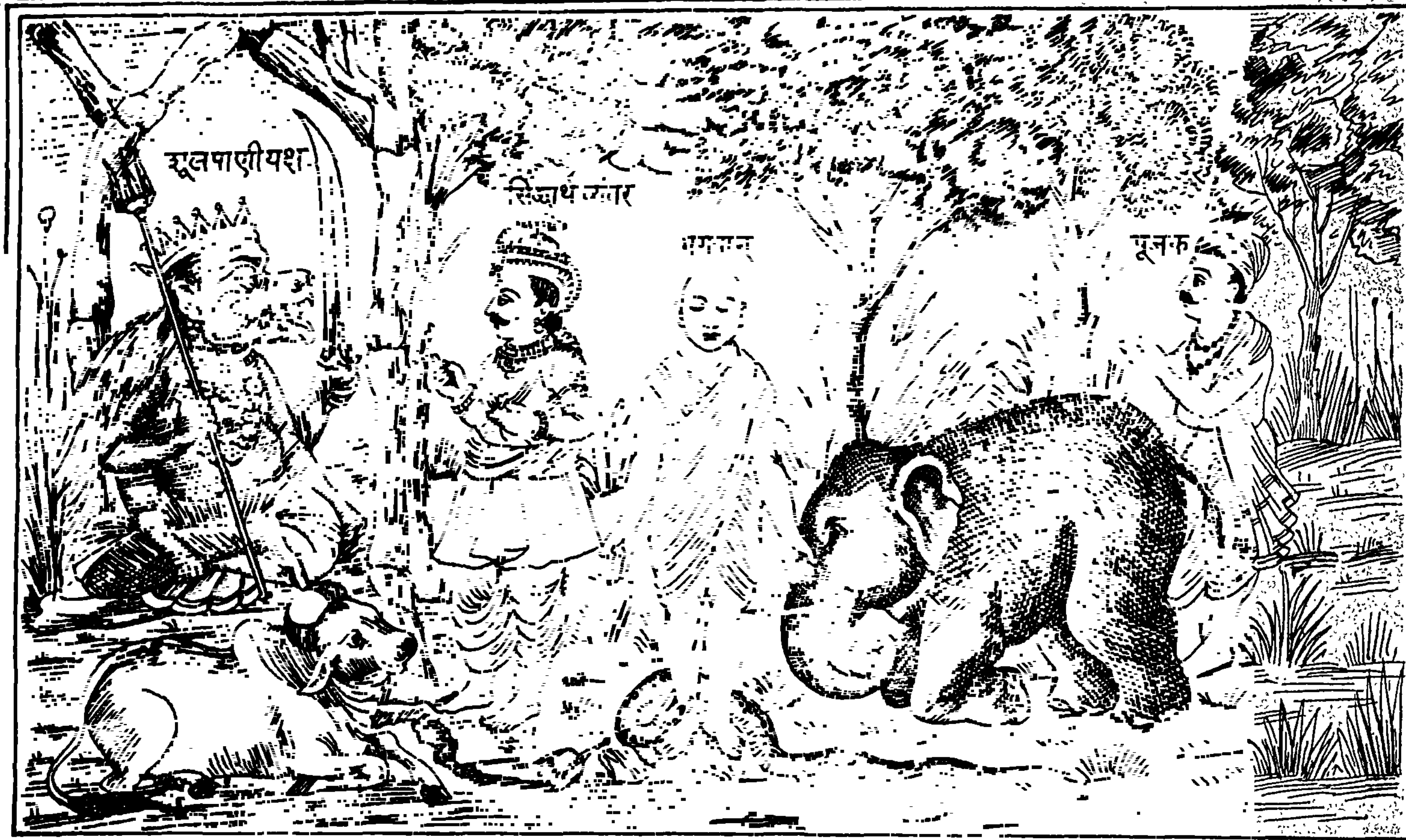
हवे ते ब्राह्मणे ते अरधुं वस्त्र लेइने, तेनां छेडाओ वणवामाटे, एक वणकरने बताव्युं. त्यारे ते वणकरे पण कह्युं के, हे विप्र, तुं तेज प्रभुनी पाछल हजु जा? ते निर्मम, अने करुणावंत एवा प्रभु, तने बीजुं पण अर्ध वस्त्र आपी देशे, अने पछी हुं तने ते एवी रीते जोडी आपीश के, जेथी तेनुं एक लाख सोनामोहोर जेटलुं मूल्य थशे. अने पछी आपणे ते धन वहेंची लइशुं, तेथी आपण बन्नेनुं दारिद्र चूर्ण थशे. एवी रीते तेणे प्रेरणा करेलो ब्राह्मण फरीने पाछो प्रभुपासे आव्यो, पण लज्जाथी मागणी कर्याविनां एक वर्षसुधि प्रभुनी पाछल भम्यो. अने पछी पोतानी मेले पडी गयेलुं ते अर्ध वस्त्र लेइने चालतो थयो. माटे एवी रीते प्रभुए सवस्त्रधर्म प्ररुपवामाटे, एक वर्ष अने एक माससुधि वस्त्र धारण कर्युं. अने सपात्रधर्म स्थापवामाटे पेहेलुं पारणुं पण, गृहस्थनां पात्रमां प्रभुए कर्युं. अने त्यार पछी छेक जीवितपर्यंत प्रभु वस्त्र तथा पात्र विना रह्या.

एवी रीते विहार करता एवा प्रभुनी, कोइ दिवसे गंगाने कांठे, सूक्ष्म माटीवाला कादवमां प्रतिबिंबित थएली पदपंक्तिमां, चक्र, ध्वज, अंकुश आदिक लक्षणोने जोइने, पुष्पक नामनो सामुद्रिक विचारवा लाग्यो के, अहींथी कोइ चक्रवर्ति एकाकी चाल्यो जाय छे, माटे जइने हुं तेनी सेवा करुं; के, जेथी मारो मोटो उदय थाय. एम विचारि तुरत तुरत ते पगलांने अनुसारे चालीने ते प्रभुनी पासे आव्यो. अने तेमने जोइ विचारवा लाग्यो के, अरे! हुं तो फोकटज मोटुं कष्ट वेठीने पण सामुद्रिक शास्त्र भण्यो; जे आवी रीतनां लक्षणयुक्त थइने पण, साधु थइ व्रतकष्टने आचरे छे; माटे सामुद्रिक शास्त्रनुं पुस्तक तो हवे मारे पाणीमांज बोलवुं.

एटलामां दीधेल छे, उपयोग जेणे, एवो इन्द्र, तुरत त्यां आवीने प्रभुने नमस्कार करीने, ते पुष्पकने केहेवा लाग्यो के, हे सामुद्रिकवेत्ता! तुं खेद कर नहीं; तारुं शास्त्र सत्यज छे; आ लक्षणथी आ प्रभु त्रणे जगतने पूजनीक, तथा सुरासुरनां पण स्वामी, तथा सर्व प्रकारनी उत्तम नवी संपदानां

आश्रयभूत, एवा तीर्थंकर थशे; केमके आ प्रभुनो श्वासोश्वास सुगंधि छे, रुधिर तथा मांस गायना दूध सरखां श्वेत रंगनां छे, तथा इत्यादिक बाह्य अने अभ्यंतर एवां एमनां अनेक सुलक्षणोने गण वाने कोण समर्थ छे? इत्यादिक तेने कहीने, तथा तेने मणि, सुवर्ण आदिकथी समृद्धिवान करीने इन्द्र पोताने स्थानके गयो. ते सामुद्रिकवेत्ता पण हर्ष पामीने पोताने देश गयो, तथा प्रभु पण बीजी जगोए विहार करवा लाग्या. हवे प्रभूए देव संबंधि, मनुष्य संबंधि तथा तिर्यंच संबंधि, अनुकुल प्रतिकुल विगेरे जे उपसर्गो सहन कर्या छे, तेनुं वर्णन करे छे.

प्रभु पेहेलुं चोमासुं मोराक नामनां सन्निवेषथी आवीने शूलपाणि यक्षनां चैत्यमा रह्या. ते यक्ष पूर्व भवमां धनदेव नामे वेपारीनो बलद हतो. ते वेपारी नदी उतरतो हतो, तेवारे तेनां पांचसो गाडां कादवमां खुंची बेठां. त्यारे उल्लसायमान थयुं छे वीर्य जेनुं, एवा ते वृषभे, डावी बाजुए जोडाइने, विचार्युं के, जो माराज कडका करीने, बन्ने पक्षे मने जोडे, तो हुं एकलोज सघलां गाडां खेंची लावुं, एम विचारतां तेणे सघलां गाडांओ कादवमांथी खेंची कहाड्यां. एवी रीते पराक्रम कर्याथी ते बलद, शरीरनां सांधाओ त्रुटी जवाथी अशक्त थइ गयो. त्यारे तेने अशक्त जोइने धनदेवे वर्धमान नामे गाममां जइ, गामनां मुखीओने, तेने माटे घास पाणी विगेरेनां पैसा आपीने, ते बलदने त्यां मुक्यो. पण ते मुखीओए तेनी सालसंभाल लीधी नहीं. तेथी भुख अने तृषाथी पीडीत थइ शुभ अध्यवसायनां योगथी मृत्यु पामीने व्यंतर थयो. त्यां तेणे आगला जन्मनो व्रतांत याद लावीने, क्रोधथी ते गाममां मरकी फेलावीने अनेक माणसोने मारी नाख्या. "केटलाकनो ते संस्कार थाय," एम विचारि मडदां तेमनां तेम पडी रहेवाथी, तेओनां हाडकांओनां समूह उपरथी ते गामनुं अस्थिक ग्राम एवुं, नाम प्रसिद्ध थयुं. पछी बाकी रहेला लोकोए, तेनुं आराधन करवाथी, तेणे प्रत्यक्ष थइने पोतानुं देवल तथा प्रतिमा करावी. त्यां माणसो तेनी हमेशां पूजा करता हता. भगवान पण तेने प्रतिबोधवावास्ते तेज चैत्यमां आव्या. लोकोए प्रभूने कह्युं के, आ यक्ष, पोतानां चैत्यमां जे रात्रि रहे छे, तेने



चित्र ३४

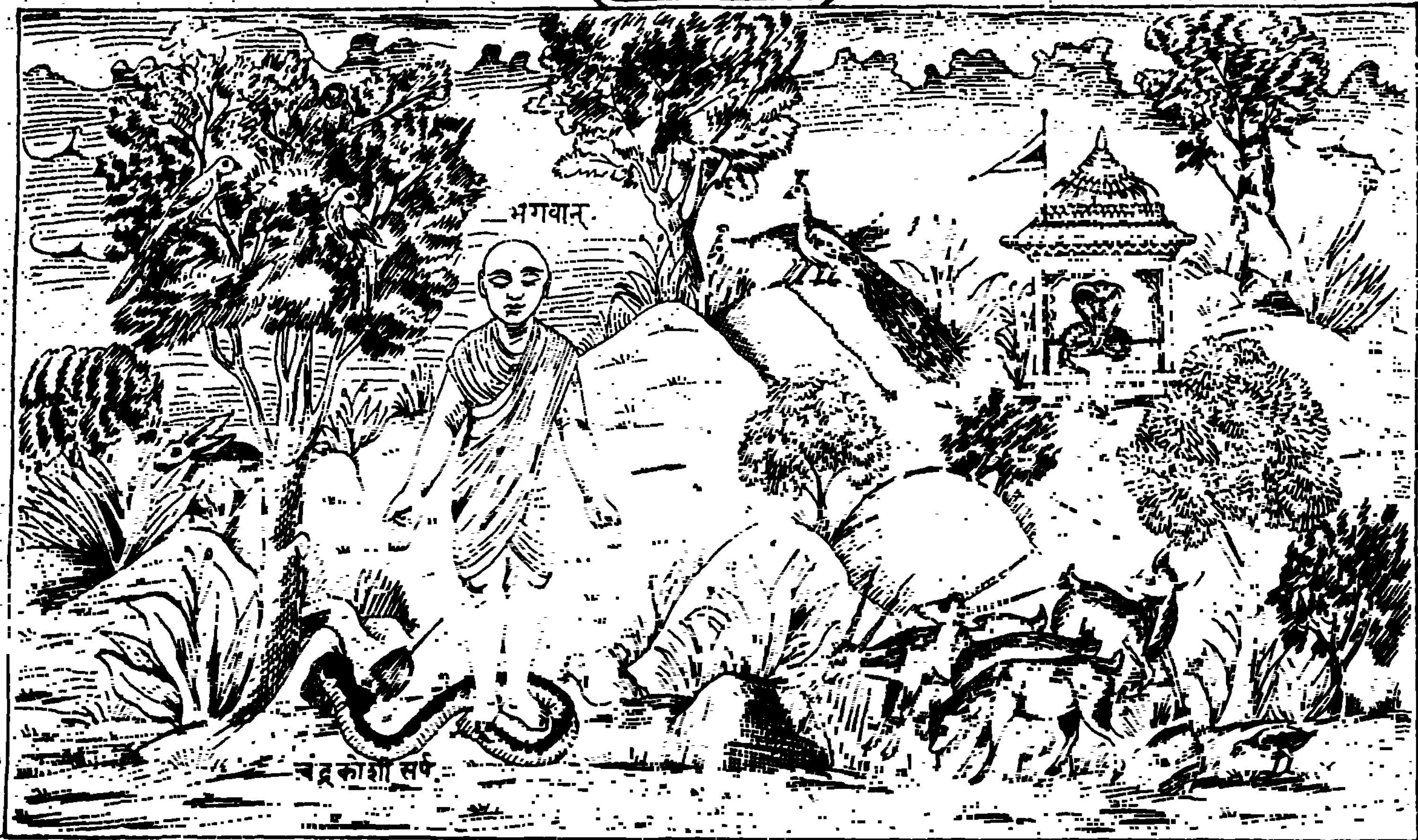
मारी नाखे छे, एम कह्या छतां पण, प्रभु त्यांज रात्रि रह्यां. तेणे प्रभूने क्षोभ पमाडवामाटे, पृथ्वी फाटी जाय, एवो अट्टहास कर्यो. पछी हाथीनुं रुप, पछी सर्पनुं, तथा पछी पिशाचनुं रुप करीने दुःसहउपसर्गो कर्या. तो पण प्रभू तो जरा पण क्षोभायमान थया नहीं. पछी अन्यनो जीव जाय, एवी तेणे प्रभूने, मस्तकमां, कानमां, नासिकामां, चक्षुमां, दांतमां, पीठमां, नखमां विगेरे अनेक सुकुमाल स्थानकोमां वेदना करवा मांडी, तेथी पण प्रभुने निष्कंप जोइने ते प्रतिबोध पाम्यो, तेज वखते सिद्धार्थ व्यंतर पण त्यां आवी, तेने कहेवा लाग्यो के, हे निर्भागि, दुष्ट, शुलपाणि, तें आ शुं आचर्युं? जे तें इंद्रने पण पूजनिक एवा प्रभूनी आशातना करी. जो आ वात इंद्र जाणशे, तो तारा स्थाननो पण ते नाश करशे. ते सांभली शूलपाणि पण भय पामीने प्रभूने पूजवा लाग्यो, तथा तेमनी आगल गायन अने नाच करवा लाग्यो.

ते सांभली लोकोए विचार्युं के, आणे ते प्रभुने मार्या छे, तेथी गाय छे, अने नाचे छे.

हवे त्यां प्रभुए, एक देश उणा एवा रात्रिनां चार पोहोरो सुधि,जे अत्यंत वेदना सहन करी, तेथी प्रभाते तेमने क्षणवार नींद्रा आवी. ते वखते प्रभु उभा थकांज दश स्वप्नो जोइने जाग्या. हवे प्रभात थयो, एटले लोको एकठा थया, तथा प्रभुने बाधारहित जोइने, तेओए सिंहनाद कर्यो. ते वखते त्यां उत्पल अने इंद्रशर्मा नामे अष्टांग निमित्तनां जाणनारा बे निमित्तिआओ पण आव्या. तेओ सघलाओए प्रभुने दिव्य गंध, चूर्ण, पुष्प आदिकथी पूजित जोइने, हर्ष सहित नमस्कार कर्यो.

पछी उत्पल निमित्तिओ बोल्यो के हे भगवन्, आपे रात्रिने छेडे जे दश स्वप्नो जोयां छे तेओनुं फल आप तो जाणो छो, तो पण हुं कहुं छुं. जे आपे तालपिशाचने हण्यो, तेथी करीने तमो थोडाज वख तमां मोहनीय कर्मने हणशो. तथा सेवा करतो एवो आपे जे श्वेत पक्षी जोयो, तेथी, तमो शुक्लध्या नने धारण करशो. जे तमें चित्र कोकिलने सेवा करतो जोयो, तेथी तमो द्वादशांगीनो अर्थ विस्तार-शो. जे तमोए गायोनो वर्ग सेवा करतो जोयो, तेथी साधु, साध्वी, श्रावक अने श्राविकारूप चतुर्विध

संघ आपनी सेवा करशे. वली जे आपे स्वप्नमां समुद्रने तर्यो, तेथी आप संसारने तरी जशो. वली आपे उगतो सूर्य जोयो, तेथी आपने तुरत केवलज्ञान उत्पन्न थशे. वली आपे आंतरडांउथी जे मानुषोत्तरने वींट्यो, तेथी करीने तमारी कीर्ति त्रण भुवनोमां थशे. वली आप जे मंदराचलनां शिखरपर चड्या, तेथी आप सिंहासनपर बेसीने, देव अने मनुष्यनी पर्षदामां धर्मने प्ररूपशो. वली आपे जे देवोए करीने शोभायुक्त थएलुं पद्मसरोवर जोयुं, तेथी करीने आपने चारे निकायनां देवो सेवशे. वली आपे जे मालानु युग्म जोयुं, तेनो अर्थ हुं जाणी शकतो नथी. त्यारे भगवाने कह्युं के, हे उत्पल, जे में मालानुं युग्म जोयुं, तेथी हुं साधुधर्म तथा श्रावकधर्म, एम बे प्रकारनो धर्म प्ररूपीश. पछी ते उत्पल पण प्रभुने वांदीने चालतो थयो. त्यां प्रभु आठ अर्धमासक्षपणें करीने ते चोमासुं अतिक्रमण करीने, मोराक नामनां सन्निवेशमां गया. त्यां प्रतिमा धारीने रहेला प्रभुनां शरीरमां, तेमनां सत्कार-माटे सिद्धार्थ व्यंतरे दाखल थइने, निमित्तो कहेते छते, प्रभुनो महिमा फेलायो. एवी रीते प्रभुनां थता महिमाने जोइने अछंदक नामना त्यां रहेता निमित्तिआए गुस्से थइने, तृणछेदना विषयमां प्रश्न करते छते, सिद्धार्थे कह्युं के नहीं छेदाय; एम कहेते छते जेवो ते छेदवा जाय छे, के, तुरत उपयोगपूर्वक इंद्रे त्यां आवीने वज्रथी तेनी आंगली छेदी नाखी. पछी रुष्ट थएला सिद्धार्थे लोकोने जणाव्युं के, आ निमित्तिउ चोर छे. त्यारे लोकोए पुछ्युं के, शी रीते? त्यारे सिद्धार्थे कह्युं के, आ माणसे वीरघोष कर्मकरनो दश पलनां प्रमाणनो वाटको चोरीने खजुरीनां वृक्षनीचे राख्यो छे, तथा इंद्रशर्मानो घेटो पण ते खाइ गयो छे, तेनां हाडकां पोतानां घर आगल रहेली बोरडी नीचे, तेणें दाट्यां छे. अने तेनुं त्रीजुं दूषण तो मुखथी कही शकाय तेवुं नथी, ते तेनी स्त्रीज कहेशे. त्यारे माणसोए जइ तेनी स्त्रीने, पुछवाथी, तेणीए पण ते दिवसे तेनी साथे कजीउ करेलो होवाथी, गुस्साथी कह्युं के, हे माणसो एनुं तो मुख पण जोवालायक नथी ते दुष्ट तो पोतानी बेहेनने पण भोगवे छे. त्यारे ते निमित्तिउ अत्यंत लज्जायुक्त थइ, प्रभुने एकांतमा कहेवा लाग्यो के, हे जगत्पूज्य स्वामि, आप तो सर्व जगोए


चित्र ३५
भगवान्
चंद्रकोशी सर्प

भूजाश्रो, अने मारी तो अग्रेज आजीविका छे. त्यारे प्रभुए तेनी अप्रीति जाणीने त्यांथी विहार कर्यो; अने स्वेतांबीप्रते जतां थकां, लोकोए वार्या छतां पण, कनकखल नामे तापसनां आश्रममां, चंरुकौशिकने प्रतिबोधवामाटे प्रभु त्यां गया.

ते चंरुकौशिक आगला जवमां महा तपस्वी साधु हतो; पारणाने दिवसे गोचरी जतां, थएली देरूकीनी विराधनाने, प्रायश्चित्त पूर्वक पमिक्कमवा माटे, इर्याप्रतिक्रमण वखते, गोचरी प्रतिक्रमण वखते तथा संध्याकालनां प्रतिक्रमण वखते, एम त्रणवार कोइ साधुए तेने संजाली दिधाथी, क्रोधायमान थइ, तेने मारवामाटे दोड्यो, पण वच्चे स्तंजमां अथमाइ, मृत्यु पामी ज्योतिष्क देव थयो. त्यांथी चवीने ते आश्रममां पांचसें तापसोनो चंरुकौशिक नामे अधिपति थयो. त्यां पण पोतानां आश्रमोनां फलोने ग्रहण करता एवा राजकुमारोने जोइने, तेमने कुहामी लइ मारवा दोरुयो, पण तेटलामां पोते कुवामां परुी गयो. त्यां एवी रीते क्रोधयुक्त मरण पामीने तेज आश्रममां पूर्वजवनां नामवालो दृष्टिविषसर्प थयो. ते सर्प प्रभुने प्रतिमामां रहेला जोइने, क्रोधथी बलतो थको, सूर्य तरफ जोइ जोइने दृष्टिज्वाला मुकवा लाग्यो. तथा पछी तेणे विचार्युं के, आ प्रभु परुता थका पाछा मारापर पडे नहीं तो ठीक, एम विचारि ते दूर हठ्यो. पण प्रभुने तो आगलनी पेठे निश्चल जोइने अत्यंत क्रोधातुर थइने तेणे प्रभुने डंखमार्या. तो पण प्रभुने अव्याकुल जोइने, तथा प्रभुनां रुधिरने पण क्षीर सरखुं जोइने तथा " बुज्ऊ बुज्ऊ चंडकोशिया " एम प्रभुनां वचनने सांजलीने, थयेलुं छे, जातिस्मरणज्ञान जेने, एवो ते चंरुकौशिक सर्प, प्रभुने त्रण प्रदक्षिणा देइने, अहो ! करुणासागर एवा प्रभुए मने दुर्गतिरुपी कुवामांथी ओधर्यो, इत्यादिक प्रकारनुं मनमां चिंतवन करीने, अनशन लेइ, एक पखवाडीयां सुधि, बिलमां पोतानुं मुख राखीने रह्यो. त्यां घी आदिक वहेंचनारी स्त्रीओए तेने घी आदिक नाखीने पूज्यो; अने ते घी आदिकनां गंधथी त्यां आवेली कीमीओथी अत्यंत पीरुा पामतो, तथा प्रभुनी दृष्टिरुपी अमृतथी सिंचातो थको मृत्युपामी सहस्रार देवलोकमां देवताथयो; पछी प्रभु पण त्यांथी बीजी

जगोए विहार करवा लाग्या. पछी उत्तरवाचलमां नागसेने प्रभुने क्षीर वहोराव्युं. त्यां पंच दिव्यो प्रगट थयां. त्यांथी श्वेतांबी नगरीमां प्रदेशी राजाएप्रभुनो महिमा कर्यो. त्यांथी सुरभिपुर प्रते जाता प्रभुने पांच अर्थोए करीने नैयका गोत्रवाला राजाउ वांदता हवा. त्यांथी सुरभिपुर नगरे प्रभु गया त्यां गंगानदीने कांठे, सिद्धदत्त नाविक लोकोने नावपर चडावतो हवो, भगवान पण ते नावमां चड्या. ते अवसरे घुवडनो शब्द सांभलीने क्षेमिल नामनां निमित्तिए कह्युं के, आजे आपणने मरणांत कष्ट आवशे, पण आ महात्मानां प्रभावथी ते संकटनो नाश थशे. एवी रीते गंगा नदी उतरतां, प्रभुनां त्रिपृष्टभवमां मारेला सिंहना जीव, सुदंष्ट्र नामना देवे नाव बुडाडवादिकनुं विघ्न कर्युं, पण कंबल अने शंबल नामनां नागकुमारोए आवीने, ते विघ्न निवार्युं, ते बन्नेनी उत्पत्ति नीचे प्रमाणे जाणवी. मथुरा नगरीमां साधुदासी अने जिनदास नामे बे स्त्रीभरथारो हता. परम श्रावक हता, तेथी पाचमां व्रतमां सर्वथा प्रकारे चोपगां पशुउ राखवानुं तेमणे पच्चखाण कर्युं हतुं. तेथी एक भरवाडण पोतानुं गोरस लावीने तेणीने आपती हती. अने तेथी ते पण तेणीने यथोचित द्रव्य आपती हती. एवीरीते अनुक्रमे तेउ बन्नेमां अत्यंत प्रीति थइ. एक दहाडो ते भरवाडणे, पोताने घेर विवाह आववाथी ते बन्ने स्त्रीभरतारने निमंत्रण कर्युं. त्यारे तेउए कह्युं के, अमो त्यां आवी तो शकीशुं नहीं, पण तमारे विवाहमां जे कंइ वस्तुउ जोइए, ते अमारे घरेथी लेवी. पछी तेउए दीधेलां चंद्रवादिक उपकरणो, तथा वस्त्र आभूषण धूप आदिकथी, ते भरवाडनो विवाह अत्यंत उत्कृष्टो थयो. तेथी ते भरवाड तथा भरवाडणे खुशी थइने, अत्यंत मनोहर, तथा समानवयवाला, एवा बे बालवृषभो लावीने तेमने आप्या, तेउनी इच्छा नहोती, तोपण तेउ ते बेलोने तेने घेर पराणे बांधीने पोताने घेर गया. त्यारे ते वेपारीए विचार्युं के, जो तेने पाछा आपीशुं, तो आ बेलो भार उपाडवा आदिकथी दुःखी थशे, एम विचारि ते तेउनुं प्रांशुक तृण जल आदिकथी पोषण करवा लाग्यो; अने तेथी भार उपाडवादिकनां श्रम विनां तेउ त्यां सुखे रहेवा लाग्या. एक दहाडो अष्टमीने दिवसे ते श्रावक पौषध लेइ त्यां पुस्तक आदिक

चित्र २६

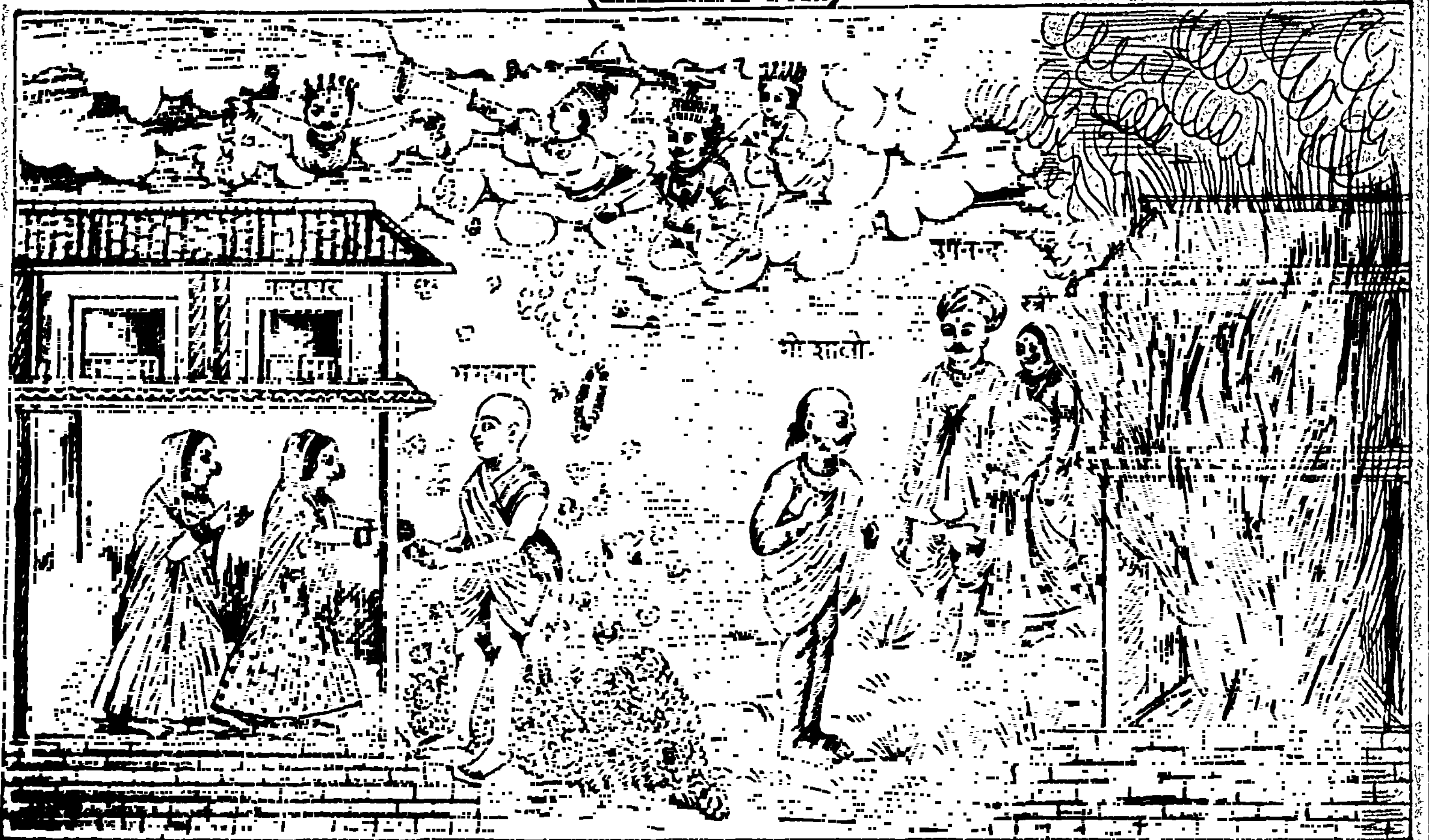


बांधवा लाग्यो, ते सांजली ते बलदो जडक थया. पठी जे दिवसे ते श्रावक उपवास करे, ते दिवसे तेर्ख पण तृण आदिक खाय नहीं. अने तेथी साधर्मिकपणाए करीने तेर्ज ते श्रावकने पण अत्यंत प्रिय थइ पड्या. एक वखते ते जिनदासनां कोइ मित्रे, तेर्जने अति बलवान, तथा सुंदर बेल जोइने, शेठने पुछ्याविनाज, जंडिरवननां यक्षनी यात्रामाटे, जेर्जए धुर जोएल पण नहीं हतुं, एवा ते बेलोने, गाडीमां जोडीने एवा तो हांक्या के, जेथी तेर्ज त्रुटी गया; अने पठी लावीने तेमने शेठने घेर बांध्या. शेठे तेमने एवी अवस्थावाला जोइने आंखोमां आंसु लावी, खावा आदिकनां पच्चखाण करावी, नवकार आदिकथी तेमनी निर्यामणा करी. पठी त्यांथी तेर्ज बन्ने मृत्यु पामीने नागकुमार देवो थया; ते त्यां नवा उत्पन्न थया के, तेर्जए उपयोग दीधाथी बन्नेमांथी एके, ते नावनुं रक्षण कर्युं, तथा बीजो ते सुदंष्ट्र देवनी सामो थयो; अने तेने जीतीने, जगवाननां सत्व तथा रूपनुं गायन करता, तथा नाचता थका, सुंगंधि पुष्प जल आदिकनी वृष्टिपूर्वक महोत्सव करीने, तेर्ज पोताने स्थानके गया.

जगवान पण राजगृही नगरीमां, नालंदा नामनां पाडामां, शालवीनी शालाना एक जागमां, तेनी रजा लेइने, पेहेलुं मासक्षपण करीने रह्या. त्यां मंखली नामनां माणसनी सुजद्रा नामनी स्त्रीने पेटे, गोशालो नामे पुत्र थयो हतो. ते बहुल नामनां ब्राह्मणनी गोशालामां उत्पन्न थयो हतो, माटे तेनुं गोशालो नाम पाडयुं हतुं. त्यां जगवानने मासक्षपणने पारणे विजय नामनां शेठे कूर आदिक जोजनथी पारणुं कराव्युं. तेथी त्यां प्रगट थएला पंचदिव्य इत्यादि महिमाने जोइने, ते गोशाले जगवानने कह्युं के, हुं तमारो शिष्य छुं. पठी बीजे पारणे नंद शेठे पकवान आदिकथी, तथा त्रीजे पारणे सुनंद शेठे प्रजुने परमान्नथी पारणुं कराव्युं. चोथा मासक्षपणे प्रजु कोल्लाक नामे सन्निवेशमां पधार्या. त्यां बहुलनामे ब्राह्मणे प्रजुने दुधपाक वोराव्यो. त्यां पण पंच दिव्यो प्रगट थयां.

हवे गोशालो पण प्रजुने ते तंतुशालामां नहीं जोइने, आखा राजगृहमां शोधतो थको, पोतानां ब्राह्मणोने आपीने, मुख तथा मस्तकने मुंडिने, प्रजुने कोल्लाकमां गयेला जाणीने, त्यां जइ प्रजु

पासे दीक्षा लेइ तेमनी साथे रहेवा लाग्यो. प्रभु पण तेनी साथे सुवर्णखल नामें गाममां गया. मार्गमां गोवालीआओ एक वासणमां दुधपाक पकावता हता, ते जोई गोशाले भगवानने कह्युं के, आपणे अहीं भोजन करीने चालीशुं. त्यारे सिद्धार्थे कह्युं के, ते वासण भांगी जशे, तेथी गोवालीआओए तेनुं घणुं रक्षण कर्युं, पण ते वासण भांगी गयुं. त्यारे गोशाले एवो निश्चय कर्यो के जे थवानुं छे, ते थाय छेज, एवो निश्चय अंगीकार कर्यो. तेवार पछी प्रभु ब्राह्मण ग्रामप्रते गया. त्यां नंद अने उपनंद नामे बे भाइओनां बे पाडा हता. प्रभुए नंदना पाडामां प्रवेश कर्यो. त्यां नंदे प्रभुने वोराव्युं. गोशालो उपनंदनां पाडामां गयो. त्यां वासी अन्न उपनंदे वोराव्याथी ते गुस्से थयो, अने शाप दीधो के, मारा धर्माचार्यनुं जो तप होय, तो आनुं घर बली जाओ ? ते वखते प्रभुनो महिमा राखवा वास्ते नजदीकमां रहेला देवे तेनुं घर बाली नाख्युं. पछी प्रभु चंपा नगरीमा आव्या. त्यां छमास क्षपणे करीने ते चतुर्मास रह्या. छेल्ला छमासनुं पारणुं चंपानी बहार करीने कोलागसन्निवेशमां गया. त्यां शून्य घरमां कायोत्सर्गध्याने रह्या. गोशाले पण तेज घरमां रहीने, सिंह नामे एक ग्रामणी पुत्रने विद्युन्मती दासीनी साथे क्रीडा करतां जोइ हांसीकरी. त्यारे तेणे गोशालाने मार्यो. त्यारे तेणे प्रभुने कह्युं के, मने अहीं आणे मार्यो, पण आपे तेने केम निवार्यो नहीं ? त्यारे सिद्धार्थे कह्युं के, फरीने तुं एवुं करीश नहीं. पछी प्रभु पात्तालकप्रते गया. तथा त्यां शून्य नगरमां रह्यां. त्यां पण गोशाले स्कंदने पोतानी दासी स्कंदिला साथे क्रीडा करतां जोइ हांसी करी, अने तेथी त्यां पण तेणे मार खाधो. पछी प्रभु कुमाराक नामे सन्निवेशमां जइने, चंपरमणीय नामनां उद्यानमां कायोत्सर्ग ध्याने रह्या. त्यां पार्श्वनाथ प्रभुना शिष्य मुनिचंद्रमुनि घणां शिष्योनां परिवारसहित, कुंभारनी शालामां रह्या हता. तेनां साधुओने जोइ गोशाले कह्युं के, तमो कोण छो ? त्यारे तेओए कह्युं के, अमो निर्ग्रंथ छीए. त्यारे फरीने गोशाले कह्युं के, तमो क्यां तथा अमारा गुरु क्यां ? त्यारे तेओए कह्युं के, जेवो तुं छे, तेवा तारा धर्माचार्य होशे. त्यारे गोशाले गुस्से थइने कह्युं के, मारा धर्माचार्यनां तपथी



पा. ७१

तमारो आश्रम बली जाओ? त्यारे तेओए कह्युं के, अमोने कंइ तेनी बीक नथी. पछीथी तेणे आवी सघ-ळो वृत्तांत कही बताव्यो. त्यारे सिद्धार्थे कह्युं के, ते साधुओ कंइ बली शके नहीं. रात्रिए जिनकल्पि-नी तुलना करता मुनिचंद्र मुनि, काउसग्गमां हता, ते वखते मदोन्मत्त एवा कुंभारे चोरनी बुद्धिथी तेमने मार्या, तेथी अवधिज्ञान उत्पन्न थया बाद ते मृत्यु पामी स्वर्गे गया. पछी तेना महिमामाटे देवो-ए त्यां उद्योत कर्यो, त्यारे गोशाले कह्युं के, अहो! आ तेमनो उपाश्रय बळे छे. पछी सिद्धार्थे तेने खरी वात जणाववाथी, ते त्यां जइ, तेनां शिष्योने निर्भ्रंछीने, पाछो आव्यो. पछी प्रभु चोराप्रते गया. त्यांनां चोकीदारोए प्रभु गोशालाने चारिक (छुपी खबर लेइ जनारा) जाणीने प्रथम गोशालाने अग कूर्मां नाख्यो, पछी प्रभुने हजु नाख्या नथी, तेटलामां उत्पल निमित्तिआनी सोमा, अने जयंती नाम-नी बे बेहेनो, के जेउ संयम पालवाने असमर्थ थइने, परिव्राजिकाउ थइ हती, तेउए प्रभुने जोइ, उळखीने ते संकटथी छोडाव्या. पछी प्रभुपृष्ट चंपा प्रते गया. त्यां प्रभु चतुर्मासक्षपण करीने, तथा बाहारनां भागमां ते पारीने, कायंगल नामे सन्निवेशप्रते जइने श्रावस्ती नगरीए गया. त्यां बहारना भागमां प्रतिमापूर्वक कायोत्सर्ग ध्यानमां रह्या. त्यां सिद्धार्थे गोशालाने कह्युं के, आजे तुं मनुष्यनुं मांस खाइश. ते सांभली ते पण तेनुं निवारण करवामाटे वाणीआओने घेर भिक्षामाटे गयो. त्यां पितृद-त्त नामे वणिक रहेतो हतो, तेनी स्त्रीने मरेलुं छोकरुं आव्युं हतुं. तेणीने शिवदत्त नामे निमि-त्तिए कह्युं हतुं के, जो तुं तारा मरी गएला बालकनुं मांस, दुधपाकनी साथे मिश्रित करीने, कोइ भिक्षुकने आपीश, तो तारां छोकरां जीवतां रहेशे. त्यारे तेणीए तेज विधिपूर्वक गोशालाने ते आप्युं. अने घर बलवानी बीकथी घरनुं बारणुं तेणीए बदलावी नाख्युं. गोशाले पण अणजाणतां तेनुं भक्षण कर्युं; अने पछी ते भगवान पासे गयो. सिद्धार्थे तेने सघलुं वृत्तांत कही बताव्याथी, तेणे वमन करी-ने तेनो निश्चय कर्यो. तथा पछी तेणीनुं घर बालवा चाल्यो. पण घर नहीं मलवाथी तेणे प्रभुने नामे ते पाडोज बाळी नाख्यो. त्यांथी प्रभु हरिद्र सन्निवेशनी बहार हरिद्र वृक्षनी नीचे प्रतिमा धारीने

रह्या. त्यां पंथिओए अग्नि सलगाववाथी प्रभुना चरणो दाझया; पण प्रभु त्यांथी खस्या नहीं; ते जोइ गोशालो त्यांथी नाशी गयो. त्यांथी प्रभु नंगला नामे गाममां वासुदेवना स्थानके प्रतिमाथी रह्या. त्यां गोशालो आंखोनां विकारो करीने बालकोने बिवराववा लाग्यो, त्यारें ते बालकोना माबापोए तेने मुनि-पिशाच कहीने निर्त्रंछिने मार्यो. त्यांथी प्रभु आवर्त गाममां बलदेवने स्थानके प्रतिमाथी रह्या. त्यां पण गोशालो मुखनां चाला करी छोकरांओने बिवराववा लाग्यो. त्यारे तेओनां माबापोए विचार्युं के, आतो गांडो छे, माटे आने मारवाथी शुं छे ? एनां गुरूनेज मारवा. एम जाणी जेवा तेओ प्रभुने मारवाने आव्या, के तुरत, ते बलदेवनी मुरतीएज हाथमां रहेला वज्रथी तेओने मार्या. त्यांथी प्रभु भद्रिका नगरीमां वर्षा ऋतुंनुं चतुर्मास क्षपण करीने तथा पारणुं बाहेर करीने अनुक्रमे तंबाल ग्राम-प्रते गया. त्यां पार्श्वनाथ प्रभुना संताननां नंदिषेण नामनां आचार्य बहु शिष्योनां परिवार सहित प्रतिमा धारीने रह्या हता. त्यां आरक्षकनां पुत्रे चोरनी बुद्धिथी, तेने भालांथी हण्या; तेथी अवधि-ज्ञान पूर्वक ते देवलोके गया. अहीं पण गोशालानां वचन आदिकनो वृत्तांत मुनिचंद्रनी पेठेज जाणी लेवो. त्यांथी प्रभु कुपिक संन्निवेशे गया. त्यां चारिकनी बुद्धि लावी आरक्षकोए तेमने पकड्या, पण पार्श्वनाथ प्रभुनी पासे रहेती, अने पाछलथी परिव्राजिका थएली, एवी विजया अने प्रगल्भाए प्रभुने छोडाव्या. त्यांथी गोशालो प्रभुथी छुटो थइने बीजे मार्गे चालवा लाग्यो. त्यां पांचसें चोरो, तेने मामो मामो करीने, तेनी खांधपर चडी बेठा. तेथी थाकी जइने ते विचारवा लाग्यो के, प्रभुनी साथे रहेवुं तेज सारुं छे; एम विचारि प्रभुने शोधवा लाग्यो. प्रभु पण वैशाली नगरीए जइने, त्यां लुहारनी शाला-मां प्रतिमाथी रह्या. त्यां एक लुहार, छमासे रोगथी निर्मुक्त थइने, उपकरणो लेइने ते शालामां आव्यो. प्रभुने जोइ अपशुकननी बुद्धिथी, तेमने घणें करीने ते मारवाने तैयार थयो ते वखते इंद्रे ते वात अवधिज्ञानथी जाणी तेज घणथी तेने मार्यो. त्यांथी प्रभु ग्रामाक संन्निवेश प्रते गया. त्यां उद्यानमां बिभेलक नामनां यक्षे महिमा कर्यो. त्यांथी शालिशीर्ष नामे गाममां, उद्याननेविषे प्रभु

प्रतिमापूर्वक रह्या हता, ते वखते त्रिपृष्टनां जवमां अपमान पामेली स्त्री, के जे मरीने , ते तापसीनुं रुप करीने, जलथी जरेली जटाथी, बीजाओ सहन करी शके नहीं शीतलां उपसर्गो करवा लागी. पण प्रजुने निश्चल जोइने शांत थइ थकी, ते प्रजुनी स्तुति करवा . प्रजु छठनो तप करी ते सहन करता हता, ते वखते तेमने लोकावधि ज्ञान उत्पन्न थयुं. तेवा-रपछी प्रजु जद्दिकानगरीमां छठ्ठा वर्षाकालनां चोमासामां विविध प्रकारनां तपो, तथा अजिग्रहो कर-ता हवा, त्यां छ मासने अंते फरीने पाछो गोशालानो मेलाप थयो. त्यां प्रजु बहारना जागमां पारणुं करीने चतुर्थ एवी मगधजूमिमां उपसर्गोए करीने रहित थया थका विहार करवा लाग्या. त्यांथी आलंजिकामां, सातमां चोमासामां चतुर्मास क्षपणथी रहीने, बहारनां जागमां पारणुं करीने, कुंमग गामनां सन्निवेशमां वासुदेवनां चैत्यमां प्रतिमाथी रह्या. त्यां गोशालो वासुदेवनी प्रतिमाथी पराङ्मु-ख थइने, मुख प्रते अधिष्टान करी रह्यो. तेथी लोकोए तेने मार मार्यो. त्यांथी प्रजु मर्दन नामे गाम-मां बलदेवनां चैत्यमां प्रतिमाथी रह्या. त्यां गोशालो बलदेवनां मुखने विषे मेहन राखीने रह्यो. त्यां पण लोकोए तेने मार्यो. अने एवी रीते बन्ने जगोए तेने मुनि जाणीने लोकोए छोमी मेल्यो. त्यांथी प्रजु अनुक्रमे बहुसालगनामे सन्निवेशमां गया. त्यां मार्गमां सन्मुख आवता एवा दंतुर वहुवरनी गोशाले हांसी करी, के, आतो बन्नेनो सरखो जोग मल्यो छे. तेथी तेओए तेने मारीने वांसनी जालीमां नांख्यो. पण प्रजुपर छत्र धरनार होवाथी, तेने छोडी मेल्यो. त्यांथी प्रजु गोजूमि प्रतेगया. त्यांथी प्रजुए राज-गृहीमां आठमुं चोमासुं कर्युं. चतुर्मासी तपने अंते बहारनां जागमां पारणुं करीने, त्यांथी वज्रजूमि-मां जइ, घणां उपसर्गो सहन करीने, त्यां नवमुं चोमासुं करता हवा. तथा चतुर्मासी तप पण कर्यो. तेम बीजा बे मास पण त्यांज प्रजुए विहार कर्यो. वसति एटले स्थानकनां अजावथी, नवमुं चोमासुं अनिश्चित थयुं. त्यांथी प्रजू कूर्म ग्राम प्रते जवा लाग्या त्यारे मार्गमां एक तलनां छोमने जोइ, गोशा-ले जगवानने पुछ्युं के, आ छोड निपजशे के नहीं ? त्यारे प्रजुए कह्युं के, आमां रहेला साते तलनां

पुष्पोनां जीवो मरीने एक शंबामां तलरुप थशे. ते सांजली प्रजुनुं वचन जूतुं पाडवामाटे, ते छोडने उखेडीने तेणे एकांत जगामां मेल्युं. ते वखते नजदिकमां रहेता व्यंतरोए विचार्युं के प्रजुनुं वचन जूतुं पडो नहीं, एम विचारि त्यां वृष्टि करी. तथा ते जीनी जमीनमां गायनी खरीथी, ते छोड उजो थयो, अने स्थिर रह्यो. त्यांथी प्रजु कूर्म नामे ग्राममां गया. त्यां वैश्यायन तापसे, आतपना ग्रहण करवामाटे, जटा छुटी मुकी हती, तेनी मांहे घणी जुओने जोइ, गोशाले, तेने "यूकाशय्यातर" एम वारंवार कहीने तेनी हांसी करी. तेथी ते तापसे क्रोधायमान थइ तेनापर तेजोलेश्या मुकी, पण दया-सागर एवा प्रजुए सामी शीतलेश्या गोशालापर मुकीने तेनुं रक्षण कर्युं.

पछी ते गोशाले, ते तापसनी तेजोलेश्याने जोईने जगवानने पुछयुं के, हे जगवन्, ते तेजोलेश्या केम प्राप्त थाय ? ते सांजली प्रजुए अवश्य जावी जावनां जोगथी, सर्पने दूध पावानीपेठे, अनर्थ कर-नारी, एवी तेजोलेश्यानी विधि तेने शिखवी के, हमेशां आतापना पूर्वक अठमनो तप करी, अडदनां बाकुलाथी, तथा एक जना पाणीनी अंजलीथी पारणुं करवुं. अने एवी रीते छ मास सुधि करवाथी तेजोलेश्या प्राप्त थाय छे. त्यांथी सिद्धार्थ नामें नगर प्रते जतां गोशाले कह्युं के, ते तलनो छोड निप-ज्यो नथी, पण प्रजुए कह्युं के, ते छोडतो निपज्यो छे. गोशाले ते वचनपर श्रद्धा नहीं राखीने, ते तली नां छोडने फोडीने जोयो, तो अंदर सात तलोने जोइने, तेनां तेज शरीरमां प्राणीओ फरीफरीने उप-जे छे. एवो तेणे निश्चय कर्यो. त्यांथी ते प्रजुथी जुदो पडयो; अने श्रावस्ती नगरीमां, जइ कुंजारनी शालामां रहीने, प्रजुए बतावेला उपायथी तेजोलेश्या साधीने व्रतने तजीने, पार्श्वनाथ प्रजुनां शिष्य पासेथी अष्टांग निमित्त जाणीने, अहंकारे करीने लोकोने जणाववा लाग्यो के, हुं तो सर्वज्ञ छुं. अहीं किरणावली टीकाकारे कह्युं छे के, ते तेजोलेश्यानो उपाय, सिद्धार्थे शिखव्यो छे, ते विचारवाजेवुं छे. केमके, जगवती सूत्र, आवश्यक चूर्णि, हरिजद्र सूरीश्वरजी नी टीका तथा हेमचंद्राचार्यजीए करेला श्रीवीरचरित्र आदिक अनेक ग्रंथोमां प्रजुए तेविधि कह्यो, एम कह्युं छे. त्यांथी प्रजुए दशमुं चोमासुं



चित्र ३८
सिद्धार्थव्यंतर
गोशालो
भगवान्
वैस्यायन तापस


चित्र १९
देवता उपसर्ग

मां कर्युं. तथा त्यां विचित्र प्रकारनो तेणे तप कर्यो. एवी रीते अनुक्रमे प्रभु बहु म्लेच्छोवाली एवी गया. त्यां पेढाल ग्रामनी बहार पोलास चैत्यमां, अष्टमभक्तपूर्वक प्रभु एक रात्रिनी प्रतिमाथी

ते वखते सभामां आवेला इंद्र, कह्युं के, वीर प्रभुनां चित्तने चलाववामां त्रणे लोकोनां रहेवासीओ पण असमर्थ छे, एम प्रशंसा करी. ते सांभली संगम नामनो सामानिक देव इर्ष्या लावीने, इंद्र समक्ष प्रतिज्ञा करवा लाग्यो के, एक क्षणवारमां हुं तेमने चलावी आपीश; एम कही प्रभुपासे आवीने, पेहेलां तो तेणे धूळनी वृष्टि करी, के जेथी प्रभुनां आंख कान आदिक विवरो ढंकाइ जवाथी, ते श्वास लेवाने अशक्त थया. तेवारपछी वज्रसरखा मुखवाली कीडीओए करीने, प्रभुनां शरीरने तेणे चालणीसरखुं कर्युं.

ते कीडीओ एक बाजुथी प्रवेश करीने बीजी बाजुथी निकलवा लागीओ. ते वार पछी वज्रसरखा डांसो, तेवारपछी, तीक्ष्ण मुखवाली घीमेलो, तेवार पछी वींछीओ तेवारपछी नोलीआं, तेवारपछी सर्पो, तेवारपछी उंदरो भक्षण आदिकथी, तेवारपछी हाथी तथा हाथणीओ शुंढनां आघातोथी, तथा पगोए करीने कचरवाथी, ते वार पछी पिशाच अट्टहास आदिकथी, तेवार पछी वाघ, दाढ तथा नखनां विदारण आदिकथी, तेवारपछी सिद्धार्थ अने त्रिशलानां करुणाजनक विलाप आदिकथी, पछी स्कंधावारथी, के ज्यां लोकोए प्रभुनां चरणोनी मध्ये अग्नि बालीने रसोइ करी हती. तेवारपछी प्रभुनां कान, कुक्षि विगेरे स्थानके तीक्ष्ण चांचोवाला पक्षीओनां पांजरां बांधीने तओनां उपद्रवथी, तेवारपछी प्रचंड पवनथी, के जे पवन प्रभुने उछाली उछालीने, पर्वतोने पण कंपावतो थको नीचे पाडतो हतो. ते वारपछी वंटोलीआथी, के जे प्रभुने चक्रनीपेठे भमावतो हतो. तेवारपछी हजार भारनां प्रमाणवाला चक्रथी, के जेथी मेरुपर्वतनुं शिखर पण चूर्ण थई जाय अने प्रभु पण जेथी छेक घुंटणसुधि जमीनमां पेसी गया हता. तेवार पछी प्रभात करीने तेणे कह्युं के हे महर्षे तारे, स्वर्ग अथवा मोक्ष जे-कंइ जोइए ते मागी ले ? तेथी पण प्रभुने निश्चल जोइ, तेणे देवांगनानां हावभावथी प्रभुने उपसर्ग कर्या. एवी रीते तेणे एक रात्रिमां वीस उपसर्गो कर्या, पण तेथी प्रभु जरा पण चलायमान थया नहीं.

अहीं कविए कह्युं छे के, हे प्रभु तमारुं बल हाथीनां मारथी पण रक्षण करवाने समर्थ छे, तेथी अप राधी एवा संगमक उपर पण तमोए दया करी छे, एवुं विचारिनेज होय नहीं जेम तेम रोषथी क्रोध तो प्रभुनां मनने तजीनें जतो रह्यो. तेवारपछी छ माससुधि अनेषणीय केतां कल्पे नहीं एवा आहार आदिकनां तेनां करेला उपसर्गोने सहन करता थका प्रभु,आहार रहित थया थका वज्र ग्रामनांगोकुलमां गोचरी माटे गया. त्यां पण तेणे आहारने अनेषणीय करवाथी प्रभु ते लीधा विना गाम बहार आवी प्रतिमाथी रह्या. त्यां पण ते नीच देवे प्रभुने अवधिज्ञानथी अस्खलित तथा शुद्ध परिणामवाला जोइने कह्युं के, हे प्रभु ! हवे आप ज्यारे भिक्षामाटे जशो, त्यारे हुं आपने कंई पण दुःख नहीं आपुं. त्यारे प्रभुए कह्युं के, हे संगमक, हुं कंई तने वश थएलो नथी, हुं भिक्षा ग्रहण करवा आदिकमां मारी पोतानी इछाथीज वर्तुं छुं. हुं कोइनी पण आज्ञानी अपेक्षा करतो नथी. ते सांभलीने ते देव विलखो थइने, शक्रनी बीकथी, प्रभुने वांदीने सौधर्म देवलोक प्रते गयो. पछी प्रभुने तेज गोकुलमां एक घरडी गोवालणीए दुधपाकथी प्रतिलाभ्या, तथा त्यां वसुधारा पण थइ.

हवे ज्यासुधी प्रभुने आहार पाणी न मल्यां, त्यांसुधी सौधर्म देवलोकमां रहेनारा सघला देव देवीओ शोकातुर रह्या, अने इंद्र पण, गीत, नाटक आदिकने तजीने "आ उपसर्गोनो हुंज हेतु थयो छुं, केमके में करेली प्रभुनी प्रशंसाथी, आ दुष्ट संगमके प्रभुने उपसर्गो कर्या छे" एम विचारी अत्यंत दुःखित थयो थको हाथपर मुख राखी, दिलगिरिमां रह्यो. पछी भ्रष्ट थएल छे, प्रतिज्ञा जेनी, तथा श्याम मुखवाला एवा ते संगमक देवने त्यां आवतो जोइने, इंद्रे परांग्मुख थइने देवोने कह्युं के, अरे देवो, आ दुष्ट कर्मचंडाल आवे छे, माटे तेनुं दर्शन पण महापापो आपनारुं थाय छे; वली आणे आपणनो मोटो अपराध करेलो छे, केमके तेणे आपणा स्वामिने कदर्थना करी छे तेम आपणाथी डर्यो नथी, तेम पापथी पण डर्यो नथी. माटे दुष्ट अने अपवित्र एवा, देवने स्वर्गमांथी कहाडी मेलो. एवी रीते आज्ञा अपाएला इंद्रनां सुभटोए, तेने मुष्टि, लाकडी आदिकनां मारथी मारीने,

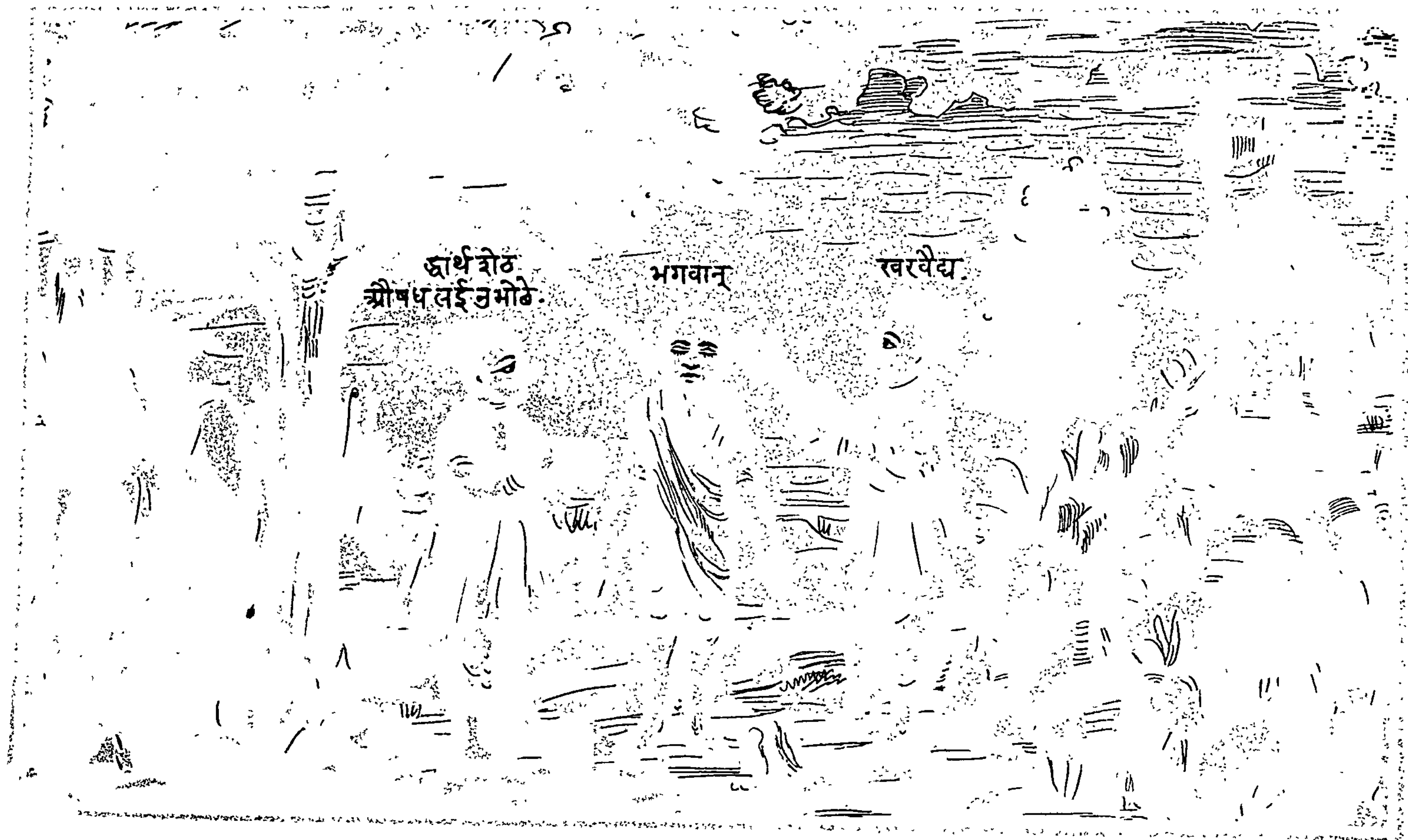
पण तेने निग्रंथीने हणकाया कुतरानी पेठे कहाढी मेल्यो; तेथी ठरी गएलो निस्तेज थयो थको, ते, परिवारविना फक्त एकाकी मंदराचलनां शिखरपर गयो; त्यां पोतानुं बाकी रहेलुं एक सागरोपमनुं आयुष्य ते संपूर्ण करशे. तेनी अग्र महिषीओ पण आज्ञाथी, दीन मुखवाळी थइ थकी, पोतानां भर्तारनी पाछळ गइओ, पछी आलंभिका नगरीमां, हरिकांत, तथा श्वेतंबिका नगरीमां हरिसह नामे बे विद्युत् कुमारो प्रभुने कुशळ पुछवा माटे आव्या. त्यारपछी श्रावस्ती नगरीमां इंद्र; स्कंदनी प्रतिमामां अवतरीने प्रभुने नमतो हवो. अने तेथी प्रभुनो मोटो महिमा प्रवर्त्यो. त्यांथी कोशांबी नगरीमां प्रभुने वांदवामाटे सूर्य चंद्रो आव्या. त्यारपछी वाणारसीमां इंद्र, राजगृहीमां ईशानेंद्र, तथा मिथिला नगरीमां जनक राजा, अने धरणेंद्रे प्रभुने कुशळ पुछ्युं. तेवारपछी वैशाली नगरीमां प्रभुनुं अग्यारमुं चोमासुं थयुं. त्यांथी प्रभु सुसुमार नामे नगरप्रते गया. तथा त्यां चमरेंद्रनो उत्पात थयो. त्यांथी अनुक्रमे कोशांबी नगरीए प्रभु गया. त्यां शतानिक नामे राजा हतो, तेनी मृगावती नामे राणी हती, तथा विजया नामे प्रतिहारी हती. त्यां वादीओने धर्म पमाडनार, सुगुप्त नामे अमात्य हतो, तेनी नंदा नामनी स्त्री हती, ते श्राविका हती; तथा मृगावतीनी बेहेनपणी हती. त्यां प्रभुए पोससुदि पडवाने दिवसे अभिग्रह लीधो. द्रव्यथी सुपडानां खुणामां रहेला बाकुला; क्षेत्रथी एक पग डेहलीनी अंदर होय; तथा एक पग जेणीनो बहार होय एवी स्त्री; काळथी सघळा भिक्षाचरो निवृत्त थएला होय; भावथी राजानी पुत्री, के, जे दासपणाने प्राप्त थएली होय; तथा जेणीनुं मस्तक मुंडित थएलुं होय, पगमां बेडी होय, तथा रुदन करती होय; तथा अठमनुं पारणुं जेणीने होय, एवी कोइ बालिका जो भिक्षा आपशे, तो हुं ग्रहण करीश; एवो अभिग्रह लेइने प्रभु हमेशां भिक्षामाटे जमवा लाग्या. पछी अमात्य आदिक घणां उपायो करवा छतां ते अभिग्रह संपूर्ण थतो नथी.

राजाए चंपा नगरीने भांगी. त्यानां दधिवाहन राजानी धारिणी नामनी स्त्रीने

तथा तेनी वसुमती नामनी पुत्रीने कोइ सिपाइए केद पकडी. धारिणीने तेणे पोतानो स्त्री करवानुं कह्याथी, तेणी तो जीन करडीने मृत्यु पामी. पण वसुमतीने पुत्री तरिके करवानुं समजावीने, तेणीने तेणे कोशांबीमां चौटामां लावीने वेंची. त्यां धनावह नामना शेठे तेणीने वेंचाती लेइ, चंदना एवुं नाम आपीने पुत्रीनी पेठे अंत्यत प्रेम राखतो. एक दहाडो ते शेठना पग धोवरावती हती; ते वखते तेणीनो चोटलो पृथ्वीपर लटकतो हतो, ते शेठे पोते उंचो कर्यो. ते जोईने ते शेठनी मूला नामनी स्त्रीए विचार्युं के, आ युवान बालिका खरेखर शेठनी स्त्री थशे. अने मारापर शेठ प्रेम राखशे नहीं, तेथी तेणीए पोते मनमां इर्ष्या लावीने, चंदनानुं मस्तक मुंडावी तेणीने बेडी पेहेरावी पुरीने क्यांक चाली गइ. शेठने पण चोथे दहाडे ते खबर पडवाथी, तेणीने बहार कहाडीने तथा तेवीज रीते तेणीने डेहेलीमां मुकीने तथा सुपडानां खुणामां अडदना बाकुला आपीने, ते बेडी भांगवामाटे लुहारने बोलाववा गयो. त्यारे चंदनाए विचार्युं के जो कोइ भिक्षुक आ वखते आवे, तो तेने आ बाकुला मांथी आपीने पछी हुं पण खाउं, एम विचार करे छे, एटलामां त्यां श्री वीरप्रभु पधार्या. त्यारे तेणीए पण हर्षित थइने कह्युं के, हे प्रभु, आ तमो ल्यो ? पण प्रभु पोताना अभिग्रहपूर्वक तेणीने रडती नही जोइने पाछा वल्या. त्यारे चंदनाए विचार्युं के, अहो! प्रभु आ वखते आवीने, कंइ पण ग्रहण कर्याविना पाछा चाल्या जाय छे, एम विचारिखेद पूर्वक ते रडवा लागी. पछी प्रभुए पण पोतानो अभिग्रह संपूर्ण थएलो जाणी ते बाकुला लीधा. अहीं कवि कहे छे के, पंडित लोकोए चंदनाने बाला केम कहेली छे ? (अर्थात् तेणीने तो महा हुशयार समजवी.) केमके जेणीए वीर प्रभुपासेथी बाकुला देइने मोक्ष लीधुं !!! ते वखते त्यां पंच दिव्यो प्रगट थयां, इंद्र पण आव्यो, देवो नाचवा लाग्या, तेणीनां मुंडित मस्तकपर केश थइ गया, बेडीउ झांझररुपे थई. त्यां मृगावती मासीनु मलवापणुं थयुं तथा ते संबंधथी वसुधारामां पडेलुं धन शतानिक लेवा लाग्यो, तेने निवारिने, धनावहने ते धन देइने, तथा आ वीर प्रभुनी साधवी थशे," एम कहीने इंद्र पोताने स्थानके गयो. पछी अनुक्रमे जं-


चित्र ४०
चंदन बाला
भगवान्
इन्द्र
राजा
सेवको

चित्र ४१



जिका नामे गाममां इन्द्रे नृत्यविधि देखाडीने कह्युं के आटले दिवसे ज्ञाननी उत्पत्ति थशे. त्यारबाद मेंढिक नामे गाममां चमरेंद्रे प्रभुने कुशल पुछ्युं. त्यांथी षण्मानी नामे गाममां, प्रभु बहारना जागमां प्रतिमाथी रह्या हता. तेमनी पासे एक गोवालीउ पोताना बेलो मुकीने गाममां गयो. पछी आवीने तेणे प्रभुने पुछ्युं के, हे देवार्य, मारा बेलो क्यां गया? पण प्रभु मौन रहेवाथी, तेणे गुस्से थइने, प्रभुना कानमां एवी रीते खीला ठोक्या के जेमना अग्र जागो अंदर एक बीजाने जटक्या. प्रभुए त्रिपृष्टनां जवमां शय्यापालकनां कानमां जे तपावेलुं सीसुं रेडाव्युं हतुं, ते कर्म आवी रीते उदयमां आव्युं. नु वर्णन वीर प्रभुनां जवोमां कहेलुं छे, ते शय्यापालक जव जमीने आज गोवालीउ थयो हतो. त्यांथी प्रभु मध्यम अपापामां गया. त्यां सिद्धार्थ नामे वणिकने घेर, प्रभुने जिक्षा माटे आवेला जाणीने, खरक नामना वैद्ये प्रभुने शल्यसहित जोया. पाछलथी ते वणिके वैद्यनी साथे उद्यानमां जइने ते खीलाउने साणसीथी प्रभुनां कानमांथी खेंची कहाड्या. ते कहाडती वखते वीर प्रभुए एवो अरेराट शब्द कर्यो के जेथी सघलुं उद्यान महा जयंकर थयुं. त्यां लोकोए एक देवालय बंधाव्युं. पछी प्रभु संरोहिणी नामनी औषधिथी निरोगी थया; तथा ते वैद्य अने वणिक बन्ने स्वर्गमां गया. तथा ते गोवालीउ सातमी नरके गयो.

हवे ते उपसर्गोमां कटपूतनानो शीतोपसर्ग जघन्योमां उत्कृष्ट जाणवो. कालचक्रनो मध्यमोमां उत्कृष्ट जाणवो. तथा कानमांथी खीला खेंचवानो उत्कृष्टमां उत्कृष्ट जाणवो. ते सघला उपसर्गो वीर प्रभुए सम्यक् प्रकारे सहन कर्या.

एवी रीते प्रभु अनगार थया थका इर्यासमिति एटले हलनचलनमां उत्तम प्रवृत्तिवाला तथा जाषासमिति एटले बोलवा करवामां उत्तम प्रवृत्तिवाला थया; तथा एषणा समिति एटले बेंतालीस दोषोए करीने रहित एवी जिक्षा ग्रहण करवामां उत्तम प्रवृत्तिवाला थया, तथा उपकरण आदिक ग्रहण करवामां तथा माटी आदिकनां वासणो विगेरे लेवा मुकवामां पण समितियुक्त थया. अर्थात् तेमने बरो-

बर जोइ प्रमार्जीने उपाडवा तथा मुकवा लाग्या. तथा विष्ठा, मूत्र, थुंक, श्लेष्म, देहनो मेल, इत्यादिक नाखवा करवामां पण सावधान थया. अर्थात् तेमने शुद्ध जगोपर नाखवा लाग्या. अहीं छेल्ली बे समितिओ जोके प्रभुने संभवतीज नथी, तो पण तेओनां नामनां अखंडितपणां वास्ते एम कह्युं छे. वली एवी रीते मन, वचन, अने कायानी गुप्तिवाला, अर्थात् तेमना अशुभ परिणामोने दूर करनारा, अने तेथी गुप्त इंद्रियोवाला, तथा नवविध ब्रह्मचर्यनी गुप्तिवाला, तथा अंतरवृत्तिथी क्रोध आदिक चार कषायोने शांत करनारा, तथा बहारवृत्तिथी पण प्रशांत थएला, तथा सर्व प्रकारनां संतापथी रहित थयेला, तथा हिंसा आदिक आश्रवद्वारनी विरतिथी पापकर्मोना बंधनोथी रहित थएला, तथा ममताए करीने रहित थएला, तथा द्रव्य आदिकथी पण रहित थएला, तथा निर्ग्रंथ एटले हिरण्य (सुवर्ण) आदिकनी ग्रंथिथी रहित थएला, तथा द्रव्य भावथी मेलनां निर्गमनथी निर्लेप थएला; तेमां द्रव्य मेल एटले शरीरथी उत्पन्न थतो मेल, तथा भावमेल एटले कर्मथी उत्पन्न थतो मेल, ते बन्नेथी रहित थएला; अर्थात् जेम कांसानुं पात्र पाणीथी लेपातुं नथी, तेम भगवान पण स्नेहथी लेपाता नथी. तथा शंखनी पेठे राग आदिकथी निरंजन थएला, तथा जीवनी पेठे सर्व जगोए स्खलनारहित गमन करनारा, तथा आकाशनी पेठे कोइना पण आधारनी अपेक्षा नहीं करनारा, तथा वायुनी पेठे एकज जगोए नहीं रहेनारा, तथा शरद रुतुनां पाणीनी पेठे निर्मल अने शुद्ध हृदयवाला, तथा कमलपत्रनी पेठे निर्लेप, एटले जेम कमलपत्रपर लेप लागतो नथी, तेम प्रभुने पण कर्मोनो लेप लागतो नथी. तथा काचबानी पेठे गुप्त इंद्रियोवाला, तथा गेंडानां शिंगडांनी पेठे एकाकी अर्थात् गेंडाने जेम एकज शींग डुं होय छे, तेम भगवान पण रागआदिकना सहायविनानां; तथा पक्षीनीपेठे अनियत निवासवाला तथा भारंड पक्षीनीपेठे प्रमादविनानां, भारंड पक्षिनां जोडलांनुं एकज शरीर होय छे. कह्युं छे के, भारंड पक्षिओ एक पेटवाला, त्रण पगवाला, मर्त्यनी भाषा बोलनारा, होय छे, अने तेओनुं भिन्न फलनी इच्छाथी मृत्यु थाय छे. अने तेओ अत्यंत अप्रमादी होय छे. वली हाथीनी पेठे कर्मोरूपी शत्रु-

ओने हणवाने शूरा, तथा वृषजनी पेठे पोते अंगीकार करेला व्रत ज्ञारने उपाडवाने समर्थ. तथा सिंहनी पेठे परिसहादिकने जीतनारा, तथा मेरुनी पेठे उपसर्गोरुपी पवनथी नहीं चलायमान थता एवा, तथा समुद्रनी पेठे हर्ष, शोक आदिकमां पण विकार रहित गांजीर्यवाला, तथा चंद्रनी पेठे सौम्य लेश्यावाला, तथा सूर्यनी पेठे देदीप्यमान तेजवाला, अर्थात् द्रव्यथी शरीरनी कांतिथी, अने ज्ञावथी ज्ञाने करी कांतिवाला, तथा उत्तम सुवर्णनी पेठे थयेलुं बे स्वरुप जेमनुं एवा, अर्थात् जेम मेल बली जवाथी सोनुं कांतिवालुं थाय बे, तेम ज्ञगवाननुं स्वरुप पण कर्मरुपी मेलनो नाश थवाथी अत्यंत दीप्तिवालुं थएलुं हतुं. पृथ्वीनी पेठे सघलुं सहन करनारा; अर्थात् जेम पृथ्वी टाढ तडको विगेरे, समताथी सहन करे बे, तेम ज्ञगवान पण सघलुं सहन करता हवा. तथा सारी रीते घी आदिकथी सिंचाएलो जे अग्नि, तेनी पेठे तेजथी जाज्वल्यमान थएला; वली ते प्रज्ञुने कोई पण जगोए प्रतिबंध नहोतो. ते प्रतिबंध चार प्रकारनो कहेलो बे. द्रव्यथी, क्षेत्रथी, कालथी, अने ज्ञावथी. तेमां द्रव्यथी त्रण प्रकारे जाणवो. सचित्तद्रव्य एटले स्त्रीआदिक, अचित्त द्रव्य एटले आज्ञूषण आदिक, तथा मिश्रद्रव्य एटले शणगारेली स्त्री आदिक. क्षेत्रथी एटले कोई गाममां, नगरमां, अरण्यमां, धान्य जेमां उत्पन्न थाय एवा क्षेत्रमां, खल केतां धान्यने फोतरांथी जुदां करवानां स्थानकमां, घरमां, अथवा घरनां आंगणांमां अथवा आकाशमां, कालथी एटले समय जेवा अति सूक्ष्म कालमां के जे कमलपत्र अथवा जीर्ण साडी आदिकनां फाटवाना (दृष्टांतथी) जणाई आवे बे. तथा आवलि एटले असंख्याता समयवाला कालमां, तथा श्वासोश्वासनां प्रमाणवाला कालमां, तथा स्तोक एटले सात उश्वासनां प्रमाणवाला कालमां, तथा लव एटले सात स्तोकनां मानवाला कालमां, तथा मुहुर्त केतां सित्तोतेर लवनां मानवाला कालमां, एवी रीते रात्रि दिवसथी मांडीने बेक वर्षपर्यतनां कालमां, तथा बीजा पण युगपूर्व अंगपूर्व आदिक लांबा कालमां. हवे ज्ञावथी एटले क्रोधादिकमां, प्रेममां, द्वेषमां कलहमां, मिथ्या कलंक देवामां, चाडीमां, परनां अपवादमां, मोहनीयनां उदयथी थती रति अरतिमां, कपट

सहित मृषावादमां, तथा मिथ्यात्वरुपी अनेक दुःखनां हेतुरुप एवा शल्यमां; एवी रीते द्रव्य, क्षेत्र काल अने भावथी कोइ पण जगोए प्रभुने प्रतिबंध नहोतो.

हवे ते श्री वीरप्रभु वर्षाकालनां चार मासो वर्जिने, बाकीनां ग्रीष्म अने हेमंत ऋतुनां आठ मासमां, गाममां एक रात्रि, तथा शेहेरमां पांचरात्रि सुधि रहेता. वली ते प्रभु केवा, तो के, वासी केतां सुतारनुं लाकडां छोलवानुं हथियार, तथा चंदन, ते बन्नेने विषे तुल्य अध्यवसायवाला; वली ते प्रभु केवा, तो के तृण, पाषाण आदिक, तथा मणि कांचन आदिमां पण तुल्य दृष्टिवाला, तथा सुख दुःखमां पण तुल्य स्वभाववाला, तथा आलोक अने परलोकमां पण प्रतिबंध विनानां. अने तेथी करीनेज जीवित अने मरणमां वांछा रहित एवा, तथा संसाररुपी समुद्रनां पारप्रते पहोंचनारा, तथा कर्मोरुपी शत्रुओने मारवामाटे उद्यमवंत थएला, एवा प्रभु विहार करवा लाग्या.

एवी रीते प्रभुने विहार करतां थकां, अनुपम एवां ज्ञान, दर्शन अने चारित्रथी, तथा देशोमां विहार करवाथी, तथा पराक्रमथी, तथा कपटीपणांनां अभावथी, तथा अहंकारना पण अभावथी, तथा लाघवपणाथी, एटले द्रव्यथी अल्पोपधिपणाथी, तथा भावथी गौरवत्रयनां त्यागथी तथा क्रोध आदिकना अभावथी, तथा लोभना अभावथी, तथा संतोषपणांथी, तथा अनुपम एवुं जे सत्य, संयम, तथा बारप्रकारनो तप, तेओनुं जे सदाचरण, तेणे करीने पुष्ट थयेलुं छे, मुक्तिरुपी फल जेनुं, एवी रीतनो रत्नत्रयरुप जे मोक्षमार्ग, तेणे करीने, तथा एवी रीते उपर वर्णवेला सर्व गुणोना समूहथी आत्माने भावतां थकां, बार वर्षो वीती गयां. तेमां एक छमासी करी. बे वार छमासमां पांच दिवस ओछानां उपवास कर्या. नव चोमासी उपवास कर्या. बे त्रण मासीओ करी. बे अढीमासीओ करी. छ बे मासीओ करी. बे दोढमासीओ करी. बार मासक्षपणो कर्या. बहोंतेर पक्षक्षपण कर्या. बे दिवसनी भद्रप्रतिमा करी. चार दिवसनां माननी महाभद्र प्रतिमा करी. दश दिवसोनां माननी सर्वतोभद्र प्रतिमा करी. बसो ने ओगणीश छठ कर्या. बार अठम कर्या त्रणसो ने ओगणपचास पारणां कर्या. एक दीक्षानो

दिवस थयो. हवे ते सघलो तप प्रभुए जलरहित कर्यो. तेम नित्य भक्त के चतुर्थ भक्त कोई दहाडो पण कर्युं नहीं.

एवी रीते तेरमा वर्षनी वैशाख सुदी दशमीने दहाडे, पूर्व दिशा तरफ छाया जाते छते, पाश्चात्य पौरुषी संपूर्ण होते छते, अर्थात् पौरुषी न्यूनाधिक न होते छते, सुव्रत नामनां दिवसे, विजय नामनां मुहुर्ते जंभिक नामनां गामनी बहार, रुजुपालिका नामनी नदीने कांठे; व्यावृत्य नामनां एक व्यंतरनां देवलनी नहीं अति दूरे, तेम नहीं अति नजदीके श्यामाक नामे कुटुंबिकनां क्षेत्रमां, साल नामनां वृक्षनी नीचे, उत्कटिक आसनथी आतापना लेतां थकां, छठनो तप होते छते, तथा हस्थुत्तरा नक्षत्रनो जोग आवते छते, ध्याननां मध्य भागमां रहेते छते. अर्थात् ध्याननां चार भेदो छे. पेहेलुं प्रथक वितर्कवालुं सविचार शुक्लध्यान, बीजुं एकत्व वितर्कवालुं अविचार शुक्लध्यान, त्रीजुं सूक्ष्म क्रिया अप्रतिपाति, तथा चोथुं उछिन्न क्रिया अनिवर्ति. तेओमांथी पेहेला बे भेदोवालुं ध्यान धरते छते, अनंत, अपूर्व, बाधा रहित तथा आवरणरहित एवां केवलज्ञान अने केवलदर्शन प्रभुने उत्पन्न थयां.

एवी रीते केवलज्ञान उपज्या बाद श्रमण भगवंत श्रीमहावीर प्रभु " अर्हन् " थया. अने अशोक वृक्ष आदिक प्रतिहारोथी पूजाने योग्य थया. वली केवा तो के, जिन केतां रागद्वेषने जीतनारा थया. तथा सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी थया. तथा तेथी देव, मनुष्य असुरोनां पर्यायोने जाणनारा तथा जोनारा थया. त्यारे शुं फक्त देव, मनुष्य अने असुरोनांज पर्यायोने जाणनारा थया? तो के एम नही, सर्व लोकने विषे रहेला, जीवोनी भवांतरनी गति, स्थिति, आयुष्य, कायस्थिति, मृत्यु, देवलोकथी तिर्यंच, मनुष्यनो अवतार, देवलोकमां उत्पत्ति, तथा सर्व जीवोनां मननुं चिंतन; भोजन, चोरी आदिक कार्य, मैथुन, प्रगट कार्य, छानुं कार्य, ते सघलुं भगवान जाणनारा थया. वली ते प्रभु केवा, तो के, त्रणे भुवनने करामलकनी पेठे जोनार होवाथी, नथी रहेल कंई पण गुप्त जेनाथी एवा, तथा जघन्यपणाथी कोड देवो तेमनी सेवा करनारा होवाथी एकांतपणाएं करीने रहित एवा, वली ते प्रभु केवा तो के,

ते कालने विषे, मन, वचन अने कायानां योगोमां पोतानी इच्छा प्रमाणे वर्तता, एवा जे सर्व लोकनां जीवो, तेओना सर्व भावोने जाणता थका प्रभु विहार करवा लाग्या. वळी "सव्व जीवाणं" ए पदमां अकारनो पण श्लेष होवाथी, धर्मास्तिकाय आदिकनां पण सर्व पर्यायोने प्रभु जाणता हता, एवो पण अर्थ जाणवो.

हवे ते अवसरने विषे एकठा मळेला देव असुर आदिको प्रते, पत्थरवाळी जमीनपर पडेला वरसादनी पेठे, निष्फल एवी देशना देइने प्रभु अपापापुरीमां महसेन नामे वनमां गया. त्यां यज्ञ करावता एवा सोमिल नामे ब्राह्मणनां घरमां घणा ब्राह्मणो एकठा थया हता.

तेओमां इंद्रभुति, अग्निभुति, तथा वायुभुति, नामे त्रण सगा भाइओ हता. तेओ चौदे विद्यामां प्रवीण हता. तेओमां पेहेलाने जीवनो, बीजाने कर्मनो, तथा त्रीजाने जीव अने शरीरनो संदेह हतो. तथा तेओ दरेकने पांचसो पांचसो शिष्योनो परिवार हतो. तेवीज रीते व्यक्त अने सुधर्मा नामना बे ब्राह्मणो तेटलाज परिवारवाला, तथा तेवाज विद्वानो हता; तेओमांथी पेहेलाने, पंच भूतो छे के, नहीं ? एवो संदेह हतो; तथा बीजाने "जे जेवो ते तेवोज" एवो संदेह हतो. वळी तेवाज विद्वान मंडित अने मौर्यपुत्र नामे बे भाइओ हता, तथा तेओने दरेकने साडी त्रणसो शिष्योनो परिवार हतो. तेओमांथी पेहेलाने बंध, मोक्षनो, तथा बीजाने देवना संबंधमां संदेह हतो. तथा अकंपित, अचलभ्राता, मेतार्य अने प्रभास नामे चार ब्राह्मणो हता; तेओने दरेकने त्रणसो त्रणसो शिष्योनो परिवार हतो; तथा तेओमांथी पेहेलाने नारकीनो, बीजाने पुण्यनो, त्रीजाने परलोकनो, तथा चोथाने मोक्षनो संदेह हतो. एवी रीते ते अग्यारे विद्वानोने संदेह हता, पण पोतानां सर्वज्ञपणानां अभिमाननी क्षतिना भयथी, तेओ मांहोमांहे कोइने पण पोतपोताना संदेहो विषे पुछता नहोता. एवी रीते तेओनां परिवारना चमालीसें ब्राह्मणो, तथा बीजा पण, उपाध्याय, शंकर, ईश्वर, शिवजी, जानि, गंगाधर, महीधर, श्रीधर, लक्ष्मीधर, पंड्या विष्णु, मुकुंद, गोविंद, पुरुषोत्तम, नारायण, डुवेश्रीपति, विद्यापति, गणपति, जयदेव, व्यास, महादेव

, गौरीपति, त्रिवाडी, श्रीकंठ, नीलकंठ हरिहर, रामजी, राउल, मधुसूदन, नरसिंह, जोशी, शिवराम विगेरे घणा ब्राह्मणो त्यां एकठा थया हता

ां प्रभुने वांदवा माटे देव दानवोने आवता जोइने, ते ब्राह्मणो विचारवा लाग्या के, अहो! यज्ञनो महिमा केवो छे!! अहीं साक्षात् देवो पधार्या छे. पण पछी तो तेउने ते यज्ञमंडप तजीने प्रभुनी पासे जता जोइने, तेउ खेद पामवा लाग्या. पछी माणसोना मुखथी तेउने सर्वज्ञ प्रभुने वांदवा जता जाणीने, इंद्रभुति इर्ष्याथी विचारवा लाग्यो के, अरे!! हुं सर्वज्ञ होते छते, वली बीजो कोइ पोताने शुं सर्वज्ञ लेखावे छे!!! अरे! एवुं कडवुं वचन माराथी सहन पण केम थाय!!! अरे वली कोइ मूर्ख तो कोइ धूर्तथी ठगाय, पण आणे तो देवोने पण ठग्या छे; केमके आ देवो यज्ञमंडपने तजीने तेउनी पासे जाय छे. अथवा जेवो आ सर्वज्ञ छे तेवाज आ देवो पण छे, माटे सरखा सरखो जोग मल्यो छे!!! तो पण हुं तेनां सर्वज्ञपणानां आटोपने सहन करी शकीश नहीं. केम के आकाशमां शुं बे सूर्यो होइ शके? अथवा एक गुफामां शुं बे सिंहो रही शके? अथवा एक म्यानमां शुं बे तलवारो समाइ शके? अने तेवी रीते हुं अने आ बने सर्वज्ञो शीरीते थइ शकीए?

हवे प्रभुने वांदीने पाछा वलता लोकोने, तेणे हांसीपूर्वक पुछ्युं के, अरे! लोको!! तमोए ते सर्वज्ञने जोयो? ते केवो छे? त्यारे लोकोए कह्युं के, जेनां आयुष्यनो छेडो न होय, एवा आ त्रणे लोकोनां माणसो जो गणवा मांडे, अने परार्ध उपरनां आंकडाउनुं जो गणित होय, तो ते सर्वज्ञना गुणोनी थइ शके. लोकोनां एवी रीतनां वाक्यो सांभलीने, इंद्रभुति विभ्रारवा लाग्यो के, आ कोइ धूर्त छे, तथा कपटनुं तो एक मंदिर छे, केमके नहींतर ते समस्त लोकोने विभ्रममां केम पाडी ? ते सर्वज्ञने हुं कोइ दहाडो पण सहन करी शकीश नहीं; केम के अंधकारनां समूहने दूर कंइ वाट जोतो नथी. वली अग्नि, हाथना स्पर्शने, सिंह पोतानी केशवालीना खेचवाने, श्री, शत्रुथी थता अपमानने सहन करी शकतो नथी. वली मारा भयथी गौड देशमां

रहेनारा पंडितो तो दूर देशमां चाल्या गया छे, तथा गुर्जर पंडितो तो, मारा जयथी जर्जरित थइने त्रास पाम्या छे, तथा मालवाना पंडितो मरी गया छे, तथा तिलंग देशना पंडितो तो मारा जयथी कृश शरीरवाला थया छे. अरे! वली लाट देशनां पंडितो तो माराथी डरीने क्यांए जागी गया छे, तथा द्रविड देशना पंडितो लज्जातुर थया छे, वली ज्यारे हुं वादीओनो इच्छातुर थयो छुं, त्यारे जगतमां वादीओनो पण डुकाल पड्यो छे. माटे एवो जे हुं तेनी आगल वली आ कोण वादी पोतानां सर्वज्ञपणानां मानने धारण करे छे? एम कही ज्यारे त्यां प्रभु पासे जवाने ते उत्कंठित थयो, त्यारे अग्निभूतिए तेने कह्युं के, हे बंधु, ते एक वादीकीट (दम विनानां वादी) पासे जवाने तमारे प्रयास लेवानी शी जरुर छे? केम के एक कमलने छेदवा माटे शुं ऐरावणने ते लेइ जवाय छे!! त्यारे इंद्रभूतिए कह्युं के, जो के तेने तो मारो एक शिष्य पण जीती शके तेम छे, पण ते प्रवादीनुं नाम सांभलीने माराथी अहीं ठेरी शकातुं नथी. वली आ वादीने जीत्या विना, मारो जगतने जीतवाथी उत्पन्न थएलो यश पण नाश पामशे, केम के शरीरमां रहेलुं अल्प शल्य पण प्राणने तजावे छे. केम के वहाणमा एक अल्प छिद्र पडवाथी पण शुं ते समुद्रमां डुबी जतुं नथी? तथा एक इंट खसेडवाथी पण समस्त किल्लो पडी जाय छे. इत्यादि विचार करीने, करेल छे बार तिलको जेणे एवो, तथा सोनानी जनोइथी विभूषित थएलो, तथा उत्तम रीते करेल छे, पीलां वस्त्रोनो आडंबर जेणे एवो, तथा हाथमां धारण करेल छे, पुस्तको जेओए एवा केटलाक लोकोथी वींटाएलो, तथा हाथमां पकडेलां छे कमंडलुओ जेओए एवा केटलाक माणसोथी वींटाएलो, तथा हाथमां राखेल छे दर्भ जेओए एवा केटलाक माणसोथी वींटाएलो, तथा हे सरस्वतीनां कंठमां आभूषण सरखा, हे वादीनी विजयलक्ष्मीने शरण सरखा, हे वादीओनां मदने उतारनारा, हे वादीओनां मुखने भांगनारा, हे वादीओरूपी हाथीओ प्रते सिंह सरखा, हे वादीओनां ईश्वर, हे वादीरूपी सिंह प्रते अष्टापद सरखा, हे वादीनां जयथी निर्मल थएला, हे वादीओना समूहना राजा, हे वादीओना शिरप्रते काल सरखा, हे वादीरूपी केलप्रते तल-

वार सरखा, हे वादीरूपी अंधकार प्रते सूर्य सरखा, हे वादीरूपी घउंने पीसवाने घंटी सरखा, हे वादीओने मर्दन करनारा, हे वादीओनी घटाने तोरुवाने मुज़र सरखा, हे वादीरूपी घुवडोने सूर्य सरखा, हे वादीओरूपी समुद्रप्रते अगस्तिरुषि सरखा, हे वादीरूपी वृक्षने उखेरुी नाखवामां हाथी सरखा, हे वादीरूपी देवोना इंद्र सरखा, हे वादीरूपी गरुरुप्रते गोविंद सरखा, हे वादीरूपी माणसोना राजा, हे वादीरूपी कंसने मारवामां कृष्ण सरखा, हे वादीरूपी हरिणप्रते सिंह सरखा, हे वादीरूपी ज्वरप्रते धन्वंतरि वैद्य सरखा, हे वादीरूपी टोलांनां मल्लसरखा, हे वादीओना हृदयप्रते शल्यसरखा, हे वादीओना समूहने जीतनारा, हे वादीओरूपी पतंगीआंओ प्रते दीपक सरखा, हे वादीओना समूहना मुगट सरखा, हे पंडितोमां शिरोमणि सरखा; हे जीतेलछे अनेक वादो जेणे एवा, हे सरस्वतीथी मलेल छे प्रसाद जेने एवा, एवी रीते बिरूदावलीथी गजावी दीधेल छे, दिशाओनो समूह जेणे, एवो पांचसो शिष्योथी विंटाएलो इंद्रनूति वीरप्रनु पासे जतो थको विचारवा लाग्यो के, अरे! आ लुचे शुं आदर्युं के, मने सर्वज्ञपणाना आटोपथी तेणे गुस्से कर्यो!!! आणे खरेखर पवननी सन्मुख थइने दावानल सलगाव्यो छे, अथवा पोतानां शरीरनां सुखमाटे आणे कवचनी वेलरुी साथे आलिंगन कर्युं छे. पण हशे! हमणांज हुं तेने निरुत्तर करी देइश. केमके ज्यांसुधि सूर्य उगतो नथी त्यां सुधिज पतंगीउं तथा चंद्र पोतानां जोरमां रहे छे. पण सूर्य उग्याबाद तो तेओ हता नहता थइ जाय छे. वली हे हरिण, हाथी घोरुा विगेरेनां समूहो, तमो जलदि आ वनथकी दूर जाओ. केमके आटोप सहित स्फुरायमान थएल छे, केशवालीनी शोना जेनी एवो केसरीसिंह अत्रे आवे छे. वली मारा नाग्यनां समूहथीज आ वादी अहीं आवी पहोंच्यो छे, माटे खरेखर आजे तेनी जीन्ननी खरज हुं दूर करीश. वली व्याकरण शास्त्रमां तो मारुं दक्षपणुं छे, साहित्यशास्त्रमा मारी बुद्धि विस्तीर्ण थएली छे, तर्कशास्त्रमां पण मारूं अत्यंत निपुणपणुं छे, माटे क्या शास्त्रमां में श्रम कर्यो नथी.? वली वज्रने कइ वस्तु अनेद्य छे? तथा महात्माओने शुं असाध्य छे? तथा नुख्याने शुं खाद्य नथी?

तथा खलने शुं बोलवानुं नथी ? वली त्रणे लोकने जीतनार, तथा महा पराक्रमी एवा मने शुं अजेय छे ? माटे हवे त्यां जइ तेने हुं जीती लेउं. इत्यादि विचार करतो थको प्रभुने जोइ, पगथीआंपर रह्यो थको विचारवा लाग्या के, आ ते शुं ब्रह्मा, विष्णु, के सदाशिव शंकर छे ? वली शुं आ चंद्र छे ? ना, तेम तो नहीं, केम के चंद्र तो कलंकयुक्त छे, त्यारे शुं सूर्य छे ? ना तेम पण नहीं, केम के सूर्य तो तीव्र कांतिवालो छे; त्यारे शुं मेरु छे ? ना, तेम पण नहीं, केम के मेरु तो हमेशां कठिन छे; त्यारे शुं विष्णु छे ? ना, तेम पण नहीं, केम के विष्णु तो श्याम रंगना छे; त्यारे शुं ब्रह्मा छे ? ना, तेम पण नहीं, केम के ब्रह्मा तो घरडो छे; त्यारे शुं ते कामदेव छे ? ना, तेम पण नहीं, केम के ते तो शरीर विना नो छे; नहीं. हवे मालुम पड्युं के, आ तो दोष रहित, तथा सर्वगुणसंपन्न एवा छेल्ला तीर्थंकर छे.

एवी रीते सुवर्णनां सिंहासनपर बेठेला, इंद्रोथी सेवाता, अने जगतने पण पूजनीक एवा श्री वीर प्रभुने जोइने ते इंद्रभूति मनमां विचारवा लाग्यो के, अरे ! हवे हुं पेहेलां उपार्जन करेली महत्ता केम राखी शकीश ? वली एक खीलाने माटे आखो मेहेल भांगवानी कोण इछा करे ? वली जगतने जीतनार एवो जे हुं. तेनी एक माणसने नहीं जीत्याथी वली शुं मानहानि थवानी छे ? वली हुं दुर्बुद्धि, जे आ जगतना ईश्वरने जीतवा माटे आव्यो छुं, ते में वगर विचार्युं काम कर्युं छे, वली हुं आनी पासे शी रीते बोली शकीश ? तथा तेनी पासे पण शी रीते जइ शकीश ? माटे हवे तो संकटमां पड्यो छुं, तेथी शिव मारा यशनुं रक्षण करो ? वली कदाच मारा भाग्योदयथी अहीं मारो जय थाय, त्यारे तो हुं त्रणे जगतमां पंडितशिरोमणि कहेवाउं. एवी रीते विचार करता इंद्रभूतिने जिनेश्वर प्रभुए, तेनां नाम अने गोत्रपूर्वक तेने अमृत सरखी मीठी वाणीथी बोलाव्यो. हे गौतम इंद्रभूति ! तुं अत्रे भले आव्यो; एवुं तेनुं वचन सांभलीने, इंद्रभूति विचारवा लाग्योके, अरे ! आ शुं मारुं नाम पण जाणे छे !!! अथवा त्रणे जगतमां विख्यात एवुं मारुं नाम कोण जाणतो नथी. केमके सूर्य कंइ बालगोपालथी पण छानो रहेतो नथी. माटे हवे जो मारा मनमां गुप्त रहेला संदेहने ते कही

मानुं, नहींतर न मानुं. एवी रीते विचार करता इंद्रभूतिने श्रीवर प्रभुए मनमां जीवनो संशय केम छे ? तमो वेदनां पदनां अर्थने सारी रीते जाणता नथी. हवे तेनो अर्थ हुं कहुं ते सांभलो. पछी वीर प्रभुए कहेलो वेदनो ध्वनि, मथन कराता समुद्र सरखो, अथवा गंगानां पूर सरखो, अथवा आदि ब्रह्मना ध्वनि सरखो शोभतो हतो. ते वेदनां पदो नीचे प्रमाणे जाणवा.

"विज्ञान घन एवैतेभ्योभूतेभ्यः समुत्थाय तान्येवांनुविश्यति न प्रेत्यसंज्ञास्तीति"

ते पदोनो तुं एवो अर्थ करे छे, के, "विज्ञानघन" एटले गमन आगमननी चेष्टावालो आत्मा, "एतेभ्यो भूतेभ्यः" एटले पृथ्वी, अप, तेज, वायु अने आकाशथी मद्यांगथी मदशक्तिनी पेठे उत्पन्न थइने; तेओमांज पाणीनां परपोटानी पेठे पाछो लय थाय छे. माटे एवी रीते पंचभूतथी जुदो आत्मा नहीं होवाथी, तेनो पुनर्जन्म नथी. पण ते अर्थ अयुक्त छे. तेनो खरो अर्थ हवे तुं सांभल? "विज्ञान" एटले ज्ञान, दर्शननां उपयोगात्मक विज्ञान; वली आत्मा पण चिन्मय होवाथी ते पण "विज्ञानघन" कहेवाय; केमके, आत्मानां दरेक प्रदेशप्रते ज्ञाननां अनंत पर्यायो छे. एवो विज्ञानघन अने उपयोगात्मक आत्मा, कथंचित् भूतोथकी, अथवा ते भूतोनां विकाररूप एवा घटादिकथी उत्पन्न थाय छे. अर्थात् घटादिकनां ज्ञानथी परिणत एवो जे जीवनो उपयोग ते हेतुभूत एवा घटादिकथीज थाय छे, केमके घटादिक ज्ञाननां परिणाममां घटादिक वस्तुओ सापेक्ष रहेली छे एवी रीते घटादिक वस्तुओथी, तेनां उपयोगपणाथी जीव उत्पन्न थइने, तेमांज लय थाय छे; एटले ते घटादिक वस्तुओनो नाश होते छते, उपयोगपणाए करीने जीव पण नाश थाय छे, अने बीजा उपयोगपणाए करीने पाछो उत्पन्न अने सामान्यरूपपणाए करीने ते रहे छे. अने तेथी करीने प्रेत्यसंज्ञा नथी, एटले तेने घटादिकनां उपयोगपणानी संज्ञा होती नथी. केमके वर्तमान उपयोगपणाथी तेनी घटादिनाश पामेली छे. वली आ आत्मा ज्ञानमय छे, अने जे दम, दान, अने दया ए त्रणे दकार जीव. अने आ शरीर तो चावल आदिकनी पेठे भोग्यवस्तु छे, तेम वली दूधमां जेम घी,

तलमां तेल, काष्ठमां अग्नि, पुष्पमां सुगंध, तथा चंद्रकांतमां जेम अमृत रहे छे, तेम आ आत्मा पण शरीरमां रहे छे, अने ते शरीरथी जुदो छे. एवी रीतनां प्रभुनां वचनथी नाश थएल छे, संदेह जेमनो, एवा इंद्रभूतिए पांचसो शिष्योनां परिवार सहित प्रभुपासे दीक्षा लीधी.

एवी रीते पेहेला गणधरनुं स्वरूप जाणवुं. हवे अहीं लोकोनां मुखथी अग्निभूतिए पोतानां भाइने दिक्षित थएलो जाणीने, विचार्युं के, अरे! ते धूर्तने जीतीने हमणां हुं मारा भाइने पाछो वाली आवुं; एम विचारि ते पण प्रभुनी सन्मुख आव्यो; त्यारे प्रभुए तेने पण तेनां गोत्र विगेरे सहित एवा नामथी बोलाव्यो, तथा तेनां मनमां रहेलो संदेह पण प्रभुए कही संभलाव्यो, अने कह्युं के, हे अग्निभूति तारा मनमां कर्मनो संदेह केम छे ? वेदनां तत्वार्थने तुं हजु प्रगट रीते जाणी शक्यो नथी. ते वेदनुं वाक्य नीचे प्रमाणे जाणवुं.

"पुरुष ए वेदग्निं सर्वं यद्भूतं यच्चभाव्यं इत्यादि"

हवे आ वाक्यनो तारा मनमां एवो अर्थ भासे छे के, (अहीं "ग्निं" ए वाक्यनां अलंकार माटे छे.) जे अतीत कालमां थएलुं छे, तथा जे आगामी कालमां थवानुं छे, ते सघलुं "पुरुष एव" आत्माज छे. अहीं एवकार कर्म, ईश्वर आदिकनां निषेध माटे छे. आवा अर्थथी जे मनुष्य, देव, तिर्यंच, पर्वत, पृथ्वी आदिक वस्तुओ देखाय छे, ते सघलुं आत्माज छे, अने तेथी कर्मनो निषेध प्रगटज छे. केमके, अमूर्त एवा आत्मा साथे मूर्त एवा कर्मनो संघट्ट शी रीते थइ शके ? जेम आकाशने चंदन आदिकनुं लेपन करी शकातुं नथी, अथवा तेने तलवार आदिकथी कापी शकातुं पण नथी, माटे कर्म छेज नहीं; एवो अर्थ तारा मनमां छे. पण हे अग्निभूति ! ए अर्थ विपरीत छे. केमके वेदनां ते पदो तो पुरुषनी स्तुतिनां छे. केमके वेदनां वाक्यो त्रण प्रकारनां छे; केटलांक विधिवाक्यो छे, जेमके, स्वर्गनी इच्छा करनार प्राणीए अग्निहोत्र करवुं. वली केटलांक वाक्यो अनुवाद सूचवनारां छे, जेमके बार मासनो एक संवत्सर कहेवाय. अने केटलांक वाक्यो स्तुतिरूप छे, जेमके आ उपरनुंज तारा संदेह

वाक्य. आ वाक्यथी विष्णुनो महिमा कहेलो छे, पण अन्य वस्तुओनो अभाव कह्यो नथी. केमके नहींतर तो, "पुण्यं पुण्येन कर्मणा, पापं पापेन कर्मणा" इत्यादिक वेदनां वाक्यो निरर्थक थाय. वली अमूर्त एवा आत्माने मूर्तिवंत एवा कर्मो साथे केम संघट्ट थाय? ते कहेवुं पण अयुक्त छे. केमके मूर्तिवंत एवा मद्यादिकथी अमूर्त एवा ज्ञाननो उपघात थायज छे, अने ब्राह्मी आदिक ओषधिथी ते ज्ञाननुं पोषण पण थाय छे. वली जो कर्म नहोय, तो एक सुखी, बीजो दुःखी, एक शेठ, बीजो चाकर, इत्यादिक जगतनी विचित्रता केम संभवे? प्रभुनां ते वचनो सांभलीने अग्निभूतिनो संशय पण दूर थयो, अने तेणे पण दीक्षा लीधी. एवी रीते बीजा गणधरनुं स्वरूप जाणवुं.

हवे तेओ बन्नेने दीक्षित थएला जाणीने, वायुभूतिए विचार्युं के, जे प्रभुनां इंद्रभूति अने अग्निभूति पण शिष्यो थया, ते प्रभु तो मारे पण पूजनिकज छे; माटे तेमनी पासे जइ, हुं पण मारो संशय दूर करूं. एम विचारि ते पण प्रभुपासे आव्यो. अने एवी रीते सघलाओ पण आव्या. अने प्रभुए पण सर्वेने दीक्षा आपी.

हवे "तज्जीव तच्छरीर" एवा संदेहवाला वायुभूतिने प्रभुए कह्युं के, तुं पण वेदनां अर्थोने सारी रीते जाणी शकतो नथी. केमके "विज्ञानघन एवैतेभ्यो भूतेभ्य" इत्यादि पदोए करीने पंचभूतोथी प्रथक् जीव नथी, एम खातरी थाय छे. तथा "सत्येनलभ्यस्तपसाह्येषब्रह्मचर्येण नित्यं ज्योतिर्मयोहि शुद्धोयं पश्यंति धीरायतयः संयतात्मानः इत्यादि" हवे ते वाक्योनो अर्थ नीचे प्रमाणे छे.

आ ज्योतिरूप तथा शुद्ध आत्मा, सत्य, तप, अने ब्रह्मचर्यथी जणाय छे, ते पदोथी भूतोथकी प्रथक् आत्मानी प्रतीति थाय छे; माटे तने जे संदेह छे, के आ शरीर छे, तेज आत्मा छे के, कोइ बीजो छे संदेह दूर थयो. केमके "विज्ञानघन" इत्यादि पदोनां अमोए कहेला अर्थो प्रमाणे आत्मा अटले होवापणुं प्रगटज छे. एवी रीते त्रीजा गणधरनुं स्वरूप जाणवुं. हवे चोथा गणधर छे. हवे प्रभुए पंचभूतमां संदेहवाला एवा व्यक्त नामनां पंडितने कह्युं के, तुं पण

वेदनां अर्थने जाणी शक्यो नथी. "स्वप्नोपमंवै सकलंइत्येष ब्रह्मविधि रंजसाविज्ञेय" आ वाक्यनो तारा मनमां एवो अर्थ जासे ले के, खरेखर पृथ्वी आदिक आ सघलुं स्वप्नसरखुं एटले असत्य ले, अने तेथी पंचजूतोनो अजाव ले; अने वली "पृथ्वी देवता आपो देवता" इत्यादिक वाक्योथी जूतोनुं लतापणुं जणाय ले; माटे ते बाबतनो तारा मनमां संदेह पण ते अयुक्त ले. केमके, "स्वप्नोपमं वै सकलं" इत्यादि पदो आत्मसंबंधि चिंतवनमां, कनक, कामिनी आदिकोनां संयोगने अनित्यपणुं सूचवनारा ले. पण कंइ ते पंचजूतोनो निषेध सूचवनारां नथी. एवी रीते चोथा गणधरनुं स्वरूप जाणवुं.

पली "जे जेवो ते तेवो" एवी रीतनां संदेहवाला सुधर्म नामनां पंडितने प्रजुए कह्युं के, तुं पण वेदनां अर्थने सारी रीते जाणी शकतो नथी.

"पुरुषो वै पुरुषत्वमश्नुते पशवः पशुत्वं" इत्यादि पदो जवांतरनुं सादृश्यपणुं सूचवनारां ले, तथा "शृगालोवैएष जायते यःसपुरीषो दह्यते" इत्यादि पदो तो वली जवांतरमां सादृश्यपणुं देखाडनारां नथी. इत्यादि तारा मनमां संदेह ले. पण ते वाक्योनो खरो अर्थ हजु तारा जाणवामां आव्यो नथी केमके "पुरुषो वै पुरुषत्वमश्नुते" इत्यादिक जे पदो ले, तेनो अर्थ तो एवो ले के, कोइक मनुष्य पण मार्दव आदिक गुणोए करीने युक्त थयो थको, मनुष्यसंबंधि आयुकर्मने बांधीने, पालो पण मनुष्य पणाने पामी शके, एवो अर्थ निरूपण करनारां ते वाक्यो ले. पण मनुष्य ते मनुष्यज थाय, एवो निश्चय बतावनारां ते वाक्यो नथी, वली तारा मनमां एक एवी युक्ति पण उसेली ले के, मनुष्य केवी रीते पशु थइ शके ? केमके चावलनां दाणा वाव्यांथी कंइ घउं पेदा थता नथी. पण ते तारी युक्ति बरोबर नथी. केमके लाण आदिकथी वींली आदिकनी उत्पत्ति थाय; अने एवी रीते सादृश्यपणुं घटी शकतुं नथी. एवी रीते पांचमा गणधरनुं स्वरूप जाणवुं.

हवे लठ्ठा गणधरनुं स्वरूप कहे ले.

हवे देवविषयमां संदेहवाला एवा मौर्यपुत्र नामनां पंडितने प्रजुए कह्युं के, तुं पण वेदनां अर्थने

सारी रीते जाणी शक्यो नथी. "को जानाति मायोपमान् गीर्वाणानिंद्रयमवरूणकुबेरादीन्" ए पदोथी देवोनो निषेध प्रत्यक्ष देखाय छे, अने "स एष यज्ञायुधी यजमानोऽजसा स्वर्लोकं गच्छति" ए पदथी देवोनुं होवापणुं सिद्ध थाय छे, एवी रीतनो तारा मनमां संदेह छे. पण ते अयुक्त छे. केमके आ पर्षदामां बेठेला देवोने तो हुं अने तुं बन्ने प्रत्यक्ष रीते जोइए छीए. वळी वेदमां जे "मायोपमान्" एवुं देवोनुं विशेषण कह्युं छे, ते तो तेओनुं पण अनित्यपणुं सूचवनारुं छे. एवी रीते सातमा गणधरनुं स्वरूप जाणवुं.

हवे नारकीनां संबंधमां संदेहवाळा एवा अकंपित नामनां पंडितने प्रभुए कह्युं के, तुं पण वेदनां अर्थने सारी रीते समजी शक्यो नथी. "नहवैप्रेत्यनरके नारकाः संती" इत्यादि पदोथी नरकोनो अभाव जणाय छे, अने "नारको वै जायतेयः शूद्रान्नमश्नाति" इत्यादि पदोथी, नरकोनुं होवापणुं प्रसिद्ध थाय छे, एवी रीतनो तारा मनमां संदेह छे. पण तेनो अर्थ एवो छे के, परलोकमां नारकीओ मरीने नारकीओ थता नथी, अर्थात् मेरू आदिकनी पेठे नारकीओ शाश्वता होता नथी; एवो तेनो अर्थ छे, पण जेओ पाप आचरे छे, तेओ नरकमां जइ उपजे छे. एवी रीते आठमा गणधरनुं स्वरूप जाणवुं. हवे नवमा गणधरनुं स्वरूप कहे छे.

हवे पुण्यनां संबंधमां संदेहवाळा एवा अचलभ्रातृने पण प्रभुए कह्युं के, तुं पण वेदनो अर्थ हजु बराबर समजतो नथी. तारो अर्थ पण अग्निभूतिनां अर्थ जेवोज जाणवो, एवी रीते नवमा गणधरनुं स्वरूप कह्युं. हवे दशमा गणधरनुं स्वरूप कहे छे.

हवे परभवमां संदेहवाळा एवा मेतार्य नामनां पंडितने प्रभुए कह्युं के, तुं पण वेदनां अर्थने सारी रीते समजतो नथी. तारे पण इंद्रभुतिने कहेला अर्थ प्रमाणे संदेहने दूर करवो.

एवी रीते दशमा गणधरनुं स्वरूप जाणवुं

हवे अग्यारमा गणधरनुं स्वरूप कहे छे.

निर्वाणनां विषयमां संदेहवाळा प्रभास नामनां पंडितने पण प्रभुए कह्युं के, तुं पण वेदना अर्थने

हजु सुधि बरोबर समज्यो नथी. "जरामर्यंवायदग्निहोत्र" आ पदथी करीने मोक्षनो अभाव जणाय छे, केमके जे अग्निहोत्र छे, ते "जरामर्यं" केतां हमेशां करवुं, एम कह्युं छे, अने तेथी करीने अग्निहोत्रनुं हमेशां करवानुं प्रतिपादन कर्युं. अने ते अग्निहोत्रनी क्रिया तो मोक्षनुं कारण थइ शकती नथी, केमके तेमां केटलाकनो वध थाय छे, तो केटलाकनो उपकार थाय छे; अने मोक्षसाधक एवां अनुष्ठानो माटे कोइ वखत कहेलो नथी, माटे मोक्ष छेज नहीं, एवुं प्रतीत थाय छे; तेम वली कह्युं छे के, "द्वेब्रह्मणीवेदितव्ये" केतां बे ब्रह्मने जाणवां, एक पर अने बीजुं अपर, तेमां पर एटले सत्यज्ञान, अने अपर एवा शब्दथी तो मोक्षनी प्रतीति थाय छे. एवी रीतनो तारा मनमां संदेह छे, पण ते संदेह अयुक्त छे. केमके अहीं "वा" शब्दनो "अपि" एवो अर्थ छे; एटले जे कोइ स्वर्गादिकनो अर्थी होय, तेणे तो जावोजीवसुधि अग्निहोत्र करवुं, अने जे निर्वाणनो अर्थी होय, तेणे तो अग्निहोत्र छोडीने, निर्वाणसाधननी पण क्रिया करवी. पण नियमथी "अग्निहोत्र करवो" एवो शब्दार्थ करवो नहीं; अने तेथी करीने निर्वाणसाधक क्रियानो पण वखत जणाव्यो. माटे निर्वाण तो छेज. एवी रीते अग्यारमा गणधरनुं स्वरूप जाणवुं.

एवी रीते चमालीस ब्राह्मणोए प्रभुपासे दीक्षा लीधी. तेओमांनां मुख्य अग्यारोने त्रिपदीनां ग्रहण पूर्वक अग्यार अंग तथा चौद पूर्वोनी रचना तथा गणधर पदनी स्थापना थइ. त्यां प्रभु द्वादशांगीनी रचना बाद तेओने तेनी अनुज्ञा करता हवा. ते वखते इंद्र वज्रमय दिव्य स्थालमां दिव्य चूर्णो भरीने प्रभुनी सन्मुख आवीने उभो. पछी प्रभु रत्नमय सिंहासनथी उठीने, ते चूर्णनी संपूर्ण मुठी भरीने उभा. पछी गौतम प्रमुख अग्यारे गणधरो अनुक्रमे जरा नमन करीने उभा. ते वखते देवो पण सघला वाजींत्र आदिकना ध्वनिने निवारीने, मौनपणाथी सांभलवा लाग्या. ते वखते पेहेलां प्रभु कहेवा लाग्या. "गौतमने द्रव्य, गुण तथा पर्यायथी तीर्थप्रते आज्ञा आपुं छुं!!" एम कही तेनां मस्तक पर चूर्ण नाखता हवा. पछी देवो पण तेमनापर चूर्ण, पुष्प अने सुगंधनी वृष्टि करता हवा. अने सुधर्मस्वामिने गणना धुरीनी प्रभु अनुज्ञा करता हवा. एवी रीते गणधरवाद जाणवो.

हवे प्रभु ते काल अने ते समयने विषे अस्थिक ग्रामनी नजदीकमांपेहेलुं चतुर्मास करता हवा. त्यांथी चंपा अने पृष्ठ चंपामां त्रण चोमासां करता हवा. वली एवीज रीते वैशाली नगरी अने वाणिज ग्रामनी समीपमां बार चोमासां करता हवा. राजगृही अने नालींदनी समीपमां चौद चोमासां करता हवा. अर्थात् त्यां नालिंद अने राजगृहीनी उत्तर दिशामां शाखापुरमां चोमासां करता हवा. छ मिथिला नगरीमां करता हवा. बे जद्दिका नगरीमां करता हवा. एक आलंजिका नगरीमां करता हवा. एक चोमासुं श्रावस्ती नगरीमां करता हवा. एक वज्रजूमि नामे अनार्य देशमां चोमासुं करता हवा. अने एक छेल्लुं चोमासुं मध्यम अपापा नगरीमां करता हवा. त्यां हस्तिपाल राजानां कारकुननी जीर्ण एवी एक शालामां प्रजु आव्या. पेहेलां ते नगरीनुं "अपापा" एवुं नाम हतुं. पण प्रजु त्यां कालधर्म पाम्या, तेथी देवोए तेनुं "पापानगरी" एवुं नाम आप्युं.

हवे जे छेल्ला चोमासामां प्रजु मध्यम अपापा नगरीमां हस्तिपाल राजाना कारकुननी शालामां आव्या, ते चोमासामां वर्षनो चोथो महिनो, सातमो पक्ष, अने कार्तिक बहुलनां पंदरमा दिवसे, जे छेल्ली रात्रि हती, ते रात्रिए प्रजु कालधर्मने पाम्या. कार्यस्थिति अने जवस्थितिथकी कालधर्मने पाम्या. संसारने तजीने, फरीने पाछा त्यां न अवाय एवी रीते उर्ध्व प्रदेशमां प्रजु गया. ते प्रजु केवा, तो के, छेदेलां छे, जन्म, जरा अने मरणनां कारणरूप कर्मो जेणे एवा; तथा साधित छे अर्थ जेमणे एवा; तथा तत्वनां अर्थोनां जाणकार; तथा जवोपग्राहि कर्मोथी मुक्त थएला; तथा सर्व दुःखोनो अंत कर- ; सर्व संतापोथी निर्मुक्त थएला, तथा नाश थएल छे, शरीर अने मन संबंधि सर्व दुःखो जेमनां , ते प्रजु थया. हवे जे वर्षमां प्रजु निर्वाण पदने पाम्या, ते चंद्र नामे बीजो संवत्सर हतो. अने मासनुं प्रीतिवर्धन एवुं नाम हतुं. ते पक्षनुं नंदिवर्धन एवुं नाम हतुं. ते दिवसनुं अग्निवेश्य हतुं. तथा तेनुं उपशम एवुं बीजुं नाम पण हतुं. देवानंदा नामे ते अमावास्यानी रात्रिनुं . अथवा तेनुं बीजुं निरति एवुं नाम पण कहेलुं छे. ते वखते अर्च नामे लव हतो; मुहूर्त

हजु सुधि बरोबर समज्यो नथी. "जरामर्यंवायदग्निहोत्र" आ पदथी करीने मोक्षनो अभाव जणाय छे, केमके जे अग्निहोत्र छे, ते "जरामर्यं" केतां हमेशां करवुं, एम कह्युं छे, अने तेथी करीने अग्निहोत्रनुं हमेशां करवानुं प्रतिपादन कर्युं. अने ते अग्निहोत्रनी क्रिया तो मोक्षनुं कारण थइ शकती नथी, केमके तेमां केटलाकनो वध थाय छे, तो केटलाकनो उपकार थाय छे; अने मोक्षसाधक एवां अनुष्ठानो माटे कोइ वखत कहेलो नथी, माटे मोक्ष छेज नहीं, एवुं प्रतीत थाय छे; तेम वली कह्युं छे के, "द्वेब्रह्मणीवेदितव्ये" केतां बे ब्रह्मने जाणवां, एक पर अने बीजुं अपर,तेमां पर एटले सत्यज्ञान,अने अपर एवा शब्दथी तो मोक्षनी प्रतीति थाय छे. एवी रीतनो तारा मनमां संदेह छे, पण ते संदेह अयुक्त छे. केमके अहीं "वा" शब्दनो "अपि" एवो अर्थ छे; एटले जे कोइ स्वर्गादिकनो अर्थी होय, तेणे तो जावोजीवसुधि अग्निहोत्र करवुं, अने जे निर्वाणनो अर्थी होय, तेणे तो अग्निहोत्र छोडीने, निर्वाणसाधननी पण क्रिया करवी. पण नियमथी"अग्निहोत्र करवो"एवो शब्दार्थ करवो नहीं; अने तेथी करीने निर्वाणसाधक क्रियानो पण वखत जणाव्यो. माटे निर्वाण तो छेज. एवी रीते अग्यारमा गणधरनुं स्वरूप जाणवुं.

एवी रीते चमालीस ब्राह्मणोए प्रभुपासे दीक्षा लीधी. तेओमांनां मुख्य अग्यारोने त्रिपदीनां ग्रहण पूर्वक अग्यार अंग तथा चौद पूर्वोनी रचना तथा गणधर पदनी स्थापना थइ. त्यां प्रभु द्वादशांगीनी रचना बाद तेओने तेनी अनुज्ञा करता हवा. ते वखते इंद्र वज्रमय दिव्य स्थालमां दिव्य चूर्णो भरीने प्रभुनी सन्मुख आवीने उभो. पछी प्रभु रत्नमय सिंहासनथी उठीने, ते चूर्णनी संपूर्ण मुठी भरीने उभा. पछी गौतम प्रमुख अग्यारे गणधरो अनुक्रमे जरा नमन करीने उभा. ते वखते देवो पण सघला वाजींत्र आदिकना ध्वनिने निवारीने, मौनपणाथी सांभलवा लाग्या. ते वखते पेहेलां प्रभु कहेवा लाग्या. "गौतमने द्रव्य, गुण तथा पर्यायथी तीर्थप्रते आज्ञा आपुं छुं!!" एम कही तेनां मस्तक पर चूर्ण नाखता हवा. पछी देवो पण तेमनापर चूर्ण, पुष्प अने सुगंधनी वृष्टि करता हवा. अने सुधर्मस्वामिने गणना धुरीनी प्रभु अनुज्ञा करता हवा. एवी रीते गणधरवाद जाणवो.

हवे प्रभु ते काल अने ते समयने विषे अस्थिक ग्रामनी नजदीकमां पेहेलुं चतुर्मास करता हवा. त्यांथी चंपा अने पृष्ठ चंपामां त्रण चोमासां करता हवा. वली एवीज रीते वैशाली नगरी अने वाणिज ग्रामनी समीपमां बार चोमासां करता हवा. राजगृही अने नालींदनी समीपमां चौद चोमासां करता हवा. अर्थात् त्यां नालिंद अने राजगृहीनी उत्तर दिशामां शाखापुरमां चोमासां करता हवा. छ मिथिला नगरीमां करता हवा. बे जद्रिका नगरीमां करता हवा. एक आलंजिका नगरीमां करता हवा. एक चोमासुं श्रावस्ती नगरीमां करता हवा. एक वज्रजूमि नामे अनार्य देशमां चोमासुं करता हवा. अने एक छेल्लुं चोमासुं मध्यम अपापा नगरीमां करता हवा. त्यां हस्तिपाल राजानां कारकुननी जीर्ण एवी एक शालामां प्रभु आव्या. पेहेलां ते नगरीनुं "अपापा" एवुं नाम हतुं. पण प्रभु त्यां कालधर्म पाम्या; तेथी देवोए तेनुं "पापानगरी" एवुं नाम आप्युं.

हवे जे छेल्ला चोमासामां प्रभु मध्यम अपापा नगरीमां हस्तिपाल राजाना कारकुननी शालामां आव्या, ते चोमासामां वर्षनो चोथो महिनो, सातमो पक्ष, अने कार्तिक बहुलनां पंदरमा दिवसे, जे छेल्ली रात्रि हती, ते रात्रिए प्रभु कालधर्मने पाम्या. कार्यस्थिति अने जवस्थितिथकी कालधर्मने पाम्या. संसारने तजीने, फरीने पाछा त्यां न अवाय एवी रीते उर्ध्व प्रदेशमां प्रभु गया. ते प्रभु केवा, तो के, छेदेलां छे, जन्म, जरा अने मरणनां कारणरूप कर्मो जेणे एवा; तथा साधित छे अर्थ जेमणे एवा; तथा तत्त्वनां अर्थोनां जाणकार; तथा जवोपग्राहि कर्मोथी मुक्त थएला; तथा सर्व दुःखोनो अंत करनारा; सर्व संतापोथी निर्मुक्त थएला, तथा नाश थएल छे, शरीर अने मन संबंधि सर्व दुःखो जेमनां एवा, ते प्रभु थया. हवे जे वर्षमां प्रभु निर्वाण पदने पाम्या, ते चंद्र नामे बीजो संवत्सर हतो. अने ते कार्तिक मासनुं प्रीतिवर्धन एवुं नाम हतुं. ते पक्षनुं नंदिवर्धन एवुं नाम हतुं. ते दिवसनुं अग्निवेश्य एवुं नाम हतुं. तथा तेनुं उपशम एवुं बीजुं नाम पण हतुं. देवानंदा नामे ते अमावास्यानी रात्रिनुं नाम हतुं. अथवा तेनुं बीजुं निरति एवुं नाम पण कहेलुं छे. ते वखते अर्च नामे लव हतो; मुहूर्त

नामे प्राण हतो; सिद्ध नामे स्तोक हतो; नाग नामे करण हतुं; आ शकुनि आदिक चार स्थिर करणो मानुं त्रीजुं करण हतुं; केम के अमासनां उत्तरार्धमां तेज करण होय छे. सर्वार्थ सिद्ध नामे मुहूर्त हतुं. तथा ते वखते साइणा नक्षत्रनो जोग आवते छते प्रभु कालधर्मने पाम्या.

हवे ते संवत्सर, मास, दिवस, रात्रि तथा मुहूर्तनां प्रमाण सूर्यप्रज्ञप्तिमां नीचे प्रमाणे आप्यां छे.

एक युगमां पांच संवत्सरो होय छे; तेओनां नाम, चंद्र, चंद्र, अभिवर्धित, चंद्र अने अभिवर्धित. तथा सुप्रतिष्ठ, विजय, प्रीतिवर्धन, श्रेयान्; शिशिर, शोभन, हैमवान, वसंत, कुसुम, संभव, निदाघ अने वनविरोधि; ए बार मासोनां नामो जाणवां. तथा पूर्वांग, सिद्ध, मनोरम, मनोहर, यशोभद्र, यशोधर, सर्वकामसमृद्ध, इंद्र, मूर्धाभिषिक्त, सौमन, धनंजय, अर्थसिद्ध, अभिजित, रत्याशन, शतंजय, तथा अग्निवेश्य, ए पंदर दिवसोनां नामो जाणवां. तथा उत्तमा, सुनक्षा, इलापत्या, यशोधरा, सोमनसी, श्रीसंभूता, विजया, वैजयंति, जयंति अपराजिता, इच्छा, समाहारा, तेजा, अतितेजा, तथा देवानंदा, ए पंदर रात्रिओना नाम जाणवां. तथा रुद्र, श्रेयान्, मित्र, वायु, सुप्रतीत, अतिचंद्र, माहेंद्र, बलवान, ब्रह्मा बहुसत्य, शान, स्त्वष्टा, भावितात्मा, वैश्रवण, वारूण, आनंद, विजय, विजयसेन, प्राजापत्य, उपशम, गंधर्व, अग्निवेश्य, शतवृषभ, आतपवान्, अर्थवान्, ऋणवान्, भौम, वृषभ, सर्वार्थसिद्ध, तथा राक्षस, ए त्रीस मुहूर्तोनां नामो जाणवां. हवे जे रात्रिए प्रभु निर्वाण पदने पाम्या, ते रात्रिए प्रभुनी नजदीकमां रहेता एवा गौतम गोत्रनां इंद्रभूति नामनां मोटा शिष्यने स्नेह बंधन त्रुटते छते केवलज्ञान अने केवल दर्शन उत्पन्न थयां. तेनो वृतांत नीचे प्रमाणे जाणवो.

प्रभुए पोतानां निर्वाण वखते गौतमस्वामिने कोइक गाममां देवशर्माने प्रतिबोधवावास्ते मोकल्या हता. तेने प्रतिबोधिने पाछा वलतां श्री गौतमस्वामिए वीर प्रभुनुं निर्वाण सांभल्युं; अने तेथी जाणे वज्रथीज हणाया होय नहीं, तेम क्षणवारसुधि मौनपणाने धारण करीने रह्या. तथा पछी बोलवा लाग्या के, आजे मिथ्यात्वरूपी अंधकार फेलावा मांड्यु छे, तथा कुतीर्थिओ रूपी घुवडो गर्जना करवा लाग्या

५२



व जी नेधर्मोप शदेता थका एण पाम्या समाधिस्थ थया. पा. ८४

छे, तथा दुकाल, भय, वैर आदिक राक्षसोनो फेलावो थशे. वली हे प्रभु, तमारा विना आजे आ भरतक्षेत्र, राहुथी ग्रस्त थएलो छे चंद्र जेमां एवा आकाश सरखुं, तथा दीपक विनानां भुवन सरखुं शोभा रहित थयुं छे. हवे हुं कोना चरणोने नमीने वारंवार पदोना अर्थो पुछीश? तथा हे भगवंत, एम हवे हुं कोने कहीश? तथा मने पण हे गौतम, एम कही कोण बोलावशे? हा! हा! हा! हा! वीर! आ तमोए शुं कर्युं? आवा अवसरे तमोए मने दूर कर्यो!!! शुं वाद लेइने बालकनी पेठे हुं तमारे छेडे वलगत? शुं हुं केवलज्ञानमांथी तमारी पासेथी भाग मागत? अथवा मोक्षमां शुं संकडास थइ जात? अथवा शुं आपने कंइ भार पडी जात? के मने आम तजीने तमो चाल्या गया!!! एम वीर! वीर! कहेतां थकां गौतमे जाण्युं के अहो! वीतरागो तो निःस्नेही होवेछे; आ तो मारोज अपराध छे, केम के में ते वखते श्रुतनो उपयोग दीधो नहीं; धिक्कार छे, आ एक पक्षना स्नेहने! माटे हवे स्नेहथी सर्युं; हुं तो एकलोज छुं; मारो कोइ नथी, एवी रीते सम परिणाम भावतां थकां तेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी प्रभातकाले इंद्र आदिके तेमनो महोत्सव कर्यो. अहीं कवि कहे छे के, श्री गौतम प्रभुने तो सघलुं आश्चर्यकारीज थयुं छे, तेमनो अहंकार तो उलटो बोधने माटे थयो, राग पण गुरुनी भक्तिमाटे थयो, तथा विषाद केवलज्ञानमाटे थयो!!!

हवे ते श्री गौतमस्वामी बार वर्षोसुधि कैवल्य अवस्थामां रहीने, तथा दीर्घ आयुष्य पालीने, सुधर्मा स्वामीने पोतानो गण सोंपीने मोक्षे गया. पाछलथी सुधर्मा स्वामिने पण केवल ज्ञान थयुं. अने ते पण त्यारबाद आठवर्षो सुधि विहार करीने, तथा जंबूस्वामिने पोतानो गण सोंपीने मोक्षे गया.

हवे जे रात्रिए श्रमण भगवंत श्री महावीरस्वामि मोक्षे गया, ते रात्रिये नव मल्लकि जातिनां काशी देशना राजाओ, तथा नव लेछकी जातिना कोशल देशना राजाओ, के जेओ कार्य पड्याथी गणनो मेलावो करता हता, अने तेओ अढारे चेटक राजाना सामंतो कहेवाता हता, तेओ संसाररूपी समुद्रने पार पहोंचाडनार एवुं पौषधरूप आहार त्यागनो उपवास करता हवा. नहींतर दीपक करवानो

बे, तथा डुकाल, जय, वैर आदिक राक्षसोनो फेलावो थशे. वली हे प्रजु, तमारा विना आजे आ जरतक्षेत्र, राहुथी ग्रस्त थएलो बे चंद्र जेमां एवा आकाश सरखुं, तथा दीपक विनानां जुवन सरखुं शोजा रहित थयुं बे. हवे हुं कोना चरणोने नमीने वारंवार पदोना अर्थो पुबीश? तथा हे जगवंत, एम हवे हुं कोने कहीश? तथा मने पण हे गौतम, एम कही कोण बोलावशे? हा! हा! हा! हा! वीर! आ तमोए शुं कर्युं? आवा अवसरे तमोए मने दूर कर्यो!!! शुं वाद लेइने बालकनी पेठे हुं तमारे बेडे वलगत? शुं हुं केवलज्ञानमांथी तमारी पासेथी जाग मागत? अथवा मोक्षमां शुं संकडास थइ जात? अथवा शुं आपने कंइ जार पडी जात? के मने आम तजीने तमो चाल्या गया!!! एम वीर! वीर! कहेतां थकां गौतमे जाण्युं के अहो! वीतरागो तो निःस्नेही होवेबे; आ तो मारोज अपराध बे, केम के में ते वखते श्रुतनो उपयोग दीधो नहीं; धिक्कार बे, आ एक पक्षना स्नेहने! माटे हवे स्नेहथी सर्युं; हुं तो एकलोज बुं; मारो कोइ नथी, एवी रीते सम परिणाम जावतां थकां तेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. पबी प्रजातकाले इंद्र आदिके तेमनो महोत्सव कर्यो. अहीं कवि कहे बे के, श्री गौतम प्रजुने तो सघलुं आश्चर्यकारीज थयुं बे, तेमनो अहंकार तो उलटो बोधने माटे थयो, राग पण गुरुनी जक्तिमाटे थयो, तथा विषाद केवलज्ञानमाटे थयो!!!

हवे ते श्री गौतमस्वामी बार वर्षोसुधि केवल्य अवस्थामां रहीने, तथा दीर्घ आयुष्य पालीने, सुधर्मा स्वामीने पोतानो गण सोंपीने मोक्षे गया. पाबलथी सुधर्मा स्वामिने पण केवल ज्ञान थयुं. अने ते पण त्यारबाद आठवर्षो सुधि विहार करीने, तथा जंबूस्वामिने पोतानो गण सोंपीने मोक्षे गया.

हवे जे रात्रिए श्रमण जगवंत श्री महावीरस्वामि मोक्षे गया, ते रात्रिये नव मल्लकि जातिनां काशी देशना राजाओ, तथा नव लेबकी जातिना कोशल देशना राजाओ, के जेओ कार्य पड्याथी गणनो मेलावो करता हता, अने तेओ अढारे चेटक राजाना सामंतो कहेवाता हता, तेओ संसाररूपी समुद्रने पार पहोंचाडनार एवुं पोषधरूप आहार त्यागनो उपवास करता हवा. नहींतर दीपक करवानो

संभव होइ शकतो नथी. ते वखते भावउद्योत थयो हतो, अने हवे अमो द्रव्य उद्योत पण करीशुं, एम विचारि तेओए दिपको कर्या; अने त्यारथी मांडीने दीवालीनो महोत्सव पण चालु थयो छे. अने कार्तिक सुद एकमने दहाडे देवोए श्री गौतमस्वामिनो केवलज्ञाननो महोत्सव कर्यो; तेथी ते दिवसे पण माणसोने हर्ष थयो. हवे नंदिवर्धन राजा प्रभुनुं निवार्ण थएलुं जाणीने शोकथी पीडित थयो, तथा तेने सुदर्शना नामनी बेहेने समजावीने बीजने दहाडे पोताने घेर जमाड्यो; त्यारथी भाइबीजनो तेहेवार पण चालु थयो.

हवे जे रात्रिए प्रभु निर्वाण पदने पाम्या, ते रात्रिए क्रूर स्वभाववालो भस्मराशि नामे त्रीशमो मोटो ग्रह, भगवानना जन्म नक्षत्रमां संक्रांत थयो हतो; हवे ते ग्रह केवो हतो? तो के, बे हजार-वर्षनी स्थितिवालो हतो; केमके एक नक्षत्रमां ते एटला कालसुधि रहे छे. हवे ते ग्रहो अठ्यासी छे तेमनां नामो नीचे प्रमाणे जाणवां अंगारक, विकालक, लोहिताक्ष, शनैश्चर, आधुनिक, प्राधुनिक, कण, कणक, कणकणक, कणवितानक, कणसंतानक, सोम, सहित, अश्वासन, कार्योपग, कर्बुररक, अजकरक, डुंदुभक, शंख, शंखनाभ, शंखमर्णाभ, कंस, कंसनाभ, कंसवर्णाभ, नील, नीलावभास, रूपी, रूपावभास, भश्मो, भश्मराशि, तिल, तिलपुष्पवर्ण, दक, दकवर्ण, कार्य, वंध्य, ईंद्राग्नि, धूमकेतु, हरि, पिंगल, बुध, शुक्र, बृहस्पति, राहु, अगस्ति, माणवक, कामस्पर्श, धुर, प्रमुख, विकट, विधिकल्प, प्रकल्प, जटाल, अरुण, अग्नि, काल, महाकाल, स्वस्तिक, सौवस्तिक, वर्धमान, प्रलंब, नित्यालोक, नित्योद्योत, स्वयंप्रभ, वभास, श्रेयस्कर, क्षेमंकर, आभंकर, प्रभंकर, अरजा, विरजा, अशोक, वीतशोक, वितत, विवस्त्र, विशाल शाल, सुव्रत, निवृत्ति, एकजटी द्विजटी, कर, करिक, राजा, अर्गल,पुष्प, भाव, तथा केतु ए अठ्यासी ग्रहोनां नामो जाणवां.

हवे ज्यारथी ते भश्मराशि नामनो ग्रह प्रभुनां जन्म नक्षत्रमां संक्रांत थयो, त्यारथी साधु अने साधवीओना पूजा वंदनादिक सत्कार, तथा वस्त्रदान आदिकनुं बहुमान नहीं थाय, अने, तेथीज ईंद्र

प्रजुने विनंति करीके हे स्वामि ! एक क्षणवार आपनुं आयुष्य वधारो ? के जेथी आपनां जन्म नक्ष-त्रमां संक्रांत थएलो आ जस्मराशि ग्रह आपना शासनने पीका करी शके नहीं. त्यारे प्रजुए कह्युं के, हे इंद्र, एवुं पूर्वे कदापि थयुं नथी के, क्षीण थएलुं आयुष्य जिनेंद्रो पण वधारी शके; माटे तीर्थने थनारी बाधा तो अवश्य थशेज, पण व्यासी वर्षना आयुष्यवाला कल्किन नामे दुष्ट राजाने ज्यारे तुं मारीश, अने ते वखते बे हजार वर्षो वीत्याबाद मारा जन्म नक्षत्रथी जस्मग्रह पण उतरी जशे, अने तारा स्थापेला एवा कल्किपुत्र धर्मदत्तनां राज्यथी मांकीने, साधु साध्वीओनो उत्तरोत्तर पूजा सत्कार आदिक थवा मांकशे. सूत्रकारे पण तेमज कहेलुं छे.

हवे जे रात्रिए श्रमण जगवंत श्री महावीरस्वामि निर्वाण पाम्या, ते रात्रिए नहीं उपकी शके एटला कंथुआओ उत्पन्न थया; अने तेओ सघला एकज जगोए एकठा थएला होवाथी, चाली नहीं शकता, अने तेथी छद्मस्थोने नजरे नहीं देखाता हता, केम के जेओ चालता होय तेओ तुरत छद्मस्थोने दृष्टिए पकी शके छे, अने एवी रीते कंथुआओने जोइने घणा साधु साधवीओए ते वखते आहारपाणीनां पच्च-खाण करी अनशन कर्या. ते जोइ कोइ शिष्ये गुरुने पुछ्युं के, हे जगवंत, आ आहारपाणीनां पच्चखाण करवानुं शुं कारण छे ? त्यारे गुरुए कह्युं के, आजथी मांकीने संयम पालवुं बहु दुष्कर थशे. केम के, जीवाकुल थशे. संयमने लायक क्षेत्र मली शकशे नहीं, तथा पाखंकीओनो जमाव थशे.

हवे श्री वीरप्रजुने चौदहजार इंद्रजूति आदिक उत्कृष्ट संयम संपदावाला साधुओ हता. तथा चंद-आदिक उत्कृष्ट संयमवाली छत्रीस हजार साधवीओ हती. तथा शंख, शतकआदिक एकलाख-हजार उत्कृष्ट श्रावको हता. तथा सुलसाआदिक त्रणलाख अढारहजार उत्कृष्ट श्राविकाओ महाराज जेटलुं जाणनारा त्रणसो चौद पूर्वीओ हता. तेरसो अवधिज्ञानीओ हता; ओ हता; सातसें वैक्रिय लब्धिवाला हता. तथा अढी द्वीपनां संज्ञी पंचेंद्रिय जीवोनां एवा पांचसें विपुलमतिओ हता. तथा चारसो उत्कृष्टो वाद करनारा वादीओ हता.

आगामी कालमां मोक्षे जनारा, एवा आठसो उत्कृष्टा साधुओ हता.

अहीं श्राविकानां सूत्रमां जे सुलसा श्राविका कहेली छे, ते बत्रीस पुत्रोनी माता एवी नागभार्या समजवी. अने रेवती ते प्रभुने ओषध देनारी जाणवी. अने चौदपूर्वीनां सूत्रमां "अजिणाण" एटले सर्वज्ञ नहीं, पण सर्वज्ञ जेवा, एटले जिननी पेठेज सत्य वात कहेनारा, केमके प्रज्ञापनामां श्रुतकेवली अने केवली बन्ने तुल्य कहेला छे. अने अवधिज्ञानीनां सूत्रमां जे अतिशयने प्राप्त थएला कहेला छे; ते आमर्षादिक लब्धिओने प्राप्त थएला जाणवा. केवलज्ञानीनां सूत्रमां जे संभिन्न कहेला छे, एटले संपूर्ण एवा उत्तम ज्ञान दर्शनने धरनारा जाणवा. वैक्रियलब्धिवालानां सूत्रमां जे "देवड्डिपत्ताणं" कह्युं छे, तेनो अर्थ एवो के देव सरखी ऋद्धिने विकुरववावाला. मनःपर्यायज्ञानीनां सूत्रमां, जे विपुलमतिवाला कहेला छे, ते एवा जाणवा के, आने घडो चिंतव्यो, ते सोनानो, पाटलीपुत्रमां बनेलो, शरद ऋतुमां तैयार करेलो, पीला रंगवालो, इत्यादि घणां विशेषणो सहित. चारे बाजुए मनुष्य क्षेत्रमां रहेला संज्ञी पंचेंद्रिओना रहेला पदार्थोने जाणनारां जाणवा. अने ऋजुमतिवालाओ तो चारे बाजुएथी अढी आंगुल ओछा एवा मनुष्य क्षेत्रमां रहेला संज्ञी पंचेंद्रियोनां रहेला फक्त घटादिक प्रदार्थ मात्रनेज सामान्यपणाथी जाणी शके छे; एवो ते बन्नेमां तफावत जाणवो. तथा अनुत्तरोपपातिक सूत्रमां जे "गइकल्याणं" एवो पाठ कह्यो छे, तेनो अर्थ ए जाणवो के, हवे थनारी एवी मनुष्यगतिमां छे, मोक्षनी प्राप्ति जेओने एवा; तथा "ठिइ कल्लाणं" केतां देवभवमां पण छे, कल्याण जेओने एवा; केमके तेमने प्रायें वीतरागपणाजेवुं होय छे; अने तेथीज तेमने आगमोमां आगामी भवोमां सिद्ध थनारा कहेला छे;

हवे प्रभुनी बे प्रकारनी अंतकृत भूमि कहेली छे. पेहेली युगांतकृत् भूमि, अने बीजी पर्यायांत कृत् भूमि. युग एटले अनुक्रममां वर्तनारा, कालमान विशेष, अने तेनां साधर्म्य आदिकमां क्रममां वर्तनारा, गुरू, शिष्य प्रशिष्य आदिकरूप जे पुरुषो ते पण युगोज कहेवाय, अने तेओथी परिमाण-

युक्त थएली ते युगांत कृद्भूमि कहेवाय. अने प्रभुनां केवलीपणाने आश्रित थइने रहेली ते पर्यायांतकृद्भूमि कहेवाय. तेमां पेहेली जंबूस्वामि सुधिनी युगांत कृद्भूमि जाणवी. अने ज्ञान प्राप्तिनी अपेक्षायें, प्रभुने केवलज्ञान थया बाद चार वर्ष पछी कोइक केवली मोक्षे गया हता; तेथी त्यारथीज मोक्षमार्ग चालु थयो हतो; अने ते छेक जंबूस्वामिसुधि रह्यो.

हवे ते कालने विषे, ते समयने विषे श्रमण भगवंत श्री महावीर स्वामी, त्रीस वर्षोसुधि गृहस्थावासमां रह्या; कंइक झाझेरां बार वर्षोसुधि छद्मस्थावस्थामां रह्या; तथा कंइक ओछां त्रीस वर्षोसुधि केवलअवस्थामां रह्या; तथा एवी रीते बेंतालीस वर्षोसुधि दीक्षामां रह्या. अने बहोतेर वर्षनुं तेमनुं आयुष्य हतुं. तेथी नाम अने गोत्र कर्मनो क्षय होते छते, तथा आ अवसर्पिणीनां दुषम सुसम आरानां केटलांक वर्षो वीती गयाबाद, एटले ते आरानां त्रण वर्षो अने साडा आठ महिना बाकी रहेते छते, एकाकी, तथा पाणी विना छठ्ठनुं पच्चखाण होते छते, स्वाति नक्षत्रनो जोग आवते छते, प्रभातकालनो समय होते छते, पद्मासनपर बेसते छते, पंचावन कल्याण फलनां विपाको, पंचावन पापफल विपाकनां अध्ययनो, अने छत्रीश अपृष्टव्य एवा आगारो कहीने, एक मरूदेवानुं अध्ययन भावता थका प्रभु मोक्षे गया.

हवे प्रभु मोक्षे गयाबाद नवसो वर्ष जाते छते, एक हजारमां वर्षनो आ एसीमो संवत्सर छे; जोके आ सूत्रनो प्रगट रीते भावार्थ नथी जणातो, तो पण जेम आगलनां टीकाकारोए कहेलुं छे, तेम अहीं पण कहीए छीए;

अहीं केटलाको एम कहे छे के, कल्प सूत्रनां लखवानो काल जणाववावास्ते आ सूत्र छे, अने ते देवर्द्धीगणी क्षमाश्रमणे लख्युं. केमके श्री वीरप्रभुनां निर्वाण पछी नवसोने एसी वर्षें सिद्धांतो पुस्तकारूढ थयां; अने ते वखते आ कल्पसूत्र पण पुस्तकारूढ थयुं; केम के सिद्धांतोमां पण कह्युं छे के. वल्लभीपुरमां देवर्द्धीगणीक्षमाश्रमण आदिक सकल संघे मली वीरप्रभु पछी नवसोने एसी वर्षे सिद्धांतो

पुस्तकारूढ कराव्यां. वळी बीजाओ एम कहे छे के, वीर प्रभु पछी नवसोने एसी वर्ष सेननां पुत्रमाटे आ कल्पसूत्र सभासन्मुख वंचावा लाग्युं. तत्व तो केवलीमाहाराज जाणे.

पण एम जणाय छे के, वीर प्रभु पछी नवसोने एसी वर्षे कल्पसूत्र लखायुं, अने नवसेंने त्राणुमे वर्षे सभासन्मुख वंचायुं. केम के मुनिसुंदर सूरीश्वरजीए पण, पोते बनावेला स्तोत्ररत्नकोशमां पण तेमज कह्युं छे. खरेखरुं शुं छे ? ते तो केवली महाराज जाणे. एवी रीते श्री वीरचरित्र संपूर्ण थयुं.

एवी रीते महोपाध्यायश्री कीर्तिविजय गणिनां शिष्योपाध्याय श्री विनयविजयजी गणिए रचेली कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीकानां गुजराती भाषांतरमां छठो क्षण समाप्त थयो. श्रीरस्तु.

। श्री जिनायनमः ।

॥सप्तमं व्याख्यानं प्रारभ्यते ॥

हवे जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट वाचनाए करीने, श्री पार्श्वप्रभुनुं चरित्र कहे छे.

हवे ते कालने विषे तथा ते समयने विषे श्री पार्श्वनाथ प्रभुनां पांचे कल्याणको विशाखा नामनां नक्षत्रमां थयां छे. प्रभु देवलोकथी चवीने मातानां गर्भमां पण विशाखा नक्षत्रे आव्या; विशाखा नक्षत्रमांज प्रभुनो जन्म थयो. तथा विशाखा नक्षत्रमांज प्रभु घरवास छोडीने दीक्षित थया. तथा विशाखा नक्षत्रमांज प्रभु केवलज्ञान अने केवलदर्शनने पाम्या. तथा विशाखा नक्षत्रमांज प्रभु मोक्षे गया. "पुरिसादाणीय" एटले प्रधानपुरुष एवो अर्थ जाणवो.

हवे ते कालने विषे तथा ते समयने विषे उनालानां पेहेला महीनानुं पेहेलुं पखवाडीउं, एटले चइत्र वदी चोथने दीवसे, प्राणत नामनां देवलोकथी वीस सागरोपमनुं आयुष्य पुरूं करीने, तथा त्यांथी चवीने आज जंबूद्वीपनां भरतक्षेत्रमां रहेली वाणारसी नगरीमां अश्वसेन नामे राजानी वामादेवी नामनी राणीनी कुक्षिए, देवसंबंधि आहार अने देवसंबंधि शरीरनो त्याग करीने, विशाखा नक्षत्रनो चंद्रनी साथे योग आवते छते गर्भपणे आवीने उपन्या. हवे ते श्रीपार्श्वनाथ प्रभुने गर्भमां रह्यां-

ज त्रण ज्ञानो हतां; अने तेमनी माताए पण चौद स्वप्नो जोयां, तथा, गर्जनुं पोषण कर्युं, इत्यादि सर्व वृत्तांत महावीरस्वामीनी पेठे जाणी लेवो.

हवे ते कालने विषे तथा ते समयने विषे, श्री पार्श्वनाथ प्रजु शीयालानो बीजो महीनो, तथा तेनुं त्रीजुं पखवाडीउं, एटले पोसवदी दशमीने दहाडे, नव मास अने साडासात दीवस गर्जमां रह्याबाद, विशाखा नक्षत्रनो चंद्र साथे योग आवते बते, वामादेवीनी कुक्षिए रोगरहित पुत्रपणे उत्पन्न थया.

त्यां देव देवीओए प्रजुनो जन्ममहोत्सव कर्यो, इत्यादि वृत्तांत श्री वीरप्रजुनी पेठे जाणी लेवुं. प्रजु ज्यारे गर्जमां हता, त्यारे माताए स्वप्नमां पोतानी पडखेथी जता कृष्ण सर्पने जोयो हतो, तेथी तेमनुं "पार्श्व" एवुं नाम पाड्युं.

पबी अनुक्रमे धात्रीओ तथा इंद्रादिकथी लालन कराता एवा ते प्रजु, नव हाथ प्रमाणनां अंगवाला थया थका यौवन अवस्थाने पाम्या.

पबी कुशस्थलना राजा प्रसेनजितनी प्रजावती नामनी कन्या साथे मातापिताए आग्रहथी प्रजुनो विवाह कर्यो.

हवे एक दहाडो प्रजु झरुखामां बेठेला बे, ते वखते एक दिशा तरफ,पुष्प आदिक पूजानां उपकरणो सहित जतां नगरनां स्त्रीपुरुषोने तेमणे दीठां, तेथी तेमणे कोइने पुबयुं के, आ लोको क्यां जाय बे ? त्यारे ते माणसे प्रजुने कह्युं के, हे स्वामि, कोइक गांमडांमां रहेनारो, तथा जेनां मावाप पण मरी गएलां बे, एवो एक कमठ नामनो ब्राह्मणनो पुत्र बे, अने लोको दया लावी कंइक तेने आपीने तेनी आजीविका चलावता हता. एक दहाडो तेणे नगरनां लोकोने वस्त्राजूषणोथी शणगारेलां जोयां, तेथी तेना मनमां विचार थयो के, आ सघली रुद्धि, पूर्व जन्मनां तपनुं फल बे. एम विचारि ते, पंचाग्निथी महा कष्टवालुं तप तपवा लाग्यो. ते कमठ तापस अहीं नगरीनी बहार आव्यो बे, तेने पूजवामाटे लोको जाय बे, ते सांजली प्रजु पण परिवार सहित तेने जोवा माटे गया, त्यां काष्टोनी

अंदर बलता एवा एक मोटा सर्पने महा दयावान एवा प्रभुए पोताना ज्ञानथी जोयो, तेथी कहेवा लाग्या के, हे मूढ तपस्वी, दया विना फोकट आ तपकष्ट तुं शामाटे करे छे?

केमके दयारूपी मोटी नदीनां कांठापर उगेला तृणोनां अंकुराओ सरखा सर्वे धर्मो छे, माटे जो ते नदी सुकाइ जाय तो ते तृणांकुरो केटलीक वारसुधि टकी शके?

ते सांभलीने क्रोधायमान थएलो कमठ तापस कहेवा लाग्यो के, राजपुत्रो तो हाथी घोडा आदिकनी क्रीडा करवानुंज जाणी शके, पण धर्मने तो अमो तपोधनोज जाणी शकीए छीए.

पछी प्रभुए तो अग्निकुंडथी बलतुं लाकडुं कहाडीने, तेने कुहाडाथी छेदाव्युं. त्यारे तेमांथी तापथी व्याकुल थएलो सर्प बहार निकल्यो. ते सर्पने प्रभुए पोतानां एक माणसपासे नवकार मंत्र संभलाव्यो, अने तुरतज ते मृत्यु पामीने, ते नवकार मंत्रना प्रभावथी धरणेंद्र थयो. त्यारे लोकोए प्रभुने "ज्ञानी" एम कहीने स्तुति करी; तथा पछी प्रभु पण पोताने स्थानके गया. पछी कमठ पण तप तपीने मेघकुमारोमां मेघमाली देव थयो.

हवे श्री पार्श्वनाथ प्रभु त्रीस वर्षो सुधि घरवासमां रह्या; पछी लोकांतिक देवोए "जय जय नंदा जय जय भद्दा" इत्यादि शब्दो कहीने प्रभुने तीर्थ प्रवर्तावावानुं कह्युं.

तेथी प्रभु पण श्री वीर प्रभुनी पेठेज संवत्सरी दान देइने, शीयालानो बीजो महीनो, त्रीजुं पखवाडीउं, एटले पोषवदी अग्यारसने दिवसे, बपोर पेहेलां विशाला नामनी पालखीमां बेसीने, देवमनुष्य विगेरेए ते पालखी उपाडते छते, आश्रमपद नामनां उद्यानमां जइ, अशोकवृक्षनी नीचे आव्या, तथा त्यां पोतानी मेलेज वस्त्र आभूषणो विगेरे उतारीने, तेमणे पंचमुष्टिथी पोतानी मेलेज लोच कर्यो. तथा पछी चंद्र साथे विशाखा नक्षत्रनो योग आवते छते, प्रभुए देवदुष्य वस्त्र अंगीकार कर्युं; तथा पछी त्रणसें पुरुषोनी साथे पाणी विना अठ्ठम तपथी प्रभुए दीक्षा लीधी.

हवे प्रभुए त्याशी दिवसोसुधि हमेशां कायाने वोसरावी दीधी; तेमां जेउपसर्गो थया,तेनुं हवे वर्णन करेछे.



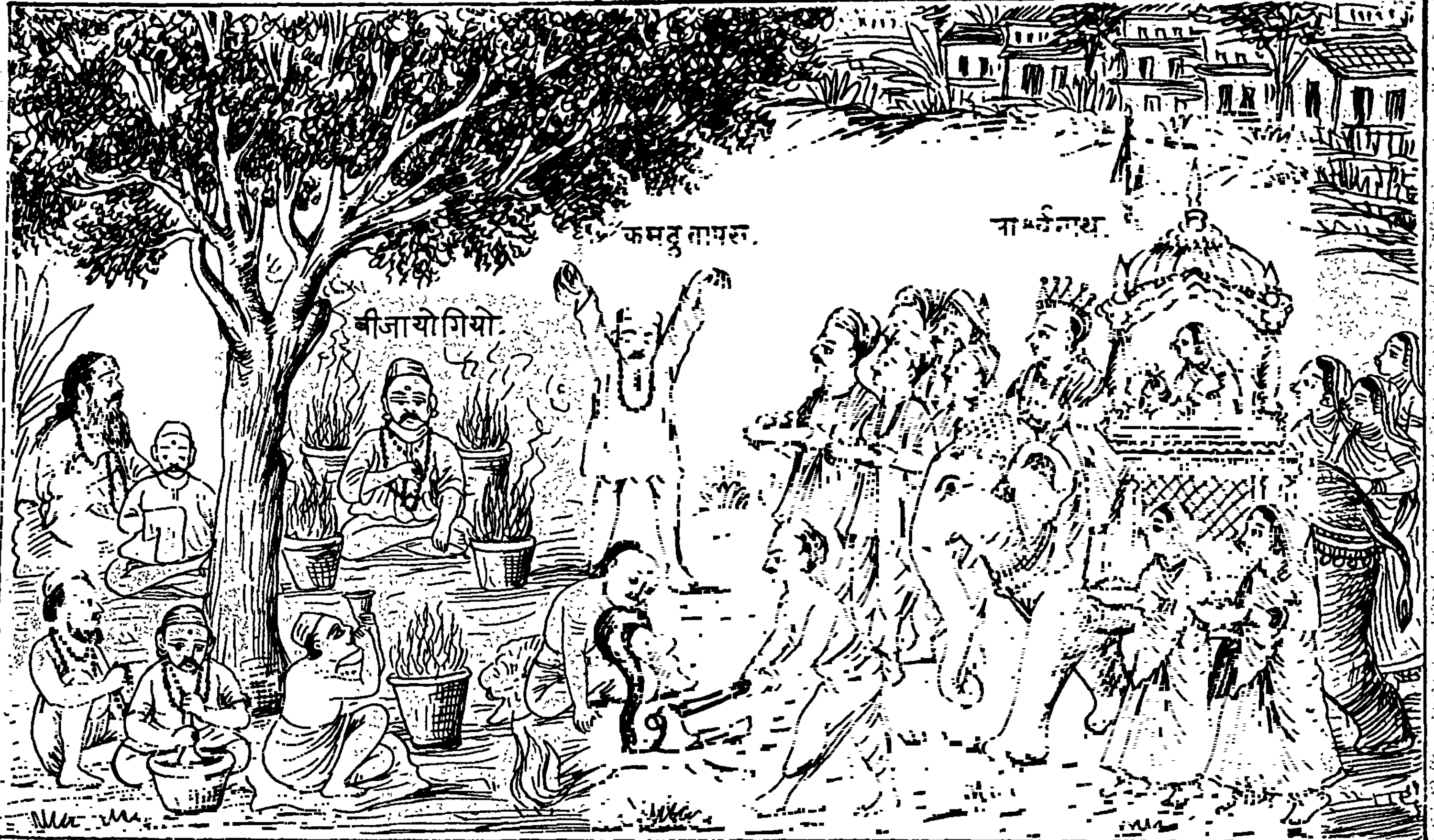
पा. ८८




चित्र ४५



पा.



चित्र ४३

पा. ८८

हवे कमठसंबंधि देवनो उपसर्ग कहे छे.

प्रभु विहार करता थका, एक दहाडो, तापसनां आश्रममां, एक कुवानी नजदिक, एक वडनां वृक्षनी नीचे रात्रिसमये प्रतिमाथी रह्या हता. ते वखते ते मेघमाली नामनो दुष्ट देव प्रभुने उपद्रव करवा आव्यो; त्यां तेणे सिंह, वीछी विगेरेनां रूपो विकुर्वीने प्रभुने उपसर्गो कर्या; तेथी पण प्रभुने अकंपित जाणीने, तेणे आकाशमां घोर अंधकार सरखां वादळांओ कर्यां. तथा कल्पांतकाळनां मेघनी पेठे मुशळधाराथी वरसाद वरसाववा लाग्यो. ते वखते भयंकर एवी वीजळीओ सघळी दिशाओमां थवा लागीउं. तथा ब्रह्मांड पण फुटी जाय, एवी गर्जनाओ पण ते वखते थवा लागीउं.

ते वखते ते जळ छेक प्रभुनी नाशिकानां अग्र भागसुधि आवी पहोंच्युं त्यारे धरणेंद्रनुं आसन कंपवाथी, ते पोतानी पटराणीओ सहित त्यां आव्यो, तथा पोतानी फणाओथी प्रभुपर छत्र धर्युं. पछी धरणेंद्रे अवधिज्ञानथी मेघमालीने वरसतो जाणीने, तेने धमकाव्यो. त्यारे ते मेघमाली पण प्रभुनुं शरणुं लेइने पोताने स्थानके गयो. धरणेंद्र पण नाटक आदिकथी प्रभुनी पूजा करीने पोताने स्थानके गयो. एवी रीते प्रभु देवादिके करेला उपसर्गोने धैर्यताथी सहन करता हवा.

एवी रीते प्रभु अणगार थइने, त्रण गुप्ति अने पांच समितिने धारण करता थका, विहार करता थका, त्र्याशी दिवसो वीत्याबाद, चोरासीमो दिवस आवते छते, उनाळानो पेहेलो महीनो, तथा पेहेलुं पखवाडीउं, एटले चैत्रवदी चोथने दिवसे, चंद्रसाथे विशाखा नक्षत्रनो योग आवते छते, पेहेला बे पोहोरनां समयने विषे, धावडी वृक्षनी नीचे, पाणी रहित चउवीहारो छठ करते छते, व्याघात रहित, जाज्वल्यमान एवुं केवलज्ञान अने केवलदर्शन पाम्या.

श्री पार्श्वनाथ प्रभुने, शुभ, आर्यघोष, विशिष्ठ, ब्रह्मचारी, सोम, श्रीधर, वीरभद्र, तथा यशस्वी नामे आठ गणधरो हता.

हवे आवश्यकमां पार्श्वनाथ प्रजुनां दश गणधरो कहेला छे, पण स्थानांगमां बे अल्पायुषी होवाथी तेनुं वर्णन कर्युं नथी; एम टिप्पणमां कहेलुं छे.

श्री पार्श्वनाथ प्रजुने आर्यदिन्न आदिक शोलहजार साधुओनी उत्कृष्टी संख्या हती, तथा पुष्पचूला प्रमुख आमत्रीस हजार साधवीओनी संख्या हती. सुव्रत प्रमुख एक लाखने चोसठ हजार श्रावकोनी संख्या हती. सुनंदा प्रमुख त्रण लाख अने सत्तावीस हजार श्राविकाओनी संख्या हती. केवली सरखां सामा त्रणसें चौदपूर्वीओ हता. चौदसो अवधिज्ञानीओ हता. एक हजार केवलज्ञानीओ हता. अग्यारसो वैक्रिय लब्धिवाला हता. छसो मनपर्यय ज्ञानीओ हता. एक हजार साधुओ मोक्ष गया. बे हजार साधवीओ मोक्ष गइ. आठसो विपुलमतिओ हता. छसो वादीओ हता. बारसें साधुओ एकावतारी होया थका अनुत्तर विमाने गया. एवी रीतनो श्रीपार्श्व प्रजुनो परिवार जाणवो.

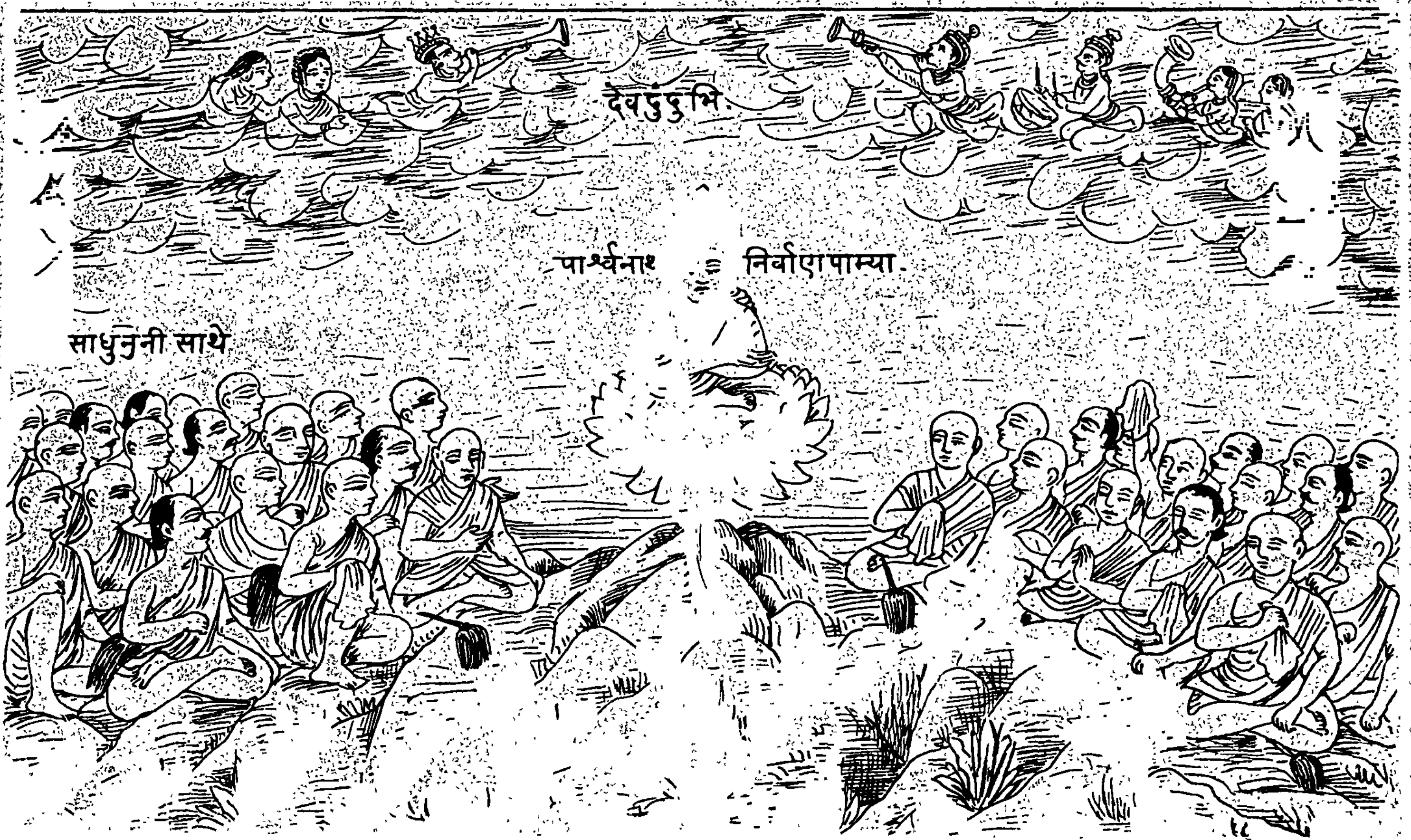
श्री पार्श्वनाथ प्रजुनी बे प्रकारनी अंतगम जूमि जाणवी. पेहेली युगांतकृत जूमि एटले श्री पार्श्वनाथ प्रजु पछी चारपाट सुधि मोक्षमार्ग चालु रह्यो, तथा बीजी पर्यायांतकृतजूमि एटले प्रजुने केवलज्ञान थया पछी, त्रण वर्षे कोइक मुनि मोक्ष गया. तेथी त्रण वर्षथीज मोक्ष मार्ग चालु थयो.

हवे ते काल अने ते समयने विषे श्री पार्श्वनाथ प्रजु त्रीश वर्षोसुधि घरवासमां रह्या. त्यासी दिवसोसुधि छद्मस्थपणे रह्या, त्यासी दिवस ओछा सित्तेर वर्षोसुधि केवलज्ञानी रह्या, एवी रीते एकसो वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करीने, शेष रहेलां कर्मोने खपावीने, आ अवसर्पिणी कालनो, दुषम सुषमा नामनो चोथो आरो घणो वीती गयाबाद, श्रावणसुदि आठमने दिवसे समेत शिखर पर्वतनी उपरें, पाणी रहित मासक्षपणना तपथी अनशन करीने, तेंत्रीस साधुओनी साथे विशाखा नक्षत्रसाथे चंद्रनो योग आवते छते, मध्य रात्रिए, बन्ने हाथो लांबा करी कायोत्सर्ग ध्यानमां रह्या थका मोक्षे गया.

श्री पार्श्वनाथ प्रजुथी अढीसो वर्षे श्रीवीर प्रजुनुं निर्वाण थयुं.

एवी रीते श्री पार्श्वनाथ प्रजुनुं चरित्र जाणवुं.

चित्र ४६



हवे श्री नेमनाथजीनुं जघन्य आदिक वाचनाथी चरित्र कहे छे.

श्री नेमनाथ प्रभुनां पांचे कल्याणको चित्रा नक्षत्रमां थयां छे; प्रभु चित्रा नक्षत्रमां देवलोकथी चव्या, चित्रा नक्षत्रमां तेमनो जन्म थयो, चित्रा नक्षत्रमां, दीक्षा लीधी, चित्रा नक्षत्रमां केवलज्ञान उत्पन्न थयुं, तथा चित्रा नक्षत्रमां प्रभु मोक्षे गया.

श्री नेमनाथ प्रभु अपराजित नामनां विमान थकी बत्रीस सागरोपमनुं आयुष्य संपूर्ण करीने, तथा त्यांथी चवीने, आज जंबूद्वीपनां भरत क्षेत्रमां शौरीपुर नामे गाममां समुद्रविजय नामना राजानी शीवादेवी नामनी राणीनी कुक्षीए, वर्षाकालनो चोथो महीनो, सातमो पक्ष, एटले कार्तिक वदी बारसने दिवसे, चित्रानक्षत्र साथे चंद्रनो योग आवते छते गर्भपणे उपन्या.

माताए चौद स्वप्नो जोयां, इत्यादिक वृत्तांत श्री वीरप्रभुनी पेठेज अत्रे पण जाणी लेवो.

पछी ते काल अने तेसमयने विषे, प्रभु वर्षाकालनो पेहेलो महिनो, बीजुं पखवाडीउं, एटले श्रावणसुदी पंचमीने दिवसे, नव मास अने साडासात दिवसो गर्भमां रहीने, चित्रा नक्षत्रनो चंद्रनी साथे योग आवते छते, जनम्या.

अहीं देवोए करेलो महोत्सव विगेरे सर्व वृत्तांत श्री वीरप्रभुनी पेठेज जाणी लेवो.

प्रभु ज्यारे गर्भमां हता, त्यारे माताए स्वप्नमां अरिष्ट रत्नमय एवी चक्रनी धारा जोइ हती, तेथी प्रभुनुं अरिष्टनेमि एवुं नाम पाडयुं. अने ते नामनो अर्थ अमंगलने नाश करनारा एवुं पण जाणवो.

हवे एक दहाडो शिवादेवी माताए प्रभुने युवावस्थामां आवेला जाणीने कह्युं के, हे वत्स ! तुं विवाह करीने अमारा मनोरथो संपूर्ण कर ? त्यारे प्रभुए कह्युं के, ज्यारे मने योग्य कन्या मलशे, त्यारे हुं परणीश.

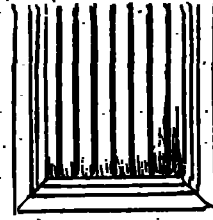
हवे एक दहाडो कौतुकरहित एवा पण ते नेमिकुमार, मित्रोथी प्रेराया थका, क्रीडा करता थका कृष्ण वासुदेवनी आयुधशालामां गया. त्यां कौतुकना उत्सुकी एवा मित्रोनी विनंतिथी तेणे वासुदेवनुं

चक्र आंगलीपर लेइने, कुंभारनां चक्रनी पेठे भमाव्युं. तथा तेनुं शार्ग धनुष्य पण तेमणे कमलनाल नी पेठे नमाव्युं. कौमुदकी नामनी गदाने एक लाकडीनी पेठे उपाडी. तथा तेनो पांचजन्य नामनो शंख, मुखपर राखीने वगाड्यो.

ते वखते हाथीओ तो पोतानां बंधनस्तंभोने उखेडीने शेहेरनां मेहेलोने भांगता थका आमतेम दोडवा लाग्या, तथा घोडाओ पण पोतानां बंधनो तोडावीने घोडाशालाओमांथी नासवा लाग्या, तथा ते वखते समस्त शेहेर ते शंखनादथी बधिर बनी गयुं. एवी रीतनां शब्दने सांभलीने श्रीकृष्ण क्रोधा-यमान थइने तुरत आयुधशालामां आव्या. त्यां नेमिनाथ प्रभुने जोइने, मनमां आश्चर्य थया; अने पछी तेणे प्रभुने कह्युं के, आपण बन्ने आपणा बलनी परिक्षामाटे चालो अखाडामां जइए, एम कही प्रभुनी साथे ते अखाडामां आव्या. पछी त्यां प्रभुए श्रीकृष्णने कह्युं के, आपणे बीजी प्रकारनुं युद्ध करवुं, ते तो अनुचित छे, माटे आपणे एक बीजानी भुजाओ वालीने बलनी परीक्षा करवी. पछी श्रीकृष्णे पण ते वात कबुल करी. पछी कृष्णे पोतानी बाहु आगल धरी, त्यारे प्रभुए तो तेने, नेतरनी लतानी पेठे, अथवा कमलनां नालनी पेठे वाली नाखी. पछी प्रभुए पोतानो हाथ लंबा-व्यो, त्यारे कृष्ण तो ते पर वांदरानी पेठे लटकवा लाग्या. पछी कृष्णे बहु बल वापर्युं, तो पण प्रभु-नो हाथ वल्यो नहीं, त्यारे तेना मनमां चिंता थइ के, खरेखर आ नेमिकुमार पोतानां बलथी, सुखे करीने मारुं राज्य लेइ लेशे.

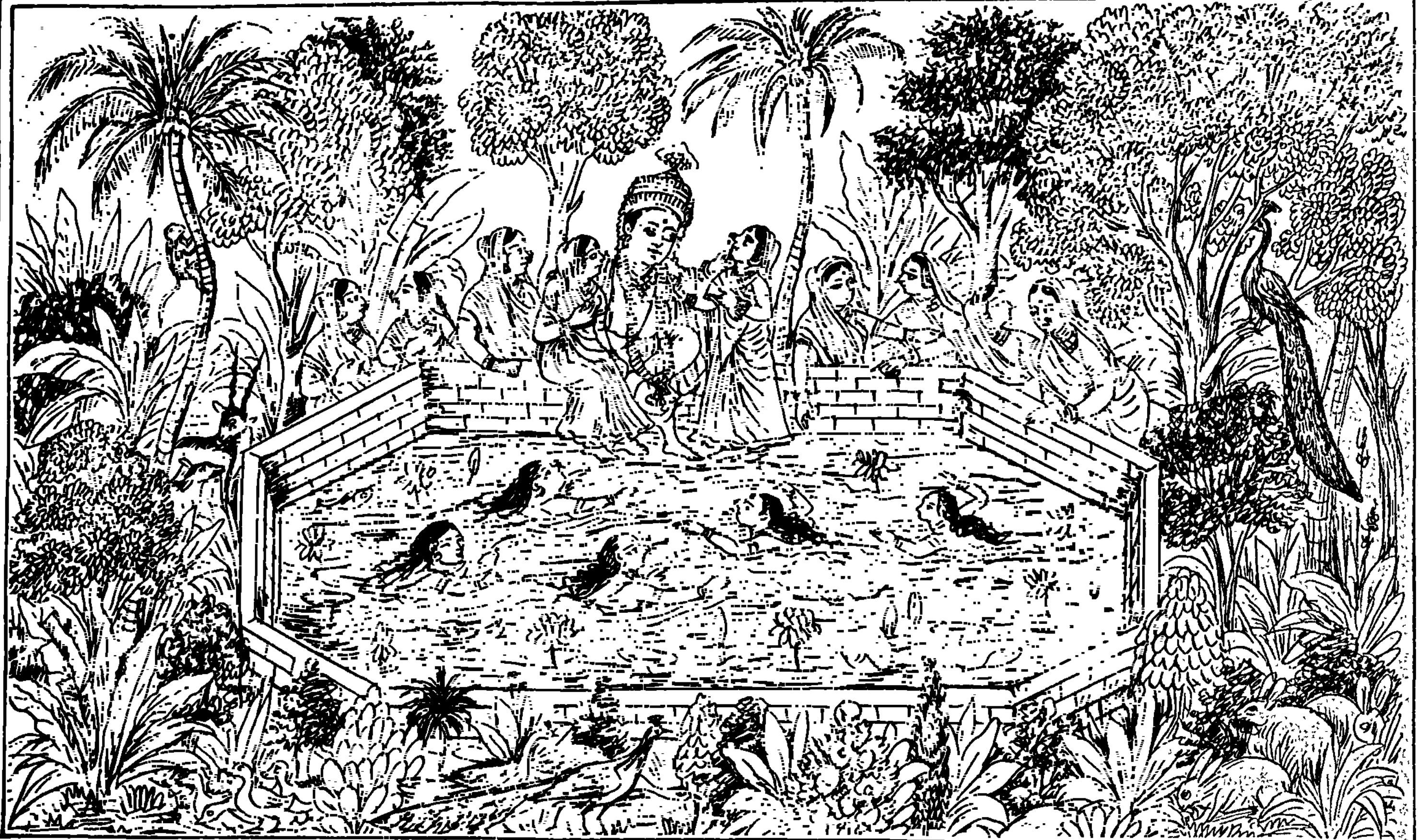
पछी तो श्रीकृष्ण बलभद्रनी साथे विचार करवा लाग्या के, हवे आपणे शुं करवुं ? नेमिकुमार तो बलवान छे, माटे राज्य लेइ लेशे. एम तेओ विचार करे छे, एटलामां आकाशवाणी थई के, अरे! पेहेलांज नमिनाथ प्रभुए कहेलुं छे के, नमिकुमार तो दीक्षा लेइने बावीसमा तीर्थंकर थशे. ते वाणी सांभलीने श्रीकृष्ण निश्चिंत थया, तो पण निश्चय माटे; नेमिनाथ प्रभुनी साथे जलक्रीडा करवा माटे, ते पोतानी राणीओ सहित तलावमां गया. तथा त्यां प्रेमथी नेमिकुमारने हाथमां लेई, ते तलावमां





नेमीश्वर भगवान्
आयुध शालामां

श्रीकृष्ण बलदेव.



नेमीश्वर भगवान् वसंतक्रीडा करवा गया तेनुं चित्र.

दाखल थया, तथा त्यां तेणे प्रभुने पिचकारीओमां केसर आदिकनां पाणी भरीने तेथी सींच्या. तथा रुक्मिणी आदिक गोपीउंने पण श्रीकृष्णे कही राख्युं हतुं के, नेमिकुमार साथे निःशंकपणें क्रीडा करीने पण तेमने विवाह माटे समजाववा. तेथी ते गोपीओमांथी केटलीको प्रभुने केसरना छंटकाव करवा लागीउं; केटलीको पुष्पोना दडाओथी प्रभुने वक्षस्थलमां मारवा लागीउं, केटलीको तीक्ष्ण कटाक्षो मारी मश्करीओ करवा लागीउं; तथा केटलीको विचित्र प्रकारनी कामक्रीडाओ करवा लागीउं. पछी तो ते सघलीओ एकठी थइने, पिचकारीओमां सुगंधि पाणी भरीने, प्रभुने व्याकुल करवा-माटे एकी वखते छांटवा लागीउं.

एटलामां आकाशमा वाणीथइ के,हे स्त्रीओ!तमो मुग्धछो, केमके आ प्रभुनेतो बालपणामां पण इंद्रोए हजारो मोटा कलशोथी मेरुपर अभिषेक कर्यो छे, ते तमाराथी केम व्याकुल थइ शकशे ? पछी नेमिनाथ प्रभु श्रीकृष्ण अने गोपीउंने पाणी छांटवा लाग्या, तथा पुष्पना दडाओ मारवा लाग्या, एवी रीते विस्तारपूर्वक जलक्रीडा करीने सघलाओ तलावने किनारे आव्या. त्यां नेमिकुमारने सिंहासनपर बेसाड्या, तथा सर्वे गोपीओ तेमने वींटीने बेठीउ, पछी त्यां रुक्मिणीए कह्युं के, हे नेमिकुमार, तमो आजीविका चलाववाना भयथी डरीने परणता नथी, ते अयुक्त छे, बत्रीसहजार स्त्रीओना स्वामी एवा तमारा भाइ, तमारुं पोषण करवाने समर्थ छे.

पछी सत्यभामाए पण कह्युं के, ऋषभदेव आदिक तीर्थंकरोए पण वीवाह करीने राज्य पण भोगव्युं छे, तथा घणा प्रकारनां विषयसुख भोगव्यां छे, तथा तेमने पुत्रो पण थया छे, अने छेवटे मोक्षे पण गया छे; अने हे नेमिकुमार, तमो तो आ कोइ नवा मोक्षगामी थया देखाओ छे ! माटे हे देवर ! तमो जरा विचार करीने परणो ? अने बंधुजनोने आनंद आपो ? पछी जांबुवतीए पण कह्युं के, हे नेमिकुमार, पेहेलां पण हरिवंशमां विभूषण समान एवा मुनिसुव्रतस्वामिए अहीं गृहस्थावासमां रही, पुत्र थया पछी दीक्षा लीधी हती, तथा पछी मोक्षे पण गया छे. पछी पद्मावतीए कह्युं के, स्त्री-

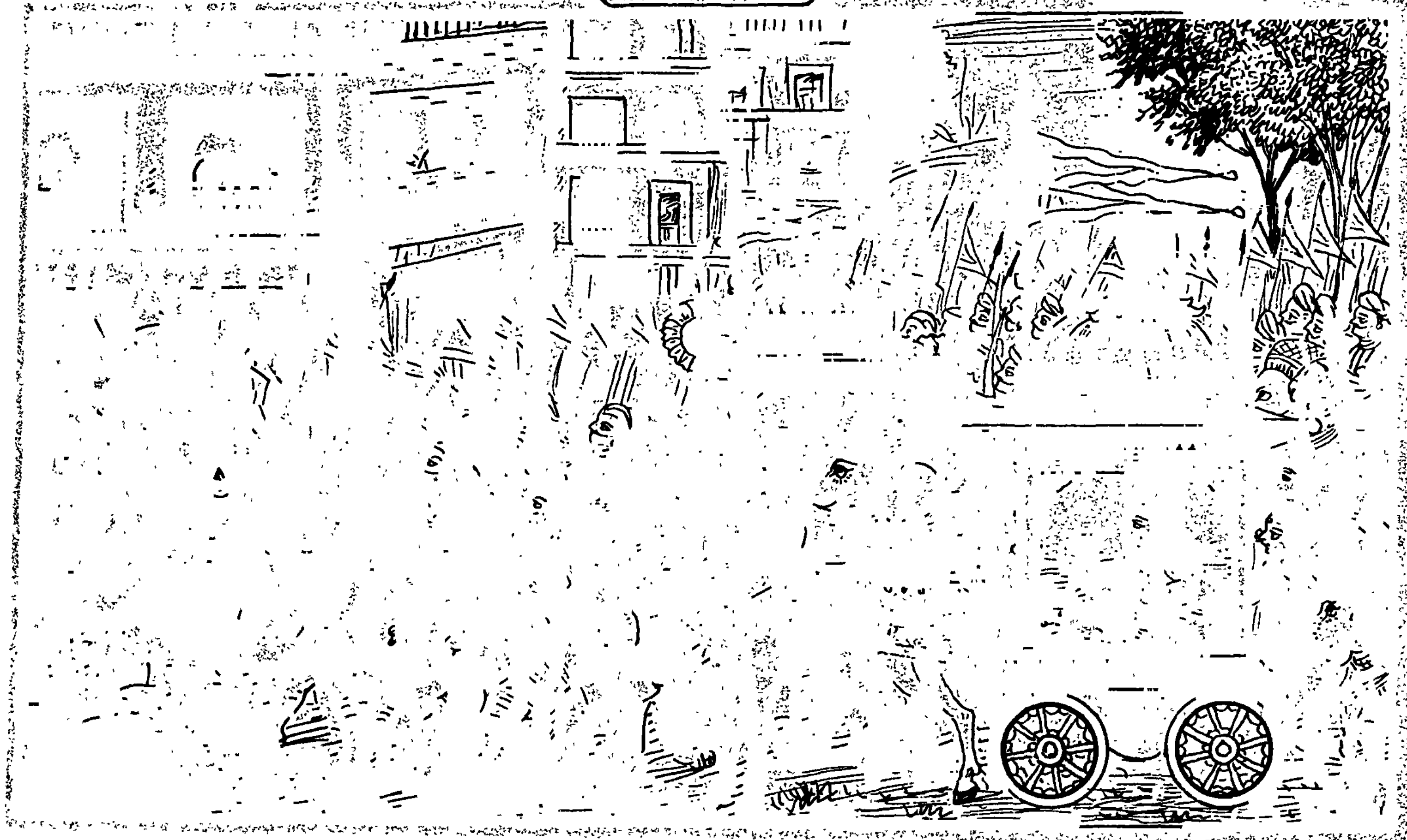
विना आ संसारमां पुरुषनी शोभा नथी केमके स्त्रीविनानो पुरुष वांढो थइ अपमान पामे छे. पछी गांधारीए कह्युं के, स्त्रीविना यात्रा, संघ, पर्व, उत्सव, विवाह, उजाणी विगेरे शोभतां नथी. पछी गौरीए कह्युं के, हे देवर, अज्ञानी एवा पक्षीओ पण आखो दिवस भमीने सांजरे पोतानां माला-मां जइ सुखेथी स्त्री साथे रहे छे, माटे तेवा पक्षीओथी पण शुं तमो मुग्ध छो ? पछी लक्ष्मणाए पण कह्युं के, स्नान आदिक क्रियाओमां, तथा दुःख वखते पण सहायकारी, एवुं स्त्री वीना बीजुं कोण थइ शके छे ? पछी सुसीमा पण कहेवा लागी के, स्त्री विना घेर आवेला परोणा तथा मुनि-राजोनी पण बरदास्त कोण करी शकशे ? अने तेथी पुरुषनी शोभा पण शानी वधी शके ? एवी रीतनी गोपीओनी वाणीओनी युक्तिथी, तथा यदूओनां आग्रहथी पण मौन रहेला, तथा जरा हसता मुखवाला एवा प्रभुने जोइने, ते गोपीओए, मोटे स्वरे कह्युं के, नेमिकुमारे तो विवाह करवानुं कबुल कर्युं. (केमके मौन रहेवुं ए न्यायथी ना न पाडवा बरोबर छे.)

पछी नेमिकुमार माटे श्रीकृष्णे उग्रसेन राजानी पुत्री राजेमतीनी मागणी करी.

पछी समुद्रविजये क्रोष्टकी नामना निमित्तिआने बोलावीने लग्ननो दिवस पूछयो. त्यारे निमित्ति-ए कह्युं के, आ वर्षाकालमां बीजां पण शुभकार्यो ज्यारे गृहस्थीओथी थइ शकतां नथी, त्यारे विवा-हनी तो वातज शी करवी ? त्यारे समुद्रविजये निमित्तिआने कह्युं के, आ वखते कालक्षेपनी जरुर नथी, केमके श्रीकृष्णे घणी मेहेनते नेमिकुमारने विवाहमाटे हा पडावी छे; माटे जेम बने तेम नज-दीकनो दिवस तुं कहे ? त्यारे निमित्तिए पण श्रावण सुदी छठनो दिवस कह्यो.

पछी बन्ने कुलोमां विवाहनी सामग्रीओ थवा लागी; तथा लग्ननो दिवस नजदीक आववाथी, नेमि-कुमार पण उत्तमशृंगारयुक्त थइने, रथमां बेठा; उपर छत्र धरावा लाग्युं, तथा समुद्रविजय आदिक दश दशार्हो, तथा केशव, बलभद्र आदिक परिवार पण चालवा लाग्यो; तेम शिवादेवी प्रमुख स्त्रीओ पण धवल, मंगलनां गीतो गातीथकी साथे चालवा लागीउं.

चित्र ४९



नेमीश्वर भगवाननी जान. पा. ९१

एवी रीते प्रभु चालता थका, सारथिने पुछवा लाग्या के, आ उत्तम मंगलवालुं कोनुं मंदिर छे ? त्यारे सारथी पण आंगलीनां अग्र भागथी बतावीने कहेवा लाग्यो के, आ तमारा ससरा उग्रसेननो मेहेल छे; आ तमारी स्त्री राजेमतीनी, चंद्रानना तथा मृगलोचना नामनी सखीओ मांहोमांहे वातो करे छे.

ते वखते नेमिनाथ प्रभुने जोइ, मृगलोचना चंद्राननाने कहेवा लागी के, हे चंद्रानना ! स्त्री वर्गमां राजीमति पण खरेखर वखाणवा लायक छे, केमके जेणीनो हाथ, आवो भर्तार ग्रहण करशे; त्यारे चंद्रानना पण मृगलोचनाने कहेवा लागी के, विधात्राए आवी रूपवंत राजीमतीने बनावीने, जो आवा उत्तम वर साथे तेनो मेलाप कराव्यो छे, तोज तेनी कलानी पण दुनिआमां प्रतिष्ठा थएली छे.

पछी वाजांओनो शब्द सांभलीने राजीमती पण मंडपमांथी निकलीने सखीओनी वच्चे आवी बेठी तथा सखीओने कहेवा लागी के, आडंबर सहित आवता एवा कोइक वरराजाने शुं तमो एकलीज जोशो ? मने नहीं जोवा द्यो?एम कही, बलथी एकदम तेओनी वच्चे बेसीने नेमिकुमारने जोवा लागी. पछी तेमने जोइने विचारवा लागी के, शुं आ कोइ नागकुमार छे ? अथवा कामदेव पोतेज छे ? अथवा इंद्र छे ? अथवा आ मारां पुण्योनोज कोइ राशि छे ? जे विधात्राए आ सौभाग्यवंत वरने बनाव्यो छे, ते विधात्रानां तो हुं हाथथी लुंछणां लेउं छुं.

एटलामां मृगलोचनाए राजीमतीनो अभिप्राय अनुमानथी जाणी लइने, हांसीथी चंद्राननाने कह्युं के, हे सखि, आ वर समस्त गुणोए करी जो के संपन्न छे, तो पण तेमां एक दूषण तो छेजपण वरनी अर्थी एवी राजीमतीनां देखतां ते कहेवाय नहीं. त्यारे चंद्राननाए पण कह्युं के, मने पण तेनी खबर छे, पण हमणां तो आपणे मौनज रहेवुं. पछी राजिमती पण लज्जाए करीने पोतानुं मध्यस्थपणुं देखाडवा लागी. हे सखीओ, गमे ते कोइ, भूवनमां अद्भुत भाग्यवाली तथा धन्य एवी स्त्रीनो आ भरतार थाओ ? पण आवा वरमां जे दूषण कहाडवुं ते तो दूधमांथी पूरा कहाडवा जेवुं

असंभवितज छे. पछी ते बन्ने सखीओए विनोद सहित कह्युं के, हे राजीमति, पेहेलां तो वर रूपालो छे के नहीं ? ते जोवाय. अने बीजा गुणो तो परिचय थयाबाद जणाय. अने ते गौरपणुं तो आ वरमां काजलसरखुं देखाय छे !

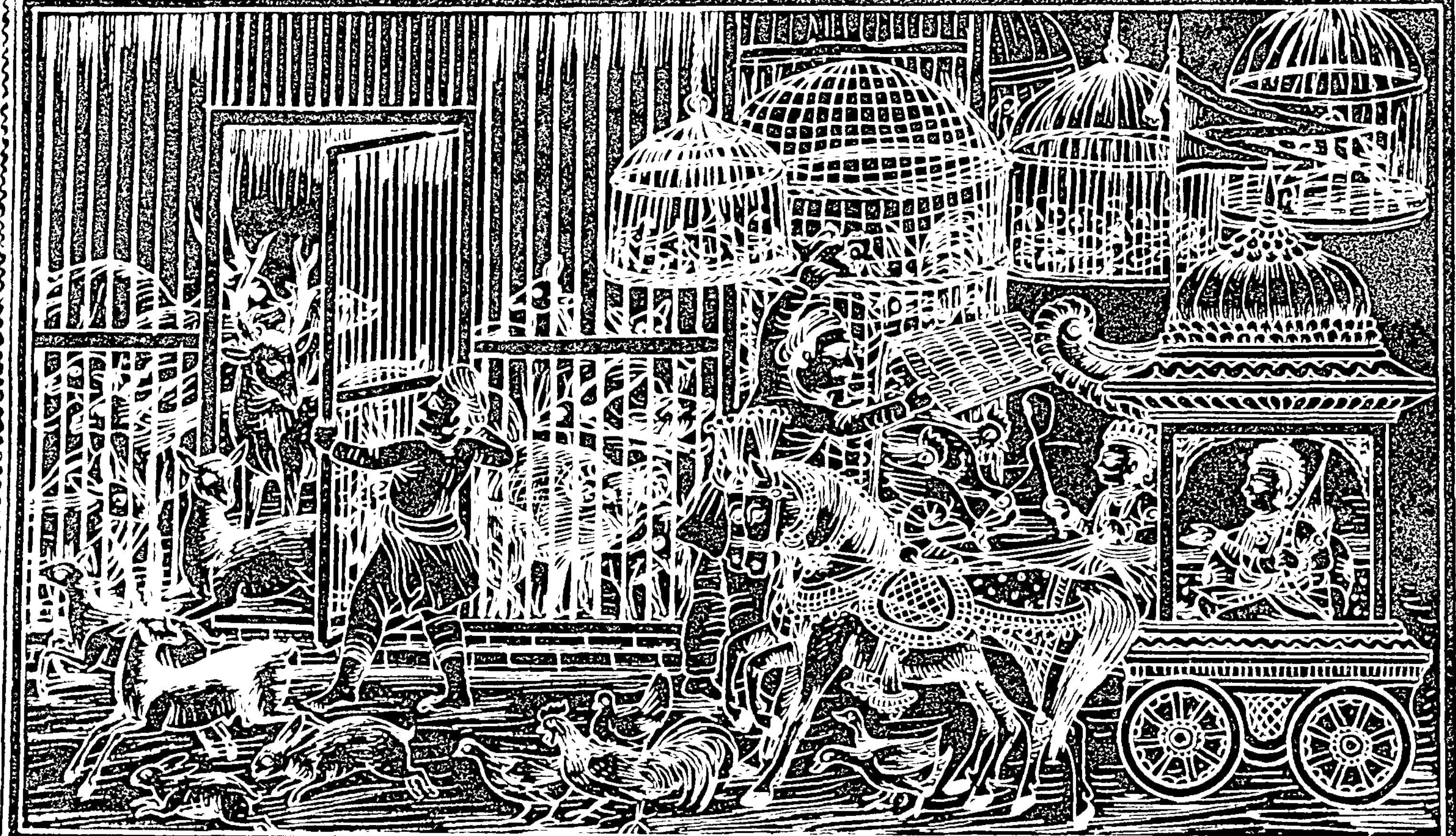
ते सांभली ईर्षा सहित राजेमती सखिओने केहेवा लागी के, आज दिन सुधि, तमो बन्ने चतुर छो के नहीं ? एम मने भ्रम हतो. हवे ते भ्रम भांगी गयो. केमके सर्वे गुणोनुं कारणरूप तथा भूषणरूप एवुं श्यामपणुं, तमोए दूषणरूप कह्युं. पण हवे तमो सावधान थइने सांभलो. श्यामपणामां अने श्याम वस्तुओनो आश्रय करवामां गुणो रहेला छे, तथा केवल गौरपणामां तो दोषो रहेला छे; केमके, पृथ्वी, चित्रवेली, अगर, कस्तुरी, वर्षाद, आंखनी कीकी, केश, कसोटी, मसी तथा रात्रि ए सर्वे श्याम रंगनां पण उत्तम छे. वली कपूरमां अंगारो, आंखमां काजल, तथा भोजनमां मरी विगेरे श्याम वस्तुओना आश्रयथी शोभे छे. तथा श्वेतवर्णवालुं एवुं लवण खारुं छे, बरफ दहन करनारुं छे, तेम कुष्टरोग पण महा खराब छे, एवी रीते श्वेतवर्ण तो दूषणरूप छे.

एवी रीते तेओ परस्पर वातो करते छते, श्रीमान् नेमिनाथ प्रभुए आवतां थकां, पशुओनो कोलाहल सांभल्यो; ते सांभलीने सारथिने एकदम पुछ्युं के, हे सारथि, आ कोलाहल शानो संभलाय छे ? त्यारे सारथिए कह्युं के, तमारा विवाहमां भोजन वास्ते एकठां करेलां पशुओनो आ कोलाहल छे, ते सांभली प्रभु, विचारवा लाग्या के, धिक्कार छे, आ विवाहना महोत्सवने, के जेमां आटला बधा पशुओनो वध थशे.

एटलामां राजीमती सखीओने, कहेवा लागी के हे सखिओ ! मारी डाबी आंख आ वखते केम फरके छे ? त्यारे सखीओए थुथुकार करी कह्युं के, तारुं विघ्न नाश पामो ?

सारथिने कह्युं के, हे सारथि तुं रथ अहींथीज पाछो वाल ?

हरिण, पोतानी गरदनथी हरिणीनी गरदनने ढांकीने उभो



माटे एकठा करेला चतुष्पद जीवो तथा पांजरामां रहेला पक्षीओ तेमने भगवान् छूटा करी मूके छे पा. ९२

ते जाणे पोताने छोडाववामाटे प्रभुने अरज करतो होय नहीं तेम देखावा लाग्यो.
एवी रीते सघलां पशुपक्षीओ पोतपोताना शब्दें करीने, पोताने छोडाववामाटे जाणे प्रभुने विनंति करतां होय नहीं, तेम देखावा लाग्यां.
पछी ते वखते प्रभुए पशु रक्षकोने कह्युं के, हे पशुरक्षको, आ पशु पक्षिओने छोडी आपो ? हुं विवाह करीश नहीं. त्यारे ते पशुरक्षको पण श्री नेमिनाथ प्रभुनुं वचन सांभली पशुओने छोडवा लाग्या.
ते वखते प्रभुना कहेवाथी सारथिए पण रथने पाछो फेरव्यो.
अहीं कवि कहे छे के,
कुरंगे (हरिणे) पोतानां यथार्थ नाम प्रमाणे आचरण कर्युं छे; केमके तेणे चंद्रने कलंक आप्युं छे, रामसीतानो वियोग कराव्यो छे, तथा नेमिनाथ प्रभुथी राजीमतीनो पण त्याग कराव्यो छे माटे कुरंग केतां खोटो रंग करनारुं एवुं तेनुं सत्य नाम छे.
हवे ते वखते समुद्रविजय तथा शिवादेवी आदिकोए तुरत रथने जतो अटकाव्यो. तथा शिवादेवी माता आंखोमां आंसु लावी केहेवा लाग्यां के, हे वत्स, तुं जननीवत्सल थइने, मने आ वखते केम दुःख उपजावे छे ! त्यारे प्रभुए कह्युं के, हे माता, मारुं मन हवे मनुष्य संबंधि स्त्रीमांथी विरक्त थयुं छे,अने मुक्तिरूपी स्त्रीमां लागी रहेलुं छे. केमके, जे स्त्रीओ रागिओमां पण राग रहित होय छे, ते स्त्रीओने कोण सेवे ? माटे मुक्तिरूपी स्त्री, के जे विरागमां पण रागवाली छे, तेनी हुं इछा करुं छुं.
ते वखते राजीमती पण पोकार करवा लागी के, हा दैव, आ शुं थयुं ? एम कही मूर्छा पामी.
पछी सखीओए तेणीने चंदन आदिकनां पाणी छांटवाथी, ते शुद्धिमां आवी, त्यारे मोटे स्वरेथी रुवा लागी के, हे जादवकुलमां सूर्य समान, तथा हे निरुपमज्ञानवाला, तथा हे जगतना शरणरुप, तथा हे करुणाकर स्वामि, मने एकली छोडीने आप क्यां चाल्या ? पछी पोतानां हृदयने

कहेवा लागी के, अरे ! निष्ठुर एवां हृदय, हजुपण तुं जीवितने धारण करतो थको लज्जा पामतो नथी ! ! ! केम के आजे मारा स्वामि मने तजीने बीजी जगोए जता रहे छे. वली पोताना स्वामिने-उपालंभ सहित कहेवा लागी के, हे धूर्त, जो तुं मुक्तिरूपीज स्त्रीमां रक्त थयो हतो, तो आवी रीत-ना प्रारंभथी तें मने शामाटे विरुंबना करी ? त्यारे सखीओए तेणिने कह्युं के, हे सखि, तुं शामाटे खेद करे छे ? हजु क्यां चाल्युं गयुं छे ? तारे माटे तेनाथी पण सुंदर एवो कोइ बीजो भरतार शोधी कहाडीशुं. ते सांभली राजीमती पोताना बन्ने हाथोथी कानने ढांकीने कहेवा लागी के, हे सखि-ओ, तमो मने नहीं संभलाववा लायक एवुं वचन केम संभलावो छो ? केमके सूर्य कदाच पूर्व दिशा छोडीने पश्चिम दिशामां उगे, तोपण हुं श्रीनेमिकुमार शिवाय बीजो भरतार करुं नहीं. वली पोताना भरतारने कहेवा लागी के, हे स्वामि, तमो व्रतना इच्छक थइने घेर आवेला एवा याचको प्रते तेओ-नी इच्छा उपरांत आपो छो, पण मागणी करती एवी जे हुं, तेणीए तो मारा हाथउपर आपनो हाथपण मेलव्यो नहीं. हवे राजीमती विरक्त थइ थकी कहेवा लागी के ज्यारे मारा स्वामिनो हाथ आ लग्न-महोत्सवमां तो मारा हाथपर नहीं आव्यो, तो पण मारी दीक्षा वखते तेमनो हाथ मारा शिरपर थाओ.

हवे श्री नेमिकुमारने परिवार सहित समुद्रविजय राजा कहेवा लाग्या के, रुषभदेव आदिक तीर्थंकरो पण विवाह करीने मोक्षे गया छे, माटे हे कुमार तुं ब्रह्मचारी रहीश तेथी तारुं शुं तेमना-थी कंइ उंचुं पद थशे.

ते सांभली प्रभूए कह्युं के; हे तात, मारा भोगावली कर्मो क्षीण थयां छे, वली एक स्त्रीने परण-वामां ज्यारे अनंता जीवोनो संहार थाय छे, एवा विवाहमाटे कोण आग्रह करे ?

अहीं कवि उत्प्रेक्षा करे छे के;

हुं एम मानुं छुं के, स्त्रीओथी विरक्त एवा श्री नेमिनाथ प्रभु परणवानां मिशथी अहीं आवीने पूर्वना प्रेमथी, राजीमतीने मोक्षमाटेनो संकेत देइ गया.


भगवान् दीक्षा लीए छे
अशोक वृक्षनी नीचे.

ते वखते लोकांतिक देवो पण जय जय शब्द करीने प्रभुने कहेवा लाग्या के, हे नारा, तथा समस्त जंतुओने अभयदान देनारा, प्रभु, हमेशांनां महोत्सव माटे आप तीर्थने प्रवर्तावो ! एवी रीते प्रभुने कहीने, समुद्रविजयादिकोने पण कह्युं के, आ प्रभु वार्षिकदान दीधा बाद त्रणे भुवनोने आनंद आपशे. ते सांभली सघलाओ संतुष्ट थया.

अहीं संवत्सरी दान आदिकनो वृत्तांत श्रीवीरप्रभुनी पेठेज जाणी लेवो.

हवे वर्षाकालनो पेहेलो महीनो, बीजुं पखवाडीउं, एटले श्रावणसुदी छठने दिवसे मध्यानकाल, उत्तरकुरा नामनी पालखीमां बेसीने, द्वारिकामांथी निकलीने, रेवत नामनां उद्यानमां अशो- नीचे आव्या. तथा त्यां पोतानेज हाथेथी वस्त्राभूषणो उतारीने, पंचमुष्टीथी लोच करीने, पाणी रहीत छठनां पच्चखाणथी, चंद्र साथे चित्रा नक्षत्रनो योग आवते छते, एक देवदुष्य वस्त्र लेइने, एक हजार पुरुषो साथे प्रभुए दीक्षा लीधी; एटले अणगारी थया.

श्री नेमिनाथ प्रभुए चोपन रात्रिसुधि कायाने वोसरावी. पछी पंचावनमें दिवसे, वर्षाकालनो त्रीजो महीनो, पांचमुं पखवाडीउं, एटले आसुवदी अमासने दिवसे, पाछला पोहोरे, गिरनार पर्वत पर, वेतस नामनां वृक्षनी नीचे पाणी रहीत अठमनुं पच्चखाण होते छते, तथा चंद्र साथे चित्रा नक्षत्रनो योग आवते छते, शुक्ल ध्यान ध्याता थकां, प्रभुने केवलज्ञान अने केवलदर्शन उत्पन्न थयां.

एवी रीते प्रभुने रैवताचल पर्वतपर सहस्राम्रवनमां केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. ते वखते उद्यानपालके कृष्णपासे जइने, तेने तेनी वधामणी आपी. त्यारे श्रीकृष्ण पण मोटा आडंबरथी प्रभुने वांदवा ; ते वखते राजीमती पण त्यां आव्यां. त्यां प्रभुनी देशना सांभलीने वरदत्त राजाए बे हजार साथे दीक्षा लीधी.

श्रीकृष्णे राजीमतीनां स्नेहनुं कारण पुछयाथी, प्रभुए, धनवतीनां भवथी मांडीने, तेणी नव भवनो वृत्तांत कही संभलाव्यो.

पछी त्यांथी प्रभु बीजी जगोए विहार करीने पाछा रैवताचलपर आव्या. ते वखते अनेक राजकन्याओ सहित राजीमतीए तथा रथनेमिए पण प्रभु पासे दीक्षा लीधी. हवे एक दहाडो राजीमती प्रभुने वांदवामाटे रैवताचलपर जती हती, तेटलामां मार्गमां वरसाद थवाथी, ते एक गुफामां दाखल थइ. तेम ते गुफामां पेहेलेथी दाखल थएला रथनेमिने नहीं जाणीने, ते पोतानां भींजाएलां वस्त्रो कहाडीने सुकाववा लागी.

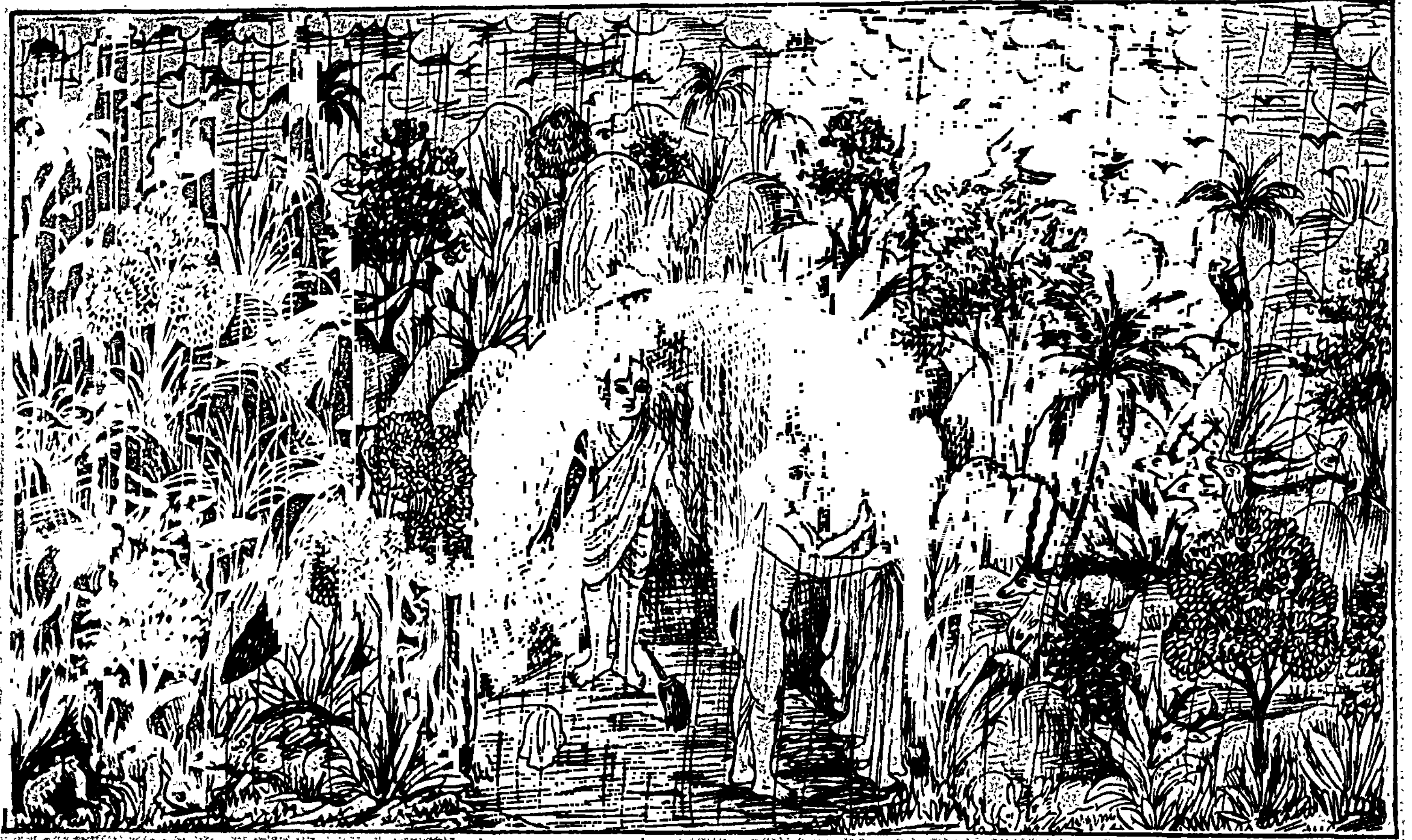
ते वखते, हांसी करेल छे, देवांगनाओनुं पण रमणीकपणुं जेणीए, तथा साक्षात् कामदेवनीज स्त्रीसरखी, एवी राजीमतीने वस्त्ररहित जोइने, भाइपरनां वेरथीज होय नहीं जेम, तेम कामदेवथी हणायो थको रथनेमि, कुललज्जा तजीने, तथा धैर्य पकडीने राजीमतीने केहेवा लाग्यो के, हे सुंदरि, तुं तप करीने तारा देहने शामाटे शोषावे छे ? केम के सर्वांगनानां भोगने योग्य एवुं तारुं सौभाग्य छे. माटे हे भद्रे, तुं अहीं आव ? अने आपण बन्ने आपणो जन्म सफल करीए, अने पछी छेवटे आपणे तपस्या करीशुं.

ते सांभली महासती एवी ते राजीमती. अद्भुत प्रकारनुं धैर्य धारीने तेने कहेवा लागी के, हे महानुभाव, नर्कनां मार्गरूप एवो तुं केम अभिलाष करे छे ? सघलुं सावद्य कार्य छोडीने पाछी तेनी इछा करतां, थकां शुं तने लज्जा थती नथी ? नीच कुलोमां उत्पन्न थएलां एवां तिर्यंचो पण ज्यारे वमेला पदार्थोने इछता नथी त्यारे तेओथी पण शुं तुं वधारे नीच छे ?

एवी रीतनां राजीमतीनां वाक्योथी प्रतिबोध पामीने रथनेमि मुनि पण श्रीनेमिनाथ प्रभु पासे गया, तथा त्यां पोतानां अतिचारनी आलोयणा लेइने, तप तपीने मोक्षे गया.

राजीमती पण दीक्षा पालीने अंते मोक्षशयापर चढ्यां. तथा घणां कालथी प्रार्थित एवा श्री नेमि-शाश्वता संगने पाम्यां.

चित्र ५२



गिरनार पर्वत उपर एक गुफामां रहनेमी साधु काउस्सग करे छे. अने ते ज गुफामां राजीमतीजी नग्न थई ने पोताना वस्त्र सकावे छे. पा. ७४

श्री नेमिनाथ प्रभुने अढार गणधरो थया. तथा वरदत्त आदिक अढार साधुओ थया. तथा य क्षी आदिक चालीस हजार साधवीओ थइ. नंदिषेण आदिक एक लाख ओगणोतेर हजार श्रावको थया. महासुव्रता आदिक त्रण लाख ने छत्रीस हजार श्राविकाओ थइ. चारसें केवली सरखा चौदपूर्वी ओ थया. पन्नरसो अवधिज्ञानीओ थयो. पन्नरसो वैक्रियलब्धिवाला थया. पन्नरसो केवलीओ थया. एक हजार मनःपर्ययज्ञानीओ थया. सोलसो साधुओ एकावतारी थया. पन्नरसो साधुओ तथा त्रण हजार साधवीओ मोक्ष गइ. एवी रीते श्री नेमिनाथ प्रभुनो परिवार जाणवो.

श्री नेमिनाथ प्रभुने बे प्रकारे अंतगडभूमि जाणवी. पेहेली युगांतकृतभूमि एटले प्रभु पछी आठपाटसुधि मोक्ष मार्ग चाल्यो, तथा बीजी पर्यायांतकृत् भूमि एटले प्रभुने केवल उपज्या पछी बे वर्षे कोइक साधु मोक्षपदने पाम्या.

हवे श्री नेमिनाथ प्रभु त्रणसो वर्ष सुधि गृहस्थावासमां रह्या, चोपन दिवसो सुधि छद्मस्थ रह्या; अने चोपन दिवस ओछा सातसो वर्षसुधि केवली रह्या. एवी रीते सर्व मली एक हजार वर्षनुं आयुष्य संपूर्ण थये छते, बाकीनां कर्मोने खपावीने, आ अवसर्पिणीनो सुषम दुषम नामे चोथो आरो घणो वीत्ये छते, गिरनारपर्वतपर, उनालानो चोथो महिनो, आठमो पक्ष, एटले असाडसुदि आठमने दिवसे, मध्यरात्रिए चंद्र साथे चित्रानक्षत्रनो योग आवते छते, पांचसें ने छत्रीस साधुओनी साथे, एक मासनुं पाणी रहित अनशन करीने, पद्मासने बेठा थका मोक्ष पदने पाम्या.

हवे ग्रंथनां विस्तार थवाना भयथी बाकीनां जिनेश्वरोनां चरित्र नहीं कहेतां, तेमनां आंतरा कहे छे.

श्री नमिनाथ प्रभुपछी पांच लाख वर्षे श्री नेमिनाथ प्रभुनुं निर्वाण थयुं; तथा त्यारपछी चोरासी हजार नवसो ने ऐंसी वर्षे पुस्तक लखायां.

श्री मुनिसुव्रत प्रभुना निर्वाण पछी छ लाख वर्षे श्री नमिनाथजीनुं निर्वाण थयुं, तथा त्यारपछी लाख चोरासी हजार नवसो ने ऐंसी वर्षे पुस्तक लखायां.

श्री मल्लिनाथ प्रभुना निर्वाण पछी चोपन लाख वर्षे श्री मुनिसुव्रतस्वामिनुं निर्वाण थयुं, तथा त्यार पछी अगीयार लाख चोरासी हजार नवसो ने एसी वर्षे पुस्तक लखायां.

श्री अरनाथ प्रभुना निर्वाण पछी एक हजार क्रोड वर्षे श्री मल्लिनाथ प्रभुनुं निर्वाण थयुं तथा त्यारपछी पांसठ लाख चोरासी हजार नवसें ने एंसी वर्षे पुस्तक लखायां.

श्री कुंथुनाथजीनां निर्वाण पछी एक पल्योपमनो चोथो भाग ओछो, एवां एक हजार क्रोड वर्षो गयाबाद श्री अरनाथजीनुं निर्वाण थयुं, तथा त्यारपछी एक हजार क्रोड पांसठ लाख चोरासी हजार नवसो ने ऐसी वर्षे पुस्तक लखायां.

श्री शांतिनाथ प्रभुनां निर्वाण पछी अर्धपल्योपमे श्री कुंथुनाथजीनुं निर्वाण थयुं, तथा त्यारपछी पल्योपमनो चोथो भाग पांसठ लाख चोरासी हजार नवसो ने एंसी वर्षे पुस्तको लखायां.

श्री धर्मनाथजीना निर्वाण पछी पोणे पल्योपमे श्री शांतिनाथ प्रभुनुं निर्वाण थयुं, तथा त्यारपछी पोणो पल्योपम पांसठ लाख चोरासी हजार नवसो ने ऐसी वर्षे पुस्तको लखायां.

श्री अनंतनाथ प्रभुना निर्वाण पछी चार सागरोपमे श्री धर्मनाथ प्रभुनुं निर्वाण थयुं, तथा त्यारपछी त्रण सागरोपम पांसठ लाख चोरासी हजार नवसो ने एंशी वर्षे पुस्तको लखायां.

श्री विमलनाथ प्रभुना निर्वाण पछी नव सागरोपमे श्री अनंतनाथ प्रभुनुं निर्वाण थयुं, तथा त्यार-पछी सात सागरोपम पांसठ लाख चोरासी हजार नवसोने एसी वर्षे पुस्तको लखायां.

श्री वासुपूज्य प्रभुनां निर्वाण पछी त्रीस सागरोपमे श्री विमलनाथजीनुं निर्वाण थयुं, तथा त्यारपछी सोल सागरोपम पांसठ लाख चोरासी हजार नवसोने एसी वर्षे पुस्तको लखायां.

श्री श्रेयांस प्रभुनां निर्वाण पछी चोपन सागरोपमे श्री वासुपूज्य प्रभुनुं निर्वाण थयुं तथा त्यारपछी छेंतालीस सागरोपम पांसठ लाख चोरासी हजार नवसो ने एंसी वर्षे पुस्तको लखायां. श्री शीतलनाथ प्रभुना निर्वाण पछी एकसो सागरोपम, तथा छासठ लाख छवीस हजार वर्षे ओछा, एटले एक करोड

छते श्री श्रेयांस प्रभुनुं निर्वाण थयुं, तथा त्यारपछी बेंतालीस हजार त्रण वर्ष अने मास न्यून एवा बासठ लाख छवीस हजार वरसें अधिक एकसो सागरोपम पछी श्रीवीर निर्वाण थयुं, तथा त्यारपछी नवसो ने एंसी वर्षे पुस्तको लखायां.

श्री सुविधिनाथ प्रभुनां निर्वाण पछी नव क्रोड सागरोपमे श्री शीतलनाथजीनुं निर्वाण थयुं; तथा त्यारपछी बेंतालीस हजार त्रण वरस अने साडा आठ महिना न्यून, एवा एक क्रोड सागरोपमे श्रीवीर प्रभुनुं निर्वाण थयुं, तथा त्यार पछी नवसोने एंसी वरसे पुस्तको लखायां.

श्री चंद्रप्रभुनां निर्वाण पछी नेवु क्रोड सागरोपमे श्री सुविधिनाथजी निर्वाण पाम्या, तथा ते वार पछी बेंतालीस हजार ने त्रण वर्ष तथा साडा आठ मास उना दस क्रोड सागरोपम जाते छते श्रीवीर प्रभुनुं निर्वाण थयुं, तथा ते वार पछी नवसो ने एंसी वर्षे पुस्तको लखायां.

श्री सुपार्श्व प्रभुनां निर्वाण पछी नवसें क्रोड सागरोपमे श्रीचंद्रप्रभुजीनुं निर्वाण थयुं, तथा तेवार बेतालीस हजार ने त्रण वर्ष तथा साडा आठ मास उना एकसो क्रोड सागरोपम जाते छते निर्वाण थयुं, तथा तेवार पछी नवसो ने एंसी वर्षे पुस्तको लखायां.

नां निर्वाण पछी नव हजार क्रोड सागरोपमे श्री सुपार्श्व प्रभुनुं निर्वाण थयुं तथा तेवार हजार ने त्रण वर्ष, साडा आठ मास ओछे, एक हजार क्रोड सागरोपम जाते छते प्र निर्वाण थयुं, तथा तेवार पछी नवसो ने एंसी वर्षे पुस्तको लखायां.

प्रभुनां निर्वाण पछी नेवु हजार क्रोडी सागरोपमे श्री पद्मप्रभुजीनुं निर्वाण थयुं, बेंतालीस हजार ने त्रण वर्ष, तथा साडा आठ मास ओछा दश हजार क्रोड साग- , श्रीवीर प्रभुनुं निर्वाण थयुं, तथा तेवार पछी नवसो ने एंसी वर्षे पुस्तको लखायां.

प्रभुनां निर्वाण पछी नव लाख क्रोड सागरोपमे श्रीसुमतिनाथजीनुं निर्वाण थयुं

तथा तेवार पछी बेंतालीस हजारने त्रण वर्ष तथा साडा आठ मास ओछां, एक लाख क्रोड सागरोपम जाते छते श्रीवीर प्रभुनुं निर्वाण थयुं, तथा तेवार पछी नवसोने एंसी वर्षे पुस्तको लखायां.

श्री संभवनाथजी प्रभूनां निर्वाण पछी दश लाख क्रोड सागरोपमे श्री अभिनंदन स्वामिनुं निर्वाण थयुं, तथा तेवार पछी बेतालीस हजार ने त्रण वर्ष साडा आठ मास ओछां दश लाख क्रोड सागरोपम जाते छते श्रीवीर प्रभुनुं निर्वाण थयुं, तथा ते वार पछी नवसो ने एंसी वर्षे पुस्तको लखायां.

श्री अजितनाथजीनां निर्वाण पछी त्रीस लाख सागरोपमे श्री संभवनाथजीनुं निर्वाण थयुं, तथा ते वार पछी बेतालीस हजार ने त्रण वर्ष साडा आठ मास ओछां; वीस लाख क्रोड सागरोपम जाते छते श्री वीरप्रभुनुं नर्वाण थयुं, तथा ते वार पछी नवसो ने एंसी वर्षे पुस्तको लखायां.

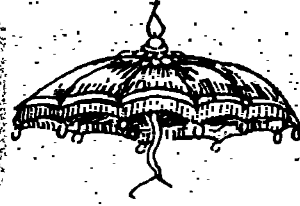
श्री ऋषभदेव प्रभुनां निर्वाण पछी पचास लाख क्रोड सागरोपम जाते छते, श्री अजितनाथजीनुं निर्वाण थयुं, तथा ते वार पछी बेंतालीस हजार ने त्रण वर्ष साडा आठ मास ओछां, पचास लाख क्रोड सागरोपम जाते छते श्री वीर प्रभुनुं निर्वाण थयुं तथा ते वार पछी नवसो ने एंसी वर्षे पुस्तको लखायां.

हवे आ अवसर्पिणिमां प्रथम धर्मनां प्रवर्तकपणाथी, तथा तेथी परम उपकारी होवाथी श्री ऋषभदेव प्रभुनुं चरित्र कंइक विस्तारथी कहे छे.

अयोध्या नगरीमां जेमनो जन्म थएलो छे, एवा ऋषभदेव प्रभुनां चार कल्याणको तो उत्तराषाढामां थएलां छे, तथा पांचमुं कल्याणक अभिचित नक्षत्रमां थएलुं छे.

ऋषभदेव प्रभु उत्तराषाढा नक्षत्रमां देवलोकथी चवीने गर्भपणे उत्पन्न थया, उत्तराषाढामां तेमनो जन्म थयो, उत्तराषाढामां तेमणे दीक्षा लीधी, उत्तराषाढामां केवली थया, तथा अभि नक्षत्रमां ते मोक्षे गया.

हवे ते कालने विषे तथा ते समयने विषे, उनालानो चोथो महीनो, तथा सातमुं पखवाडीउं, एटले आषाढ वदनी चोथने दिवसे, सिद्धिथकी तेंत्रीस सागरोपमनुं आयुष्य संपूर्ण करीने, आज जंबू-



द्वीपनां भरतक्षेत्रमां इक्ष्वाकु भूमिमां, नाभिकुलकरनी मरूदेवा नामनी स्त्रीनी कुक्षिए, देव संबंधि शरीर तथा आहारनो त्यागकरीने गर्भपणे उपन्या. ते वखते प्रभु त्रण ज्ञाने करी सहित हता.

ते वखते माताए स्वप्न दीठां, इत्यादि वृत्तांत श्री वीर प्रभुनी पेठेज जाणी लेवो; तेमां ऋषभदेव प्रभुनी माताए प्रथम स्वप्नमां प्रवेश करता वृषभने जोयो, अने बीजा जिननी माताओए तो प्रथम हाथीने जोयो छे; अने वीर प्रभुनी माताए पेहेलां सिंहने जोयो छे.

हवे ते कालने विषे तथा ते समयने विषे श्री ऋषभदेव प्रभुनो, उनालानो पेहेलो महीनो पेहेलुं पखवाडीउं, एटले चैत्र वदी आठमने दिवसे, नव मास अने साडासात दिवसो गर्भमां रह्ये छते, उत्तराषाढा नक्षत्र साथे चंद्रनो योग आवते छते, जन्म थयो.

अहीं इंद्रादिके करेला प्रभुनां जन्म महोत्सवनो व्रतांत श्रीवीरप्रभुनी पेठेज जाणी लेवो.

हवे सर्वार्थ सिद्धिदेवलोकथी चवेला, तथा अद्भूत रूपवाला, तथा अनेक देव देवीओथी वींटाएला, तथा ते वखतनां युगलीआंओथी, सर्व गुणोए करीने अति उत्कृष्ट अनुक्रमे वृद्धि पामता थका अहार करवानी इच्छावखते, देवोए राखेल छे अमृत रस जेनी अंदर, एवी पोतानी आंगली मुखमां राखवा लाग्या. एवी रीते बालकपणामां अन्य तीर्थंकरो संबंधि पण आहारनी विगत जाणवी. तेम बीजा तीर्थंकरोनुं बालपणुं व्यतीत थये छते, अग्निथी पकावेला आहारनुं तेओ भोजन करे छे; पण श्रीऋषभदेव प्रभु तो, छेक दीक्षा लीधी त्यां सुधि, देवोए लावेलां उत्तरकुरु क्षेत्रनां कल्पवृक्षनां फलोनो आहार करता हवा.

हवे प्रभुनी उमर एक वर्षथी जरा ओछी हती, त्यारे इंद्रे विचार्युं के, प्रथम जिननां वंशनी स्थापना करवी, ए मारो आचार छे, एम विचारि तेणे धार्युं के, खाली हाथे प्रभु पासे केम जाउं ? एम विचारि मोटो सेलडीनो सांठो लेइ, इंद्र, प्रभु ज्यां नाभिकुलकरनां खोलामां बेठा हता, त्यां गयो. ते वखते प्रभुए ते शेलडीनो सांठो जोइने, अत्यंत खुशी थइने, ते सांठो लेवा माटे हाथ लांबो कर्यो;

||७६ ||७७||

त्यारे इंद्रे प्रभुने कह्युं के, आप शेलडीनो आहार करशो ? एम कही प्रभुनो शेलडीपरनो अभिलाष जोइने, तेमना कुलनुं ईक्ष्वाकु एवुं नाम पाडयुं.

हवे कोइक युगलीआंने तेमनां मातपिताए तालवृक्षनी नीचे मुक्युं हतुं; ते वखते ते तालवृक्षनुं फल नीचे पडवाथी पुरुष मृत्यु पाम्यो; अने एवी रीते पेहेलुंज अकाल मृत्यु थयुं. हवे ते कन्यानां मातपिताओ स्वर्गमां जवाबाद ते एकली वनमां भटकवा लागी. ते सुंदर स्त्रीने एकाकी जोइने युगलीआंओ नाभिकुलकरपासे लेइ गया. त्यारे नाभिराजाए पण लोकोने कह्युं के आ सुनंदा नामनी स्त्री रुषभदेवजीनी पत्नी थशे, एम कही तेणीने ग्रहण करी.

पछी एवी रीते सुनंदा अने सुमंगलानी साथे वृद्धि पामता एवा प्रभु, अनुक्रमे यौवनपणाने पाम्या. ते वखते इंद्रे विचार्युं के, पेहेला तीर्थंकरनो विवाह करवो, ए अमारो आचार छे, एम विचारिने, ओछोगमे देवदेवीओ सहित त्यां आवीने, प्रभुनुं वर संबंधि सघलुं कार्य पोते कर्युं तथा बन्ने कन्या संबंधि सघलुं कार्य देवीओए कर्युं.

हवे ते बन्ने स्त्रीओ साथे भोगो भोगवतां थकां प्रभुने छलाख पूर्व जाते छते, सुमंगलाने भरत अने ब्राह्मी नामनुं युगल थयुं. तथा सुनंदाने बाहुबली अने सुंदरीनामे युगल थयुं. ते वार पछी सुमंगलाने ओगणपचास जोडलां थयां.

हवे कालनां माहात्म्यथी अनुक्रमे वधारे कषायनां उदयथी, मांहोमांहे विवाद करता एवा युगलीआंओने दंडनीतिनी जरूर पडवा लागी. तेमां विमलवाहन अने चक्षुष्म कुलकरनां वखतमां, अल्प अपराधिपणांए करीने, हक्काररूप नीति हती. यशस्वी अने अभिचंद्रनां वखतमां, अल्प अपराध होते छते, हक्काररूप नीति, हती, तथा मोटो अपराध होते छते मक्काररूप नीति हती, तथा प्रसेनजित, मरुदेवा, अने नाभिकुलकरनां वखतमां जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट अपराधोमां अनुक्रमे हक्कार मक्कार अने धिक्काररूप दंडनीतिओ हती. एवी रीतनी नीतिनुं पण ज्यारे उल्लंघन थवा लाग्युं, त्यारे प्रभुने

ज्ञान आदिक गुणोए करीने अधिक जाणीने; ते वात प्रभुने युगलीआंओए कही. त्यारे प्रभुए कह्युं के, जे माणसो नीतिनुं उल्लंघन करे, तेओने राजा दंड करे. अने ते राजानो अभिषेक थवो जोइए, तथा प्रधान आदिकथी ते विंटाएलो होवो जोइए. प्रभुनुं ते वचन सांभलीने तेओए कह्युं के, अमारे पण एवो राजा होवो जोइए. त्यारे प्रभुए कह्युं के, ते माटेनी तमो नाभिकुलकरने मागणी करो ? पछी तेओए नाभिराजा पासे ते मागणी करवाथी नाभिराजाए कह्युं के, तमारा राजा ऋषभदेवज थाओ ? पछी ते युगलीआंओ ऋषभदेव प्रभुने राज्याभिषेक करवा माटे पाणी लेवाने तलाव प्रते गया ते वखते इंद्रनुं आसन कंपवाथी, तेणे विचार्युं के, आतो मारो आचार छे, एम विचारि, पोते त्यां आवीने प्रभुने मुकुट कुंडल आदिक आभूषणो पूर्वक, राज्याभिषेक कर्यो. ते वखते युगलीआंओ पण कमलनीनां पडीआओमां पाणी लाव्या, तथा प्रभुने सर्व अंगे शणगारेला जोइने, आश्चर्ययुक्त थइने क्षणवार विचार करीने, तेओए प्रभुनां चरणपर पाणी रेड्युं. ते जोइ इंद्र तुष्टमान थइ विचारवा लाग्यो के, अहो आ पुरुषो विनीत छे. पछी तेणे वैश्रमणने आज्ञा आपी के, अहीं बार योजनना विस्तारवाली तथा नव योजन पोहोली एवी विनीता नामे नगरी तैयार करो ? पछी तेज वखते वैश्रमणे पण, रत्न अने सुवर्णमय मेहेलोनी पंक्तिवाली, तथा सुंदर कील्लाथी शोभिती एवी ते विनिता नगरी बनावी.

पछी प्रभुए पोतानां राज्यमां हाथी, घोडा, बेल आदिकनो संग्रह कर्यो. तथा उग्र, भोग, राजन्य अने क्षत्रीय एवा चार कुलो स्थाप्यां. उग्र एटले उग्र एवो दंड करनाराओ आरक्षकस्थानीयो जाणवा. भोग एटले भोगने लायक एवा गुरुस्थानीयो जाणवा, समान वयवाला मित्रो, ते राजन्य स्थानयो जाणवा तथा बाकीना प्रधान आदिक ते क्षत्रीयो जाणवा;

हवे ते वखते कालनी हानीथी ऋषभ कुलकरनां वखतमां कल्पवृक्षनां फलो नहीं मली शकवाथी, जेओ इक्ष्वाकु वंशनां हता, तेओ शेलडी खाता, तथा बाकीना प्राये पत्र, पुष्प, फल आदिक खावा ।; तथा पछी अनुक्रमे ते पण नहीं मलवाथी नहीं पकावेला एवा चोखा आदिक औषधिओ खावा

लाग्या. कालनां महात्म्यथी ते नहीं पचवाथी, थोडुं थोडुं खावा लाग्या, ते पण नहीं पचवाथी प्रभुना कहेवाथी चोखा आदिकने हाथेथी मसलीने तथा तेनां छीलटां उतारीने खावा लाग्या, ते पण नहीं पचवाथी प्रभुना उपदेशथी, पांदडांना पडीआओमां, पाणीथी भींजावीने चोखा आदिक खावा लाग्या. एवी रीते बहु प्रकारेथी तेओ आहार करवालाग्या.

एम करतां एक दहाडो वनमां वृक्षोना घसारांथी अग्नि उत्पन्न थयो. तेने जोइने, कोइ नवीन रत्ननी बुद्धिथी ते युगलीआंओ पोतानां हाथो लांबा करी, तेने लेवा लाग्या. त्यारे सखत रीते दाझवाथी तेओए ते वात प्रभुने जणावी त्यारे प्रभुए अग्निने उत्पन्न थयेलो जाणीने युगलीआंओने कह्युं के हे युगलीआंओ, आ अग्नि उत्पन्न थयो छे, माटे तेमां भात आदिक पकावीने खाओ ? के जेथी ते तमोने सुखेथी पची जशे. एवी रीते प्रभुए कह्युं तो पण सारी रीतनां उपायने नहीं जाणीने ते भात आदिकने अग्निमांज नाखवा लाग्या. अने पछी कल्पवृक्ष पासेथी जेम फलोने तेम ते भात आदिकने याचवा लाग्या, पण अग्नि तो भात आदिकने बाली नाखवा लाग्यो. ते जोइ तेओए विचार्युं के, आ अग्नितो वेतालनी पेठे अतृप्त थइने पोतेज सघलुं भक्षण करी जाय छे, अमोने कंइ पण पाछुं आपतो नथी. माटे आनो अपराध प्रभुने कहीने, तेने शिक्षा अपावीशुं. एम विचारि तेओ प्रभुपासे जवा लाग्या, पण एटलामां प्रभुने हाथीपर बेसी सामा आवता, तेओए रस्तामां जोया; तेथी तेओए सघलो वृत्तांत प्रभुने कही बताव्यो. त्यारे प्रभुए तेमने कह्युं के, तमारे वासणो बनावी, तेमां धान्य आदिक नाखीने पकाववुं. एम कही तेओनी पासेथीज माटीनां पींडो मगावीने, तथा तेने हाथीना कुंभस्थलपर राखीने, प्रभुए पेहेलांज कुंभारनी कला शिखवी; तथा पछी कह्युं के, आवी रीतनां वासणो बनावीने, तेमां धान्य पकाववुं. पछीते युगलीआंओ पण एवीज रीते प्रभुना कह्या प्रमाणे करवा लाग्या. एवीरीते पेहेलां कुंभारनी शिल्पकला थइ. पछी लुहारनी, पछी चीतारानी, पछी वणकरनी, पछी हजामनी, एवी रीते चार शिल्पकलाओ वधी. अने एवी रीते सघली मली पांच शिल्प कलाओनां



ऋषभ देवजी हाथीउपर बेसीने माटीना वासण बनावीने युगलीयाने आपेछे. तथा युगलीया माटीना पिंड लई आवी भगवानने आपेछे. पा. ५८

आत मास ओगां, एक लाख कोरु सागरो- सुख०

हरेकना वीश भेदो होवाथी एकसो शिल्प कलाओ थइ. अने ते सघलुं आचार्यना उपदेशथी थएलुं जाणवुं.

हवे लेख आदिक बहोतेर कलाओ नीचे प्रमाणे जाणवी.

लखित, गणित, गीत, नृत्य, वाद्य, पठन, शिक्षा, ज्योतिष, छंद, व्याकरण, निरुक्ति, काव्य, कात्यायन, निघंटु, गजारोहण, तुरगारोहण, ते बन्नेनी शिक्षा, शास्त्रोनो अभ्यास, रस, मंत्र, यंत्र, विष, खन्य, गंधवाद, प्राकृत संस्कृत, पैशाचिक, अपभ्रंश, स्मृति, पुराण, विधि, सिद्धांत, तर्क, वैद्यक, वेद, आगम, संहिता, इतिहास, सामुद्रिक, विज्ञान, चार्यकविद्या, रसायन, कपट, विद्यानुवाद, दर्शनसंस्कार, धूर्तशंबलक, मणिकर्म, तरुचिकित्सा, खेचरीकला, अमरीकला, ईन्द्रजाल, पातालसिद्धि, यंत्रकरसंवती, सर्वकरणी, प्रासादलक्षण,पण, चित्रोपल, लेप, चर्मकर्म, पत्रछेद्य, नखछेद्य, पत्रपरीक्षा, वशीकरण, काष्टघटन, देशभाषा, गारुड, योगांग, धातुकर्म, केवलिविधि, शकुनरुत. एवी रीते पुरुषनी बहोंतेर कलाओ जाणवी.

अहीं हंसलिपी आदिक अढार जातनी लीपी प्रभुए जमणे हाथे ब्राह्मीने शिखवी. तथा एक दश, सो, हजार, अयुत, लाख, प्रयुत, क्रोड, अर्बुद, अबज, खर्व, निखर्व, महापद्म, शंकु, जलधि, अंत्य, मध्य, अने परार्ध्य, एवी रीते अनुक्रमे दश दश गणी संख्यावालुं गणित डाबे हाथे प्रभुए सुंदरीने शिखाव्युं. भरतने काष्ट कर्मादिक शिखायुं; बाहुबलिने पुरुष आदिकनां लक्षणो शिखाव्यां. हवे स्त्रीओनी कलाओ नीचे प्रमाणे जाणवी.

नृत्य, औचित्य, चित्र, वादित्र, मंत्र, तंत्र, घनवृष्टि, फलाकृष्टि, संस्कृतवाणी, क्रियाकल्प, ज्ञान, दंभ, अंबुस्तंभ, गीत, ताल, आकारगोपन, आरामरोपण, काव्यशक्ति, वक्रोक्ति, नरलक्षण, हयपरीक्षा, वास्तुशुद्धि, लघुबुद्धि, शकुनविचार, धर्माचार जनयोग, चूर्णयोग, गृहिधर्म, वर्णिकावृद्धि, वाक्पाटव, करलाघव, ललितचरण, तैलसुरभिकरण, भृत्योपचार, गेहाचार, निराकरण, वीणानाद, वितंडावाद, अंकस्थिति, जनाचार, कुंभभ्रम, सारिश्रम, रत्नमणि-

ए कल्प० ॥ए॥ भेद, लिपिपरिछेद, वैद्यक्रिया, कामाविष्करण, रसोइ, केशबंध, शालिखंरून, मुखमंरून, कथाकथन, कुसुमग्रथन, वरवेष, सर्वभाषाविशेष, वाणिज्य, भोज्य, अभिधानपरिज्ञान, आभूषणोनुं यथास्थान पेहेरवुं ते, अंत्याक्षरिका, तथा प्रश्नप्रहेलिका; एवी रीते स्त्रीनी चोसठ कलाओ जाणवी. सुख०

हवे आचार्यथी जे शिखवाएलुं होय, ते शिल्प कहेवाय, अने आचार्य विना जे शिखाएलुं होय, ते कर्म कहेवाय, हवे प्रभुए भरतने विनीतानुं मुख्य राज्य आप्युं, तथा बाहुबलिने बहुलि देशमां तक्षशिला नगरीनुं राज्य आप्युं, तथा बाकीना अठाणु पुत्रोने पण जुदा जुदा देशोनुं राज्य वेहेंची आप्युं. प्रभुनां पुत्रोनां नामो नीचे प्रमाणे जाणवां.

भरत, बाहुबलि, शंख, विश्वकर्मा, विमल, सुलक्षण, अमल, चित्रांग, ख्यातकीर्ति, वरदत्त, सागर, यशोधर, अमर, रथवर, कामदेव, ध्रुव, वछ, नंद, सूर, सुनंद, कुरु, अंग, वंग, कोशल, वीर, कलिंग, मागध, विदेह, संगम, दशार्ण, गंभीर, वसुवर्मा, सुवर्मा, राष्ट, सुराष्ट्र, बुद्धिकर, निधिकर, सुयश, यशकीर्ति, यशःकर, कीर्तिकर, सूरण, ब्रह्मसेन, विक्रांत, नरोत्तम, पुरुषोत्तम, चंद्रसेन, महसेन, नभसेन, भानुसेन, सुकांत, पुष्पयुत, श्रीधर, दुर्द्धर्ष, सुसुमार, दुर्जय, अजेयमान, सुधर्मा, धर्मसेन, आनंदन, आनंद, नंद, अपराजित, विश्वसेन, हरिषेण, जय विजय, विजयंत, प्रभाकर, अरिदमन, मान, महाबाहु, दीर्घबाहु, मेघ, सुघोष, विश्व, वराह, सुसेन, सेनापति, कपिल, शैलविचारी, अरिजय, कुंजरबल, जयदेव, नागदत्त, काश्यप, बल, शुभमति, सुमति, पद्मनाभ, सिंह, सुजाति, संजय, सुनाभ, नरदेव, विचित्तहर, सुरवर, दृढरथ, तथा प्रभजन, एवी रीते प्रभुनां पुत्रोनां नामो जाणवां. हवे देशोनां नाम कहे छे.

अंग, वंग, कलिंग, गौड, चौड, कर्णाट, लाट सौराष्ट्र, काश्मीर, सौवीर, आभीर, चीण, महाचीण, गूजर, बंगाल, श्रीमाल, नेपाल, जहाल, कौशल, मालव सिंहल तथा मरुस्थल इत्यादि देशोनां नामो जाणवां. ॥एए॥

हवे उनालानो पेहेलो महीनो, तथा पेहेलुं पखवाडीउं, एटले चैत्रवदी आठमने दिवसे, पाछले पोहोरे, सुदर्शना नामनी पालखीमां बेसीने, सिद्धार्थ नामनां वनमां अशोक वृक्षनी नीचे प्रभु गया. तथा ते वखते प्रभुए चार मुष्टिथी लोच कर्यो. तथा पाणी रहित छठना तप पूर्वक, आषाढा नक्षत्र साथे चंद्रनो योग आवते छते, उग्रकुलनां, भोगकुलनां, राजन्यकुलनां, तथा क्षत्रीय कुलनां तथा कछ महाकछ आदिक चार हजार पुरुषोनी साथे, एक देवदुष्य वस्त्र ग्रहण करीने प्रभुए दीक्षा लीधी; अर्थात् अणगारी थया.

हवे प्रभुए ज्यारे चार मुष्टिथी लोच कर्यो, ते वखते बाकी रहेला प्रभुनां केशोने प्रभुनां सुवर्ण सरखी कांतिवाला खभापर लटकता, ते जाणेके सुवर्णनां कलशपर नीलकमलनी माला सरखा होय नही, एवा जोइने, ते रहेवा देवाने इंद्रे खुशी थइ आग्रह करवाथी प्रभुए ते राख्या.

एवी रीते प्रभु दीक्षा लेइने भयंकर अभिग्रह युक्त थइने गामोगाम विहार करवालाग्या. ते वखते लोकोने अत्यंत ऋद्धि होवाथी, भिक्षा तथा भिक्षाचरो केवा होय ? तेनी पण तेओने खबर नहोती तेथी प्रभुनी साथे जेओए दीक्षा लीधी हती, तओ क्षुधाथी पीडित थया थका प्रभुने आहारनो उपाय पुछवा लाग्या; पण प्रभु तो मौन रहीने कंइ पण बोल्या चाल्या नहीं. पछी तेओ कछ महाकछने पुछवा लाग्या. त्यारे तेओए कह्युंके, अमो पण आहारनी विधि जाणता नथी, अने पेहेलेथी तो प्रभुने तेविषे पुछयुं नथी. अने हवे तो आपणे आहार विना रही शकीए तेम नथी, अने भरतनी लज्जाथी घेर पाछा जवुं ते पण अयुक्त छे. माटे हवे तो वनवास भोगववो तेज श्रेष्ठ छे. एम विचारि, तेओ प्रभुनुं ध्यान धरता थका, गंगानां काठापर रह्या, तथा खरी गएला पत्र, पुष्प, फल आदिक खावा लाग्या; तथा एवी रीते जटाधारी तापसो तेओ थया.

हवे एटलामां कछ महाकछनां नमि अने विनमिनामे पुत्रो, के जेओने प्रभुए पुत्र तरीके राख्या हता, तेओ देशांतरे गया हता. तथा ज्यारे पाछा आव्या, त्यारे भरते तेओने राज्य देवा मांड्युं, पण

ते नहीं लेइने, तेओ पितानां वचनथी प्रजुपासे आव्या. ते वखते प्रजु प्रतिमा धारीने रह्या हता; तेथी कमलनीनां पत्रिआओमां पाणी लावीने, तेओए चारे बाजुथी पृथ्वीपर त्यां बंटकाव कर्यो; तथा घुंटण सुधि फुलो बिछाव्यां. तथा एवी रीते हमेशां नमस्कार करीने, प्रजु पासे राज्यजाग मागवा लाग्या.

हवे एक दहाडो प्रजुने वांदवा माटे धरणेंद्र त्यां आव्यो; त्यारे तेओने प्रजुनी जक्ति करता जोइने, तेमनापरसंतुष्ट थइने कहेवा लाग्यो के, अरे प्रजु तो निःसंगी बे, माटे तमो एमनी पासे हवे कंइ मागो नहीं? प्रजुनी जक्तिथी हुंज तमोने आपीश. एम कही तेणे तेओने अमतालीस हजार विद्याओ आपी. तेमां गौरी, गांधारी, रोहिणी तथा प्रज्ञप्ति ए चार विद्याओ मुख्य हती. तथा पाठथीज सिद्ध हती.

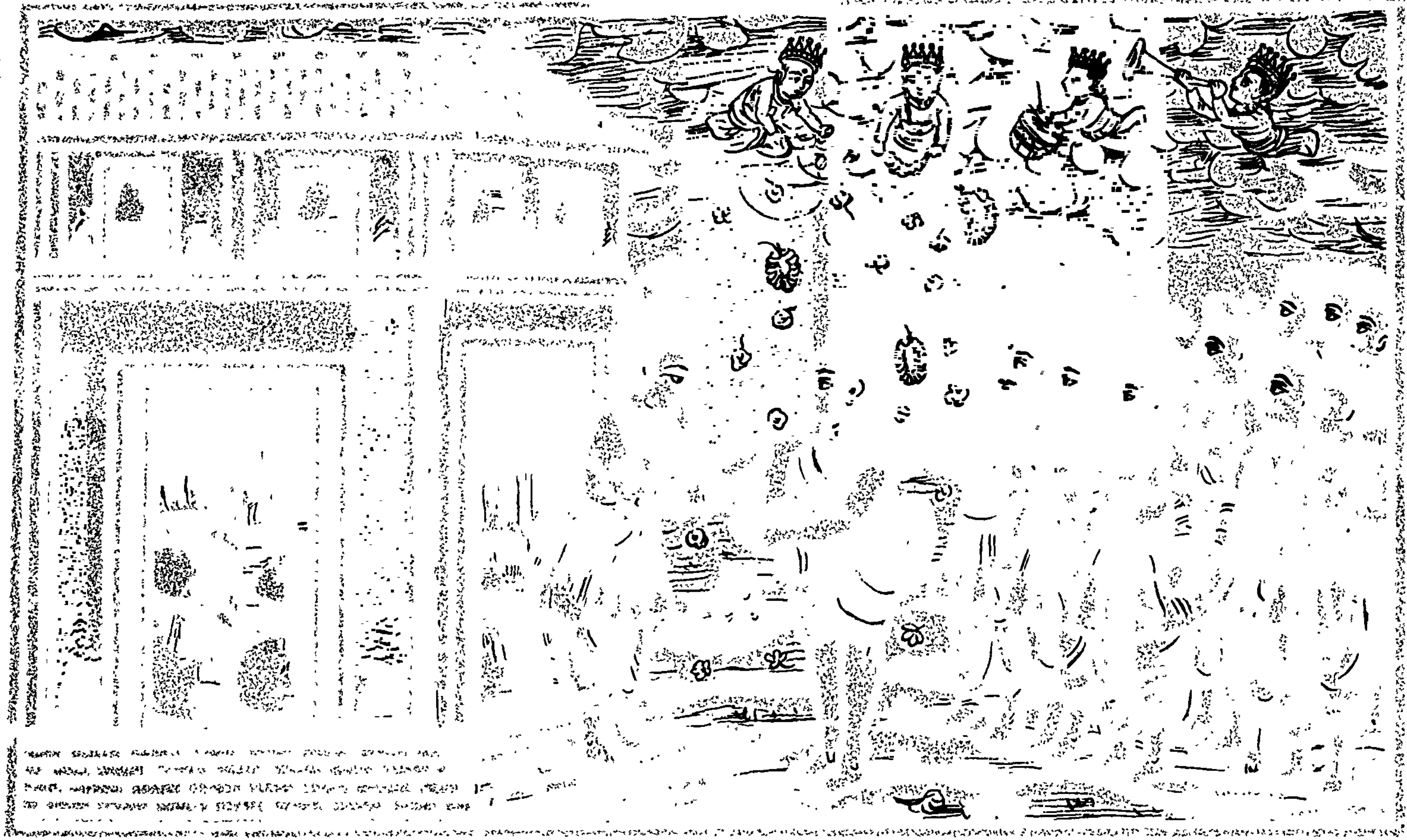
अहीं किरणावली टीकाकारे जे अमतालीससो विद्याओ कही बे, ते अयुक्त बे, केमके आवश्यक वृत्तिमां अडतालीस हजार विद्याओ कहेली बे.

पठी धरणेंद्रे तेमने कह्युं के, हवे तमो तमारां स्वजन कुटुंबोने लेइने वैताढय पर्वतपर जाओ. तथा त्यां दक्षिण श्रेणिमां गौरेय, गांधार प्रमुख आठ निकायोने, तथा रथनूपुरचक्रवाल आदिक पचास नगरोने वसावीने, तथा उत्तर श्रेणिमां पंकुक, वंशालय आदिक आठ निकायोने, तथा गगनवल्लज आदिक साठ नगरोने वसावीने रहो?

पठी एवी रीते कृतार्थ थया थका तेओ बन्ने, पोतानां मातपिताने, तथा जरतने, ते वृत्तांत कहीने, दक्षिण श्रेणिमां नमि, अने उत्तर श्रेणिमां विनमि, एम रहेवा लाग्या.

हवे प्रजु पण आहार रहित विहार करवा लाग्या; केमके आहर आदिकनी विधिने नहीं जाणनारा एवा ते वखतनां लोको प्रजुने, वस्त्र, आजरण, कन्या; विगेरे देवा लाग्या, पण प्रजु तो मौन रहीने, योग्य जिक्षा नहीं मलवाथी क्लेश रहित मनवाला थया थका, कुरु देशमां हस्तिनागपुर नामे नगरमां गया.

चित्र ५५



श्रेयांस कुमर भगवानने सेलडीनो रस वहोरावे छे पा. १००



ते नगरीमां आवश्यकनी टीकाने अनुसारे बाहुबलिना पुत्र सोमप्रभनो पुत्र श्रेयांस नामे युवराज हतो. तेणे ते रात्रिए एवुं स्वप्न जोयुं के, में श्याम वर्णना मेरु पर्वतने अमृतनां कलसोथी सींच्यो, अने तेथी ते अत्यंत शोभावालो थयो. वली त्यांना सुबुद्धि नामना नगरशेठे एवुं स्वप्न जोयुं के, सूर्यमंडलथी एक हजार किरणो खरी पड्यां, अने श्रेयांसे ते पाछां एकठां कर्यां, तेथी ते अत्यंत शोभवा लाग्यां. वली त्यांना राजाए पण एवुं स्वप्न जोयुं के, एक महा पुरुष शत्रुनां लश्करनी साथे लडतो हतो, अने श्रेयांसनी सहायताथी ते विजयवालो थयो.

हवे प्रभाते ते त्रणे जणाओए सभामां एकठा थइने, पोतपोतानां स्वप्नो जणाव्यां. पछी राजाए त्यां निर्णय कर्यो के, श्रेयांसने कोइ मोटो लाभ थवानो छे; एम निर्णय करीने सभा विसर्जन करी. श्रेयांस कुमार पण पोताने घेर जइने झरुखामां बेठा. ते वखते तेणे लोकोनां मुखथी एवो कोलाहल सांभल्यो के प्रभु तो कंइ पण लेता नथी. ते सांभली तेणे नजर करी तो प्रभुने जोया. तेमने जोइ ते विचार करवा लाग्यो के, आवो वेश में कोइ जगोए पहेलां जोयो छे. एम इहापोह करतां तेने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं. त्यारे तेणे जाण्युं के, अहो ! हुं तो पूर्व भवमां प्रभुनो सारथि हतो, अने प्रभुनी साथे में दीक्षा पण लीधी हती. अने ते वखते वज्रसेन प्रभुए कह्युं हतुं के, आ वज्रनाभ भरत क्षेत्रमां पेहेला तीर्थंकर थशे. माटे खरेखर तेज आ प्रभु छे. हवे तेज वखते कोइएक माणस सेलडीरसना घडाओ श्रेयांस कुमारने भेट तरीके आपवा आव्यो हतो. तेमांथी घडो लेइने श्रेयांसकुमारे

क के, आ योग्य भिक्षा आप ग्रहण करो ? त्यारे प्रभुए पण पोताना हाथो लांबा कर्या. तेज

स कुमारे पण सघलो रस रेडी दीधो. तेमांथी एक बिंदु पण नीचे पड्यो नहीं. पण उल-

नी शिखा उपर उपर वृद्धि पामवा लागी. अहीं कवि कहे छे के, प्रभुए पोताना जमणा

के तुं भिक्षा केम लेतो नथी ? त्यारे ते जमणा हाथे कह्युं के, हे प्रभु, देनारना हाथनी

? के हुं तो पूजा, भोजन, दान, शांति, कला, पाणिग्रहण विगेरे उत्तम

कामोमां वपराएलो बुं, माटे हुं पवित्र बुं; त्यारे डाबा हाथे कह्युं के, हुं रणसंग्राममां सन्मुख थउं बुं; अंक गणवामां तत्पर थउं बुं, अने आ जमणो हाथ तो जुगार आदिक व्यसनमां तत्पर थाय बे, माटे तेनाथी तो हुं पवित्र बुं. त्यारे प्रजुए बन्ने हाथोने समजाव्या के, तें तो राज्यलक्ष्मी एकठी करी बे, अने तें तेनुं दान देइने अर्थि लोकोने कृतार्थ कर्या बे; तो पण तमो देनार प्रते कृपा लावीने ग्रहण करो ? एवी रीते प्रजुए एक वर्षसुधि बन्ने हाथोने समजावीने बन्नेने श्रेयांस कुमार पासेथी मलेला रसे करीने संपूर्ण कर्या, एवा ऋषजदेव प्रजु तमारुं रक्षण करो ?

ते दानने वखते रसनी धारानी स्पर्धाथी श्रेयांस कुमारनां अश्रुनी धारा पण वृद्धि पामवा लागी, अने तेथी तेना हृदयमां धर्मरूपी वृक्ष पण वृद्धि पामवा लाग्युं. एवी रीते ते रसथी प्रजुए सांवत्सरिक तपनुं पारणुं कर्युं. तेज वखते त्यां वसुधारानी वृष्टि, चेलोत्क्षेप, आकाशमां देवडुंडुजि, गंधोदक तथा पुष्पनी वृष्टि, तथा अहो ! दान एवी आकाशवाणी, एवी रीतनां पंच दिव्यो प्रगट थयां, पढी त्यां सघला लोको एकठा थया; त्यारे श्रेयांस कुमारे तेओने जणाव्युं के, आवी रीते साधुओने एषणीय आहार अपाय. एवी रीते आ अवसर्पिणीमां श्रेयांसे दीधेलुं पेहेलुं सुपात्रदान जाणवुं. पढी लोकोए तेने पुढयुं के; आ बाबत तें शी रीते जाणी ? त्यारे तेणे पण प्रजु साथेनो पोतानो आठ जवनो संबंध कही बताव्यो के, ज्यारे प्रजु इशान देवलोकमां ललितांग नामे देव हता, त्यारे हुं पण निर्नामिका नामनी स्वयंप्रजा देवी हती. त्यांथी पूर्व महाविदेहमां पुष्कलावती विजयमां लोहार्गल नामनां नगरमां प्रजु वज्रजंघ नामे हता, त्यारे हुं तेमनी श्रीमंती नामे स्त्री हती. त्यांथी उत्तर कुरुमां जगवान् युगलीयां हतां, अने हुं युगलिनी हती. त्यांथी सौधर्म देवलोकमां अमो बन्ने मित्रदेव हता. त्यांथी प्रजु अपर विदेहमां वैद्यना पुत्र हता, अने हुं जाणे शेठनो पुत्र केशवनामे तेमनो मित्र हतो. त्यांथी अच्युतदेवलोकमां अमो बन्ने देवो हता. त्यांथी पुंडरिकिणी नगरीमां प्रजु वज्रनाज नामे हता, हुं तेमनो सारथि हतो. त्यांथी सर्वार्थसिद्धि नामना विमानमां अमो बन्ने देवो हता. अने

चित्र ६



हुं प्रभुनो प्रपौत्र छुं. ते सांभली लोको तेनी स्तुति करीने पोतपोताने स्थानके गया. एवी रीते दीक्षा-ना दिवसथी मांडीने एक हजार वर्षो सुधि प्रभुनी छद्मस्थ अवस्था जाणवी. तेमां सघलो मली एक रात्रिदिवसनो प्रमादकाल जाणवो.

एवी रीते एक हजार वर्षो गया बाद, पुरिमताल नामना विनीता नगरीनां परामां प्रभुने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. तेज वखते भरत राजाने पण चक्र उत्पन्न थयुं. ते वखते विषय अने तृष्णाना विषमपणाथी भरते विचार्युं के, पेहेलां तातनी पूजा करुं के, चक्रनी पूजा करुं? एम विचारीने छेवटे विचार्युं के, आलोक अने परलोकमां पण सुखने देनारा एवा तातनी पूजा कर्ये छते, आलोकनांज फलने देनारा एवा चक्रनी पूजा तो थइ चुकी एमज मानवुं. एम विचारिने हमेशां ठपको देती एवी मरुदेवी माताने हाथीपर चडावी, अगाडी करीने, सर्व प्रकारनी ऋद्धिथी भरत राजा प्रभुने वांदवा चाल्या. पछी ज्यारे प्रभुनुं समवसरण नजदिक आव्युं, त्यारे भरत राजाए मरुदेवा माताने कह्युं के, तमारा पुत्रनी ऋद्धि जुओ? एवी रीते भरतनुं वचन सांभलीने हर्षथी रोमांचित अंगवालां थएलां एवां मरुदेवा मातानी आंखोमांथी हर्षनां आंसुओ पडवा लाग्यां; तथा तेथी तेमनां नेत्रो पण निर्मल थयां. तथा प्रभुनी छत्र, चामर आदिक प्रतिहारोनी शोभा जोइने विचारवा लाग्यां के, अहो! मोहथी विह्वल थएला एवा प्राणीओने धिक्कार छे!!! सघला प्राणीओ स्वार्थ माटे स्नेह करे छे. मारो ऋषभ दुःखी होशे! एवी रीतनां दुःखथी सर्वदा रुदन करवाथी मारी तो आंखो पण गइउं. अने ऋषभ तो आवी रीते सुरासुरथी सेवातो थको, तथा आवी रीतनी ऋद्धि भोगवतो थको, मारी खबर अंतर माटे तो कंइ संदेशो पण मोकलतो नथी. माटे धिक्कार छे, आ स्नेहने!! इत्यादि विचार करतां तेणीने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. अने तेज वखते आयुकर्मनां क्षयथी ते मोक्षे गयां. अहीं कवि कहे छे के,

श्री युगादीश एवा ऋषभदेव समान आ पृथ्वीमां कोइ पुत्र छेज नहीं, केमके, जेमणे एक हजार वर्षो सुधि आ पृथ्वीमां भमी भमीने, केवलज्ञानरूपी रत्न मेलव्युं, अने ते पाछुं तुरतज पोतानी

माताने स्नेहथी आपी दीधुं. तेम मरुदेवा समान माताओ पण आ जगतमां दुर्लभ छे, केमके, पोतानां पुत्र माटे मुक्तिरूपी कन्याने जोवाने माटे प्रथमथीज मोक्षे गयां.

हवे अहीं देवोए प्रथम सिद्ध थएलां एवा मरुदेवा मातानां शरीरने क्षीरसमुद्रमां पधरावीने मोटो महोत्सव कर्यो.

पछी भरत राजाए पण समवसरणनी वावमां स्नान करीने प्रभुने वांद्या. प्रभुए पण समवसरणमां धर्मदेशना कही संभळावी. ते वखते त्यां ऋषभसेन आदिक भरतना पांचसो पुत्रोए, तथा सातसो पौत्रोए दीक्षा लीधी. तेओमांथी ऋषभसेन आदिक चोरासी साधुओने प्रभुए गणधर तरीके स्थाप्यां. ब्राह्मीए पण दीक्षा लीधी. अने भरत राजाए श्रावक धर्मने अंगीकार कर्यो. आ स्त्रीरत्न थशे, एम विचारि भरते दीक्षा लेतां अटकावेली सुंदरी पण श्राविका थइ. एवी रीते चतुर्विध संघनी स्थापना थइ

हवे ते कच्छ अने महा कच्छ शिवायनां संघला तापसोए प्रभु पासे दीक्षा लीधी. अने भरत राजा पण शक्रनां प्रतिबोधथी मरुदेवा मातानो शोक निवारीने पोताने स्थानके गयो.

हवे श्री ऋषभदेव प्रभुने ऋषभसेन आदिक चोरासी गणधरो हता; तथा ऋषभसेन आदिक उत्कृष्ट चोरासी हजार साधुओ हता; तथा ब्राह्मी अने सुंदरी आदिक त्रण लाख उत्कृष्टी साधवीओ हती; श्रेयांस आदिक त्रण लाख ने पांच हजार उत्कृष्ट श्रावको हता. सुभद्रा आदिक पांच लाख ने चोपन हजार श्राविकाओ हती; चार हजार सातसो ने पचास केवली सरखा चौद पूर्वीओ हता; नव हजार अवधिज्ञानीओ हता. वीस हजार केवलज्ञानीओ हता. वीस हजारने छसो वैक्रिय लब्धि-वाला हता. बार हजार छसो ने पचास मनपर्ययज्ञानीओ हता. बार हजार छसो ने पचास वादीओ हता. वीस हजार साधुओ मोक्षे गया. चालीस हजार साधवीओ मोक्षे गइ. तथा बावीस हजार ने नवसो साधुओ एकावतारी थइने अनुत्तर विमाने गया.

श्री ऋषभदेव प्रभुनी बे प्रकारनी अंतगड भूमि जाणवी. तेमां पेहेली युगांतकृत भूमि एटले प्र

चित्र ५७

नै करती ख्वाइमा वहा

देवता निर्वाण
महोत्सव करेछे

साधुजुनी साथे प्रभु निर्वाण पाम्या

अष्टापद पर्वत

जुना वंशमां असंख्याता युगलीआओ मोक्षे गएला छे, अने बीजी पर्यायांतकृत् भूमि केवलज्ञान उपज्या पछी अंतर्मुहूर्तमांज मरूदेवा माता अंतकृत केवली थइने मोक्षे गएलां छे.

हवे श्री ऋषभदेव प्रभु वीस लाख पूर्व सुधि कुमारपणे रह्या, त्रेसठ लाख पूर्वराज्य अवस्थामां रह्या, एवी रीते त्र्यासी लाख पूर्व घरवासमां रह्या; एक हजार वर्षो सुधि छद्मस्थपणे रह्या; तथा एक हजार वर्ष ओछां एक लाख पूर्व सुधि केवलीपणे रह्या; पछी त्रीजा आरानां नेव्यासी पखवाडीआं बाकी हतां. त्यारे, सीतकालनो त्रीजो महिनो पांचमुं पखवाडीउं, एटले माहा वदि तेरसने दिवसे अष्टापद पर्वतपर दश हजार साधुओनी साथे, पाणी विना चौदभक्त एटले छ उपवास करते छते, बपोर पछी, अभिचित नक्षत्र साथे चंद्रनो योग आवते छते, पद्मासने बेठा थका प्रभु मोक्षे गया.

ते वखते चलायमान थयलुं छे, आसन जेनुं एवा इंद्रे, अवधिज्ञानथी प्रभुनुं निर्वाण थएलुं जाणीने, ज्यां प्रभुनुं शरीर हतुं, त्यां अग्र महिषीओ तथा लोकपालादिक सहित आवीने, त्रण प्रदक्षिणा दीधी; तथा आनंद रहित थइ, आंखमां आंसु लावीने, नहीं अति दूर, तेम नहीं अति नजदिक एम प्रभुना शरीरनी पासे हाथ जोडीने उपासना करवा लाग्यो. एवी रीते इशानेंद्र आदिक सघला इंद्रो, पोतानां आसनोनां कंपथी प्रभुना निर्वाणने जाणीने, ज्यां प्रभुनुं शरीर हतुं, त्यां अष्टापद पर्वतपर आवीने विधिपूर्वक उपासना करवा लाग्या.

पछी इंद्रे, भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषिक तथा वैमानिक देवो मारफते नंदन वनथकी गोशीर्ष चंदन, आदिक मगावीने त्रण चिताओ करावी. एक प्रभुनां शरीर माटे, एक गणधरोनां शरीर माटे, तथा बाकीनां मुनिओनां शरीर माटे, एवी रीते त्रण चिताओ करावी. पछी आभियोगिक देवो क्षीरसमुद्रमांथी पाणी मगाव्युं. पछी इंद्रे ते क्षीरसमुद्रना पाणीथी प्रभुना शरीरनुं स्नान कर्युं. तेपर गोशीर्ष चंदननुं लेपन कर्युं. तथा हंस लक्षणवालुं कपडुं पहेराव्युं; तथा सघला अलंकारो पहेराव्या. एवी रीते बीजा गणधर विगेरे मुनिओनां शरीरोने पण स्नान करावीने, तथा चंदनथी

वंशमां छ

आओ मोटे गपला

। छे, अने जी पर्यायांतकृत्
मरूदेवा माता अंतकृत केवली थइने मोक्षे गएलां छे
श्री लाख पूर्व सुधि कुमारपणे रह्या, त्रेसठ लाख पूर्वराज्य अवस्थामां रह्या,
री समां रह्या; एक हजार वर्षो सुधि छद्मस्थपणे रह्या; तथा एक हजार
सुधि केवलीपणे रह्या; पछी त्रीजा आरानां नेव्यासी पखवाडीआं बाकी
, नो त्रीजो महिनो पांचमुं पखवाडीउं, एटले माहा वदि तेरसने दिवसे अष्टापद
र ार साधुओनी साथे, पाणी विना चौदभक्त एटले छ उपवास करते छते, बपोर पछी,
क्षत्र साथे चंद्रनो योग आवते छते, पद्मासने बेठा थका प्रभु मोक्षे गया.
खते चलायमान थयलुं छे, आसन जेनुं एवा इंद्रे, अवधिज्ञानथी प्रभुनुं निर्वाण थएलुं जाणीने,
ज्यां प्रभुनुं शरीर हतुं, त्यां अग्र महिषीओ तथा लोकपालादिक सहित आवीने, त्रण प्रदक्षिणा
दीधी; तथा आनंद रहित थइ, आंखमां आंसु लावीने, नहीं अति दूर, तेम नहीं अति नजदिक एम
प्रभुना शरीरनी पासे हाथ जोडीने उपासना करवा लाग्यो. एवी रीते इशानेंद्र आदिक सघला इंद्रो,
पोतानां आसनोनां कंपथी प्रभुनां निर्वाणने जाणीने, ज्यां प्रभुनुं शरीर हतुं, त्यां अष्टापद पर्वतपर
आवीने विधिपूर्वक उपासना करवा लाग्या.
। , भवनपति, व्यंतर, ज्योतिषिक तथा वैमानिक देवो मारफते नंदन वनथकी गोशीर्ष चंदन,
वीने त्रण चिताओ करावी. एक प्रभुनां शरीर माटे, एक गणधरोनां शरीर माटे, तथा
निओनां शरीर माटे, एवी रीते त्रण चिताओ करावी. पछी आभियोगिक देवो
। . मांथी पाणी मगाव्युं. पछी इंद्रे ते क्षीरसमुद्रना पाणीथी प्रभुना शरीरनुं स्नान कर्युं.
ग चंदननुं लेपन कर्युं. तथा हंस लक्षणवालुं कपडुं पहेराव्युं; तथा सघला अलंकारो
धर विगेरे मुनिओनां शरीरोने पण स्नान करावीने, तथा चंदनथी

लिप्त करीने, आभूषणो पहेराव्यां. पछी इंद्रे विचित्र प्रकारनां चित्रोथी शोभीती, एवी त्रण शिबिकाओ करावी. तथा पछी आनंद रहित, आंखोमां आंसु लावीने तेणे प्रभुनां शरीरने शिबिकामां मुक्युं. तथा बीजा देवोए गणधरो तथा बीजा मुनिओनां शरीरने, तेमनी शिबिकाओमां मेल्यां. पछी इंद्रे प्रभुना शरीरने शिबिकामांथी उतारीने चितामां मेल्युं, अने बीजा देवोए गणधर अने बीजा मुनिओनां शरीरोने शिबिकामांथी उतारीने चितामां मेल्यां. इंद्रना हुकमथी अग्निकुमारोए आनंद तथा उत्साह रहीत थइने अग्निने प्रदीप्त कर्यो. वायुकुमारो वायु विकुर्वा लाग्या. अने बाकीना देवो ते चिताओमां कृष्णागुरु, चंदन आदिक उत्तम काष्ठो नाखवा लाग्या. तथा मध अने घीना घडाओथी ते चिताओने सिंचवा लाग्या. पछी ज्यारे फक्त हाडकांओ बाकी रह्यां, त्यारे इंद्रना हुकुमथी मेघकुमार देवोए त्रण वार ते चिताने ठारी. पछी इंद्रे प्रभुनी उपरनी बाजुनी जमणी दाढा ग्रहण करी. इशानेंद्रे डाबी दाढा ग्रहण करी. चमरेंद्रे नीचेनी जमणी दाढा, तथा बलींद्रे नीचेनी डाबी दाढाग्रहण करी. एवी रीते केटलाक बीजा देवोए पण, जिनभक्तिथी, कोइए पोतानो आचार मानीने, तो कोइए धर्म मानीने बाकीनां अंगोपांगो ग्रहण कर्यां. पछी इंद्रे त्यां रत्नमय त्रण स्तूपो कराव्या. एक प्रभुनो, एक गणधरोनो, अने एक बाकीना मुनिओनो. पछी ते इंद्रादिक देवोए नंदीश्वरादिक द्वीपोमां जइ अठाइ महोत्सव कर्यो; तथा पछी पोतपोताना विमानोमा जइ, पोतपोतानी सभामां वज्रमय दाभडाओमां ते जिननी दाढाओ राखीने, तेने पुष्प, धूप, आदिकथी पूजवा लाग्या.

एवी रीते श्रीऋषभदेव प्रभुनुं चरित्र जाणवुं.

एवी रीते जगद्गुरु श्रीहीरविजय सूरिश्वरना शिष्यरत्न महोपाध्याय श्रीकीर्तिविजय गणिना शिष्य उपाध्याय श्रीविनयविजय गणिए रचेली कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीकामां सातमुं व्याख्यान संपूर्ण थयुं. श्रीरस्तु.

। श्री जिनायनमः ।

॥ अष्टमं व्याख्यानं प्रारभ्यते ॥

हवे स्थविरावली चरित्र कहे छे.

हवे ते काल तथा ते समयने विषे श्रमण जगवंत श्रीमहावीर स्वामिनां नव गछ अने अग्यार गणधरो हता.

अहीं शिष्य शंका करे के, हे जगवन्, श्रीवीर प्रजुना गणधरो तो अग्यार हता, अने गछ केम नव हता? केम के बाकीना जिनेश्वरोना तो जेटला गणधरो तेटलाज गछो हता. त्यारे आचार्य महाराज कहेशे के, तेओमां अकंपित अने अचलज्रातानी बन्नेनी एक वाचना हती, तथा मेतार्य अने प्रजासगणधरजीनी पण एकज वाचना हती. माटे अग्यार गणधर अने नव गछो हता. वली अहीं मंमिक तथा मौर्यपुत्रोनी माता तो एकज हती, पण बाप जुदा जुदा होवाथी, तेमनां पृथक् पृथक् गोत्रो कहेलां छे. तेमां मंमिकनो पिता धनदेव हतो, तथा मौर्यपुत्रनो पिता मौर्य हतो. ते देशमां एक पति मरी गया बाद बीजो पति स्त्रीए करवो, एवो चाल हतो, एम वृद्ध आचार्योनो मत छे.

तेओमां इंद्रजूति आदिक सर्व गणधरो आचारांगथी मांमीने दृष्टिवाद सुधि जाणनारा एटले चौद पूर्वीओ हता. तेओ राजगृह नगरमां पाणी रहित मासक्षमण तपथी, पादपोपगमन अनशनथी मोक्षे गएला छे. तेओमांथी नव गणधरो तो प्रजुना जीवतांज मोक्षे गएला छे; तथा इंद्रजूति अने सुधर्मास्वामि प्रजुनां निर्वाण पछी मोक्षे गएला छे. अने आजने समये जे निर्ग्रंथ साधुओ विहार करे छे, ते सघला जगवान सुधर्मा स्वामिनो परिवार जाणवो. अने बाकीनां गणधरो शिष्यसंतान रहित हता, केमके ते सघलाओ पोतपोतानां गणोने सुधर्मास्वामिने सोंपीने मोक्षे गएला छे.

एवी रीते श्री वीर प्रजुनी पाटे पांचमां सुधर्मास्वामी गणधर थया; तेमनुं स्वरुप नीचे प्रमाणे जाणवुं.

कुल्लाग नामना सन्निवेशमां धम्मिल नामे ब्राह्मणनी जद्दिला नामे स्त्री हती. तेमनां पुत्र सुधर्मा

लिप्त करीने, आभूषणो पहेराव्यां. पछी इंद्रे विचित्र प्रकारनां चित्रोथी शोभीती, एवी त्रण शिबिका-
ओ करावी. तथा पछी आनंद रहित, आंखोमां आंसु लावीने तेणे प्रभुनां शरीरने शिबिकामां मुक्युं.
तथा बीजा देवोए गणधरो तथा बीजा मुनिओनां शरीरने, तेमनी शिबिकाओमां मेल्यां. पछी इंद्रे
प्रभुना शरीरने शिबिकामांथी उतारीने चितामां मेल्युं, अने बीजा देवोए गणधर अने बीजा मुनिओ-
नां शरीरोने शिबिकामांथी उतारीने चितामां मेल्यां. इंद्रना हुकमथी अग्निकुमारोए आनंद तथा
उत्साह रहीत थइने अग्निने प्रदीप्त कर्यो. वायुकुमारो वायु विकुर्वा लाग्या. अने बाकीना देवो ते चिता-
ओमां कृष्णागुरु, चंदन आदिक उत्तम काष्ठो नाखवा लाग्या. तथा मध अने घीना घडाओथी ते
चिताओने सिंचवा लाग्या. पछी ज्यारे फक्त हाडकांओ बाकी रह्यां, त्यारे इंद्रना हुकुमथी मेघकुमार
देवोए त्रण वार ते चिताने ठारी. पछी इंद्रे प्रभुनी उपरनी बाजुनी जमणी दाढा ग्रहण करी. इशा-
नेंद्रे डाबी दाढा ग्रहण करी. चमरेंद्रे नीचेनी जमणी दाढा,तथा बलींद्रे नीचेनी डाबी दाढाग्रहण करी.
एवी रीते केटलाक बीजा देवोए पण, जिनभक्तिथी, कोइए पोतानो आचार मानीने, तो कोइए धर्म
मानीने बाकीनां अंगोपांगो ग्रहण कर्यां. पछी इंद्रे त्यां रत्नमय त्रण स्तूपो कराव्या. एक प्रभुनो, एक
गणधरोनो, अने एक बाकीना मुनिओनो. पछी ते इंद्रादिक देवोए नंदीश्वरादिक द्वीपोमां जइ
अठाइ महोत्सव कर्यो; तथा पछी पोतपोताना विमानोमा जइ, पोतपोतानी सभामां वज्रमय दाबडा-
ओमां ते जिननी दाढाओ राखीने, तेने पुष्प, धूप, आदिकथी पूजवा लाग्या.

एवी रीते श्रीऋषभदेव प्रभुनुं चरित्र जाणवुं.

एवी रीते जगद्गुरु श्रीहीरविजय सूरिश्वरना शिष्यरत्न महोपाध्याय श्रीकीर्तिविजय गणिना शिष्य ॥१०३॥
उपाध्याय श्रीविनयविजय गणिए रचेली कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीकामां सातमुं व्याख्या-
न संपूर्ण थयुं. श्रीरस्तु.

। श्री जिनायनमः ।

॥ अष्टमं व्याख्यानं प्रारभ्यते ॥

हवे स्थविरावली चरित्र कहे छे.

हवे ते काल तथा ते समयने विषे श्रमण भगवंत श्रीमहावीर स्वामिनां नव गछ अने अग्यार गणधरो हता.

अहीं शिष्य शंका करे के, हे भगवन्, श्रीवीर प्रभुना गणधरो तो अग्यार हता, अने गछ केम नव हता ? केम के बाकीना जिनेश्वरोना तो जेटला गणधरो तेटलाज गछो हता. त्यारे आचार्य महाराज कहेशे के, तेओमां अकंपित अने अचलभ्रातानी बन्नेनी एक वाचना हती, तथा मेतार्य अने प्रभासगणधरजीनी पण एकज वाचना हती. माटे अग्यार गणधर अने नव गछो हता. वली अहीं मंडिक तथा मौर्यपुत्रोनी माता तो एकज हती, पण बाप जुदा जुदा होवाथी, तेमनां पृथक् पृथक् गोत्रो कहेलां छे. तेमां मंडिकनो पिता धनदेव हतो, तथा मौर्यपुत्रनो पिता मौर्य हतो. ते देशमां एक पति मरी गया बाद बीजो पति स्त्रीए करवो, एवो चाल हतो, एम वृद्ध आचार्योनो मत छे.

तेओमां इंद्रभूति आदिक सर्व गणधरो आचारांगथी मांडीने दृष्टिवाद सुधि जाणनारा एटले चौद पूर्वीओ हता. तेओ राजगृह नगरमां पाणी रहित मासक्षमण तपथी, पादपोपगमन अनशनथी मोक्षे गएला छे. तेओमांथी नव गणधरो तो प्रभुना जीवतांज मोक्षे गएला छे; तथा इंद्रभूति अने सुधर्मा स्वामि प्रभुनां निर्वाण पछी मोक्षे गएला छे. अने आजने समये जे निर्ग्रंथ साधुओ विहार करे छे, ते सघला भगवान सुधर्मा स्वामिनो परिवार जाणवो. अने बाकीनां गणधरो शिष्यसंतान रहित हता, केमके ते सघलाओ पोतपोतानां गणोने सुधर्मास्वामिने सोंपीने मोक्षे गएला छे.

एवी रीते श्री वीर प्रभुनी पाटे पांचमां सुधर्मास्वामी गणधर थया; तेमनुं स्वरुप नीचे प्रमाणे जाणवुं. कुल्लाग नामना सन्निवेशमां धम्मिल नामे ब्राह्मणनी भद्दिला नामे स्त्री हती. तेमनां पुत्र सुधर्मा

स्वामीए चौद विद्यानां पारंगामी थइने, पचास वर्षने अंते प्रभुपासे दीक्षा लीधी; त्रीश वर्षो सुधि तेमणे प्रभुनी सेवा करी; तथा वीर प्रभुनां निर्वाण पछी बार वर्षे, अने पोतानां जन्मथी बाणुमे वर्षे, तेमने केवलज्ञान उत्पन्न थयुं. तथा पछी आठ वर्षो सुधि केवलीपणामां रहीने, सो वर्षनुं आयुष्य संपूर्ण करीने, पोतानी पाटे श्री जंबूस्वामिने बेसाडीने पोते मोक्षे गया.

श्री जंबूस्वामिनुं चरित्र नीचे प्रमाणे जाणवुं.

राजगृही नगरीमां रुषभ अने तेनी स्त्री धारिणीनी कुक्षिए, पांचमां देवलोकथी चवीने जंबूस्वामि पुत्रपणे उपन्या. तेमणे सुधर्मास्वामि पासेथी धर्मदेशना सांभली. तथा पोते शील अने सम्यक्त्व ग्रहण कर्युं; पछी मातपितानां दृढ आग्रहथी तेमणे आठ कन्याओ साथे लग्न कर्यां. पण तेओनी स्नेहयुक्त वाणीथी पण ते जंबूकुमार मोहमां पड्या नहीं. केमके सुखे समाधे भवरुपी समुद्रथी तारनारां एवां शील अने सम्यक्त्वरुपी जेनी पासे बे तुंबडांओ छे, एवा जंबूस्वामि स्त्रीउं रुपी नदीमां केम बुडी शके ? पछी रात्रिए ते स्त्रीओने प्रतिबोध देतां थकां, तेमणे चोरी करवा आवेला एवा, तथा चारसो ने नवाणु चोरोनां परिवारवाला, एवा प्रभवस्वामिने पण प्रतिबोध पमाड्यो. पछी प्रभाते ते पांचसो चोर, आठ स्त्रीओ, ते स्त्रीओनां मावापो, तथा पोतानां मावाप साथे, श्री जंबू स्वामिए नवाणु क्रोड सोनैयाओने तजीने दीक्षा लीधी; तथा पछी अनुक्रमे केवली थया.

एवी रीते सोल वर्षो सुधि ते गृहस्थावासमां रह्या; वीश वर्ष छद्मस्थ अवस्थामां रह्या, तथा चमालीस वर्षो सुधि केवलीपणे रह्या; एवी रीते एंसीवर्षोनुं आयुष्य संपूर्ण करीने, तथा पोतानी पाटे श्री प्रभवस्वामिने स्थापीने मोक्षे गया. अहीं कवि कहे छे के, जंबूस्वामि सरखा कोइ कोटवाल थया नथी, अने थशे पण नहीं, केमके तेमणे तो चोरोने पण मोक्षगामी एवा साधुओ बनावी दीधा. ते प्रभवस्वामि पण जयवंता वर्तो, केमके, जेमणे चोरीथी धन हरतां थकां, चोरीनेज हरनारुं, तथा अमूल्य एवुं रत्नत्रितय मेलव्युं.

नीचे प्रमाणे दश वस्तुओ वीछेद गइ.
, मनी उत्पत्तिथी एक मुहुर्तवारमां केवलज्ञाननी उत्पति थाय. पुला-
ां सैन्यने पण चूर्ण करी शकाय. आहारक शरीर लब्धि, क्षपक
, त्रण प्रकारनुं, (संयम परिहार विशुद्धि, सूक्ष्म संपराय, तथा यथा
तथा मोक्षगमन ए दश वस्तुओ विछेद गइ.

छे के,

मि महामुनिनुं सौभाग्य तो लोकोत्तर छे, मुक्तिरुपी स्त्री ते पतिने पामीने हवे
ज नथी.

हवे एक दहाडो श्री प्रभवस्वामिए पोतानी गादीपर कोइने स्थापवा माटे पोतानां गणमां अने
घमां उपयोग धो; पण तेमां कोइ योग्य पुरुष नहीं मलवाथी तेमणे अन्य दर्शनीओमां उपयोग
धो ही नगरीमां यज्ञ करता शयंभव भट्टने जोयो. पछी त्यां तेमणे बे साधुओने
के, "अहो ! आ तो कष्टरूप छे, के तत्व तो जेथी जणातुंज नथी." पछी
गुरुने पुछवाथी, गुरुए यज्ञस्तंभनी नीचे राखेली श्री शांतिनाथजीनी
; अने तेथी प्रतिबोध पामी तेमणे दीक्षा लीधी. पछी श्री प्रभवस्वामि पण पोतानी
री श्री स्वामिने बेसाडीने स्वर्गे गया. एवी रीते श्री प्रभवस्वामिनुं स्वरुप जाणवुं.
वार शय्यंभवस्वामिए, आधान सहित तजी दीधेली एवी पोतानी स्त्रीने पेटे जन्मेला
तानां पुत्रनां हित माटे श्री दशवैकालिक रच्युं. पछी अनुक्रमे पोतानी पाटे श्री यशो-
डीने वीर प्रभुनां निर्वाण पछी अठाणुं वर्षे पोते स्वर्गे गया.
पण पोतानी पाटे श्री भद्रबाहुस्वामि तथा संभूतिविजयजीने बेसाडीने

हवे संक्षिप्त वाचनाथी स्थविरावली कहे छे.

प्रतिष्ठान नामनां नगरमां वराहमिहिर अने जद्रबाहू नामे बे ब्राह्मणोए दीक्षा लीधी. त्यां जद्रबाहु स्वामिने आचार्य पदवी मळ्याथी वराहमिहिरने गुस्सो आव्यो; तेथी पोते ब्राह्मणनो वेष लेइने, "वाराहि संहिता" बनावीने लोकोनां निमित्त जोइने आजीवीका चलाववा लाग्यो. अने लोकोने कहेवा लाग्यो के, वनमां में कोइक जगोए एक पत्थरपर सिंहनुं लग्न लीधुं हतुं; पछी घेर आव्या बाद सुती वखते याद आव्युं के, ते लग्न हुं जुंसी आव्यो नथी; तेथी लग्ननी जक्तिथी त्यां जुंसवा गयो त्यां सिंहने जोइने पण डर्या विनां, तेनी नीचे हाथ घालीने ते लग्न में जुंसी नाख्युं, तेथी सिंह लग्ननो अधिपति सूर्य मारापर संतुष्ट थयो; अने प्रत्यक्ष थइने ते मने पोतानां मंरूलमां लेइ गयो. अने त्यां सघला ग्रहोनी मने चाल देखारुी.

एक दहारुो तेणे राजा आगल कह्युं के हुं आ कुंरुालुं करी देउं छुं, तेमां मध्य जागमां बावन पलनो एक मत्स्य आवीने परुशे; त्यारे जद्रबाहु स्वामिए कह्युं के, मार्गमां आवतां ते मत्स्य सुकाइ जशे. तेथी ते साडी एकावन पलनो रहेशे, तथा कुंरुालानी मध्यमां नहीं पण, कुंरुालाने छेडे परुशे. पछी श्री जद्रबाहुस्वामिए कहेली वात मली.

एक दहारुो राजाने घेर पुत्र आववाथी वराहमिहिरे तेनुं सो वर्षनुं आयुष्य कह्युं; तेथी सर्व लोको, तथा योगी विगेरे राजापासे जइ ते छोकराने आशिर्वाद आपवा लाग्या. पण जद्रबाहु स्वामि नहीं गयाथी वराहमिहिर जैनोनी निंदा करावना लाग्यो. पछी जद्रबाहु स्वामिए श्रावकोने कह्युं के आजथी सातमे दिवसे आ राजाना कुंवरनुं बीलारुीथी मृत्यु थशे. पछी राजाए सर्व बीलारुीओने गाममांथी कहारुी मुकावी, तो पण सातमे दहाडे, ते धावतो हतो, ते वखते बीलाडीनां आकार, वालो कमाडनो आगलीओ तेनांपर अकस्मात पडवाथी ते मृत्यु पाम्यो. तेथी जद्रबाहुस्वामिनी प्रशंसा तथा वराहमिहिरनी निंदा सर्व जगोए थवा लागी. पछी क्रोधथी मृत्यु पामीने ते व्यंतर

उपद्रव शाम्यो; " नुं

ते उपद्रव दूर कर्यो.

नांमनां नगरमां शकटाल नामना मंत्रिनां श्री स्थूलभद्र पुत्र हता. ते बार वर्षोसुधि कोशा नामनी वेश्याने घेर रह्या हता. वररुचि ब्राह्मणनां प्रयोगथी पितानुं मृत्यु थया बाद, राजाए तेमने मंत्रिपदवी आपवानुं कहेतां, वैराग्य लावी तेमणे दीक्षा लीधी. पाछलथी संभूति विजयजीनी

भ्रतो बेइने तेमनी आज्ञाथी कोशाने घेर चोमासुं रह्या. त्यां बहु हावभाव करनारी एवी पण ते वेश्याने प्रतिबोधीने, गुरुनी पासे आवतां थकां गुरुए तेमने "दुष्करदुष्करकारक" कही बोला-वाथी, पेहेलां आवेला सिंहगुफाद्वार आदिकवाला मुनिओने इर्ष्या आवी. तेथी बीजे चोमासे गुरुए ना पाडतां छतां पण कोशाने घेर सिंहगुफावाला साधु रहेवा गया. त्यां तेणीने दिव्य रूप-वाली जोइने चलायमान थया. पछी तेणीए तेनी पासेथी नेपाल देशथी मगावेलुं रत्नकंबल खाल-मां फेंकी दइने, तेने प्रतिबोध आप्यो. तेथी गुरु पासे आवी आलोयणा पूर्वक स्थूल भद्रजीनी प्रशंसा करी. पछी प्रतिबोध पामेली एवी कोशा पण, राजाए सोंपेला पोतानां स्वामिने, प्रति बोधिने दीक्षा लेती हवी.

अही कविओ पण कहे छे के, पर्वतमां, गुफामां, तथा मनुष्य विनानां वनमां रहेनाराओ तो हजा-रो मुनिओ इंद्रिओने वश करनारा छे, पण मनोहर एवा मेहेलमां स्त्रीनी पासे रही वशेंद्री थनारा तो एक स्थूलभद्र महा मुनिज छे. अहो ! ते स्थूलभद्र मुनिए अग्निमां प्रवेश कर्यो, छतां दाझ्या नथी; खड्गनी धारापर चालतां थकां पण छेदाया नथी; कृष्ण सर्पनां बिलपर रहीने पण रुखाया नथी, तथा काजलनी कोटडीमां रहीने पण जेमने डाघ लाग्यो नथी. ते श्री स्थूलभद्र मुनिराजने हुं वंदन करुं छुं, केमके जे हमेशां रागवाली एवी वेश्याने त्यां रहेला हता, वली त्यां रही षट्रस भोजन करता हता, तेम रहेवानी चित्रशाला पण कामने प्रदीप्त करे तेवी हती; वय पण नवयौवन हती;

वली काल पण वर्षा ऋतुनो हतो, तोपण जेणे कामने जीतीने वेश्याने पण उलटो प्रतिबोध आप्यो. अरे कामदेव ! तारुं स्त्रीरूपी तो मुख्य शस्त्र छे, तथा वसंत, कोयल, पंचमस्वर तथा चंद्र आदिक तो तारा मुख्य योद्धाओ छे, तेम विष्णु, ब्रह्मा, तथा महादेव विगेरे तो तारा सेवको छे, तो पण तुं स्थूलभद्र मुनिथी केम हणायो ? अरे कामदेव ! शुं तें आ मुनिने पण नंदिषेण अने रथनेमि आदिकनी बुद्धिथी जोया ? तने एटली पण खबर नहीं रही के, आ मुनि तो मने रणसंग्राममां मारीने नेमिनाथ, जंबूस्वामि तथा सुदर्शन शेठनी उपर चोथो थवानो छे !!! श्री नेमिनाथथी पण आ शकटालना पुत्र श्री स्थूलभद्रजीने अमो वधारे वीर पुरुष मानीए छीए, केम के, श्री नेमनाथजीए तो पर्वतपर जइने मोहने जीत्यो, पण आ मुनिए तो ते मोहनाज घरमां जइने तेने मार्यो !!!

हवे एम करतां एक वखते बार वर्षोनो दुकाल पडवाथी, संघना आग्रहथी श्री भद्रबाहुस्वामि पांचसें साधुओने हमेशां सात वांचनाओ आपता हता; पण ते वखते बीजा सघला साधुओ कंटालीने चाल्या गया, त्यारे स्थूलभद्रजी बे वस्तु ओछां एवां दश पूर्वो भण्या. हवे एक दहाडो यक्षा आदिक साधवीओ वंदना माटे तेमनी पासे आवीउं, त्यारे स्थूलभद्रजीए पोतानुं सिंहनुं रूप कर्युं, तेथी गुरुए तेमने अयोग्य कही वाचना आपवी बंध करी. पछी संघना आग्रहथी तेमणे तेमने सूत्रथी वाचना आपी, कह्युं के, हवेथी तारे बीजाने भणाववां नहीं. कह्युं छे के, छेल्ला केवली श्री जंबूस्वामिथया; तथा प्रभवस्वामी, शय्यंभवस्वामि, यशोभद्र स्वामि, संभूतिविजय स्वामी, भद्रबाहुस्वामि, तथा स्थूलभद्रस्वामी ए छए श्रुतकेवलीओ थया.

हवे आर्यमहा गिरि महाराज जिनकल्पीपणानो वीछेद थयेछते पण, तेनी तुलना करवा लाग्या. आर्यसुहस्ति महाराजे दुकाल वखते साधुओ पासेथी भिक्षा मागता एवा जे गरीबने दीक्षा आपी हती, ते मृत्यु पामीने, श्रेणिकनो पुत्र कोणिक, तेनो पुत्र उदायी, तेनी पाटे नवनंद, तेनो पुत्र चंद्रगुप्त, तेनो पुत्र बिंदुसार, तेनो पुत्र अशोकश्री, तेनो पुत्र कुणाल, तथा तेनो पुत्र संप्रति नामे थयो.

महाराजने जोइने तेने आ-
, छत्रीस हजार जीर्णोद्धार,
प्र , तथा दानशालाओथी त्रणखंड पृथ्वीने विभूषित
वीन कराव्यां, एम जे लख्युं छे, ते विचारवा जेवुं
एम कह्युं छे. ते अनार्य देशोने पण साधुओना वेषधारी
धुओने विहार करवाने योग्य कर्या हता.
स्ति तथा आर्य महागिरिमहाराज उत्तम क्रियापात्र, ज्ञानी, तथा तत्वना जाणकारो
क्रोडवार सूरिमंत्रनो जाप कर्यो हतो, तथा काकंदी नगरीमां तेमनो जन्म थयो हतो.
पूर्वक वाचनाथी स्थविरावली कहे छे. आ वाचनामां केटलाक भेदो तो लेखकदोषनां
जाणवा. ते ते स्थवीरोनी शाखा अने कुलो प्राये जणातां नथी.

कुल एटले आचार्यनो परिवार, गण एटले एक वाचना लेनार मुनिनो समुदाय, शाखा एटले आचार्यनी संततिमां जुदा जुदा अन्वयो. एटले जेम अमारी वयर स्वामिनी शाखा. कुल एटले जेम चांद्रकुल के नागेंद्रकुल इत्यादि. जेमना उत्पन्न थवाथी पूर्वजो दुर्गतिमां के अपजशरूपी कादवमां पडता नथी, ते अपत्य कहेवाय; एटले पुत्र आदिक, अने तेनां सरखा जे शिष्यो ते अपत्य कहेवाय.

द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष अने समवाय, ए छ पदार्थोने प्ररूपनारानां षडुलूकगोत्रीओ थएला छे. जीव, अजीव अने नोजीव एवी रीते त्रण राशिओ प्ररूपनाराना परिवारमां त्रिराशीओ थएला छे. तेओनी उत्पत्ति नीचे प्रमाणे छे.

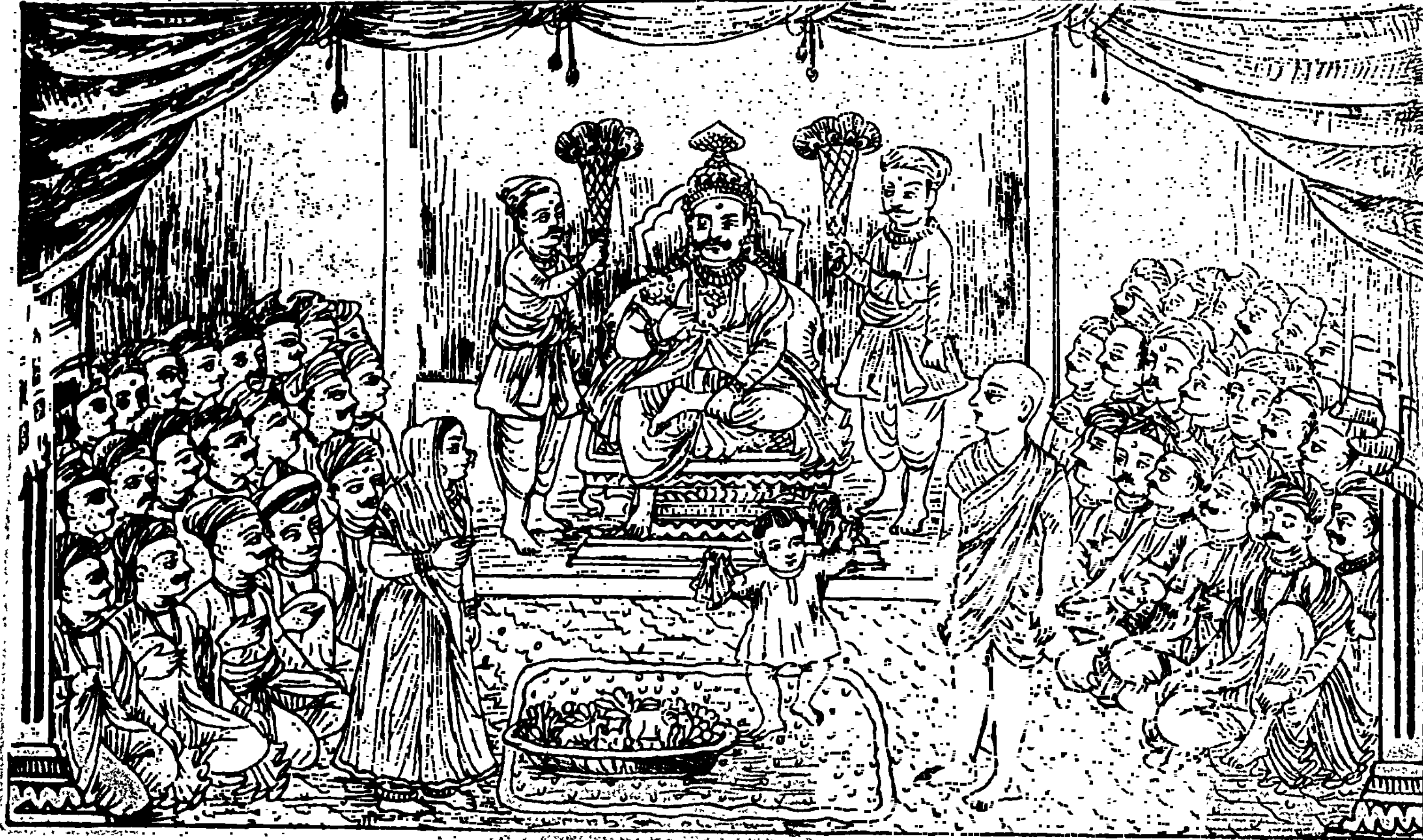
वीरप्रभुनां नीर्वाण पछी चारसो ने चमालीस वर्षे अंतरंजिका नामनी नगरीमां व्यंतरना चैत्यमां
आचार्यने वांदवा माटे बीजा गामथी आवता एवा तेमना रोहगुप्त नामनां
पटहनो ध्वनि सांभलीने पोते तेनी साथे वाद करवा जणाव्युं. तथा ते

वात गुरुने आवीने कही. पछी गुरुए तेने वादीनी, वींछी, सर्प, उंदर, हरिणी, सुकरी, कागडी, तथा शकुनिका नामनी विद्याओने जीतवा माटे, मयूरी, नकुली बिडाली, व्याघ्री, सिंही, उलूकी, तथा श्येनी नामनी सात विद्याओ आपी; तथा बाकीनां उपद्रवोने हरनारुं एवुं एक रजोहरण पण आप्युं. पछी बलश्री राजानी सभामां पोट्टशाल नामनां परिव्राजकनी साथे तेणे वाद करवा मांड्यो त्यां ते परिव्राजके जीव अजीव, तथा सुखदुःखरूपी बे राशिनुं स्थापन कर्युं. त्यारे रोहगुप्ते, त्रण जातिना देव, त्रण अग्नि, त्रण शक्ति, त्रण स्वर, त्रण लोक, त्रण पद, त्रण पुष्कर त्रण ब्रह्म, त्रण पुष्कर, त्रण वर्ण, त्रण गुण, त्रण पुरुष, त्रण संध्या, त्रण वचन, तथा त्रण पुरुषार्थ विगेरेनां दृष्टांतथी, जीव, अजीव, अने नोजीव, एवी त्रण राशीओ स्थापी. पछी तेनी विद्याओने पोतानी विद्याओथी जीती; तथा छेवटे वादीए मुकेली रासभी विद्याने रजोहरणथी जीतीने, महोत्सवपूर्वक गुरूपासे आवीने सघलो वृत्तांत तेमने कही बताव्यो. त्यारे गुरूए कह्युं के, हे वत्स, तें ठीक कर्युं; पण जीव, अवीव, अने नोजीव एम त्रण राशिनुं जे स्थापन कर्युं, ते उत्सूत्र छे; माटे हवे त्यां जइ मिथ्यादुःकृत देइ आव? त्यारे तेणे अहंकार लावी कह्युं के, एवी रीते सभामां प्ररूपीने हवे पाछुं तेने अप्रमाण केम करुं? पछी गुरूए छ मास सुधि राजसभामां तेनी साथे वाद करीने, अंते कोइ दुकानेथी ते नोजीव लाववानुं कहेता ते नहीं लाववाथी, तथा चमालीसो प्रश्नोथी तेने हरावीने, अंते आग्रह नहीं छोडवाथी तेने संघ बहार कर्यो. एवी रीते ते त्रैराशिक छठा निह्नवे अनुक्रमे वैशेषिक मत स्थाप्यो; के जेनुं नाम सूत्रमां आर्यमहागिरिनो शिष्य रोहगुप्त एवुं कहेलुं छे. तथा उत्तराध्ययननी वृत्तिमां अने स्थानांगनी वृत्ति इत्यादिकमा श्रीगुप्ताचार्यनो शिष्य कहेलो छे, तेथी अमोए पण तेमज लख्युं छे; खरुं शुं छे? ते तो बहुश्रुतो जाणे.

हवे श्रीप्रियग्रंथमहाराजनो वृत्तांत कहे छे.

त्रणसें छे जिनभुवनो जेमां, चारसो छे लौकिक प्रसादो जेमां, अढारसो छे ब्राह्मणोनां घरो ज्यां, छत्रीस हजार छे वणिकनां घरो ज्यां, नवसो छे बगीचाओ ज्यां, सातसो छे वावो ज्यां, बसो छे कुंवाओ

चित्र ५८



थया पछी सुनंदाये राजसभामां फरीयाद करी परंतु राजाये न्याय करी ते छोकरो अपाव्यु नहीं. पा

ज्यां, तथा सातसो छे दानशाळाओ ज्यां, एवुं, तथा अजमेरनी नजदीकमां रहेला, तथा सुजटपाल नामे छे राजा ज्यां, एवा हर्षपुर नामनां नगरमां श्री प्रियग्रंथ आचार्य पधार्या; एक दहाडो त्यां ब्राह्मणोए यज्ञमां बकराने मारवा मांड्यो; त्यारे प्रियग्रंथ सूरीश्वरे ते बकरापर श्रावकने हाथे वासक्षेप नखाव्यो; तेथी तेमां अंबिका देवी अधिष्ठित थयां; तेथी ते बकरो बोलवा लाग्यो के, हे पापीओ, जेम तमो निर्दय थइने पशुओने मारो छो, तेम जो हुं पण निर्दय थउं, तो तमो सघलाओने क्षण वारमां मारी नाखुं. जेम हनुमाने राक्षसोना हाल कर्या छे, तेम हुं पण आकाशमां रहीने जो वचमां दया न होते तो, तमारा पण हाल करत. पछी तेओए (ब्राह्मणोए) तेने पुछयुं के तुं कोण छे? त्यारे तेणे (बकरे) कह्युं के, हुं अग्नि छुं; मारां आ वाहनरूप बिचारां पशुने फोगट शामाटे मारो छो? अहीं श्रीप्रियग्रंथ नामनां आचार्य आवेला छे, तेमनी पासे जइ, शुद्ध धर्मने अंगीकार करो? जेम राजाओमां चक्री, तथा धनुष्यधारीओमां अर्जुन; तेम ते आचार्य महाराज सत्यवादीओमां शिरोमणि छे. पछी ते ब्राह्मणोए पण तेमज कर्युं.

हवे श्री वज्रस्वामीजीनुं वृत्तांत कहे छे.

तुंबवन नामनां गाममां सुनंदा नामनी पोतानी स्त्रीने गर्भवंती मुकीने धनगिरिजीए दीक्षा लीधी हती; पछी सुनंदाने पुत्र थयो; ते पोतानां जन्मवखतेज पोतानां पिताए लीधेली दीक्षानुं वृत्तांत सांभळीने, पोताने जातिस्मरण ज्ञान थवाथी, माताने कंटालो आपवा माटे हमेशां रडवा लाग्यो. तेथी माताए तेने छ मासनो हतो त्यारथीज धनगिरिनेआपी दीधो. पछी धनगिरिए ते बालकने गुरुनां हाथमां आप्यो, त्यारे बहु भार लागवाथी गुरुए तेमनुं वज्र नाम पाड्युं; तथा ते पालणामांज रह्यो थको अग्यार अंगो शिखी गयो. पछी ज्यारे त्रण वर्षनो ते थयो, त्यारे माताए तेने पाछो लेवा माटे राजसभामां विवाद कर्यो, तथा तेने मिठाइ आदिक खावानी चीजो तथा रमकडां आदिक घणुं देवा मांड्युं, पण श्री वज्रस्वामिए माता पासे नहीं जतां धनगिरिजीए आपेलुं रजोहरण लीधुं.

पछी तेमनी माताए पण दीक्षा लीधी. पछी ज्यारे वज्रस्वामी आठ वर्षना थया त्यारे, तेमनां पूर्व भवना मित्र एवा जृंभक देवोए, उज्जयनीनाज्ञ मार्गमां वरसाद रह्ये थके कुष्मांडनी भिक्षा देवा मांडी, त्यारे तेओने अनीमेषी जोइ, आ देवपिंड साधुओने कल्पे नहीं; एम विचारि नहीं लेवाथी देवोए तुष्टमान थइने तेमने वैक्रियलब्धि आपी. एवी रीते बीजी वखते तेओए आकाशगामिनी विद्या तेमने आपी.

वली ते वज्रस्वामीए, धन श्रेष्टिनी रुक्मिणी नामनी कन्याने पण प्रतिबोधीने दीक्षा अपावी. ते कन्याए साधवीओनां मुखथी वज्रस्वामीनां रूप अने गुणोनुं वर्णन सांभल्युं हतुं, तेथी तेणीए एवो निश्चय कर्यो हतो के, हुं तो श्री वज्रस्वामीनेज वरीश. वली तेणीनो बाप क्रोडो गमे धन सहित वज्रस्वामीने ते कन्या आपवा आव्यो हतो. अहीं कवि कहे छे के, जे बालक एवा वज्रस्वामीए मोह रुपी समुद्रने एक लीला मात्रथी पी लीधो छे, एवा वज्र मुनिने स्त्रीओ रुपी नदीनुं पूर शी रीते भींजावी शके तेम छे ?

वली एक वखते ते श्रीवज्रस्वामी डुकाल पडवाथी संघने पाटपर बेसाडीने सुकालवाली नगरीमां लेइ गया हता. त्यांना बौद्ध राजाए जिनमंदिरोमां पुष्पोनो निषेध कर्यो हतो. अहीं पण किरणावली तथा दीपिका टीकाकारोए "बौद्धराज्ञा" एवो प्रयोग लख्यो छे, ते विचारवा जेवो छे. पछी पर्युषणा पर्वमां श्रावकोए विनंति करवाथी, वज्रस्वामिए आकाशमार्गे माहेश्वरी नगरीमां जइ पितानां मित्र एवा एक बगीचावालाने पुष्पो एकठां करवानुं कह्युं; तथा पछी पोते हिमवंत पर्वतपर लक्ष्मी देवीने घेर गया; त्यां लक्ष्मीए आपेलुं महापद्म तथा हुताशन वनथकी वीसलाख पुष्पो, लावीने, जृंभक देवोए करेलां विमानमां बेसी, तेमनी साथे महोत्सवपूर्वक आवी ने, जिनशासननी प्रभावना करी; तथा राजाने पण जैनी कर्यो.

एक दाहाडो कफनी बिमारीथी पोते भोजन पछी खावामाटे सुंठनो कटको पोताना कानपर राख्यो,

;

के, बार वर्षो

, ते बीजे दिवसथी

कह्युं; साथे रहेला साधुओने साथे

तथा अहीं कारे "तुर्यं संहननं" एवु

त्ति, तथा दीपालिकाकल्प इत्यादिक शास्त्रोमां

, शेहेरमां, जिनदत्त नामनां श्रावकनी इश्वरा नामनी

। जेरने गुरूनां वचनथी निवार्युं; पछी प्रजातमां त्यां घणां

पहोंचवाथी, सुकाल थयो; अने तेथी जिनदत्ते, पोतानी स्त्री तथा ना-

त्ति अने विद्याधर नामनां पुत्रो साथे दीक्षा लीधी. त्यांथी ते नामनी चार शाखाओ

देशमां पुरनी नजदीकमां कन्ना अने बेन्ना नामनी नदीनां मध्यजागमां रहेला

; तेओमांनो एक तापस पगे लेप करीने, पृथ्वीपर जेम, तेम जलपर

ने, बेन्ना नदी उतरीने पारणा माटे जतो. ते जोइ लोको कहेवा लाग्या

! केटली शक्ति छे? आवो प्रजावी जैनीओमां कोइ नथी; ते वात श्रा-

मितजीने कही. त्यारे तेओए कह्युं के, ते पगे लेप करीने जाय छे;

घेर जमवा तेड्यो; त्या तेनांज हाथ पगो धोया; पछी तेनी साथे श्रावको

तो हिमत राखीने नदीमां पड्यो. पण लेप धोवाइ जवाथी, ते

. पछी त्यां आर्यसमित महाराजे आवीने, लोकोने प्रति-

बोधवा माटे नदीनां पाणीमां योगचूर्ण नाखीने कह्युं के, हे बेन्ना नदी, अमारे पेले पार जवुं छे; एम कहेतांज ते नदीनां बन्ने कांठाओ एकठा थइ गया. ते जोइ लोकोने बहुज आश्चर्य थयुं. पछी आचार्ये तापसोनां आश्रममां जइ, तेमने प्रतिबोधिने दीक्षा आपी. त्यांथी ब्रह्माद्विपिका नामनी शाखा निकली.

एवी रीते आर्थ महागिरि आर्यसुहस्ती, श्री गुणसुंदर, श्यामार्य, स्कंदिलाचार्य, रेवतीमित्र सूरिश्वर, श्री धर्म, ज्ञद्र, गुप्ताचार्य, श्री गुप्ताचार्य, तथा वज्र सूरि, एटला दश पूर्वी युगप्रधानो थया.

अहो बहुश्रुत एवा पण किरणावलीकारने अहीं केटलो प्रमाद छे; केम के, तोसलीपुत्र आचार्यनां शिष्य, तथा श्री वज्रस्वामि पासे साडानव पूर्वो जणेला, आर्यरक्षित नामनां आचार्य जुदा, अने श्री वज्र स्वामिथी शिष्य प्रशिष्यनी परंपराथी नवमी पाटे आवेला आर्यरक्ष पण जुदाज छे. एवी रीते बन्नेनो प्रगट ज्ञेद विसरी जइने आर्यरक्षनी जगोए आर्यरक्षितजीनुं वृत्तांत लखेलुं छे.

अहीं मूल सूत्रमां "वंदामि फग्गुमित" इत्यादि जे चउद गाथाओ कहेली छे, ते गद्यमां कहेलुं वृत्तांत पाछुं पद्यमां गुंथेलुं छे, माटे पुनरुक्ति दोष जाणवो नहीं.

एवी रीते जगद्गुरु ज्ञट्टारक श्री हीरविजय सूरीश्वरनां शिष्योपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणिनां शिष्योपाध्याय श्री विनयविजय गणिए रचेली श्री कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीकामां आठमो क्षण समाप्त थयो. श्रीरस्तु.

॥ नवमं व्याख्यानं प्रारभ्यते ॥

हवे सामाचारिनुं स्वरूप कहे छे; तेमां पण पर्युषणा क्यारे करवी ? ते कहे छे.

असाढ चोमासानां दिवसथी मांडीने एक मासने वीस दिवसो गया बाद ज्ञगवाने पर्युषण पर्व कर्युं छे; अहीं शिष्य गुरुने पुछे के, ते पर्युषणा पर्व शामाटे करे ? तो गुरु कहे के, ते वखते गृहस्थीओ घरोने पोताने माटे चुनो देवरावे, तृण आदिकथी ढांके राखे, छाण आदिकथी लींपे, आडी वाड, आदिक करे, पाषाण आदिकथी घसीने मठारे, धूपोए करीने सुगंधियुक्त करे, पाणी जवा आदिकनी पर

माळो करे, तथा एवी रीते गृहस्थीओ पोताने माटे अचित्त करी राखे, तेथी करीने असाड चोमासुं गयाबाद एक मास ने वीस दिवसो गया पछी साधुओ पर्युषणा पर्व करे, केमके, तेम करवाथी आगळ करेला दोषो साधुने माटे थाय नहीं, एवी रीते जो जगवान पचास दिवसो गया बाद पर्युषणा करे, तो तेमनां गणधरो पण तेमज करे, अने तेथी तेमनां शिष्यो पण तेवीज रीते पर्युषणा करे, अने तेथी स्थविरो पण तेवीज रीते पर्युषणा करे, अने तेथी आज कालनां निर्गंथो पण तेवीजरीते पर्युषणा करे,अने तथी अमारा आचार्य उपाध्याय विगेरे पणतेमज करे. हवे ते पर्युषणा पर्व जादरवा सुदी पांचमनी पेहेलां पेहेलां कल्पे, पण ते पछी कल्पे नहीं. ते पर्युषणा बे प्रकारनी जाणवी एक गृहस्थोए जाणेली, अने बीजी ग्रहस्थोए नहीं जाणेली. पांच पांच दिवसोनी वृद्धिथी जे पर्युषणा करवी, ते नहीं जाणेली, अने सांवत्सरिक कृत्यथी तथा ग्रहस्थीए जाणेली, ए बे प्रकारनी पर्युषणा जाणवी, सांवत्सरिक कृत्य एटले संवछरी पडिकमणुं, लोच, अठमनो तप, सर्व प्रजुनी जक्ति, तथा मांहोमांहे संघनां खमतखामणा, ए सांवत्सरीक कृत्य जाणवुं. अने ते जादरवा सुद दिवसे, अने कालिकाचार्यनां आदेशथी केवल चोथनेज दिवसे जाणवुं. वली हमणां जैनी मळतां नथी , तेथी पचास दिवसेज पर्युषणा करवानुं वृद्धोए कहेलुं छे. अधिक मासनी जाद्रवा सुद पांचमे तथा कालिकाचार्य पछी जाद्रवा सुदि चोथेज पर्युषणा करवी. पणाओने अनुसारे युगनी मध्यमां पोश मास, तथा युगनी अंते आषाढ मास अधिक आवे पण अधिक मास आवता नथी, अने ते जैनी टीपणांओ हालमां मली शकतां नथी. पुनेम बाद पचास दिवसो पछीज पर्युषणा पर्व करवुं, एम वृद्ध आचार्योनो मत छे. करे के, ज्यारे श्रावण मास अधिक होय, त्यारे तो बीजा श्रावणसुद चोथने युक्त छे, पण जादरवा सुद चोथे करवुं युक्त नथी, केमके तेथी तो ऐसी कहे छे के, एम विचार नहीं करवो; केमके हे देवानु प्रिय, तेथी तो

समवायांगसूत्रनां वचनने बाधा आवे; माटे एम नहीं कहेवुं; केमके चोमासां तो असाढ आदिक मासने आश्रीने रहेलां छे; माटे कार्तिक चोमासुं कार्तिकसुद चौदसेज करवुं युक्त छे; अने अधिक मास तो एक कालचूला तरिके छे; केमके ते गणत्रीमां लेखातो नथी; वली जेम ते चोमासां असाढ आदिक मासने आश्रीने रह्यां छे; तेम पर्युषणा पर्व पण भादरवा मासनेज आश्रीने रह्युं छे. माटे ते दिवसेज करवुं. अने दिवसनी गणत्रीमां अधिक मास तो एक कालचूला जेवो छे, माटे ते वच्चे आवे तो पण पचासज दिवसो थएला जाणवा. माटे भाद्रवा सुद चोथे पर्युषणा पर्व (संवछरी) करवुं अयुक्त नथी; केमके एवी रीते करवानुं घणा आगमोमां कह्युं छे. माटे जेम चोमासुं करवामां अधिक मास लेखातो नथी, तेम संवछरी के पर्युषण करवामां पण अधिक मास लेखाय नहीं. माटे कदाग्रहने तजी देवो. त्यारे वली वादी कहे, के शुं ते अधिक मास कागडो खाइ गयो छे ? अथवा शुं ते मासमां पाप के सुख लागती नथी ? त्यारे तेने कहेवु के, ज्यारे तुं पण सांवत्सरिक क्षामणा करे छे, त्यारे अधिक मास होय, तो पण तेर मासने बदले तुं पण "बारसएहं मासाणं" एवोज पाठ बोले छे; अने तेमां अधिक मास तो तुं गणतो नथी; एवी रीते चोमासी क्षामणामां पण अधिक मास होते छते पांच मासने बदले "चउएहं मासाणं" एवोज पाठ बोले छे; तथा पख्खी खामणामां पण अधिक तिथि आवते छते सोल दिवसो थया होय, तो पण "पन्नरसएहं दिवसाणं" एवोज पाठ तुं भणे छे. वली लोकोमां पण दीवाली आदिक पर्वो माटे अधिक मास गणातो नथी; वली ज्योतिष शास्त्रमां पण अधिक मासमां सघलां शुभ कार्यो करवानी मनाइ करेली छे. माटे जेम बे चौदस होय, त्यारे पेहेली चौदसने छोडीने बीजी चौदसे पाक्षिक कार्य कराय छे, तेम ज्यारे बे भादरवा होय, त्यारे पेहेलो भादरवो तजीने बीजा भादरवामां पर्युषणा पर्व करवुं. त्यारे वली वादी शंका करे के, ते अधिक मासमां तो त्यारे देवपूजा, मुनिदान, अने प्रतिक्रमण आदिक पण करवां न जोइए; त्यारे तेने कहेवुं के, ते देवपूजा आदिक कार्यो तो दिवसोने आश्रीने रहेलां छे, माटे ते तो हमेशां करवां; अने

जे संध्यानां कार्यो छे, ते पण गमे ते कोइ संध्या वखते करवां; अने जादरवा महीे ज्यारे ते मास अधिक होय, त्यारे पेहेलो मास तजीने ते बीजा मासमांज करवां. वली जो के, अचेतन एवी वनस्पतिओ पण अधिक मासने गणती नथी, केमके तेओ पण पेहेला अधिक मासने तजीने बीजा मासमांज प्रफुल्लित थाय छे. केमके आवश्यक निर्युक्तिमां तेम कहेल छे. एवी रीते प्रसंगोपात अधिक मासनी चर्चा जाणवी.

हवे ते चतुर्मासीमां द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावनी स्थापना नीचे प्रमाणे जाणवी. द्रव्यस्थापना एटले पोताने उपयोगी एवां तृण, पाटला आदिकने वापरवां ते, तथा सचित्त द्रव्यनो त्याग करवो ते. सचित्त द्रव्य एटले चोमासामां शिष्यने दीक्षा नहीं आपवी, तेमां पण एटलो अपवाद के, अति श्रद्धावाला एवा राजा, अथवा राजानां प्रधानने चोमासामां पण दीक्षा आपवामां बाध नथी. अचित्त द्रव्य एटले वस्त्र आदिक चोमासामा नवां ग्रहण करवां नहीं, मिश्र द्रव्य एटले उपधि सहित नवो शिष्य ग्रहण करवो नहीं; हवे क्षेत्र स्थापना एटले चोमासामां एक जोजन अने एक गाउ जवुं आवबुं कल्पे; तेमां पण रोग आदिकनां कारणे औषध आदिक लेवा माटे चार अथवा पांच जोजन पण जवुं कल्पे काल स्थापना चार मासनी जाणवी. अने भावस्थापना एटले क्रोध आदिकने दूर करी इर्यासमिति आदिकमां उपयोग राखवो ते.

हवे एवी रीते चोमासुं रहेला साधु साधवीओने चारे बाजु दिशा तथा विदिशामां एक योजन अने एक गाउनो अवग्रह होय; ते अवग्रहनी अंदर जघन्यथी ज्यांसुधिमां भीनो हाथ सुकाइ जाय, त्यां सुधि रहेवुं कल्पे, तथा उत्कृष्टथी पांच दिवसो सुधि कल्पे, अने मध्यमपणाथी ते बन्नेना वचला काळसुधि पण रहेवुं कल्पे. पण अवग्रहथी बहार रहेवुं कल्पे नहीं. वली "अपि" शब्दथी छ माससुधि पण अवग्रहमां रहेवुं कल्पे, पण अवग्रहनी बहार रहेवुं कल्पे नहीं. गजेंद्रपद आदिक पर्वतनी मेखलामां रहेला साधु साधवीओने छए दिशाओमां उपाश्रयथी पांच कोससुधी जवुं

आववुं कल्पे. अहीं विदिशाओमां पण जवा आववानुं जे कह्युं छे, ते व्यवहारथी छे, निश्चयथी तो ते विदिशाओ एक प्रदेशरूप होवाथी तेमां जवानो असंभव छे. वली ते अवग्रहमां कोइ दिशामां अटवी अथवा पाणी आदिकनो व्याघात होय, तो त्रण दिशानो, बे दीशानो अथवा एक दिशानो पण अवग्रह थइ शके. हवे ते चोमासुं रहेला साधु साधवीओने भिक्षामाटे पण एक योजन अने एक कोश सुधि आसपास जवुं आववुं कल्पे. वली हमेशां वहेती एवी नदी ओलंगीने ते पांच कोश पण जवुं आववुं कल्पे नहीं; पण कुणाला नगरीपासे रहेली ऐरावती नामनी नदी के जेमां थोडुं पाणी रहे छे, अने ज्यांथी एक पग पाणीमां अने बीजो पग जलथी उपर राखीने जवाय छे, ते उतरीने बीजे कांठे भिक्षामाटे जवुं कल्पे, पण ज्यां तेम करी शकाय नहीं, अने पाणीने बहु विलोडवुं पडे, तेवी नदी उतरीने जवुं कल्पे नहीं. हवे जंघार्धसुधि जे पाणी थाय ते "संघट्ट" कहेवाय, नाभिसुधि "लेप" कहेवाय, तथा नाभि उपरनुं "लेपोपरि" कहेवाय. तेमां शेषाकालमां त्रण पाणीनां संघट्टथी क्षेत्र हणाय नहीं, अर्थात् तेमां जवुं कल्पे; अने वर्षाकालमां सातथी क्षेत्र हणाय नहीं; पण शेषाकालमां चार, अने वर्षाकालमां आठथी क्षेत्र हणाय. अने लेप तो एक पण क्षेत्रने हणे छे. अने नाभिसुधिनां पाणीमां तो जवुंज कल्पे नहीं; त्यारे नाभिउपरनां भागसुधिनां पाणीमां जवानी तो वातज शी करवी ?

एवी रीते चोमासुं रहेला कोइ साधुने गुरु एम कहे के, तुं आ रोगी साधुने भोजन आदिक आपजे ? त्यारे ते साधुए तेने देवुं कल्पे; पण तेणे पोते लेवुं कल्पे नहीं. पण जो गुरु एम कहे के, तुं तारे माटेज लेजे, अने ग्लानने बीजो आपशे; त्यारे पोते पोता माटेज लेवुं कल्पे, पण देवुं कल्पे नहीं. पण जो गुरुए पोताने लेवा माटे अने ग्लानने आपवा माटे पण कह्युं होय, तो पोते लेवुं, तथा ग्लानने आपवुं कल्पे. तथा तरुण अने बलवान शरीरवाला साधुओने वारंवार नवरसयुक्त विगयवालो आहार करवो कल्पे नहीं; पण कारण पडये कल्पे. हवे ते विगयो बे प्रकारनी जाणवी. एक तो दहीं, दूध आदिक जे घणो काल रही शके नहीं ते; तथा बीजी घी, तेल आदिक जे घणो वखत

शके ते. वळी रोगनां कारणथी गुरू अने बाल आदिक ते.

वळी ते रही शके एवी विगय माटे गृहस्थीने कहेवुं के, घणो वखत ,

अने माटे ते ग्रहण करीशुं; त्यारे ग्रहस्थी कहेशे के, आप ठेक चोमासां सुधि लेजो, अहीं

ते घणी छे; त्यारे ते ग्रहण करवी, अने बाल आदिकने देवी; पण तरुणने नहीं. वळी मद्य, मांस अने मांसख, जोके साधुओने जावोजीव वर्जनीय छे, तो पण अत्यंत अपवादनी दशामां, शरीरनां बहारनां उपयोग माटे कोइ पण वखते ते ग्रहण करवानो चोमासामां तो निषेधज छे. वळी रोगीनी करनार साधु, गुरूने एम कहे के, हे भगवन्, रोगीने माटे कोइ विगय वस्तुनी खप छे, गुरू कहेशे के, तेने पुछो के, केटली विगयनो तमोने खप छे ? त्यारे वैयावच्च करनार साधु ते रोगी साधुने पुछे के, तमारे दूध आदिक केटली चीज जोइए छीए ? पछी ते ग्लान साधु जे कंइ कहे, ते वैयावच्च करनारो गुरूने जइने कहे. त्यारे गुरू पाछा फरीने ते वैयावच्च करनारने कहे के, ते ग्लानने जेटली चीजनो खप छे, ते तुं लावी आप ? पछी ते वैयावच्च करनार गृहस्थीने घेर जइ कहे के, ग्लान साधु माटे आटली विगयनो खप छे, ते जो तमारे त्यां होय तो आपो ? पछी ते गृहस्थी कहेशे के, चीज मारे त्यां छे, अने आप ल्यो ? अने ते ग्लानने वावरतां जो वधे, तो तमो पण वापरजो ? बीजाने देजो ? एम जो श्रावक कहे तो वधारे लेवुं पण कल्पे, पण ते रोगीनां मीशथी, पोते लालचु थइने पोतामाटे वधारे लेवुं कल्पे नहीं. वळी ते ग्लानने माटे लावेली चीज मंडलीमां लाववी ; वळी ते लेवा माटे पण नीचे प्रमाणेनां गृहस्थीओनां घेरे जवुं. पोते अथवा बीजाओए श्रावक , प्रीति करनारां, दान देवामां स्थिरतावाळां, तथा अहीं मने निश्चे मलशे, एवा विश्वासवाळां, जेमां जवाने कोइ अटकावे नहीं तेवां, ज्यां घणां साधुओने आदरमान मलतुं होय तेवां, अथ- घरनां घणा माणसोने साधुओपर राग होय एवां, तथा ज्यां सघला साधुपर समदृष्टि होय तेवां, पण मोढाडुं करे तेवां नहीं, तेवां घरोमां जइ, पोताने जे वस्तु जोती होय, ते वस्तु जो

तेनां घरमां देखीए तो मागवी; पण ते वस्तु न जोवाथी तेने एम कहेवुं नहीं के, तमारे त्यां फलाणी फलाणी वस्तुओ छे ? अर्थात् पोते नहीं जोएली वस्तुओ याचवी कल्पे नहीं. अहीं शिष्य प्रश्न करे के, तेम शा माटे पुछवुं नहीं ? त्यारे गुरु कहे के, तेम पुछयाथी जो ते श्रावक बहु श्रद्धावान होय, तो ते वेंचाती लावे, अने जो ते वेंचाती पण न मले, तो अतिशय श्रद्धाथी ते माटे चोरी पण करे, माटे तेम पुछवुं नहीं. अने कृपणने घेर तो ते वस्तु न देखाय तो पण मागवी कल्पे; तेम करवामां दोष नथी. साधुओने हमेशां एक एक वखत आहार करवो कल्पे; पण आचार्य आदिक तथा वैयावच्च करनारने बेवार पण आहार लेवो कल्पे. अर्थात् एकवार भोजन कर्याथी जो ते वैयावच्च आदिक न करी शके, तो ते बेवार पण आहार करे. केमके तपस्या करतां पण वैयावच्च उत्कृष्ट छे. वली ज्यां सुधि दाढी मुछनां वालो न आव्या होय, अर्थात् बालक एवां साधु साधवीओने बेवार पण आहार करवो कल्पे; तेमां दोष नथी. माटे एवी रीते आचार्य, उपाध्याय, तपस्वी, ग्लान अने बालक साधुने बेवार आहार करवो पण कल्पे. वली एकांतरीआ उपवास करनार साधु प्रभातमां गोचरीए जइ, प्राशुक आहार करीने, तथा छाश आदिक पीने, पात्रां धोइ साफ करीने जो तेटलाज भोजनथी चलावे तो ठीक, नहींतर हजु जो क्षुधा होय, तो ते बीजी वार पण भीक्षा लावी आहार करी शके. वली छठनां उपवासी साधुने बे वखत तथा आठमवालाने त्रण वखत पण जवुं कल्पे; अने चार पांच आदिक उपवासवालाने गमे तेटली वार दिवसमां गोचरीए जवुं कल्पे. एवी रीते आहारनी विधि जाणवी. हवे पीवानां पदार्थोनी विधि कहे छे.

एक भक्तवालाने आचारांगमां कहेलां एकवीस प्रकारना पाणी कल्पे; अथवा अहीं जे आगल कहेवामां आवशे, ते नव प्रकारनां पाणी कल्पे. आचारांगमां कहेलां एकवीस प्रकारनां पाणी नीचे प्रमाणे जाणवां.उस्सेइमं, संसेइमं, तंडुलोदक, तुसोदक तिलोदक, जवोदक, यामं, सोवीर, सुद्धवियडं, अंबय, अंबाडक, कविठ, मउलिंग, दख्ख, दडिम, खजुर बोरजल, आमलग, अने चंचापाणी, ए एकवीस प्रकारनां

"
"
तथा
;
कल्पे.
के तपस्यावाळानुं वि
के ते गवेषणु तो तृणादिक ,
वुं कल्पे र्ण थइ जाय
व , तेवी व अने पांच त्ति पाणी
त्रण चार, पांच, छ
दत्ति पण समावेश करवो कल्पे नहीं पाणी
दत्ति वधारीने आहार लेवो कल्पे नहीं. तेम धारेली व
रहेला साधुओए लगतां सात घरो सुधि
घरो नजदीक होवाथी, त्यांथी दिक लेवाथी,
त्यांना लोकोथी दिक दोषोनो थाय. अने तेथी
एम मत छे के, ते जो कंइ
छे के, स
वी

ऊीणां सूक्ष्म फोरां पडते बते पण गोचरीए जाय नहीं. वलीतेवा साधुओने जिद्रा लेश आकाशे आहार करवो कल्पे नहीं. वली कोइ वखते जो ते आकाश प्रदेशमां जोजन करता होय, तो ते वखते अरधुं जोजन कर्याबाद कदाच जो वृष्टि थाय, तो बाकीनुं जोजन बीजा हाथथी ढांकीने, तथा तेने बातीपर अथवा काखमां राखीने कोइ गृहस्थीनां बापरां नीचे, अथवा कोइ वृक्ष नीचे, के ज्यां पाणीना बांटा न पडे, त्यां जइ आहार करवो. जो के जिनकल्पीओ देशोन दशपूर्वीओ होय बे, अने तेथी वृष्टि आदिकनो तेमने पेहेलेथीज उपयोग थाय बे, तो पण बद्मस्थपणाथी कोइ वखते अनुपयोग पण थइ जाय, तेटलामाटे आ समाचारी कही बे. अर्थात् एक लेशमात्र पण जो वृष्टि पमती होय, तो पण जिनकल्पीने गोचरीए जवुं कल्पे नहीं. हवे पात्र राखता एवा स्थविरकल्पी साधुओने तीव्र वर्षाद वरसते बते गोचरीए जवुं कल्पे नहीं अने अपवादथी तो अल्पवृष्टि होते बते, तपस्वी अने क्षुधासहन नहीं करनारने, सुतरना कपमा उपर कामल ओढीने पण गोचरीए जवुं कल्पे. हवे गोचरीए गएला साधु गृहस्थीने घेर गया होय, अने पाबलथी त्यां थोमी थोमी वारे वृष्टि थती होय, त्यारे आराम नी नीचे, अथवा कोइ गृहस्थीनां घरमां, अथवा ते न मले तो कोइ मंमप नीचे, अथवा कोइ वृक्षनी नीचे आववुं कल्पे. हवे जे गृहस्थीनां घर आदिकमां वृष्टिने लीधे साधु आवी रह्या होय, ते गृहस्थीनां घरमां पोते आव्या पेहेलां जे जात आदिक रांधवा मांमया होय, ते लेवा कल्पे, पण पोते आव्या बाद जे दाल आदिक रांधवा मांडे, ते साधुने कल्पे नहीं, केमके ते दोषित कहेवाय. वली त्यां रहीने पण जो वरसाद न रही जाय, तो सूर्यास्त पेहेलां साथेनो आहार वावरीने, पात्रां आदिकनी पोटली बांधीने, वरसाद वरसते बते पण पोताने उपाश्रये पाबुं जवुं कल्पे. पण रात्रिए उपाश्रयथी बहार रहेवुं कल्पे नहीं, केमके एवी रीते एकाकी बहार रहेवाथी "स्वपरसमुत्था" इत्यादि बहु दोष संजवे, तथा उपाश्रयमां रहेला बीजा साधुओने पण तेथी अधीरज थाय.

हवे वरसाद वरसते बते आराम आदिकमां तथा उपाश्रयमां पण एक साधवीनी साथे एक साधु-

साथे, बे साधुए एक साधवी साथे, तथा बे साधुए बे साधवीओ
, पांचमो कोइ क्षुल्लक अथवा क्षुल्लकी साक्षीभूत होय, तोज रहेवुं
विक लोको, के, जेओ आखो दिवस काम करनारा होय, तेमनी दृष्टि-
ए मकानमां रहे तेनां घणां द्वारो होवां जोइए. वली एवीज रीते साधवी तथा
आ पण उपर प्रमाणेज भांगा जाणवा. अर्थात् तेओमां पांचमो कोइ
की , तोज साधुने रहेवुं कल्पे. उत्सर्ग मारगे तो बे साधु, तथा त्रण
गोचरी आदिक माटे बहार जाय. पण जो बीजा साधु साधवी-
होय बाधा होय, तोज तेओ एकाकी जइ शके छे. साधुओने जणाव्या
, एटले "हुं योग्य आहार लावीश" एम नाम लइ पाड्या विनां बीजा माटे साधुए
आहार कल्पे नहीं. अहीं शिष्य पुछे के ते शामाटे ? त्यारे कहेशे के एवी रीते
जो लावे, अने तेमां जो तेने रुचती आवे तो ते वावरे अने अरु-
, उघटुं कहे के, तुं कोने पुछीने आ लाव्यो हतो ? वली कदाच दाक्षि-
पण तो तेने अजीर्ण थाय, वली ते परठववामां पण, वर्षाकालमां जीवाकुल
दोष उपजे. वर्षा कालमां साधुओने पाणीथी नीतरते शरीरे, अथवा थोडा पाणीथी
शरीरे अशनादिक आहार करवो कल्पे नहीं. अहीं जो शिष्य पुछे के, ते शा माटे ? त्यारे
जिनेश्वर प्रभुए सात स्थानकोपरनुं पाणी घणे काले सुकाय तेवुं कह्युं छे; ते साते स्थान-
. हाथ, हाथनी रेखाओ, नखो, नखनां अग्रजागो, भ्रमरो, दाढी तथा मुछ,
घणे काले सुकाय छे. माटे ज्यारे पोताने खातरी थाय के, हवे मारुं शरीर
कल्पे. चोमासां वखते साधु साधवीओए आठ सूक्ष्मोने,
त्यां त्यां सूत्रनां उपदेशथी तेमने जाणवां, चक्षुथी जोवां,

अने जोइने प्रतिलेखवां; तथा तेओ संबंधि विचार पण करवो. ते आठ सूक्ष्मो नीचे प्रमाणे जाणवां. पेहेलुं प्राण सूक्ष्म, तेनां वर्णथी तीर्थंकर गणधरोए पांच भेदो कहेला छे. अने अकेका वर्णमां तो तेमनां हजारो भेदो छे. ते सघला जीवो कृष्ण आदिक पांचे वर्णोमां उत्पन्न थाय छे, तेवा बे इंद्रिय अनुद्धरी कुंथुवाओ थाय छे, तेओ ज्यारे चालता होय, त्यारेज मालुम पडे छे, पण स्थिर होय त्यारे जणाता नथी. बीजुं "पनकसूक्ष्म" केतां वस्तुओमां एटले वर्षाकालमां जमीन, काष्ट आदिकमां तेना जेवाज रंगवाला सूक्ष्म जीवो थाय छे ते. त्रीजा "बीज सूक्ष्म" एटले शाल आदिकनां बीजनां मुख अने मूलनां भागमां सूक्ष्म जीवो थाय छे ते, चोथा "हरितसूक्ष्म" एटले पृथ्वीपर जमीनना रंग जेवीज हरियाली थाय छे, अने ते अल्प संघयणवाली होवाथी, तुरतज नाश पामे छे. पांचमां "पुष्प-सूक्ष्म" केतां वृक्ष तुल्य रंगवालां वड, उडुंबर आदिकनां सूक्ष्म पुष्पो थाय छे, के जेओने फक्त श्वासोश्वासनां वायुथी पण वीराधना थाय छे. छट्ठां "अंडसूक्ष्म" केतां मधमाखी, डांस, मांकड, उत्कलिका, करोडीआ, कीडी, घीलोडी, काकींडा विगेरेनां इंडां घणांज सूक्ष्म थाय छे. सातमां "लयन सूक्ष्म" एटले ज्यां कीडी आदिक अनेक सूक्ष्म जीवोनी उत्पत्ति होय, तथा गद्दहियां आदि-कनां स्थानको होय, तथा बिलघर एटले जमीनपर पाणी पड्याबाद तेमां फाट पडीने दर थाय छे, तेवां स्थानको, तथा ताडनां मूलनां आकार सरखां बीलो, के जे नीचे पोहोलां तथा उपर सूक्ष्म होय, तथा भमरानां घरो, ए सघलां स्थानको पण सूक्ष्म जाणवां. आठमां "स्नेहसूक्ष्म" एटले आका-शमांथी पडतुं पाणी, बरफ, घुमरीनुं पाणी, करा, तृणनां अंकुरानां अग्र भागपर रहेलुं पाणी, एटलां स्नेहसूक्ष्मो जाणवां. चोमासामां रहेला साधुओए, सूत्रार्थना देनारा आचार्यने, सूत्र भणावनार उपा-ध्यायने, ज्ञानादिकमां स्थिर करनारा स्थविरोने, ज्ञानादिकमां प्रवर्तावनारा प्रवर्तकोने, जेमनी पासे आचार्यो सूत्रादिक भणे छे, एवा गणिओने, तथा तीर्थंकरना शिष्य एवा गणधरोने, तथा जे साधु-ओने लेइने बाहिर क्षेत्रमां रहे छे, एवा गणावच्छेदकोने, तथा गच्छ आदिक माटे क्षेत्र, उपधि विगे-

तपास राखनार एवा ग्रन्थार्थोने जाणनाराओने, अथवा वय अने पर्यायें करीने लघु छतां पण जे ... करी विहार ... होय, तेओने पुछीने आहारपाणी माटे जवुं कल्पे. अर्थात् ते साधुओ ... आचार्य ... ने पुछे के, हे भगवन् हुं आहारपाणी माटे गृहस्थीओने घेर जउं ? त्यारे जो कहे के, ... ओ ? तो जवुं कल्पे, नहींतर जवुं कल्पे नहीं. अहीं शिष्य पुछे के, ते शा माटे ? त्यारे गुरु कहे के, आचार्य महाराज पतां विघ्नोना परिहारने जाणे छे. वली एवीज रीते जिन- ... मां जवा माटे, ठंन्डिल जवा माटे, तथा लेप माटे, सीववा, तथा लखवा माटे पण आचार्य आदि- ने ते करवुं. फक्त श्वासोश्वास लेवामां पुछवानी जरूर नथी. तेम भिक्षा माटे, अथवा रोगी माटे एक गामथी बीजे गाम जवुं होय, तो पण आचार्य आदिकनी ते माटे अनुज्ञा लेवी. आदिक आहार लेवामाटे पण आचार्य आदिकनी अनुज्ञा लेवी जोइए. वली पोताने औषध आदिकनो पण जो खप होय, तो पण ते माटे आचार्य आदिकनी अनुज्ञा लेवी जोइए. तेम तप करवा माटे पण आचार्य आदिकनी आज्ञा लेवी. हवे जे साधुने अनशन पूर्वक संलेखना करवी होय, ते ... आचार्य आदिकनी अनुज्ञाथी करे. धर्मनुं जागरण पण गुरुनी अनुज्ञाथी करे. वली चोमासुं रहे- ... साधुने जो उपधि आदिक तपाववां होय, तो तेणे पोते तपास राखीने तपाववां. पण ते तडके ... कीने पोताने गोचरीए जवुं, तथा छेक काउसग्ग करवो पण कल्पे नहीं; उपलक्षणथी ठल्ले, मात्रु ... गेरे पण करवा जवुं कल्पे नहीं; पण बीजा साधुने ते सोंपीने जवुं कल्पे. अने जो ते साधु पण ... पर राखवानी ना पाडे, तो तेने जवुं कल्पे नहीं, केमके, वृष्टिआदिकनो भय लागे, वली वर्षाकालमां ... साधुओने, कगे नहीं, बोले नहीं एवा उंचा आसनपर सुवुं बेसवुं कल्पे, नहींतर कीडी कंथुआ आदि- ... नो वध ... आसनो पण सेववां कल्पे नहीं, केमके तेओने वारंवार तडके मुकवां, ... मिति आदिक बरोबर पली शके नहीं; तेथी संयम बरोबर ... दीपिका नामनी टीका करनारे, "दुराराध्य अने दुष्प्रति-

पात्र्यं" एवा प्रयोगो वापरेला छे, ते वैयाकरणीओए चिंतववा लायक छे.

चोमासुं रहेला साधुओए ठल्ला मात्रानी त्रण जगाओ राखवी जोइए; अने तेने वारंवार पडिलेहवी जोइए; पण शियाला अने उनालानी पेठे रहेवुं जोइए नहीं; केमके वर्षाकालमां जमीनपर इन्द्रगोप, तृण, वनस्पति, आदिक बहु थाय छे, वली वरसते वरसादे बहार जवाथी संयमनी विराधना थाय. वली चोमासामां साधुओए त्रण मात्रा राखवां, एक ठल्लानुं, बीजुं मुत्रनुं अने त्रीजुं श्लेश्म आदिकनुं. चोमासुं रहेला साधुओए असाढ चोमासा पछी गायनां रुवां सरखा पण माथापर केश राखवा नहीं, अने ते लोच भादरवा सुद पांचम सुधिमां, अने हवे सुद चोथ सुधीमां करी लेवो. वली जो समर्थ होय, तो वर्षा कालमां हमेशां लोच करवो. पण संवछरीनी रात्रिने तो लोचविना उल्लंघवी नहीं, केमके जो तेम न करे, तो संवत्सरी प्रतिक्रमण कल्पे नहीं. केशोमां अपकायनी विराधना थाय छे, तथा तेना संसर्गथी जुओनी उत्पत्ति थाय छे, अने तेने खणतां थकां तेओनो वध थाय छे, अथवा माथामां नखो लागे छे. मुंडाववाथी अथवा कतराववाथी आज्ञानो भंग थाय, संयमनी विराधना थाय, जुओनो वध थाय, माटे लोच करवो तेज श्रेष्ठ छे. पण कोइ साधुनाथी जो ते लोच सहन न थाय, अने तेथी जो तेने ताव आदिक आवी जाय, अथवा बालक होवाथी जो ते रडे, अथवा तेथी जो धर्मने तजी आपे, तो तेणे लोच करवो नहीं; अने तेणे पोतानुं मस्तक प्राशुक पाणीथी धोइ, तथा नावीना पण हाथ प्राशुक पाणीथी धोवरावीने मुंडन कराववुं; वली माथामां गुंबडां आदिक थयां होय, तो कतराववा तथा तेने पंदर पंदर दहाडे प्रतिलेखीने केशो छुटा छुटा करवा. तथा तेनुं पंदर पंदर दहाडे प्रायश्चित्त लेवुं. अने वर्षाकालमां तो विशेष प्रायश्चित्त लेवुं. लोच सहन नहीं करनारे महीने महीने मुंडन कराववुं,अने पंदर पंदर दिवसे कतराववा;अने ते सघलुं गुप्त रीते करवुं. ते मुंडन तथा कर्तननुं प्रायश्चित नीशीथथकी अनुक्रमे लघु गुरु मासनां लक्षणथी जाणवुं. लोच छ मासनो जाणवो. पण जेमां साधुओ वृद्ध होय तेमणे पोतानी आंखोना रक्षण माटे वर्ष दहाडे पण करवो

करवो.

कदाच अज्ञानथी

जे वचन बोल्यो , तेम

, पण हवे पर्युषण पछी जे एवुं वचन

, एम निवार्या छतां पण जो ते बोल्या करे; तो जेम

घरथी फेंकी दीए छे, तेम तेने पण संघनी

रुद्र नामनो ब्राह्मण वर्षाकाळे खेतरो खेडवा

गळीओ बळद बेसी गयो, पछी तेणे जोतरथी मार्यो,

माटीनां ढेफांथी मारवा मांड्यो. अनुक्रमे ते माटीथी ते बळदनुं

श्वासोश्वास रुंधाइ गयो, अने ते बळद मृत्यु पाम्यो, पछी ते ब्राह्मण

पासे गयो; अने पोतानो सघळो वृत्तांत कही बताव्यो; त्यारे बीजा

के, हजु क्रोध उपशांत थयो छे के नहीं ? त्यारे तेणे कह्युं के, मारो क्रोध

; तेथी ते ब्राह्मणोए तेने ज्ञातिबहार कर्यो. एवी रीते वार्षिक पर्वमां पण जे

क्षमतक्षामणा न करे, तेने संघबहार करवो. साधुओने मांहोमांहे जो क्लेश

अने जो अपराध होय, तो पण नानाए जइ तेमने खमाववा. कदाच अज्ञा-

मोटाए जइने पण खमाववुं, अने पोते पण खमवुं, अर्थात् पोतपोतानां

एक तो क्षमावे, अने बीजो न क्षमावे तो शुं थाय ? तेने माटे

छे. अहीं दृष्टांत कहे छे के सोवीर देशनो उदयन नामे राजा

सेवता हता. विद्युन्माली देवे आपेली श्री वीर प्रभुनी प्रति-

श्रावके आपेली गोळीना प्रभावथी अद्भुत रूपवान,

सुवर्ण गुटिका दासी सहित देवाधि देवनी प्रतिमाने लइ जनारा, तथा चौद राजाओथी सेवाता मालव देशना चंडप्रद्योत राजाने, ते प्रतिमा पाछी लाववा माटे तेनी साथे संग्राम करीने, तेने बांधीने, ते उदयन राजा वर्षाकाले दशपुर नगरमां आव्यो· त्यां ते उदयन राजाए वार्षिक पर्वने दिवसे एटले संवछरीने दिवसे उपवास कर्यो; पछी राजाना रसोइआओए चंडप्रद्योतने भोजन करवा माटे कह्युं, पण तेणे फेरनी बीकथी कह्युं के, मारे पण आजे उपवास छे; पछी उदयन राजाए विचार्युं के, आ धूर्त श्रावक छे, तो पण जो हुं एने आजे खमावीस नहीं, तो मारुं प्रतिक्रमण शुद्ध थशे नहीं; तेथी तेणे तेनी सघली वस्तुओ आपी दीधी तथा तेनां कपालपर "मम दासीपति" एवी जे छाप दीधी हती, ते ढांकवा माटे तेणे पोतानो मुकुटपट्ट पण तेने आपी दीधो· एम करीने तेणे चंडप्रद्योतने खमाव्यो; अहीं उदयन राजानुं आराधकपणुं जाणवुं; केमके तेने उपशांतपणुं हतुं· कोइ वखते बन्नेने पण आराधकपणुं होय छे· ते नीचे प्रमाणे जाणवुं· एक दहाडो कोशांबी नगरीमां श्री वीर प्रभुने वांदवा माटे सूर्य अने चंद्र पोतानां विमान सहित आव्या· ते वखते दक्ष एवी चंदना अस्त समय जाणीने पोताने स्थानके गइ; अने मृगावती सूर्यचंद्रनां जावाबाद अंधकार थये छते, रात्री जाणीने बीती थकी, उपाश्रये आवीने, इर्यावही पडीकमीने चंदनां प्रते कहेवा लागी के, मारो अपराध आप क्षमा करो ? त्यारे चंदनाए पण कह्युं के, हे भद्रे तने कुलीनने आम करवुं युक्त नथी; त्यारे तेणीए कह्युं के, फरीने हुं तेम करीश नहीं; एम कही तेणीने पगे ते पडी· एटलामां चंदनाने निद्रा आवी गइ, अने मृगावतीने तेम खमावतां थकां केवल ज्ञान उपज्युं; पछी सर्प पासेथी तेणीनो हाथ खसेडवावडे करीने जगाडेली प्रवर्तनीये पुछ्युं के, तें सर्पने शी रीते जाण्यो ? पछी तेणीने केवलज्ञान थएलुं जाणीने पोते पण खमावती थकी केवलज्ञान पामी· माटे एवी रीते मिथ्यादुःकृत देवुं· पण कुंभार अने क्षुल्लकनां दृष्टांतथी नहीं देवुं· कोइक क्षुल्लक कुंभारनां घडा फोडतो, अने कुंभार ज्यारे तेने निवारतो, त्यारे ते मिथ्यादुःकृत देतो; पण पाछो ते घडा तो फोडतोज· पछी कुंभार पण

कांकरा लेइ तेमा कानने ते कांकराओथी दबावीने मरडवा लाग्यो, त्यारे क्षुल्लके कह्युं के, मने बहु दुःख थाय छे, एम वारंवार कहेवा लाग्यो. त्यारे ते कुंभार पण वारंवार तेम करतो थकोज मिथ्या-दुःकृत देवा लाग्यो. माटे एवी रीते मिथ्यादुःकृत नहीं देवुं. वर्षाकालमां साधुओए त्रण उपाश्रयो ग्रहण करवा. तेमांथी जे उपाश्रय उपजोगमां आवतो होय, तेने पेहेलां सवारमां प्रमार्जवो, तथा पछी साधुओ भिक्षामाटे जाय तेवारे प्रमार्जवो, अने पछी त्रीजे पोहोरे एम त्रणवार प्रमार्जवो. तथा चोमासा सिवाय बीजे वखते बेवार प्रमार्जवो. बाकीनां बे उपाश्रयो हमेशां दृष्टिथी जोवा, तथा त्रीजे दिवसे तेओने पादप्रोंछनथी प्रमार्जवा. पोते जे दिशाओनो अवग्रह राख्यो होय, ते दिशाओमां आहा-र पाणी आदिक बीजा साधुओने कहीने जवुं कल्पे. केमके, वर्षाकालमां साधुओ तपस्या करे, तेथी तेओ दुर्बल थएला होय, अने तेथी बहार जतां आवतां कदाच तेओ मुर्छित थइ जाय, तो जो कहीने गया होय, तो ते दिशातरफ साधुओ जइ तेनी तपास करे, पण जो दिशानी खबर न होय तो तेनी क्यां शोध करे ? औषध आदिक लेवा माटे जो जवुं पडे, तो पण तुरत त्यांथी पाछा आववुं, कदाच न आवी शकाय तो पण त्यांज रहेवुं कल्पे नहीं; पण वच्चे क्यांक आवी रहेवुं. एवी रीते उपर कहेलो सांवत्सरिक कल्प जेम सूत्रोमां कहेल छे, तेम कह्यो छे. माटे ते प्रमाणे आचरवुं. एवी तनां सत्य मार्गने मन, वचन, अने कायाथी सेवतां थकां, अतिचारोथी रक्षण करतां थकां, विधि-आराधतां थकां, तेज भवे कर्मरूपी पांजरामांथी मुकाइने सिद्धिपद पामे छे; वली उत्तमपणा बीजे भवे त्रीजे भवे, तथा जघन्यपणाथी सात आठ भवे तो जरुर निर्वाणपद

अध्ययन चोथा आराने छेडे, राजगृही नगरीमां देवोए करेला सम-

र प्रभुए, घणां साधुओनी मध्यमां कह्युं छे; तथा वारंवार तेम

श्री भद्रबाहुस्वामीए पोताना शिष्योप्रते पर्युषणा कल्पमां

हीरविजय सूरीश्वरनां शिष्यरत्न महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय विजय गणिए रचेली श्री कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीकामां संपूर्ण थयुं. श्रीरस्तु.

अथ प्रश

श्री वीरप्रभुनी पाटे कल्पवृक्षनी पेठे इच्छित वस्तुने देनारा, तथा सुगंधिए करीने हरेल छे, (पोतानी तरफ खेंचेल छे) विद्वानोरूपी भमराओ जेमणे एवा, तथा शाखानां विस्तारथी मनोहर लागता, तथा (मोक्षरूपी) फलने आपनारा, तथा शोभता छे मूल गुणो जेमना एवा, तथा उत्कृष्ट मनवाला, (पक्षमां अति पुष्पोवाला) तथा देवोथी पण पूजाएला एवा श्री हीरसूरीश्वर थया. जेणे दरवर्षे छ माससुधि सघला जीवो प्रते अभयदान रूपी पडो वजडावीने, पोतानो यशनो डंको आखी पृथ्वीमां वजडाव्यो छे, तथा जेनो उपदेश सांभलीने अधर्मी अने म्लेछनो पण अग्रेसर एवो अकब्बर बादशाह पण धर्मने पाम्यो छे. तेनी पाट रूपी पूर्वाचल पर्वतपर सूर्य समान तथा भव्य लोको प्रते इष्ट प्राप्तिने माटे चिंतामणि रत्न समान एवा श्री विजयसेन सूरीश्वर थया. जेमना गुणो रूपी दोरीओथी वींटाएलो आ भूगोल, तेमनी कीर्तिरूपी स्त्रीने रमवाना दडा सरखो शोभवा लाग्यो. जेमणे अकब्बर बादशाहनी सभामां पंडितोने जीतीने पोतानी कीर्तिने दिगंत सुधि फेलावी छे; तेमनी पाटरूपी आकाशमां सूर्य समान एवा विजयदेवसूरि जयवंता वर्ते छे, जेमनी कीर्ति एवी तो उज्ज्वल हती के, जे महादेवनां अट्टहास, बरफ, हंस तथा हारनी शोभाने धारण करीने त्रण जगतमां फेलावो पामती हती. तेमनी पाटे राजाओ विगेरेथी स्तुति कराएला छे चरणरूपी कमलो जेमनां, तथा तपगछनां राजा सरखा, तथाजेपोतानां गौर एवा गुणोए करीने श्री गौतम गणधर प्रते पण स्पर्धा करता हता, तथा लब्धिनां तो समुद्रसरखा, तथा दहीं सरखो श्वेत जेमनो यश हतो, तथा शास्त्ररूपी समुद्रनां पारने पहोंचेला एवा श्री विजयसिंह नामे गुरु थया. हवे श्री हीरविजय सूरीश्वरनां, बृह-

चंद्र, तेम सोमविजय तथा कीर्तिविजय नामे बे उत्तम शिष्यो हता. जेमनां कोण कही शके तेम छे ? अने जेमनुं चरित्र जगतमां कोने आश्चर्य करतुं नथी ! वली हस्तसिद्धिए मूर्ख शिष्योने पण पंडितशिरोमणि बनाव्या छे, तथा जेमनी कृपा चिंतामणि छे, वली जेमनो महिमा छेक बाळपणाथीज प्रसिद्ध हती वली जे मोटा वैयाकरणी तथा तार्किक हता, तथा सिद्धांतरूपी समुद्रने वलोववाने मंदराचल सरखा हता, तथा जे कवित्वकलामां पारंगामी हता, तथा जे सर्वपर उपकार करनारा, तथा महा वैराग्यवंत हता; तथा जेमणे विचार रत्नाकर, तथा प्रश्नोत्तर आदिक अद्भुत शास्त्रो बनाव्यां छे, तथा जेमणे अनेक शास्त्रोरूपी समुद्रने डोळ्यां छे, एवा श्री कीर्तिविजय महाराजनां विनयी एवा शिष्य श्री विनयविजयजीए आ कल्पसूत्र-सुखबोधिका टीका बनावेली छे. ते आ सुखबोधिकाने पंडितशिरोमणि, तथा विमलहर्षवाचकनां वंशमां मोती समान, तथा महा बुद्धिवान, अने विस्तार पामेली कीर्तिवाळा, तथा शास्त्रनां पारंगामी , श्री भावविजय वाचकेंद्रे शोधेली छे. आ टीका संवत सोळसें ने छन्नुमां जेठ सुद बीज गुरुवार पुष्य नक्षत्रे संपूर्ण थइ छे, आ बनाववामां श्री रामविजय पंडितनां शिष्य श्री विजय विबुध आदिकनी अभ्यर्थना पण हेतुभूत छे. ज्यांसुधि आ पृथ्वीरूपी स्त्री पर्वतोरूपी श्रीफलोने, वृक्षोरूपी दर्भने, निषध गिरिरूपी केसरने, धरनारो आ जंबुद्वीपरूपी मंगलनो थाल झालीने रही छे, त्यांसुधि पंडितोने हरखती एवी आ कल्पसूत्रनी टीका वृद्धि पामो.

एवीरीते कल्पसूत्रनी सुखबोधिका टीकानुं गुजराती भाषांतर गुरु महाराज श्री चारित्रवि-

निवासी श्रावक हंसराजनां पुत्र हीरालाले कर्युं छे; तेमां जे

लखायुं होय, ते "मिच्छामिदुक्कडं" अने ते सुज्ञ जनोए कृपा-

ग्रंथः

श्रीमसिंह माणेक.

स्पतिनां, जेम सूर्य, चंद्र, तेम सोमविजय तथा कीर्तिविजय नामे बे उत्तम शिष्यो हता. जेमनां सौभाग्यपणाने कोण कली शके तेम छे ? अने जेमनुं चरित्र जगतमां कोने आश्चर्य करतुं नथी ? वली जेमनी हस्तसिद्धिए मूर्ख शिष्योने पण पंडितशिरोमणि बनाव्या छे, तथा जेमनी कृपा चिंतामणि रत्नसरखी छे, वली जेमनो महिमा छेक बालपणाथीज प्रसिद्ध हती वली जे मोटा वैयाकरणी तथा तार्किक हता, तथा सिद्धांतरूपी समुद्रने वलोववाने मंदराचल सरखा हता, तथा जे कवित्वकलामां पण पारंगामी हता, तथा जे सर्वपर उपकार करनारा, तथा महा वैराग्यवंत हता; तथा जेमणे विचार रत्नाकर, तथा प्रश्नोत्तर आदिक अद्भूत शास्त्रो बनाव्यां छे, तथा जेमणे अनेक शास्त्रोरूपी समुद्रने शोध्यां छे, एवा श्री कीर्तिविजय महाराजनां विनयी एवा शिष्य श्री विनयविजयजीए आ कल्पसूत्रनी सुखबोधिका टीका बनावेली छे. ते आ सुखबोधिकाने पंडितशिरोमणि, तथा विमलहर्षवाचकनां वंशमां मोती समान, तथा महा बुद्धिवान, अने विस्तार पामेली कीर्तिवाला, तथा शास्त्रनां पारंगामी एवा, श्री भावविजय वाचकेंद्रे शोधेली छे. आ टीका संवत सोलसें ने छन्नुमां जेठ सुद बीज गुरुवार तथा पुष्य नक्षत्रे संपूर्ण थइ छे, आ बनाववामां श्री रामविजय पंडितनां शिष्य श्री विजय विबुध आदिकनी अभ्यर्थनां पण हेतुभूत छे. ज्यांसुधि आ पृथ्वीरूपी स्त्री पर्वतोरूपी श्रीफलोने, वृक्षोरूपी दर्भने, निषध गिरिरूपी केसरने, धरनारो आ जंबुद्वीपरूपी मंगलनो थाल भालीने रही छे, त्यांसुधि पंडितोने रुचती एवी आ कल्पसूत्रनी टीका वृद्धि पामो.

एवीरीते आ कल्पसूत्रनी सुखबोधिका टीकानुं गुजराती भाषांतर गुरु महाराज श्री चारित्रविजयजीनी कृपाथी जामनगर निवासी श्रावक हंसराजनां पुत्र हीरालाले कर्युं छे; तेमां जे कंइ विरुद्ध लखायुं होय, ते "मिच्छामिदुक्कडं" अने ते सुज्ञ जनोए कृपा करी सुधारवुं.

समाप्तोऽयं ग्रंथः

भीमसिंह माणेक.

एवी रीते जगद्गुरु जट्टारक श्री हीरविजय सूरीश्वरनां शिष्यरत्न महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणिनां शिष्योपाध्याय श्री विनयविजय गणिए रचेली श्री कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीकामां सामाचारी नामनुं नवमुं व्याख्यान संपूर्ण थयुं. श्रीरस्तु.

अथ प्रशस्तिर्लिख्यते

श्री वीरप्रजुनी पाटे कल्पवृक्षनी पेठे इच्छित वस्तुने देनारा, तथा सुगंधिए करीने हरेल छे, (पोतानी तरफ खेंचेल छे) विद्वानोरूपी जमराओ जेमणे एवा, तथा शाखानां विस्तारथी मनोहर लागता, तथा (मोक्षरूपी) फलने आपनारा, तथा शोजता छे मूल गुणो जेमना एवा, तथा उत्कृष्ट मनवाला, (पक्षमां अति पुष्पोवाला) तथा देवोथी पण पूजाएला एवा श्री हीरसूरीश्वर थया. जेणे दरवर्षे छ माससुधि सघला जीवो प्रते अजयदान रूपी पमो वजमावीने, पोतानो यशनो मंको आखी पृथ्वीमां वजमाव्यो छे, तथा जेनो उपदेश सांजलीने अधर्मी अने म्लेच्छनो पण अग्रेसर एवो अकब्बर बादशाह पण धर्मने पाम्यो छे. तेनी पाट रूपी पूर्वाचल पर्वतपर सूर्य समान तथा जव्य लोको प्रते इष्ट प्राप्तिने माटे चिंतामणि रत्न समान एवा श्री विजयसेन सूरीश्वर थया. जेमना गुणो रूपी दोरीओथी वींटाएलो आ जूगोल, तेमनी कीर्तिरूपी स्त्रीने रमवाना दमा सरखो शोजवा लाग्यो. जेमणे अकब्बर बादशाहनी सजामां पंमितोने जीतीने पोतानी कीर्तिने दिगंत सुधि फेलावी छे; तेमनी पाटरूपी आकाशमां सूर्य समान एवा विजयदेवसूरि जयवंता वर्ते छे, जेमनी कीर्ति एवी तो उज्ज्वल हती के, जे महादेवनां अट्टहास, बरफ, हंस तथा हारनी शोजाने धारण करीने त्रण जगतमां फेलावो पामती हती. तेमनी पाटे राजाओ विगेरेथी स्तुति कराएला छे चरणरूपी कमलो जेमनां, तथा तपगछनां राजा सरखा, तथाजेपोतानां गौर एवा गुणोए करीने श्री गौतम गणधर प्रते पण स्पर्धा करता हता, तथा लब्धिनां तो समुद्रसरखा, तथा दहीं सरखो श्वेत जेमनो यश हतो, तथा शास्त्ररूपी समुद्रनां पारने पहोंचेला एवा श्री विजयसिंह नामे गुरु थया. हवे श्री हीरविजय सूरीश्वरनां, बृह- ॥ ११७ ॥

श्री हीरविजय सूरीश्वरनां शिष्यरत्न महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणिनां श्री विनयविजय गणिए रचेली श्री कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीकामां सामाचारी नामनुं नवमुं व्याख्यान संपूर्ण थयुं. श्रीरस्तु.

अथ प्रशस्तिर्लिख्यते

श्री वीरप्रभुनी पाटे कल्पवृक्षनी पेठे इच्छित वस्तुने देनारा, तथा सुगंधिए करीने हरेल छे, (पोतानी तरफ खेंचेल छे) विद्वानोरूपी भमराओ जेमणे एवा, तथा शाखानां विस्तारथी मनोहर लागता, तथा (मोक्षरूपी) फलने आपनारा, तथा शोभता छे मूल गुणो जेमना एवा, तथा उत्कृष्ट मनवाला, (पक्षमां अति पुष्पोवाला) तथा देवोथी पण पूजाएला एवा श्री हीरसूरीश्वर थया. जेणे दरवर्षे छ माससुद्धि सघला जीवो प्रते अभयदान रूपी पडो वजडावीने, पोतानो यशनो डंको आखी पृथ्वीमां वजडाव्यो छे, तथा जेनो उपदेश सांभलीने अधर्मी अने म्लेच्छनो पण अग्रेसर एवो अकब्बर बादशाह पण धर्मने पाम्यो छे. तेनी पाट रूपी पूर्वाचल पर्वतपर सूर्य समान तथा भव्य लोको प्रते इष्ट प्राप्तिने माटे चिंतामणि रत्न समान एवा श्री विजयसेन सूरीश्वर थया. जेमना गुणो रूपी दोरीओथी वींटाएलो आ भूगोल, तेमनी कीर्तिरूपी स्त्रीने रमवाना दडा सरखो शोभवा लाग्यो. जेमणे अकब्बर बादशाहनी सभामां पंडितोने जीतीने पोतानी कीर्तिने दिगंत सुधि फेलावी छे; तेमनी पाटरूपी आकाशमां सूर्य समान एवा विजयदेवसूरि जयवंता वर्ते छे, जेमनी कीर्ति एवी तो उज्ज्वल हती के, जे महादेवनां अट्टहास, वरफ, हंस तथा हारनी शोभाने धारण करीने त्रण जगतमां फेलावो पामती हती. तेमनी पाटे राजाओ विगेरेथी स्तुति कराएला छे चरणरूपी कमलो जेमनां, तथा तपगछनां राजा सरखा, तथाजेपोतानां गौर एवा गुणोए करीने श्री गौतम गणधर प्रते पण स्पर्धा करता हता, तथा लब्धिनां तो समुद्रसरखा, तथा दहीं सरखो श्वेत जेमनो यश हतो, तथा शास्त्ररूपी समुद्रनां पारने पहोंचेला एवा श्री विजयसिंह नामे गुरु थया. हवे श्री हीरविजय सूरीश्वरनां, वृह-

स्पतिनां; जेम सूर्य, चंद्र, तेम सोमविजय तथा कीर्तिविजय नामे बे उत्तम शिष्यो हता. जेमनां सौभाग्यपणाने कोण कली शके तेम छे? अने जेमनुं चरित्र जगतमां कोने आश्चर्य करतुं नथी? वली जेमनी हस्तसिद्धिए मूर्ख शिष्योने पण पंडितशिरोमणि बनाव्या छे, तथा जेमनी कृपा चिंतामणि रत्नसरखी छे, वली जेमनो महिमा छेक बालपणाथीज प्रसिद्ध हती वली जे मोटा वैयाकरणी तथा तार्किक हता, तथा सिद्धांतरूपी समुद्रने वलोववाने मंदराचल सरखा हता; तथा जे कवित्वकलामां पण पारंगामी हता; तथा जे सर्वपर उपकार करनारा, तथा महा वैराग्यवंत हता; तथा जेमणे विचार रत्नाकर, तथा प्रश्नोत्तर आदिक अद्भूत शास्त्रो बनाव्यां छे, तथा जेमणे अनेक शास्त्रोरूपी समुद्रने शोध्यां छे, एवा श्री कीर्तिविजय महाराजनां विनयी एवा शिष्य श्री विनयविजयजीए आ कल्पसूत्रनी सुखबोधिका टीका बनावेली छे. ते आ सुखबोधिकाने पंमितशिरोमणि, तथा विमलहर्षवाचकनां वंशमां मोती समान, तथा महा बुद्धिवान, अने विस्तार पामेली कीर्तिवाला, तथा शास्त्रनां पारंगामी एवा, श्री भावविजय वाचकेंद्रे शोधेली छे. आ टीका संवत सोलसें ने छन्नुमां जेठ सुद बीज गुरुवार तथा पुष्य नक्षत्रे संपूर्ण थइ छे, आ बनाववामां श्री रामविजय पंमितनां शिष्य श्री विजय विबुध आदिकनी अभ्यर्थनां पण हेतुभूत छे. ज्यांसुधि आ पृथ्वीरूपी स्त्री पर्वतोरूपी श्रीफलोने, वृक्षोरूपी दर्भने, निषध गिरिरूपी केसरने, धरनारो आ जंबुद्वीपरूपी मंगलनो थाल जालीने रही छे, त्यांसुधि पंडितोने रुचती एवी आ कल्पसूत्रनी टीका वृद्धि पामो.

एवीरीते आ कल्पसूत्रनी सुखबोधिका टीकानुं गुजराती भाषांतर गुरु महाराज श्री चारित्रविजयजीना शिष्य श्री...

क्ति जामनगर निवासी श्रावक हंसराजनां पुत्र हीरालाले कर्युं छे; तेमां जे लखायुं होय, ते "मिछामिदुक्कडं" अने ते सुज्ञ जनोए कृपा

समाप्तोऽयं ग्रंथः

भीमसिंह माणेक.

श्री हीरविजय सूरीश्वरनां शिष्यरत्न महोपाध्याय श्री कीर्तिविजय गणिनां श्री विनयविजय गणिए रचेली श्री कल्पसूत्रनी सुखबोधिका नामनी टीकामां सामाचारी नामनुं नवमुं व्याख्यान संपूर्ण थयुं. श्रीरस्तु.

अथ प्रशस्तिर्लिख्यते

श्री वीरप्रभुनी पाटे कल्पवृक्षनी पेठे इच्छित वस्तुने देनारा, तथा सुगंधिए करीने हरेल छे, (पोतानी तरफ खेंचेल छे) विद्वानोरूपी भमराओ जेमणे एवा, तथा शाखानां विस्तारथी मनोहर लागता, तथा (मोक्षरूपी) फलने आपनारा, तथा शोभता छे मूल गुणो जेमना एवा, तथा उत्कृष्ट मनवाला, (पक्षमां अति पुष्पोवाला) तथा देवोथी पण पूजाएला एवा श्री हीरसूरीश्वर थया. जेणे दरवर्षे छ माससुद्धि सघला जीवो प्रते अभयदान रूपी पडो वजडावीने, पोतानो यशनो डंको आखी पृथ्वीमां वजडाव्यो छे, तथा जेनो उपदेश सांभलीने अधर्मी अने म्लेछनो पण अग्रेसर एवो अकब्बर बादशाह पण धर्मने पाम्यो छे. तेनी पाट रूपी पूर्वाचल पर्वतपर सूर्य समान तथा भव्य लोको प्रते इष्ट प्राप्तिने माटे चिंतामणि रत्न समान एवा श्री विजयसेन सूरीश्वर थया. जेमना गुणो रूपी दोरीओथी वींटाएलो आ भूगोल, तेमनी कीर्तिरूपी स्त्रीने रमवाना दडा सरखो शोभवा लाग्यो. जेमणे अकब्बर बादशाहनी सभामां पंडितोने जीतीने पोतानी कीर्तिने दिगंत सुधि फेलावी छे; तेमनी पाटरूपी आकाशमां सूर्य समान एवा विजयदेवसूरि जयवंता वर्ते छे, जेमनी कीर्ति एवी तो उज्ज्वल हती के, जे महादेवनां अट्टहास, बरफ, हंस तथा हारनी शोभाने धारण करीने त्रण जगतमां फेलावो पामती हती. तेमनी पाटे राजाओ विगेरेथी स्तुति कराएला छे चरणरूपी कमलो जेमनां, तथा तपगछनां राजा सरखा, तथाजेपोतानां गौर एवा गुणोए करीने श्री गौतम गणधर प्रते पण स्पर्धा करता हता, तथा लब्धिनां तो समुद्रसरखा, तथा दहीं सरखो श्वेत जेमनो यश हतो, तथा शास्त्ररूपी समुद्रनां पारने पहोंचेला एवा श्री विजयसिंह नामे गुरु थया. हवे श्री हीरविजय सूरीश्वरनां, वृह-

स्पतिनां; जेम सूर्य, चंद्र, तेम सोमविजय तथा कीर्तिविजय नामे बे उत्तम शिष्यो हता. जेमनां सौजाग्यपणाने कोण कली शके तेम छे ? अने जेमनुं चरित्र जगतमां कोने आश्चर्य करतुं नथी ? वली जेमनी हस्तसिद्धिए मूर्ख शिष्योने पण पंडितशिरोमणि बनाव्या छे, तथा जेमनी कृपा चिंतामणि रत्नसरखी छे, वली जेमनो महिमा छेक बालपणाथीज प्रसिद्ध हती वली जे मोटा वैयाकरणी तथा तार्किक हता, तथा सिद्धांतरूपी समुद्रने वलोववाने मंदराचल सरखा हता, तथा जे कवित्वकलामां पण पारंगामी हता, तथा जे सर्वपर उपकार करनारा, तथा महा वैराग्यवंत हता; तथा जेमणे विचार रत्नाकर, तथा प्रश्नोत्तर आदिक अद्भूत शास्त्रो बनाव्यां छे, तथा जेमणे अनेक शास्त्रोरूपी समुद्रने शोध्यां छे, एवा श्री कीर्तिविजय महाराजनां विनयी एवा शिष्य श्री विनयविजयजीए आ कल्पसूत्रनी सुखबोधिका टीका बनावेली छे. ते आ सुखबोधिकाने पंक्तिशिरोमणि, तथा विमलहर्षवाचकनां वंशमां मोती समान, तथा महा बुद्धिवान, अने विस्तार पामेली कीर्तिवाला, तथा शास्त्रनां पारंगामी एवा, श्री जावविजय वाचकेंद्रे शोधेली छे. आ टीका संवत सोलसें ने छन्नुमां जेठ सुद बीज गुरुवार तथा पुष्य नक्षत्रे संपूर्ण थइ छे, आ बनाववामां श्री रामविजय पंक्तिनां शिष्य श्री विजय विबुध आदिकनी अभ्यर्थनां पण हेतुजूत छे. ज्यांसुधि आ पृथ्वीरूपी स्त्री पर्वतोरूपी श्रीफलोने, वृक्षोरूपी वर्जने, निषध गिरिरूपी केसरने, धरनारो आ जंबुद्वीपरूपी मंगलनो थाल जालीने रही छे, त्यांसुधि रुचती एवी आ कल्पसूत्रनी टीका वृद्धि पामो.

आ कल्पसूत्रनी सुखबोधिका टीकानुं गुजराती जाषांतर गुरु महाराज श्री चारित्रविक्ति जामनगर निवासी श्रावक हंसराजनां पुत्र हीरालाले कर्युं छे; तेमां जे लखायुं होय, ते " मिछामिडुक्करं " अने ते सुझ जनोए कृपा-

समाप्तोऽयं ग्रंथः

जीमसिंह माणेक.

॥ इति कल्पसूत्रनी सुखबोधिका टी-
कानुं गुजराती नाषांतर समाप्त ॥